अमृत वचन

PART - 1

संकलन :–

स्व ० श्रीमती विमला मेहरोत्रा

सम्पादक :–

चन्दरू वासवानी

हम तो गुरू जी महिमा तुम्हारी गायेंगे
रोको तुम मत हमको हम सबको बतायेंगे

ब्रहमा, विष्णु, शंकर तुम हो हम बतलायेंगे।
तीन लोक का स्वामी हम तुम्हें बतायेंगे।। हम तो ....
रोग शोक तुम दूर हो करते ये बतलायेंगे।
कुशल वैघ तुम ही हो ये सबको बतायेंगे।। हम तो ....
दुखी देख तुम्हें आंसू आये ये बतलायेंगे।
बड़े कृपालु तुम हो ये सबको बतायेंगे।। हम तो ....
दोनों हाथों से देते हो दान बतायेंगे।
अखण्ड दानी तुम हो ये सबको बतायेंगे।। हम तो ....
शाश्वत जीवन के सुख का प्रभु ज्ञान तुम्हीं देते हो
पूरन सतगुरू तुम हो ये सबको बतायेंगे।। हम तो ....
लोगों से मैं कहूंगी जाकर जल्दी जल्दी आओ
गुरू चरणों मे आकर अपना जीवन सफल बनाओ
खेवटिया सतगुरू हैं नैया पार लगायेंगे।। हम तो ....

अमृत वचन

मेरे और समस्त सत्संगियों के जीवन में इस अज्ञानता रूपी अन्धकार में इस अमृत वचन द्वारा ही ज्ञान का आलोक हुआ है।

उनके वचन है तू आत्मा है जो अजर है, अमर है, अविनाशी है, देह नाशवान है, ससार मिथ्या है, परिवर्तनशील है, किन्तु इसके बोध के लिए साकार गुरू की परम आवश्यकता है। कहा भी है हरि ने अपना आप छिपाया, गुरू ने प्रगट कर दिखलाया। ऐसे गुरू को बारम्बार प्रणाम है :–

गुरू ब्रम्हा गुरू विष्णु गुरूदेवो महेश्वरः।
गुरू साक्षात् पारब्रम्ह तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

जीवन में सत्संग का बहुत ही महत्व है। "बिन सत्संग विवेक न होई"। किन्तु हमारा मन इतना चंचल है कि वह स्थिर ही नहीं हो पाता है। संसार में काम, क्रोध, मोह, लोभ अहंकार इन पांच विकारों में फंसकर प्राणी संसार रूपी अथाह सागर में डूबता – उतराता रहता है। शान्ति उससे कोसों दूर भाग जाती है, किन्तु जब एक गुरू में अपने हृदय को पूर्ण समर्पित करते हैं तब वह इस संसार समुद्र से पार होने का ज्ञान देता है। हमारे गुरू का ज्ञान है कि गृहस्थ में रहकर कैसे योग प्राप्त करें। इसकी ओर ले जाने वाला है जीवन का अर्थ पलायन नहीं है। गुरू का उपदेश है कि कर्म से पलायन ज्ञान नहीं है कर्म करते हुए भी मुझ परमात्मा को भजो। कर्म को करते हुए मुझ परमात्मा को न बिसारो। चित्त को प्रभु में लगाओ। उतार – चढाव को ही जगत बोला है विवेकी अपनी शक्ति को संसार में खर्च नहीं करता है। रंगमंच के कलाकारों को विभिन्न प्रकार के नाटक करना पड़ता है किन्तु नाटक करने वाला नाटक करने के बाद उसी नाटक में लिप्त नहीं हो जाता उससे अलग रहता है। वैसे ही जगत में जो भी करना है उसको करते हुए उससे अपने को अलग महसूस करो क्योंकि आत्मा शुद्ध है पवित्र है। वह दुख–सुख से परे परमआनन्द मय है। वह सबका साक्षी स्वरूप है भगवान को अन्धश्रद्धा, परम विश्वास और पूर्ण भक्ति द्वारा ही पाया जा सकता है।

जीवन में कैसी भी परिस्थिति आये किन्तु प्रभु का विश्वास कभी भी कम न होने पाये। "तेरे फूलों से भी प्यार तेरे कांटों से भी प्यार।" प्रभु के सुमिरन दुख न सताये" भक्त को इतना विश्वास हो जाता है कि सब करने वाला भगवान है और भगवान कुछ भी बुरा नहीं करता है। वास्तविक भक्त को अपने प्रभु (गुरू) पर इतना विश्वास हो जाता है कि वह अनन्यभाव से भगवान को मानने लगता है। गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने कहा है कि जो

अनन्यभाव से मुझे जपता है उसके योग क्षेम का भार मैं स्वयं ही उठाता हूं। इसलिए अपने चित्त को सदैव प्रभु चिन्तन में लगाना ही श्रेयस्कर है।

पूज्य गुरूजी ने जो भी अमृत वचनों का ज्ञान दिया है वह कहीं जंगल में जाकर या संसार में पलायन करके नहीं दिया। इसी संसार में रहकर सहजता में सब कर्म करते हुए भी किस प्रकार व्यक्ति अपने चित्त को योग में लगा सकता है। इस कथनी और करनी को चरितार्थ करके दिखाया। इसलिए ऐसे पूर्ण ज्ञानी, परम स्नेही पूर्ण निष्कामता में रहने वाले गुरू के आगे बरबस ही मस्तक झुकता है और नमन करता है क्योंकि कथनी और करनी को सत्य करके दिखाया है।

नमस्कार भगवान तुम्हें भक्तों का बारम्बार हो।

श्रद्धा रूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।।

सम्पादकीय
विश्नू सिंह
स्थायी पता
485/19 मोहन मीकिन रोड,
डालीगंज, लखनऊ
फोन : 324345

संयोजक :
चन्दरू वासवानी, दूसरी मंजिल, रजनीगंधा II, 3-सी, गोखले मार्ग, लखनऊ - 226001
फोन : 275803

अमृत वचन

मेरे और समस्त सत्संगियों के जीवन में इस अज्ञानता रूपी अन्धकार में इस अमृत वचन द्वारा ही ज्ञान का आलोक हुआ है।

उनके वचन है तू आत्मा है जो अजर है, अमर है, अविनाशी है, देह नाशवान है, ससार मिथ्या है, परिवर्तनशील है, किन्तु इसके बोध के लिए साकार गुरू की परम आवश्यकता है। कहा भी है हरि ने अपना आप छिपाया, गुरू ने प्रगट कर दिखलाया। ऐसे गुरू को बारम्बार प्रणाम है :–

गुरू ब्रम्हा गुरू विष्णु गुरूदेवो महेश्वरः।
गुरू साक्षात् पारब्रम्ह तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

जीवन में सत्संग का बहुत ही महत्व है। "बिन सत्संग विवेक न होई"। किन्तु हमारा मन इतना चंचल है कि वह स्थिर ही नहीं हो पाता है। संसार में काम, क्रोध, मोह, लोभ अहंकार इन पांच विकारों में फंसकर प्राणी संसार रूपी अथाह सागर में डूबता – उतराता रहता है। शान्ति उससे कोसों दूर भाग जाती है, किन्तु जब एक गुरू में अपने हृदय को पूर्ण समर्पित करते हैं तब वह इस संसार समुद्र से पार होने का ज्ञान देता है। हमारे गुरू का ज्ञान है कि गृहस्थ में रहकर कैसे योग प्राप्त करें। इसकी ओर ले जाने वाला है जीवन का अर्थ पलायन नहीं है। गुरू का उपदेश है कि कर्म से पलायन ज्ञान नहीं है कर्म करते हुए भी मुझ परमात्मा को भजो। कर्म को करते हुए मुझ परमात्मा को न बिसारो। चित्त को प्रभु में लगाओ। उतार – चढाव को ही जगत बोला है विवेकी अपनी शक्ति को संसार में खर्च नहीं करता है। रंगमंच के कलाकारों को विभिन्न प्रकार के नाटक करना पड़ता है किन्तु नाटक करने वाला नाटक करने के बाद उसी नाटक में लिप्त नहीं हो जाता उससे अलग रहता है। वैसे ही जगत में जो भी करना है उसको करते हुए उससे अपने को अलग महसूस करो क्योंकि आत्मा शुद्ध है पवित्र है। वह दुख–सुख से परे परमआनन्द मय है। वह सबका साक्षी स्वरूप है भगवान को अन्धश्रद्धा, परम विश्वास और पूर्ण भक्ति द्वारा ही पाया जा सकता है।

जीवन में कैसी भी परिस्थिति आये किन्तु प्रभु का विश्वास कभी भी कम न होने पाये। "तेरे फूलों से भी प्यार तेरे कांटों से भी प्यार।" प्रभु के सुमिरन दुख न सताये" भक्त को इतना विश्वास हो जाता है कि सब करने वाला भगवान है और भगवान कुछ भी बुरा नहीं करता है। वास्तविक भक्त को अपने प्रभु (गुरू) पर इतना विश्वास हो जाता है कि वह अनन्यभाव से भगवान को मानने लगता है। गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने कहा है कि जो

अनन्यभाव से मुझे जपता है उसके योग क्षेम का भार मैं स्वयं ही उठाता हूं। इसलिए अपने चित्त को सदैव प्रभु चिन्तन में लगाना ही श्रेयस्कर है।

पूज्य गुरूजी ने जो भी अमृत वचनों का ज्ञान दिया है वह कहीं जंगल में जाकर या संसार में पलायन करके नहीं दिया। इसी संसार में रहकर सहजता में सब कर्म करते हुए भी किस प्रकार व्यक्ति अपने चित्त को योग में लगा सकता है। इस कथनी और करनी को चरितार्थ करके दिखाया। इसलिए ऐसे पूर्ण ज्ञानी, परम स्नेही पूर्ण निष्कामता में रहने वाले गुरू के आगे बरबस ही मस्तक झुकता है और नमन करता है क्योंकि कथनी और करनी को सत्य करके दिखाया है।

नमस्कार भगवान तुम्हें भक्तों का बारम्बार हो।

श्रद्धा रूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।।

सम्पादकीय
विश्नू सिंह
स्थायी पता
485/19 मोहन मीकिन रोड,
डालीगंज, लखनऊ
फोन : 324345

संयोजक :
चन्द्ररू वासवानी, दूसरी मंजिल, रजनीगंधा II, 3-सी, गोखले मार्ग, लखनऊ - 226001
फोन : 275803

अनन्यभ
चित्त व
पूज
संसार
भी किर
चरिताः
गुरु के
सत्य र
नम
श्र

तेरे नाम का सुमिरण करके,मेरे मन में सुख भर आया
तेरी कृपा को मैंने पाया तेरी दया को मैंने पाया।
दुनिया की ठोकर खाकर, जब हुआ कभी बेसहारा
ना पाकर अपना कोई, जब मैंने तुझे पुकारा
हे नाथ मेरे ही ऊपर तूने अमृत बरसाया।

तू संग में था नित मेरे ये नैना देख न पाये
चंचल माया के रंग में, ये नैन रहे उलझाये
जितनी ही बार गिरा हूँ, तूने पग पग मुझे उठाया। तेरी

भव सागर की लहरों में, भटकी जब मेरी नइया
तट छूना भी मुश्किल था, नहीं दीखे कोई खिवइया
तू लहर बना सागर की, मेरी नाव किनारे लाया।तेरी....

हर तरफ तुम्हीं हो मेरे, हर तरफ तेरा उजियारा
मेरे एक प्रभुजी मेंरे, हर रूप तुम्हीं ने धारा
तेरी शरण में हो के दाता, तेरा तू ही को चढ़ाया। तेरी.

च

14-8-86

'गुरु-गुण'

जब तुम पत्थर की मूर्ति को छोड़कर साकार की पूजा करोगे तो तुममें भी अपार शक्ति आ जाएगी। वह है क्योंकि जो मन हर समय चलता है इसी को विराम देता है–गुरू, यही गुरु का जादू है।

"सो सुखिया जो नाम अधार।।"

नाम से ही आज हमारा देश उन्नति पर है। हम सब ऋषि–मुनियों की औलाद हैं। हमारी पृथ्वी इन्हीं के आत्म–चिन्तन के आधार पर टिकी है।

तुम खाओ, पियो, मौज करो पर मन में परमात्मा रहे। कर्म करो ज्यादा से ज्यादा करो, पर उसको न भूलो। तुम बोलते हो हम बाहर जाते हैं, वो भगवान भुला देता है। हमारे पास भी ढेर काम है। संसार है। पर हम नहीं भूलते तो तुम क्यों भूल जाते हो?

'ध्यान' से 'समाधान'

तुम्हारा स्वरूप आत्मा है। अब तुम बोलो– हम आत्मा हैं, पढ़ें नहीं, किसी से बोलें नहीं। पर संसार में होंगे तो सब कुछ करना पड़ेगा पर वृत्ति भगवान में ही होनी चाहिए। चोर रास्ते–रास्ते चलता भी है पर उसका ध्यान खाली चोरी में रहता है। इसी तरह तुम्हारा ध्यान भी काम करते हुए भी भगवान में ही रहना चाहिए।

औरतें सर पर दो घड़ा रखे रहती हैं– और आपस में बातें भी करती रहती हैं पर उनका ध्यान घड़ा न गिरे–इसमें भी रहता है। हम भी उसी तरह परमात्मा में रहकर काम करें–"हाथ हज में दिल यार में।" सोचो–मोहे मिला है जियावन हार। तुम अपने पर इतना विश्वास (confidence) रखो कि तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

"जैसी करनी-वैसी भरनी"

प्रभु के सुमिरन दुःख न संतापे।" तुम सोचोगे दुःख आएगा ही नहीं पर ऐसा नहीं है। कर्म का फल तो भोगना ही पड़ेगा पर तुमको प्रभु के

नाम के कारण दुःख लगेगा नहीं, इसलिए भगवान का सुमिरन ही सदा करो।

हम तो तुम्हारे मन को मार कर मुलायम बनाते हैं। मन भूत रावण है। चाहे औरत हो चाहे मर्द। उसका भूत झाड़ते हैं। हम झाड़ू लगाकर तुम्हारे मन की सफाई बिना पैसे के करते हैं फिर भी तुम नाराज होते हो।

तुम दुःखी होते हो तो हम तुम्हें आराम देने की कोशिश करते हैं। जो हमारे पास आए हैं, वही अच्छे कर्म करते हैं, वही अपने माँ–बाप की सेवा करते हैं, नहीं तो संसार में देखो कि बच्चे कैसा बर्ताव करते हैं। आजकल के बच्चे किसी की बात नहीं मानते पर सही बच्चे हमारे गुरु के पास आकर आदर करना सीख जाते हैं। हम तो अच्छा ही बनाने की कोशिश करते हैं–तुम डरो नहीं कि हम तुम्हारा घर छुड़ाते हैं। हम तो तुम्हारा जीव–भाव (मायाजाल) छुड़ाते हैं। तुम हमको अपना वकील समझो।

तुम किसी को सत्संग में आने को मजबूर मत करो। आदमी कितने खून पसीने से माया (धन) कमाकर लाता है, उसको मजबूर मत करो। तुम ज्ञान लेकर अच्छी हो जाओगी तो वह मर्द खुद ही देखेगा कि वह कौन गुरू है जिसने मेरी औरत को इतना बदल दिया है। अतः खुद में बदलाव (change) करो।

सत्-पथ

जब भाग्य उदय होते हैं तभी कोई मनुष्य संत के सामने आ पाता है। तुम सही रूप से ज्ञान लेकर व्यवहार करोगी तो वह खुद आ जाएगा जिसका मेरे से सच्चा रिश्ता हो जाएगा। तो रिश्ते को निभाने तो तुम्हारे साथ आ ही जाएगा। तुमको आने देता है, बंधन नहीं डालता–यही अहसान मानो। तुम आदमी की इज्जत नहीं करती हो–बच्चों का लाड़ (स्नेह) करती हो पर यह नहीं सोचती कि पैसा तो बेचारा वही लाता है।

हम लोग आज से निश्चय करके उठें कि शांति में हम भी रहेंगे जो हमसे मिलेगा, उससे भी शांति का व्यवहार करेंगे। देखो! इतने लोग मिलकर संकल्प करते हैं, तो पानी बरस जाता है, हमने नहीं किया था। तो इसी तरह शांति करो। हाँ! आज भूल हो गई तो कल नहीं करेंगे। संकल्प करो। मन तो जिंदगी भर बदमाशी करता रहता है। मन बड़ा चंचल है फिर भी नित्य अभ्यास से काम हो जाता है। नित अभ्यास नित वैराग से ही काम होता है।

क्या भी होता है–प्रेम से शांति से रहो। घर में तो बवाल झंझट होते ही रहते हैं। हर घर में ऐसी बात होती है पर औरत को संभालना पड़ता है। औरत को ही गाड़ी चलानी पड़ती है।

शांति से चुप रहने पर ही काम अच्छा होता है। साधू चुप का है सेसारा। चुप में कर दीदारा। अपनी भूल को बार बार मानकर अपने को ही बार बार बदलना चाहिए। यही जादू हो जाएगा। जो तुम कहते हो हम जादू करते हैं–वह यही जादू है कि तुम्हारे भूत मन को ज्ञान के जादू से झाड़ देते है। हर आदमी जहां है वहीं से शुकराना करे–हर हालत में शुकराना करेगा तो मस्ती में रहेगा। तुमको भूख लगे, कुछ न हो तो हमारे पास आ जाना। हर हाल में शुकराना करो।

बिना कर्म भोगे कर्म की गति टलती नहीं। तुम चिंता में सूखते हो। जो भी जिन्दगी है उसमें शांति प्रेम से चलो। अभी आदमी है या नहीं–चिंता मत करो। तुम प्रेम में रहोगे तो न होने वाला काम भी हो जाएगा। प्रेम ऐसी ही चीज है। तुम प्रेम में रहोगे तो भगवान तुम्हारा हर काम कर देता है। प्रेम में भगवान की लीला प्रत्यक्ष दिखाई देती है।

भगवान नहीं है। अगर तुम सिर्फ भगवान को मानते हो तो दिल से भगवान को कोई हटा नहीं सकता। जिन राम और कृष्ण को हमने देखा नहीं माँ ने बता दिया तो हम जान गए–भूलते नहीं। हम "आत्मा" बताते हैं तुमको याद नहीं रहता।

छोटी पूजा में संतोष मत करो। जो दिन रात तुम्हारे कर्म में पूजा आ जाए वही पूजा है। तुम दिल में पूजा का मंदिर बनाओ, आंखों में पूजा की ज्योति जलाओ तो बस फिर क्या। पूजा हो जाएगी।

खुद के बदलने से सारा विश्व बदल जाता है। तुम खुद को पहले बदलो। सब खुद ही आ जाएंगे तुमको बदला देखकर।

मन का कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। जब मन कहीं फंसा रहता है तो आत्मा आदि कुछ पल्ले नहीं पड़ता। बहुत will power की जरूरत है। तुम जिसे प्रेम समझते हो, वह प्रेम नहीं होता। वह किसी विषय को लेकर प्यार होता है।

16.8.86

"गुरु-गरिमा"

मन की कैसी आदत होती है? जब भगवान मिलता है तो कदर नहीं करता। जब भगवान नहीं मिलता तो तड़पता है। यह मन ऐसा ही है। जो मिला है उसकी कदर करनी चाहिए। मन को सही रास्ते चलाने का तरीका गुरू से सीखना पड़ता है।

"दुःख दारू सुख रोग भया।"

संसार में सब मतलब के यार हैं। सब स्वार्थ से प्यार करते हैं, सच्चा अद्वैत का प्यार सतगुरु ही करता है। बचपन से आज तक सबने प्यार किया पर तुम्हारा जी नहीं भरा। गुरु का प्यार अद्वैत का निःस्वार्थ का प्यार होता है। बड़ी मुश्किल से गुरु की नजर मिलती है। गुरु का अदब और भय होना चाहिए। जिसको प्रेम होता है उसमें अदब होता है। प्रेम अदब सिखाता है। गुरु अभी नजर फेर लेगा तो तुम्हारा मन खराब हो जाएगा। गुरु की नजर से चलो। एक व्यक्ति से बात करने को हम मना करते हैं पर तुम नहीं मानते। तुम उससे बात मत करो। गुरु बहुत थक चुका है गाली दे देके। हम तुमको फिर भी माफ करते रहे। अब मुझको कष्ट न दो। तुम परमात्मा में इतने डूब जाओ आकर, तो तुम्हारे आने की मजदूरी मिले।

आया गया, धक्का खाया और भगवान से जुड़ा नहीं। ऐसा शो विजनेस हमें पसंद नहीं। सही सही वृत्ति के लिए गुरु को रिझाना पड़ता है। अपनी नजर को बचाओ। इन्हीं नयनों से परमात्मा नजर आता है। सूरदास ने इसीलिए अपनी आँख फोड़ी तभी भजन कर पाया। क्योंकि उसका ध्यान औरत में चला गया था। इसीलिए औरत की आँख से बचो। 'ज्ञान' में जो तुम्हारी माँ है, उसकी बात माननी पड़ेगी तुमको। माँ ने भी गुरु में कुछ अवश्य देखा होगा तभी तुमको गुरु के पास आने देती है। माँ ही भजन कराती है। जो माँ ज्ञान वाली होती है उसके बच्चे अड़ोसी–पड़ोसी सभी ज्ञान में लग जाते हैं तुम देखो! अगर माँ संसार में ढकेलती है तो उसकी बात अवश्य मत मानो पर अगर ज्ञान की ओर ढकेलती है तो अवश्य जाओ। गुरु की ही नजर से आदमी बड़ा बनता है–पंडित, मास्टर, विद्वान बनता है। अर्जुन और लक्ष्मण इसीलिए इंद्रिय जीत हुए क्योंकि उनका मन राम में रमा रहता था।

कोई तुम्हें सच्चा प्यार करता है? क्या प्रूफ (प्रमाण) है? बताओ। प्यार धोखा है। तुम प्यार को सच्चा प्यार समझता है, गुरु इतना प्रेम करता है उसको नहीं समझता। कोई तुम्हें घसीटे तो घिसटता चला जाता है। कहाँ गई आत्मिक शक्ति। कोई कितना भी घसीटे तुम न जाओ तो हम समझेंगे तुम्हारा मन परमात्मा में है। शुद्ध हृदय आनंद चित्त से मेरा ध्यान लगाता। उसके योगक्षेम का भार मैं ही स्वयं उठाता।

मनःइन्द्रियों की सारी हरकत को छोड़ो। जहां रहो, इन्द्रियों को वश में रखो। तुम ज्ञान में मन लगाओ। रिसर्च करो शुद्धता में रहो। यदि शुद्धता में नहीं रहोगे तो ज्ञान चला जाएगा। कृष्ण की तो इतनी रानियाँ थीं, पर उन सबका ध्यान कृष्ण में ही रहता था। भगवान में रहो पर लटक–लटक के मत रहो।

भगवान के हो जाना है तो हो जाओ। ये न सोचो, भजन करेंगे तो क्या खाएंगे, क्या पहनेंगे। हम भी जब भजन पहले–पहले करने लगे तो हम डरते थें। गुरु से भी पूछा–हम क्या खाएंगे? क्या पहनेंगे? पर गुरु ने कहा–तपस्या करो। देखो उसी तपस्या के फल से आज सारा विश्व हमारी पूजा करता है। आज जिंदगी ही बहार बन गई है। भगवान–भगवान करो, बस सब पूरा हो जाता है। जहर के लिए अमृत जैसे भगवान को छोड़ देते हो। माया तो तुमको खींचेगी ही। पर उसकी परवाह न करके गुरु की सेवा करो तो अच्छे बन जाओगे–गुरु की नजर से ही सबकुछ सुख मिलता है।

जब हमारी आँख ऊपर गई तो सबकी नजर हम पर पड़ी। जितने भी संत हैं, ऊपर देखते हैं–जगत को नहीं देखते। क्या देखना है जगत को? अभी जब–जब कठिनाई आती है अंदर जांचो तो पता चलेगा कि तुम कितने ज्ञान में हो।

अब तुम सावधान होकर भगवान–भगवान करो। मनसा–वाचा–कर्मणा से जो भी पाप हुए हैं, उनकी माफी मांगो। तुम कहते हो गुरु ये खाता है, वो खाता है पर तुम देखो कि वह तुमको क्या देता है? गाय घास गंदगी खाती है पर दूध देती है। सांप तो दूध पीता है पर तुमको जहर देता है। तो क्या फायदा खाने पीने के पीछे भगवान को बोलना। अतः मेरे खान पान में मत जाओ। हम तुमको जो ज्ञान दें उसको सुनो और गुनो।

करन करावन आपै आप।

जो कुछ करने वाला है–भगवान है। भगवान को सर्वशिरोमणि समझो जब भगवान से बड़ा किसी को भी तुम मानते हो तो भगवान सह नहीं पाता।

गुरु नाम दाता मेरी सम्पदा है। कोई भी, जैसे भी मुझे भजता है, वह मुझको प्यारा लगता है। हम प्रभु जी को इसीलिए प्यार करते हैं क्योंकि वह मुझे गुरुजी कहता है। सबसे ज्यादा मुझको ऊपर समझता है। जो कुछ दिया है, भगवान के शिरोमणि मानने से होता है। प्रभु नित्य कभी नाश न होनेवाला है। अनित्य से नित्य का कभी मेल नहीं होता। कहां सत्य प्रभु कहां उसकी परछाई अनित्य माया। मन परछाई को सत्य मानने लगता है तुम सत्य और नित्य परमात्मा ही जानो।

माया के संग से जगत के संग से ईश्वरीय योग समाप्त हो जाता है। मायावियों से बचो–ये तुम्हारी energy (शक्ति) को चूस लेते हैं। मायावी लोगों का संग मत करो। जब तुम माया की तरफ रुख करोगे तो शक्ति खतम हो जाएंगी। गुरु इसी से बचाने के लिए तुमको गाली देता है। संत में क्यों शक्ति होती है? क्योंकि वह ब्रह्मानंद में रहता है। इसलिए कि वह अपनी मन इन्द्रियों पर कंट्रोल रखते हैं, ब्रह्मचर्य में न रहे तो वह ब्रह्म में नहीं पहुंच सकता।

विष सम विषय तज तात रे,
आरजू क्षमा संतोष, शम, दम, पी सुधा दिन रात रे।

वृत्ति को सदा वैराग्य में होना चाहिए। देखो कितनी परेशानी आती है। उस समय के लिए, उस कष्ट से बचने के लिए ही हम तुमको तैयार कर रहे हैं। बहुत कड़ा कष्ट होता है जब हमारे हमसे छूटते हैं। उस समय दुःख न सताए, विरह न सताए तो इसीलिए तुम अभी से उनसे छूटने की तैयारी करो–छोड़ने की नहीं–आसक्ति छोड़ने की तैयारी करो।

यह बहुत बड़ी बात है कि जिसके पास यश–वैभव हो और वह गुरु के पीछे अपना जीवन होम कर दे। सद्गुरु की नूरानी आँख तुमको याद रहेगी तो कोई तुम्हारा कुछ नहीं कर पाएगा।

जिस बात गुरु नाराज होता है–वह काम तुम मत करो।

ज्ञान से (आत्मशक्ति) will power आती है। पूजा से शक्ति नहीं आती है। ज्ञान से मनुष्य शक्ति में रहता है। ज्ञान से ही कर्म भी अच्छा करता है। कर्म के लिए भी will power ज्ञान से ही मिलती है। राम, कृष्ण, गुरु भगवान कुछ भी कहो–सब एक ही भगवान के रूप हैं।

ये मन कुछ न कुछ चिंतन करता ही रहता है। भगवान से गुरु को इसीलिए बड़ा कहते हैं क्योंकि गुरु तुम्हारे मन को काटता–छांटता रहता है। जैसे पेड़ जेसे जैसे बढ़ता है, तो माली उसकी डाल कांट–छांटकर ठीक किये रहता है नहीं तो सभी शाखाएं सब तरफ फैली रहेंगी।

17.8.86

सिकंदर बाग में

प्रश्नः भगवान की फोटो पर माला डालना चाहिये या नहीं?

उत्तरः प्रेम में क्या करना चाहिये, क्या नहीं करना चाहिये यह किसी से तुमने कभी पूछा है? कहते हैं जो मर जाता है उसकी फोटो पर माला डालते हैं। लेकिन भगवान कभी मरता ही नहीं। डाक्टर ने अपने हिसाब से ठीक कहा क्योंकि यह पुरानी रीति है। पर भगवान अजर, अमर, अविनाशी है। वह जब मरता ही नहीं तो फोटो पर माला तो पड़ेगी ही।

तुम लोगों को कुछ प्रश्न पूछना हो तो पूछो। तुम लोग तो सिर्फ सुनते रहते हो सोते रहते हो। देखो राम झरोखे में बैठकर हम लोग मुजरा ही तो ले रहे हैं।

जिसकी आत्मा परमात्मा से मिली होती है, वह बड़ा होता है। आत्मा, परमात्मा का मेल नहीं और मांस रखकर जो बात करेगा वह कब बड़ा होगा। आप विसर्जन होइये तो सुमिरन होय कहिये सोय। इस मांस में रहकर कोई बड़ा छोटा नहीं होता। अहंकार से अपने को बड़ा मानता है। अगर परमात्मा को जाना नहीं तो क्या बड़ा हुआ? भगवान को पीने वाला तो नशे में आ जाता है। एक परमात्मा से बड़ा कुछ नहीं है। एक ही निराकार, निरंजन ब्रह्म बड़ा है। हम उसको भूलकर देह को बड़ा मानते हैं। सब छूटनेवाला है। क्या सोचना–किस नाल कीजे दोस्ती, सब जग चलनहार।

हरि के अनन्य रूप हैं, अनन्य हाथ हैं। पहले तो दो हाथ भजन करते थे, अब देखो अनेकों हाथ भजन करते हैं। मेरे तो हाथ खुद ही तगड़े हैं–ये तो हम भगवान के नशे में रहते हैं, तो कुछ नहीं कर पाते, नहीं तो हम सब कर लेते हैं। तुम्हारे हाथ से तो कमी पड़ती है–हमारे हाथ से तो बच भी जाता है। जितना बांटते हैं–बढ़ता जाता है।

19.8.86

हमारा ज्ञान है—जो भी हालत है, उसी में खुश रहना। जो भी होता है। उसी में खुश रहो। ज्ञान का यही मतलब है। तुम तो बोलते हो ऐसा होगा तो हम खुश होंगे हम खुश हों—लेकिन संसार में तो कुछ न कुछ होता ही रहता है। हम हर हालत में खुश रहना बताते हैं। जिंदगी में कुछ न कुछ होता ही रहता है। न जाने कैसा घनचक्कर ये संसार बना है। जो मिलता है वह खाओ, न मिलता हो भूखे सो जाओ। भगवान सब देखता है। वह तुमको भूखा सोते नहीं देख पाएगा। यह न सोचो कि अच्छी हालत आएगी तभी हम सुखी हो जाएंगे। मनुष्य की बड़ी बुरी आदत है कभी भी वर्तमान हालत पर खुश नही होता। हमेशा सोचता रहता है परिस्थिति बदल जाए।

कोई चला गया तो क्या हुआ? तू है तो ही तुझे तेरा याद आता है। दुश्मन—दुश्मनी करके चला जाता है। हम बोलते हैं वह हमारा था। जब जिसका कर्म भोग खतम हो जाता है तो चला जाता है। उसका कर्म भोग अभी बाकी होगा तो लौट आयेगा। क्यों चिंता करते हो? जो भी शोर होता है वह बिना धीरज के ही होता है। अपने में ही धीरज की कमी होती है। अगर शोर होता है तो गलती हमारी ही होती है। यदि हम 'ज्ञानी' हैं तो शोर के समय हम वहां से हट जाएंगे। जितना हमसे हो सके, करें, जो न हो पाए वह न करें। साधू! चुप का है संसारा, चुप में कर दीदारा। शुकराना मानो तो मन धीरज में रहेगा। ज्ञान हो और धीरज न हो तो वह ज्ञानी नहीं है। अज्ञानी तो धीरज नहीं करेगा। तुम चुप हो जाओ, तुम ही धीरज करो। कभी कभी जब दो इन्सान खटखट करते हैं तो कभी ये नहीं कहते कि खटखट मैंने ही शुरू की। झगड़ा हमारी तरफ से ही होता है। सत्संग वही होना चाहियें, जहां शांति भंग न हो। जहां सभी लोग आपस में प्रेम से रहते हों। तुम रात दिन 12 दिन तक प्रेम से चलोगे तो हम तुम्हारे घर आएंगे। घूम घुमाकर आत्मा की बात करोगे तो ज्ञान चलेगा। गीता को लेकर कुछ point पर प्रश्नोत्तर करो। भगवान में लीन होने के लिये पहले घिसाई करनी पड़ती है।

प्रश्न क्या खामोशी ही अपने आप में प्रश्न नहीं है?

उत्तर खामोशी तो सबसे बड़ा प्रश्न है। end (अंत) भी है, बीच भी है। पहले प्रश्न करके खाली हो जाए तब बेख्याली में आए तब प्रश्न बन्द हो जायें तो अच्छा है तभी खामोशी है। आत्मा का आनन्द धन आ जाएगा तो खामोश हो जायेगा। जब तक शंका का समाधान न हो तब तक तो प्रश्न करना ही पड़ेगा। जो समाधान करे वही गुरु है। सभी कहते हैं हम अपने को भगवान क्यों कहते हैं? जब हमें अपना पता चल गया है तो हम भगवान हैं।

जो आत्म निश्चय में होता है शरीर के बीमार होने आने—जाने में भेद नहीं समझेगा, जब आत्मानंद हो जायेगा तो जागृत स्वप्न सुषुप्ति में एक ही रहेगा। जात का भान भी नहीं रहेगा। जब सत्गुरु कहता है और मानकर आत्म निश्चय करेंगे तो उसमें आत्मा के गुण आयेंगे, ज्ञानी के सभी गुण आ जायेंगे। गुरु के आकर्षण से हम तभी खिंचते हैं क्योंकि वह पूर्ण ज्ञानी होता है। ज्ञानी का चित्त जल में कमल के पत्ते की तरह रहता है—भले ही शरीर कीचड़ में हो। उसका चित्त परमात्मा में ही रहता है। "नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रैन।" राम नाम का नशा ऐसा होता है जो बताया नहीं जा सकता।

एक राम दशरथ का बेटा,
एक राम घट घट में लेटा।

बिजली के करेन्ट की तरह राम विलक्षण है। जैसे बिजली पानी में घुली मिली है। कबीर भी राम में लीन था। राम जगत पति, शक्ति है। संत भी शक्ति लेकर आते हैं। ये तुम्हारे ग्रहण करने की पावर है। जैसे बल्ब 40 का हो या 60 या 260 का पर जलता अवश्य है। इसी तरह परमात्मा को जो हाजिर नाजिर जानता है उसको प्रत्यक्ष शक्ति मिलती है।

कहते हैं गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु गुरु देवो महेश्वरः। गुरु को जो ऐसा पारब्रह्म मानता है, उसको कुछ अपना नहीं लगता।

प्रश्न गुरु के यहां क्या स्थान स्थिति के हिसाब से मिलता है?

उत्तर रेल में सभी जाते हैं। कोई नेता जाता है, कोई साधारण आदमी। पर नेता जितना जला होगा। त्याग किया होगा। उसे ए.सी. में बैठने को मिलता है। अपनी—अपनी योग्यतानुसार स्थान मिलता है। इसी तरह भगवान में भी स्थान अपने आप मिलता है। जो जितनी भक्ति करता है उसी हिसाब से स्थान मिलता है। मेवाड़ में तमाम रानियां हुई हैं पर मीरा का ही नाम क्यों ऊपर आता है? क्योंकि मीरा ने उतना त्याग किया। राधा के अलावा भी कई रानियां थीं पर राधा का ही नाम कृष्ण के नाम के साथ आता है। जिसके अंदर सच्चा प्रेम, त्याग होगा उसको कोई उठा गिरा नहीं सकता। मीरा को किसी ने उठाया नहीं। उसकी भक्ति ने उसको उठाया। गुरु तो सबको समान रूप से प्यार करता है परन्तु जो तपस्या जितनी करेगा वह

अपना स्थान अपने आप ले लेगा। प्रेम प्रभू की देन है। राम कृष्ण को देखो। वह बिल्कुल बुद्धू बाबा था। वह प्रगट कैसे हो गया? क्योंकि उसमें सच्चाई थी प्रेम था। जब संसारी प्रेम नहीं छिप सकता तो भगवान का प्रेम कैसे छिपेगा? गुरु कुछ नहीं करता। हम तो देखिये–आप नए हैं फिर भी आपसे ही बातें कर रहे हैं। वो तो बेचारे पुराने हैं। वे समझ चुके हैं इसलिए उनकी ओर हमारा ध्यान नहीं है। आपको आगे बढ़ाना है, आपकी वृत्ति को प्रभु की ओर ले जाना है, इसीलिए हम आपसे बात करते हैं।

गुरु योग में ले जाता है। योगी बनाता है। योगी पंख लगाकर ऊपर उड़ता हैं हद से ऊपर (आत्मा) में ले जाता है। गुरु बेहद (असीम) में ले जाता है। आत्मा के जाने बिना चैन नहीं। जगत में सब धोखे में डालने वाले हैं–सुन्दर मेला कर दिया।

सत्गुरु ऐसा मिला दलाल,
कर दिया मालामाल।

गुरु तुमको परमात्मा में ले जाता है। भगवान माया देकर तुमका जग के जंजाल में भुलाता है पर गुरु जाल से तुमको छुड़ा देता है। जगत कुछ नहीं खाली धोखा है। मनुष्य जब सब आसरे से हार जाता है, तभी भगवान को याद करता है। भगवान भी तभी अपनी शक्ति दिखाकर अपना अस्तित्व सिद्ध करता है कि मैं हूँ। जगत के सारे आसरे झूठे हैं। लेकिन मनुष्य उन्हीं आसरों पर भूला रहता है।

जगत में मनुष्य इच्छाओं में फंस जाता है। End में फिर भगवान को ही याद करता है।

अब बड़ा अच्छा हुआ। टीचर (शिक्षिका) जी ज्ञान लेंगी तो बच्चों को भी ध्यान से पढ़ायेंगी, प्रेम भी करेंगी। टीचरों को ज्ञान लेना बहुत जरूरी है। जब गुरु से ज्ञान लेकर बच्चों को सुनायेंगी तो बड़े होकर बच्चे देश की उन्नति करेंगे। इसलिये टीचरों का ज्ञान लेना बहुत जरूरी है।

सच्चाई भी संवार के बोलनी पड़ती है। हम जब कभी वृत्ति पर गाली देते हैं–नाम भी नहीं direct उसका लेते पर वह चिढ़ जाता है। क्योंकि जिसमें जो बात होती है वह उसको लगती है कि मुझी को बोला जा रहा है– चोर की दाढ़ी में तिनका।

कलयुग कहां होता है जहाँ परमात्मा नहीं होता। जहाँ परमात्मा का ख्याल होगा वहां उल्टा नहीं होगा। भगवान निराकार होने से (क्योंकि दिखाई नहीं देता) छोटा लगता है परन्तु जब विवेक जागृत होता है तो

भगवान की रोशनी बराबर मिलती रहती है। लगाव और प्रेम के द्वारा गुरु साथ रहता है। गुरु पहले तो पकड़ता नहीं और पकड़ने के बाद फिर छोड़ता नहीं। अतः नमस्तस्तु, नमस्तस्तु, नमस्तस्तु नमो नमः करना चाहिये।

एक बात है देखो! जो मनुष्य सबकी संभाल करता है, वह अच्छा होता है। सब दुनिया के बच्चे पालते हैं, जो सबके लिये जीवन की कुर्बानी दे तो उसकी भी गोद भरी जाती है। गुरु को जब आशा होती है कि ये आदमी सबको पालेगा तो वह भार उस पर विश्वास से छोड़ता है। जो अपने लिये जीता है वह सूअर होता है। आदमी नहीं होता। जो सबके लिये जीता है वह अच्छा होता है। नैपोलियन की जीत लड़ाई में इसीलिये हुई क्योंकि वह इरादे का पक्का था। उसका आदर्श लेकर आज भी लोग काम करते हैं।

जो मनुष्य एक म्यान में एक ही तलवार रखता है वह बुद्धिमान, ज्ञानी होता है। अगर दो तलवार रखी जायेगी तो म्यान फट जायेगी। इसी तरह गुरु जो भार दे वही भार संभाले। एक समय में एक ही काम हो सकता है–या तो गुरु के अनुसार सेवा या अपनी सेवा।

जो गुरु को किसी हालत में नहीं छोड़ सकता, अपना सुख, आराम गुरु के पीछे छोड़ देता है तो गुरु को विश्वास होता है कि यह हमारे पीछे भी विश्वास से, जिम्मेदारी से काम करेगा तो गुरु उसको गद्दी देगा। उसकी हर बात को, आर्डर को सबको मानना पड़ेगा। योग्यतानुसार ही हम गद्दी देते हैं। जो सत्य के लिये टिकेगा उसी को गद्दी मिलेगी। इसमें न मेरा बेटा देखा जाएगा, न बेटी। गुरु के लिये जो भी मर मिटेगा, गुरु के लिये जान न्योछावर करेगा, वह चाहे कोई भी हो, उसी को गद्दी मिलेगी। ये बात हमारी सत्य है या गलत? कोई भी एतराज हो तो तुम विचार–विमर्श करना फिर हमको बताना। जो तुम बोलोगे हम मानेंगे।

देखो! डा० सालोमन अच्छा डाक्टर है। पर अगर अपना हुनर वह दूसरे को नहीं देगा तो उसके जाने के बाद उसकी दुकान में ताला पड़ जाएगा। गुरु अपने रहते ही दूसरे को गद्दी दे देता है। जैसे जैसे वह गुरु की गद्दी का भार संभालेगा वैसे–वैसे उसमें शक्ति आयेगी। हमारे गुरु ने भी हमको गद्दी दी। हम भी जिसको अपनी गद्दी दें, उसका आदर करना चाहिये। हमारा झंडा न झुका है, न झुकेगा। कभी भी तुम कपट से बात मत करना। भाव से बच्चा बनकर बात करना तो बेड़ा पार हो जाएगा। तुम सब दुआ दो कि गुरु जिस पर गद्दी का भार छोड़ें वह उसे खूब संभालकर उठा सके।

19.8.86

"सत्-सार"

गुरु की एक एक बात तुम लोग मान रहे हो तो चल रहे हो। गुरु की एक एक बात मानने पर ही ज्ञान आता है। भले ही मन न मानने दे पर उसकी (मन) की न मानकर तुम चलते जाओ तो ही अच्छा होता है। ज्ञान जब तक practical में नहीं उतरता तब तक फलीभूत नहीं होता। सिर्फ बोलने का ज्ञान नहीं ठीक है। ज्ञान में चलना भी ठीक होना चाहिये तभी ज्ञान माना समझा जायेगा।

भगवान को खाली माने तभी कृपा दिखाई पड़ती है। राजा लोग ज्ञान के लिये वैराग्य लेकर जंगल में चले जाते थे, क्योंकि दुनियां में बहुत झमेला–झंझट है। ज्ञान में एकाग्रता होनी चाहिये। पुराने जमाने में ऋषि महात्मा जगत के शोर से ही भागते थे। ज्ञान सलामत रखने के लिये जगत से छिप कर रहना चाहिये। जो पूर्ण ज्ञान लेना चाहता है उसे अन्दर जाना चाहिये। बाहर बाहर भागने से ज्ञान नहीं होता।

कर कर भी दिमाग में एक बोझा होता है। क्या करें, क्या न करें? ऐसा ख्याल छोड़कर दृढ़ निश्चय करना चाहिये। भगवान सच्चाई जानता है, देखता है, घबराना नहीं चाहिये घरेलू परिस्थितियों से।

परमात्मा के भजन में सत्यता एक प्रमुख चीज है। जब सत्यता होती है तो सारे बंधनों से अपने आप छुट्टी मिल जाती हैं बंधन भी अपने आप दूर होते हैं–परमात्मा स्वयं ही दूर करता है।

हम सुखी हालत होने की आशा में जीवन बिता देते हैं। अरे हालत जैसी भी हो, हर हालत में खुश रहना और सुख मानना चाहिये। यही ज्ञान है।

मनुष्य जब गुरु की मानकर चलता है तो माया से बचा रहता है। माया आती जाती है लेकिन विवेकी पुरुष माया को शरीर पालन के लिये प्रयोग करते हैं। मनुष्य जब भगवान का भजन करता है तो माया तो भगवान के भक्त की सेवा करेगी ही क्योंकि माया भगवान की दासी है। मनमुखता छोड़ो।

भगवान कहता है, शरीर तभी अच्छा है जब भगवान के भजन में रहता है नहीं तो शरीर बेकार है। जब भूले तू आपको, तब व्यापे संसार। मनुष्य जब भगवान से ज्यादा अपने डील (शरीर) को मानता है तो वह मनुष्य अच्छा

नहीं होता। सदा ऐसा ध्यान रखो मैं कुछ भी नहीं हूँ, जो है भगवान है–तभी माया से बचा जा सकता है। यह दात (ज्ञान) सत्गुरु से ही मिलती है। सत्गुरु की कृपा पाने को सर भेंट चढ़ाना पड़ता है। गुरु के घर आकर भी मन चाहता है।–मुझे गद्दी, कुर्सी मिले। अगर बेखुदी में आकर कोई भजन करता है तो कुर्सी स्वयं मिल जाती है।

जगत के नाम रूप में हम फंस कर आत्मा को भूल जाते हैं। मनुष्य शुकराना करें तो कितनी खुशी मिले। देखो। भजन करो, खुश होओ कि भजन करने का कितना टाइम मिला है।

भगवान क्या नहीं कर सकता? लेकिन हम भगवान पर पूरा विश्वास नहीं करते–उनको छोटा मानते हैं। कृष्ण–राधा को बहुत प्यार करते थे। एक दिन अहंकार में बोली–तुम झुको तो हम तुम्हारे ऊपर चढ़ जाएं। राधा का अहंकार देखकर कृष्ण अन्तर्ध्यान हो गए। जब बहुत रोई और उसका अहंकार (ego) down हुआ तब कृष्ण खुश हुए।

तुमको गुरु तो बहुत मिलेंगे पर आत्म शक्ति देनेवाला वास्तविक गुरु होता है। हम भी पहले बहुत भटकते थे, पर जब से गुरु मिला हम कहीं नहीं भटकते। गुरु ने हमको पहले इतना भर दिया है कि अब हम उसको लुटाना नहीं चाहते। जब गुरु रीझता है तभी आत्म शक्ति पैदा होती है। गुरु सूरज है, शिष्य घड़ा है। जब घड़े के अंदर गुरु का प्रकाश पड़ता है तभी आत्म ज्ञान शिष्य को होता है। लाख प्रयत्न करो, जब तक गुरु नहीं रीझता, आत्म ज्ञान नहीं होता।

कभी कभी मन बोलता है– हम गुरु के बराबर हो गये हैं। गुरु से भी बड़े हो गए हैं। यह तो तुम पर गुरु की कृपा है कि वह तुमको अपनी समानता में बैठाता है। पर जब तक मन–इन्द्रियों की तपस्या नहीं करता तब तक गुरु की बराबरी आजीवन नहीं कर सकता। गुरु, गुरु है। उसने अपनी इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया है। तुम तो अभी मन इन्द्रियों को कन्ट्रोल ही नहीं कर पाते हो तो वैराग्य कैसे हो? जब तक हम वैराग्य (मन इन्द्रियों का कंट्रोल) नहीं करेंगे तब तक आत्मशक्ति नहीं पैदा होगी। हर व्यक्ति लुटा लुटा सा क्यों लगता है?

जगत के नामरूप को प्यार करके तुमको क्या मिला? नामरूप नाश है। ब्रह्म का प्रकाश है। जब तक नामरूप में मन जायेगा तब तक आत्म ज्ञान नहीं होगा। भगवान का आनन्द न आ सकता है, न आएगा। भगवान मूर्ख नहीं है। एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकती है। भगवान ऐसा

गरजमंद नहीं है कि तुम हज़ारों चीज़ें मन में रखो और भगवान भी तुम्हारे मन में आ जाए।

भगवान अपने भक्त को कभी धोखा नहीं देते। हमारा मन ही हमको धोखा देता है। सीता जब राम के बिना नहीं रह पा रही थीं तो राम उसे अपने साथ जंगल ले गये पर जब उसका मन हिरन में चला गया तो भगवान ने अपने सें अलग कर दिया। जब रावण ने सीता को बेहद परेशान किया तो सीता व्याकुल होकर राम को पुकारने लगीं जब बेहद रिझाया तब कहीं हनुमान को लंका भेजा। तो तुम राम में ही मन को लगाओ। राम से ज्यादा किसी को भी मन में बिठाओगे तो भगवान तुम्हारे हृदय में नहीं आएगा।

जप योग ध्यान, पूजा से तुझको रिझा न पाए लेकिन दिल से रिझाने वाले की पुकार भगवान तुरंत सुनता है। ज्ञान, जप, तप, ध्यान का भी अहंकार होता है। तुम नाना पूजा करते हो लेकिन egoless नहीं हुआ तो क्या लाभ पूजा करने से? खुदी से खुदा तो जुदा हो जाता है। पपीहे की तरह कौन पुकारता है? तुम "मैं" होकर पूजा करते हो। हमारे यहाँ ऐसी पूजा नहीं होती। चंदन धूप की कोई जरूरत नहीं। सारी दुनियां पूजा करती है, घंटी बजाती है। क्या उनको भगवान मिला है? भगवान तो egoless होने पर खुद खुश होता है। भगवान साधारण नहीं होता। अपना मन ही उनको साणारण मानने लगता है। अगर चमड़ी देखकर प्यार करते हो तो जगन्नाथ की मूर्ति तो काली होती है पर फिर भी दरबार भरा रहता है। देवी फिर भी पहनाव पहने रहती है। गोरी होती पर जगन्नाथ अपना काम करेगा, देवी अपना काम करेगी।

तुम तो चेहरा मोहरा देखकर खुश होते हो। मेरी फोटो न ल जाना। ले जाने के बाद हटाने की जुर्रत न करना नहीं तो बड़ा कष्ट आता है। हम तो तुम्हारे कष्ट से बचाव के लिये ही कहते हैं। एक ने ऐसा ही किया पहले तो हमारा बहुत भक्त था तो खूब सारी मेरी फोटो लगा ली पर जब मन खराब हुआ तो सारी फोटुएं हटा दीं। फिर ऐसा कष्ट आया कि दम घुटने लगा तो फिर मांफी मांगी और फोटो टांगी।

तुमको यदि चारों पदार्थ नहीं मिले तो समझो या तो तुम भक्त नहीं या तुमने भगवान को सही सही माना नहीं है। जब तक तुमको कमी है तब तक समझो तुम्हारी भक्ति right (सही) नहीं है। तुम हर रूप में भगवान को मानो। नम्रता में रहो तब भगवान तुमसे राजी होगा। अपना स्वभाव

अच्छा, मधुर करो। तुम्हारे दिमाग में राग और द्वेष होता है। तुम कहते हो—गुरु हमें ठुकराता है पर यह नहीं सोचते कि तुम्हारे अंदर में कमी है।

दुःखों से अगर चोट खाई न होती
तुम्हारी प्रभू! याद आई न होती।

दुःख में ही मनुष्य भगवान की, गुरु की शरण में आता है नहीं तो जब सुख में होता है तब नहीं आता। तुम्हारी तो नजर दूसरे में होती है। पिंगला की कहानी इसी बात का उदाहरण है कि भगवान तो बहुत कुछ देता पर मनुष्य का ध्यान संसार के कीचड़ में फँसा रहता है।

राजा भतृहरी योगी था। उसका गुरु जानता था इसीलिये उसने महल के दरवाजे के आगे एक त्रिशूल गाड़ दिया। पिंगला ने राजा से त्रिशूल हटवाने को कहा। गुरु ने कहा—ये मत उखाड़ो, कभी काम आयेगा। तभी जब पिंगला के व्यवहार से राजा दुःखी हुआ तो वही त्रिशूल लेकर वह बैरागी बनकर जंगल में चला गया।

गुरु अपने भक्त को सकल पदारथ दे सकता है पर मनुष्य सच्ची भक्ति नहीं करता तो कैसे पदारथ मिले? अरे! तुम्हारे बाप के पास माल भरा हो तो तुम क्यों नहीं उससे भर भर कर लेते हो लेकिन तुममें भक्ति नहीं है जो ले पाओ।

भगवान जब भर देता है तो मनुष्य फिर उसी में मगन हो जाता है और भगवान को भूल जाता है। अरे! आगे बढ़ो और मेहनत करो, भक्ति ऐसी करो कि चार पदारथ मिले पर उनको भी हटाकर आगे बढ़ो। हम तो इसीलिये पदारथ देते हैं कि मन उसी में, कमी में अटक कर भगवान को याद न कर पाए—लेकिन जरूरत के लिये देता है। मगर तुम उससे भी आगे बढ़ो, ऊपर उठो। पदारथ तो सब संसार के हैं—यहीं छूट जायेंगे। तुम भगवान की भक्ति करो। भगवान के भक्त को कोई कमी नहीं होती। कमी है यानी तू भजन सही नहीं करता। दुःख का चिंतन करता रहता है—किर किर लगी है। संसार का चिंतन करते करते भगवान को भूल जाता है। जो कुछ भगवान तुमको दे भी देता है तो भगवान को भूल जाते हो। भगवान का शुकराना करो कि तुमको खाने को दिया।

गुरु का साथ वही निभाता है जो खुद भी ईश्वरीय प्रेम में हो जैसे आत्मा अदृश्य है और देह देखने में आता है, उसी तरह वैराग्य भी देखने में नहीं आता कभी कभी ऊपर से देखने में तो वह वैरागी नहीं लगता पर अन्दर से वह घोर वैरागी होता है तो उसका साथी भी वैराग्य में आ जाता

है।

भगवान के भक्त का कभी कुछ नहीं बिगड़ता पर सच्ची भक्ति होनी चाहिये। हिरणकश्यप प्रहलाद का बाल बाँका नहीं कर सका जबकि उसने प्रहलाद को खूब सताया। इसी तरह रावण ने सीता को बहुत धमकी देता रहा पर सीताजी का कुछ नहीं कर सका क्योंकि सीताजी का पूर्ण ध्यान भगवान में था। तुम पर कोई कष्ट आयातो समझो तुम्हारी भक्ति में कमी है।

तुम त्याग करते हुए लोगों को गेरूआ वस्त्र पहने देखते हो पर वह त्यागी नहीं हैं। हम रंग–बिरंगे कपड़े पहने हुए भी अन्दर से वैराग्य में हैं।

हम तो इसीलिये ऐसा वेष बनाए हैं कि जो असली भक्त होंगे वही टिकेंगे, नहीं तो कोई खाना देखकर भाग जायेगा, कोई कपड़ा देखकर भाग जायेगा। बिरले कोई लाखों में एक होते हैं जो भगवान के भक्त होते हैं। तुम भी लाखों में सक हो जो रोज भजन करने आते हो। क्लब, सिनेमा छोड़कर आते हो भजन करने तो लाखों में एक तो हो ही।

उस भगवान को जिसको मीरा ने देखा भी नहीं था, फिर भी दीवानी हो गई और राजपाट घरबार छोड़ दिया। देखो! कितनी वफ़ादार थीं। तुम सोचो तो कि तुम कितने अहसान फरामोश हो। तुमने भगवान को अगर पकड़ा है तो पकड़े रहो–निभाओ। नहीं तो मन बोलेगा अभी पकड़ो अभी छोड़ो–ये रस्साकशी अच्छा नहीं।

तेरा मेरा ज़रिया क्या है? दृढ़ बिन्दु का ज़रिया। जब हृदय रोता है तो भगवान सुनता है।

हम कहते अन्दर मन्दिर बनाओ। आजकल सब काम में होता है। बिजली की लिफ्ट से तुरंत ऊपर चढ़ जाता है। इसी तरह जमाने के हिसाब से चलो। गेरुआ कपड़ा पहनने से क्या होगा। अन्दा से ही वैरागी हो तो अच्छा है। हम भी वैरागी हैं, तुम भी वैरागी हो, दुनियां नहीं मानती तो हम क्या करें। वैराग्य को कोई नहीं जान सकता। इतने वैराग्य से भी कुंठ नहीं। जब जन–जन में भगवान देखोगे तभी असली वैराग्य होगा। जहां द्वेष हो, वहां भगवान देखो तब हम जानें कि तुमको वैराग्य हुआ।

14.8.86

'हरि का भजे-सो-हरि का होई'

दुनियां में कितना भी भजन, पूजन, धारणा करो पर हंसी नहीं आती। दुनियां में कुछ न कुछ लगा ही रहता है। भगवान जब अंदर आ जाए तो कोई काम नहीं कर पाता। सभी लोग कहते हैं–भगवान का ध्यान नहीं लगता। हमारा ध्यान तो हटाए नहीं हटता। हमारा तो अल्मारी में ही रखा हुआ सामान नहीं दिखाई देता। हमारे अंदर भगवान इतना भर गया है। जो संत जहां पहुंचा है वहीं से बात करता है। जब तत्व का बोध होने लगता है तो मनुष्य का विवेक खुलने लगता है। जीवन में बहार आ जाती है। गुरु जब दिल से आने लगता है तो मनुष्य के दांत निकलने लगते हैं–हंसी आने लगती है और अगर भगवान में नहीं होगा तो मनुष्य कभी हंस नहीं सकता। जब दिल दिमाग प्रभु को चढ़ जाता है तो बहार आ जाती है।

मजा है जो फकीरी में,
अमीरी क्या समझ पाए।

फिक्रों से खाली होने के लिए संत की शरण में जाना पड़ता है। संत की शरण में ही मनुष्य फिक्रों से खाली हो सकता है। तुम सोचते हो जगत के सब काम हो जाएं तब फिक्र से खाली होंगे पर जगत का गोरखधंधा कभी खतम नहीं होगा। तुम अभी से भजन करो। राम नाम लेने में पैसा भी नहीं लगता और न कोई चंदा, टैक्स है। तुम सिर्फ छल.कपट छोढ़ कर भगवान को भजो तो भगवान खुश होता है। गीता में कहते हैं "शुद्ध हृदय आनन्द चित्त से मेरा ध्यान लगाता। उसके योगक्षेम का भार मैं ही स्वयं उठाता हूँ"

तुम व्यर्थ चिंता करते हो सिर्फ भगवान–भगवान करो। मनुष्य संतोष में कभी नहीं रहता।

गोधन बजधन बाजधन और रतनधन खान
जब आवे संतोषधन सब धन धूरि समान।

"बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख।" वह आदमी क्या जानता था कि आज उसको बैठी–बैठे सबेरे इतना पैसा मिल जायेगा पर भगवान को देना होता है तो कैसे देता है। बहाना था–हमारी घड़ी खो गई तो हमने दिया पर भगवान की उसपर कृपा हुई तो उसको मिला।

देखो रोज lecture होते हैं। भगवान का हृदय कुंज है। तुम कहते हो

हम अपने को भगवान क्यों कहते हैं? भगवान न हरे तो इतना ज्ञान क्या कोई मनुष्य बोल सकता है। मनुष्य पत्थर को तो भगवान मानता है पर सच्चे साकार को भगवान नहीं मानता–कितनी मुर्खता है। सारे रिश्ते नाते तो जिंदा को मानता है लेकिन भगवान को जिंदा नहीं मानता। भगवान साकार होगा तभी ज्ञान मिलता है। जिस बाप को देखा नहीं उसकी मुहब्बत क्या होगी? उसी तरह जब भगवान साकार बनकर आता है, तभी मुहब्बत होती है। कहते हैं–कलियों में राम मेरा, किरणों में राम है धरती गगत में मेरे प्रभुजी का नाम है।

भगवान साकार बनकर जब आता है तभी पता चलता है। भगवान जो चाहता वह कर देता है। एक बार गाड़ी में आग लगनेवाली थी आग लग चुकी थी पर सब बच गए क्योंकि हम भजन कर रहे थे। किसी ने बोला–कोई महान संत इसमें बैठा है तभी हम सब बच गए। भगवान बड़ी रक्षा करता है। ऐसे भगवान को हम भूल जाते हैं। उसकी महिमा हम नहीं कर पाते। मन ऐसा नीच है कि भगवान के लिये भी उल्टा उल्टा सोचने लगता है। जिस भगवान ने इतना दिया उसका शुकराना तो करना ही चाहिये।

न कर तू शिकायत न कर तू पूकार।
शुकर कर शुकर कर शुकर में गुज़ार।

जो हालत है–एसी में खुश रखकर तुमको जीना सिखाए वही तुम्हारा डाक्टर, गुरु, भगवान है। कहते हैं–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरु साक्षात परमब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः

बोलो

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्पमेव विद्या द्रविडं त्वमेव, त्वमेव सर्व मम देव देव।

भगवान को चारों ओर से नमस्कार करना चाहियें–वही तुम्हारा माता पिता है। तुम्हारे मन को बनाता है, जीवन को बनाता है, द्रव्य से भी भरता है, चिंता से मुक्त कर निर्द्वन्द्व करके खड़ा कर देता है। संन्यासी को तो चिंता होती है कि आज क्या खाएंगे पर हम तुम तो भजन भी करते हैं और अपना खाते हैं।

"प्रभु के सुमिरन दुःख न सताये।" दुःख आता भी है (क्योंकि कर्मा

के अनुसार दुःख तो आयेगा ही) पर वह तुमको लगोगा नहीं। हनुमान ने कितना कितना कठिन काम किया पर उसको किसी बात का ताप नहीं लगा क्योंकि उसके हृदय में तो राम रहता था। तुम फिर बोलोगे–हमसे मना करता है और खुद हनुमान का नाम लेता है। पर हम भी तुमसे कहते हैं हनुमान की जैसी भक्ति सीखो। तुम तो हनुमान की पूजा करने नहीं जाते बल्कि जाकर भी प्रसाद चढ़ाकर प्रसाद में मन रखते हो कि कहीं पुजारी पूरा न रख ले तो तुम्हारा ध्यान हनुमान या भगवान में कहां हुआ? देश, काल, पात्र देखकर दान करना चाहिये।

भगवान का रास्ता बड़ा कठिन है तुम्हारी वृत्ति खाली भगवान में होनी चाहिये। यहां आओ और वृत्ति कहीं और भटकाओ तो आना छोड़ दो। हम सिर्फ तुम्हारी वृत्ति देखते हैं कि वह भगवान में है या महफिल में। यहां आओ तो अकेले–अकेले स्थूलता में नहीं–सूक्ष्मता में (हृदय से अकेले) आओ। नहीं तो दो दो मिल गए तो भगवान बीच से हट जायेगा और गुरु नाराज हो जायेगा। वह मनुष्य बहुत दुष्ट है जो तुम्हारी बनी बनायी वृत्ति को भी भग कर देता है। यदि श्रद्धालु मिला तो तुम्हारी वृत्ति को चढ़ा ले जायेगा और अगर मनमुख होगा तो वह तुम्हारी चढ़ी चढ़ाई वृत्ति को नीचे उतार देगा। तुम्हारी सारी कमाई एक अश्रद्धालु से मिलने से खतम हो जायेगी। कहते हैं–'श्रद्धावान लभते ज्ञान'। इसीनिए हम तुमको सबसे मिलने से रोकते हैं। कोई भी बात हो जरूरत हो हमसे बोलो। दूसरे से बात मत करो नहीं तो तुम्हारा नुकसान होगा।

स्वार्थी मत बनो। तुम स्वार्थ से कोई भी काम करोगे तो फलीभूत नहीं होगा। निःस्वार्थ भाव से जब किसी सत्संगी (चाहे वह गरीब हो या बमीर हो) की सेवा करोगे तो यही सत्संगी तुम्हारे काम आयेंगे। जो गुरु मुख होता है वही निःस्वार्थ होता है। स्वार्थ से किया कराया काम भी खराब हो जाता है। जो जितना अधिक विश्वास और भरोसा भगवान पर रखता है, भगवान भी उतना ही उसका साथ देता है।

सदा न संग सहेलियां, सदा न काला केश'

इसलिये भगवान का भजन जल्दी जल्दी करो। दिन एक से नहीं रहते। ज्ञान तुम सबको लिखना चाहिये यह बड़ी अनमोल वाणी है। जैसे कोल्हू में तेल पेरा जाता है, उसी तरह हमारे खून से ये वाणी निकलती है। अभी जो दूर–दूर बैठे हैं उनको ये ज्ञान लिखो तो उनकी ज्ञान की प्यास बुझेगी तो कितना अच्छा होगा। ये वाणी बड़ी अनमोल है। तुमको कितना आशीर्वाद मिलेगा। जब–जब जो गुरु मिला उसका धन्यवाद करना

चाहिये तभी मनुष्य जीवन में प्रगति करता है। अंत में आकर जब सद्गुरु मिलता है तो वह तुमको परमात्मा में ले जाता है। कितना धन्यवाद है सद्गुरु को जो परमात्मा में सहज में ही ले जाता है।

गुरु तुमको बे–गम–पुर (जहां गम नहीं है) ले जाता है अतः गुरु की एक एक बात मानो तो तुमको स्वर्ग ले जाएगा। तुम्हारा जीवन कितना सँवारा है गुरु ने। गुरु के विचार से चलो। चलने का भी तरीका होना चाहिये। ज्ञान में व्यवहार में भी गुरु की बात मानकर चलोगे तो तुम्हारे ऊपर कोई उंगली नहीं उठा सकता। हमारे पास जवान जवान लड़कियां होती हैं। अगर हम सख्ती से न चले तो सत्संग बदनाम हो जाए। लेकिन और जगह बदनामी होती है पर हमारी नज़र इतनी सब तरह चलती है कि सब लड़कियां भजन करती हैं आज संसार में ढूंढ़ने जाओ तो एक भी लड़की ठीक नहीं मिलेगी। हमारे सत्संग में आनेवाली लड़की शुद्धता में रहती है। कितना अच्छा होता है। लोग बस बक बक करते हैं कि लड़की सत्संग में क्यों जाती है और यहां आकर तो और अच्छी हो गई। नम्रता सीखी, घर का काम सुन्दरता से करना सीखा तो क्या बुरा हुआ सत्संग में आना।

जो जो अमीर हो जाते हैं उनका सत्संग खतम होने लगता है। जो कष्ट में होता है वही भजन कर पाता है। जहां जहां जो बन गया वह सत्संग से ही निकल गया। तुम बोलते हो–पैसा होगा तो सत्संग करायेंगे पर पैसे से सत्संग नहीं होता। गरीबी में फिर भी सत्संग हो जाता है।

औरत को ज्ञान लगता है तो मर्द चाहे जितना बली हो–शेर हो, कट्टर हो–ज्ञान लेने लगता है। सर्कस में जैसे शेर को शेर का मालिक अपने control काबू में हंटर के बल पर रखता है और जब तक शेर सही pose करतब नहीं दिखाता, लाख उसके दहाड़ने पर हंटर से कंट्रोल में रखता उसी तरह तुम औरत लोग मर्दों को ज्ञान देने वाली हंटा मास्टर हो। सर्कस के मास्टर के हाथ में प्रेम का हंटर होता है। मर्द को भजन में श्रद्धा कराने वाली औरत ही है और अश्रद्धा करानेवाली भी औरत होती है। अतः औरत बहुत दृढ़ भजन करनेवाली होनी चाहिये।

बड़ी मुश्किल से घर में संतों के चरण पड़ते हैं अतः जो भी करना हो घर में करो।

एक बेटे बेटी के लिये इंसान रोता है। देखो! हमारा तो सारा विश्व ही बेटा बेटी है। नहीं तो सारा संसार बेटे–बेटी की चाह करता है, जलता मरता रहता है। यहां तो देखो भजन के प्रलाप से सारे विश्व के बच्चे मेरे

बच्चे बन जाते हैं। पले पलाए मिल जाते हैं।

15.8.86

'चरन' नहीं 'वचन' छुओ

औरत डरती रहती है। अच्छा काम करने के लिये भी डरती रहती है पर औरत में आत्मशक्ति होना चाहिये। कोई ऊँचा काम करने के लिये अकेले ही करना पड़ेगा। अतः अकेले चलो। चरण धोना पुरानी बात है। वचन छुओ। पुराने लोग कहते थे चरण साधू के धो–धो पीवो हम कहते हैं–वचन साधू के धो धो पीव। तुम टीका लगाते हो क्या फायदा। तुम गुरु के वचन मानो, बस पूजा हो गई। मन में पूजा करो–उठते, बैठते, सोते, जागते, हर समय राम राम करो। तुम कहते हो–घंटों पूजा करते हैं। पर क्या फायदा–चिंता तो गई नहीं। मन का मर्दन करो। जैसे पूड़ी फुलाने के लिये आटे का खूब मर्दन करना पड़ता है तब पूड़ी फूलती है।

हम सत्संग में आते ही इसीलिए हैं अपने मन का मर्दन कराने कि लिये। तुम मर्द लोग अपनी औरत को सत्संग में नहीं आने देते। अरे! अगर औरत यहां आकर मन का मर्दन कराए तो घर में भी मन का मर्दन कर पाएगी। हम भी खराब थे। गुरु ने हमारे मन का मर्दन किया तभी आज घर में स्वर्ग है। तुम फूल माला में भी बेकार पैसा फेंकते हो। वही पैसा किसी जरूरतमन्द को दो तो उसका कल्याण हो जाए। तुम तो अहंकार के मारे गुरु पूर्णिमा में मोटी मोटी माला लाते हो पर क्या फायदा? फिजुल पैसा गया। वही पैसा किसी पढ़नेवाले निर्धन विद्यार्थी को देकर सुखी करते और विद्या दान करते तो हमारी पूजा हो गई हम समझते। तुम सिर्फ मन को हमारे अर्पण करो। तुम्हारी वृत्ति सिर्फ भगवान में रहे ऐसा ही काम करो तुम्हारी वृत्ति महफिल की तरफ जाती यह हमको पसंद नहीं। कितनी भी महफिल हो–तुम्हारी वृत्ति भगवान में होनी चाहिये। तभी हम तुमसे खुश होंगे। तुम्हारी वृत्ति व्यक्तियों में रहती है। गुरु count करता रहता है कि तुम्हारी वृत्ति कहां किसमें जा रही है? हमको पसंद नहीं वृत्ति का बिखरना। वृत्ति अमूल्य है। इसी वृत्ति से ही प्रभू मिलता है। इसी वृत्ति के बिखरने से मनुष्य नरक में चला जाता है। तुम्हारी वृत्ति अगर मुझमें होगी तो गुरु का ज्ञान तुम्हें हो जायेगा। अगर हम तुम्हारी तरह अपनी वृत्ति दौड़ाए तो हमारे पास तो तुमसे ज्यादा माया, सम्मान फूल पूजा है।

तुम्हारी अखंड ब्रह्माकार वृत्ति होती तो हमें तुम अच्छे लगते हो तभी

हम तुमको ज्ञान देते हैं। चंचल वृत्ति में मनुष्य परमात्मा में नहीं टिक सकता। लोग हमसे पूछते हैं–मूर्ति पूजा खंडन क्यों करते हैं? हम पूछते हैं–तुमने मूर्ति पूजा की परन्तु तुम्हारा मन वैसे का वैसा ही है। यह वृत्ति का सवाल है। तुम परमात्मा में डूबो यही पूजा है।

परमात्मा सत्य है। इसी सत्य को तुम जानो। जब तुमको मेरे से मिलने पर परमात्मा का अनुभव होने लगे तभी हमको पकड़ना नहीं तो छोड़ देना। आनंदस्वरूप में आने पर ही शांति है, नहीं तो संतोष नहीं।

गोधन गजधन बाजिधन और रतनधन खान।
जो आवै संतोषधन सब धन धूरि समान।।

अतः संतोष में रहो। जैसे परमात्मा में आंख टिकेगी, माया आ घेरेगी और वृत्ति भंग हो जायेगी पर तुम उस माया में मत फसो। तुम्हारे हर action को गुरु जानता है। जब जब तुम्हारी नजर इधर उधर भटकने लगती है, गुरु हल्ला मचाता है क्योंकि तुम्हारी वृत्ति रूपी सीढ़ी गिर रही है। तुम्हें माया से बचाने के लिये गुरु हल्ला मचाता है। माया आए कठिन परिस्थिति भी आए। उसमें परमात्मा न छोड़ो। मन जब भी माया में जाता है गिर जाता त्रिगुणमयी माया भटकाती रहती है। सत्गुरु उसी को कहते हैं जो तुमको सत्य में टिका दे। गुरु सत्य के लिये प्यार करता है। जब तुम्हारा चित्त भी गुरु से जुड़ जाता है तो परमात्मा ज्ञज्ञन दे देता है।

जो भगवान ने दिया है उसका शुकराना मनाओ। तो तुम शुकराने में डूब जाओगे। तुम तो इस काबिल नहीं हो जितना भगवान ने दिया है। परन्तु तन शुकराना भुला देता है। तुम भगवान का शुकराना करोगे तो तुम्हारी आंखें आनन्द से भर जायेंगी।

तुम्हारे रोम रोम में राम होना चाहिये। हम मूर्तिपूजा कब खंडन करते हैं? अरे भाई! जन जन में भगवान की मूर्ति दिखाकर जन जन की पूजा परमात्मा समझकर करो परन्तु उनमें अटको नहीं।

रमता राम रमो मोरे जीया
ज्ञानी ने गुप्त खजाना पा लिया।

प्रभू सब जगह राम रूप में रमा है। हमने अपने को ही सिर्फ रात नहीं कहा, तुमको भी हम राम समझते हैं पर तुम मानते नहीं कहते हो–वे तो अपने को ही भगवान कहता है। हमने जान लिया है। तुम जानते नहीं अपने आप को राम मानते ही नहीं। बार बार देह मे आ जाते हो।

जहां हमारे में श्रद्धा कम होती है, वहां हम नहीं जाते हैं–ये बोला भी गया है। हमारा ज्ञान छिपे रहने का है। ये तो हमारे इतने भक्त न जाने कहां से जान जानकर आ गए हैं। हम तो रंग बिरंगे कपड़े इसीलिये पहनते हैं ताकि दुनियां हमको न जाने।

19.8.86

रक्षाबन्धन

गुरु की एक एक बात तुम लोग मान रहे हो तो चज रहे हो। गुरु की एक एक बात मानने पर ही ज्ञान प्राप्त होता है। भले ही मन न मानने दे। मन की बात न मानकर तुम चलते जाओ तो ही अच्छा होता है। ज्ञान जब तक प्रैक्टिकल में नहीं उतरता फलीभूत नहीं होता। बोलने का ज्ञान ठीक नहीं है। ज्ञान सुनकर उस पर चलने से ठीक होगा।

खाली भगवान को माने तभी कृमा दिखाई पड़ती है। राजा जंगल में भाग जाते थे क्योंकि दुनियां में बहुत झमेला झंझट है। ज्ञान में एकाग्रता होनी चाहिये। पुराने ऋषि–महात्मा जगत के शोर सी ही भागते थे ज्ञान सलामत रखने के लिये जगत से छिपकर रहना चाहिये। जो ज्ञान लेना चाहते उसे पूरी तरह से अंदर (अंतर्मुखी) जाना चाहिये। बाहर बाहर (बहिर्मुखी) भागने से ज्ञान नहीं होता। कर कर से भी दिमाग में एक बोझा होता है। क्या करें क्या न करें? ऐसा छोड़ कर दृढ़ निश्चय करना चाहिये।

भगवान सच्चाई जानता है, देखता है, घबराना नहीं चाहिये। घरेलू परिस्थितियों से। भगवान के भजन में सत्यता ही एक प्रमुख चीज़ है। जब सत्यता होती है तो सारे बंधनों से अपने आप मुक्ति मिल जाती है। बन्धन भी परमात्मा अपने आप दूर करता है।

संकल्प में बड़ी ताकत है। गुरु के लिये कभी उल्टा संकल्प नहीं करना चाहिये। अपने स्वार्थ के लिये गुरु के लिये उल्टा संकल्प करना बहुत बड़ा पाप है। गुरु कितने लोगों की डूबती हुई नैया को बचाता है और तुम उसके लिये उल्टा–उल्टा संकल्प करके पाप कमाते हो।

माया में जहां मन लगाओ, जिस व्यक्ति सक मन लगाओ उसी से उल्टा मिलता है। गुरु की एक एक बात में राज होता है। हम जो भी बात कहते हैं। हम जो भी बात कहते हैं उसमें राज होता है, अतः उसका विरोध न करो। जो कहें वह तुरंत कर दो नहीं तो बड़ा नुकसान होता है।

अपने स्वार्थ से ज्ञानी को पकड़ना नहीं चाहिये। सब संकल्प छोड़ो–ज्ञानी को free रखो। फिर ज्ञानी अपने जी से जो चाहे करे। ज्ञानी को अपने स्परर्थी संकल्प से न रोको।

जो गुरु के लिये तन मन प्राण छोड़ता है तो गुरु भी उसको जीवन देगा। जो यहां दिया जाता है बाप मिलता है। गुरु पर इतना सौंपने वाला कोई मिले भी तो।

जो जीवन देता है, उसको भी जीवन मिलता है। उसका हक बनता है। जो जीवन देगा उसका हक बनता है। जो जीवन देगा उसको जीवन अवश्य मिलेगा। मनुष्य अब अपनी जरूरत होती है तब तो गुरु को छोड़कर चला जाता है, तब तो गुरु के बिना रह लेता है परन्तु जब गुरु कहता है–हम बाहर जा रहे हैं, हमारा सत्संग संभालना–बत नहीं रुकता।

जब मनुष्य भगवद् भाव में नहीं होता है तो उसके रहने में हमको कष्ट होता है। अतरु हम फिर उसको नहीं पसंद करते। उसको अपने से दूर भेज देते हैं।

न हम घर छोड़ते हैं, न छुड़ाते हैं। एक दिन हम सोच रहे थे कि सन्यास भी ले लें तो वहां जहां जाकर रहेंगे वहां भी तो मनवाले रहेंगे। यहां का राग द्वेष छोड़ा और वहां भी वही राग द्वेष किया तो क्या फायदा। अतः सन्यास बेकार है। ज्ञान के द्वारा घर में रहते ही सन्यास हो सकता है।

जो मनुष्य जैसा होता है उसको दूसरा भी वैसा ही मिलता है। जिस लायक जो होता है, उसको वैसा ही साथी मिल जाता है। रामवाला होगा तो दूसरा भी रामवाला मिलेगा। द्वेषवाला होगा तो दूसरा भी द्वेषवाला मिलेगा।

प्यार अकड़ से नहीं मिलता। जो झुकेगा उसीको प्यार मिलेगा। एक बच्चे के आगे भी झुकना पड़ता है।

प्रश्न क्या लड़कर प्यार मिल सकता है?

उत्तर लड़कर तो मिलता हुआ प्यार भी छूट जाता है।

कर्म का, सेवा का अहंकार भी मनुष्य को होता है। तब मनुष्य अहंकार से गुरु से भी लड़ने लगता है। गुरु कुछ नहीं करता–सब nature ही करती है।

गुरु के पास रहना कठिन है क्योंकि जो गुरु के पास रहता है उसको पल–पल में विक्षेपता आती है। पर न रहने वाले से रहनेवाला महान होता है। पर उसको गुरु की सेवा कर्म करते हुए भी अहंकार न आए–यह बहुत बड़ी बात है। जो मेरे पास रहता है उसको बेचारे को सबकी बहुत सुननी भी पड़ती है और वह सुनता भी है। यह तो उसकी महानता है। तुम लोग उसको (जो गुरु के पास रहता है) बुरा न समझना।

गुरु के पास कठिनाइयां तो ज्यादा है ही और वह उनको सह भी रहा है तो उसमें वह return न मांगे तो बड़ा अच्छा है क्योंकि प्यार करनेवाला अगर return (बदले में) मांगता है तो वह प्यार–प्यार नहीं मज़दूरी है। अतः यह आवश्यक है कि सेवा का return त मांगकर खाली निष्काम सेवा करे।

गुरु के कर्म का मर्म समझना बहुत कठिन है। गुरु से जिसका जितना direct कनेक्शन होता है, गुरु उससे उतना ही प्यार करता है। जो गुरु की शरणागत होता है उसको Nature प्रकृति द्वारा भी प्यार मिलेगा। गुरु अगर किसी को अधिक प्यार करता है तो दूसरे को जलना नहीं चाहिये। हमारे भक्तों से अगर कोई जलन करेगा तो हमको अच्छा नहीं लगेगा।

जिससे तुमको द्वेष हो, उसी से तुम प्यार करो–यह बहुत ऊँची भक्ति है। जो द्वेष करता है उसको प्यार करके पानी पानी करो तो अच्छा है। हमारे गुरु जी भी इस बात से बहुत खुश होते थे जब हम किसी द्वेष वाले से ही जाकर झुक कर बात करते थे। जब किसी की बुराई याद आये तो उसकी अच्छाइयां याद करो तो तुम्हारा द्वेष अपने आप ही दूर हो जायेगा। मन का यह दुष्ट स्वभाव है कि किसी में हज़ार अच्छाइयां होंगी पर वह नहीं देखेगा बल्कि बुराई अगर एक भी होगी तो ढूंढ़कर निकालेगा।

जब जो होता है, उसको अच्छा समझो, जो भी हालत है वह हमारी अच्छाई के लिये है। अगर अच्छा ही अच्छा होगा तो मनुष्य उसीमें फँस जायेगा। मन में लाल है, पर ऐंठने के कारण जान नहीं माना है। मन बड़ा दुष्ट है। मन को महफिल अच्छी लगती है। कोई अकेले में बोलता है तो अच्छा नहीं लगता। महफिल में लीला होती है अतः महफिल अच्छी है पर भगवान की लीला अकेले में ही दिखाई देती है।

मन बड़ा बहुरूपिया है। उल्टी भी बताता है और सीधी भी बताता है। चाहे बेटा बेटी हो; चाहे मां बाप हों, गुरु की बात को ऊपर रखना चाहिये। गुरु के पास रहकर तहजीब होनी चाहिये कि गुरु के पास कब जाना है,

कब नहीं जाना है। गुरु की आज्ञा लिये बिना मत आओ।

गुरु तब तक किसी को नहीं भगाता जब तक उसका चित्त भगवान में रहता है, जिस दिन चित्त इधर–उधर भटकेगा, हम उसे तुरंत भगा देंगे और गाली भी देंगे। हम जिस बात के लिये किसी को गाली देते हैं वह कमी उसमें होती है अतः मेरी बात को झट हां कर दो। अपनी टांग न अड़ओ।

20.8.86

"तन-मन-का-मूलधन

इतने दिन भजन नहीं कर पाए उसका ख्याल किया कि क्यों नहीं कर पाए। इतने दिन सत्संग नहीं मिला, उसका नफ़ा नुकसान तुमको पता चला। अपनी गल्ती सोचो कि तुमको क्यों इतने दिन सत्संग नहीं मिला? क्यों इतने दिल काला पानी मिला? गलती तो मनुष्य से होती ही है और उसका मानना ही अच्छा होता है। कभी कोई कर्म हमने क्यों किया, यह तो तुम नहीं जानते कि हमने किस मर्म से किया। बस तुम देखकर विपरीत भावना करने लगते हो। गुरु के घरवालों कों भी तुम कम मत समझो।

एक संत था जो गुरु के घर की गली के कुत्ते को भी नमस्कार करता था क्योंकि गुरु महान है तो उसके घर में वही जन्म लेगा जिसने पूर्व जन्म में तपस्या की होगी। अतः तुमको गुरु के घर में रहनेवाले हर एक सम्बन्धी से प्यार इज्जत से रहना चाहिये। गुरु पर कोई कष्ट आता है तो उस टाइम तुम चुप रहते हो–ब्रह्म बन जाते हो। तुम गुरु की क्या इज्जत करते हो? भगवान भगवान हैं। तुम समझते नहीं हो। तुम अच्छा करोगे तो Nature किये गए कर्म का फल अवश्य देती है। Nature किसी को नहीं छोड़ती। अच्छाई बुराई का फल Nature से अवश्य मिलता है। कोई हमसे विमुख होता है तो Nature भी उसका टिकट कटा देती है।

"एक डाल पर दो पंछी एक गुरु एक चेला, गुरु की करनी गुरु भरेगा चेले की करनी चेला।" अतः अपना कर्म ठीक करो। मनुष्य ज्ञान बघारता तो बहुत है पर दुःख जरा सा भी आएगा कि घबरा जाता है। गुरु के पास सर के बल आना चाहिये। Nothing बनकर ही गुरु के पास आया जाता है। तुम तो अहंकार में आते हो तो गुरु तुमसें कभी भी खुश नहीं होता। मनुष्य इतना मूर्ख है कि गुरु के सामने भी अहंकार में रहता है। अगर कोई "कुछ" बन कर आता है तो गुरु उससे खुश नहीं होता। गुरु के सामने

मटियामेट होना पड़ता है तब भगवान हृदय में आता है। आनन्द स्वरूप भगवान बहुत तप से हृदय के अन्दर घुसता है। वह मुर्ख नहीं है कि तुम्हारे हृदय में तो कूड़ा, कर्कट, गंदगी भरी हो और वह ऐसे हृदय में आए। उसके आने के लिये हृदय शुद्ध पवित्र और निर्मल होना चाहिये।

हर एक को कर्म का भोग भोगना ही पड़ता है। तुम अपनी दुष्टता तो छिपाए रहते हो परन्तु दूसरे की बुराई का ढिढोरा पीटते हो। तुम बस इतना बोलो–

जात ज नाता कर्म न जाता, मर्म न जाना तेरी,
सबसे बड़ा सतगुरु मेरा जिन कल राखी मेरी।

अतः गुरु के कर्म में न फंसो, बस तुम भगवान–भगवान करो। जबतक तुम अपने मन को नहीं बनाते, हम गाली देते हैं। तुमको आना हो तो आओ–हमारा तो गाली ही भजन है। जब तुम्हारा मन आनन्दस्वरूप हो जायेगा तभी हम चुप होंगे। हम चाहे जितनी गाली दें, तुम हमको न छोड़ो तो हम तुमको महानता देंगे। ये काम हरी ने किया है। हम तो मनुष्य का भगवत्प्रेम देखते हैं।

दादा और हरी दोनों भगवान में हैं। गाली देने पर भी लगे रहे। अतः इनकी महानता है। तुम यहां बैठकर किसी से direct बात करोगे और अगर कोई गरीब आएगा तो उससे बात नहीं करोगे। तुम स्वार्थी लालची हो, तभी जिससे मतलब होता है–गुरु को भी छोड़कर उससे बात करने लगते हो। पर यह जान लेना तुम्कारा बेड़ा डूब जायेगा। तुमको कुछ बोलना या पूछना हो तो गुरु से direct बात करो। कभी दो जने आपस में direct (सीधे) कनेक्शन मत करो। गुरु से direct कनेक्शन होगा तो वह तुमको ज्ञान में ऊपर चढ़ा लेगा नहीं तो जब तुम दूसरे से बात करोगे तो तुम्हारी भक्ति नष्ट हो जाएगी। अतः गुरु के माध्यम से ही किसी से बात करो।

जो केवल भगवान के लिये ही आता है वह टिक जाता है और यहां आते ही जिसको विश्वास आ जाता है भगवान पर तो उसका तुरंत कल्याण हो जाता है। तुम तो बैल की तरह धीरे धीरे चलते हो। जो जो भी पतन में गए उन्होंने सबने गुरु को छोड़कर किसी दूसरे से direct कनेक्शन किया है।

हमको अपनी ज्यादा प्रसिद्धि अच्छी नहीं लगती। तुम्हारे यहां कभी भी जब बड़ा function हो, हमें न बुलाना। हमको अपनी प्रसिद्धि पसंद नहीं है। हमें तुमको ज्ञान देना होगा तो हम आ जायेंगे। यह सब झंझट है। मेरा

काम ब्रह्मज्ञान देना है। हम तुमको चुपके से ज्ञान दे दें और तुम सुन लो, अच्छा है। एक बार नारायणदत्त तिवारी की बीबी ने कुछ चमत्कार देखा तो खुश होर उसने हमें बुलाया पर हम नहीं गए। हमें वही आदमी जाने और आधा भगवान तो हम वहां नहीं जा पाते। महफिल में जाकर भाषण देना मुझको पसंद नहीं है। जिसको मौ ज्ञान से प्रेम होगा वह खुद चला आएगा। मान से कुछ नहीं होता। चैतन्य महाप्रभु बड़ा महान था। एक ने सोचा इससे हम ज्ञान ले लें तो बड़ी प्रसिद्धि मिल जायेगी तो चैतन्य महाप्रभु रात ही रात भाग गए। भजन छिपकर ही होता है। जितना छिपा रहे, जितना काला टीका लगा रहे, उतना ही अच्छा है। कहते हैं–

"मुंह काला कर लोक दिखावे,

तब लालन को लाल कहावे।"

इस लाल को छिपाकर रखना पड़ता है जग तो बवाल है, झंझट है। मुन्नी भी कह रही थी कि अब आप पूर्ण ज्ञानी हैं। आपको घर छोड़कर भ्रमण करना चाहिये क्योंकि आपके ज्ञान की औरों को, अबलाओं को बहुत ज़रूरत है अतः घर छोड़कर निकल जाना चाहिये। बात तो सही है पर बाबूजी का भी हम पर अहसान है। उन्होंने मुझे भजन करने दिया। घर बार सबको धर्मशाला बना दिया। अतः हम उनकी जो कुछ बची जिम्मेदारी है वह हम पूरा करे बिना नहीं जायेंगे। बात मुन्नी की बिल्कुल सही है क्योंकि वह देखती है कि मुझो पूर्ण ज्ञान मिल चुका है अतः माया के बवाल से मुक्ति ले लूं हमारी जिम्मेदारी पूरी हो जायेगी तो हम खुद चले जायेंगे।

कभी भी बैठो तो सावधानी से बैठो। किसी को touch मत करो नहीं तो तुम्हारी वृत्ति भंग हो जायेगी तुमको अछूत बनकर बैठना चाहिये। अब बताओ, जब हम अपना मान नहीं चाहते तो तुम्कारा झूठा मान कैसे होने देंगे। जिसको खाली भनज करना हो, शुद्ध चित्त रखकर उस प्रभु के प्यार का रस पीना हो, वही मेरे पास आए। मेरे पास राम राम करता हुआ आए। तुम काम काम लेकर आते हो। तुम क्या बेटा बेटी दिन रात करते रहते हो। तुमने मुझे बहुत सताया है। तुम किसी भगवत्प्रेमी की वृत्ति को भी हरा देते हो। जनम–जनम का भटका हुआ राही परमात्मा की राह में लग जाए–ऐसा प्रयत्न हर एक को चढ़ाने के लिये करो। जो प्रभु नाम के लिये आया है वह यहां आकर फिर कभी नहीं जायेगा। गरीब एक बार धन पाकर चला भी जायेगा पर अमीर तो सारा सुख देखकर जलकर आया है। वह तो फिर कभी नहीं जायेगा।

तुम पिक्चर देखने जाते हो और उसी औरत का चिंतन करने लगते हो इसीलिये हम कहते हैं पिक्चर मत जाओ। पिक्चर देखना उसी को allow है जो पिक्चर देखकर भी भूल जाए। जो आत्मा से प्यार करता है वही अच्छा होता है। जो मांस (शरीर) से प्यार करता है वह जहन्नुम में जाता है। मांस से क्या प्यार करना? जो मांस मल मुत्र से भरा गटर है। मन शेर है। शेर को सवा सेर गुरु न मिले तो तन न जाने किसको किसको सताए।

कितना झंझट है। हम तो चाहते हैं कहीं गुफा में जाकर छिप जाएं। हमको तो अब संसार का बवाल अच्छा नहीं लगता। हम अजन्मा अविनाशी हैं। न जन्में हैं न मरे हैं, न जन्त लेते हैं, न मरते हैं, हमारा जन्म दिन क्या मनाना? ये बाहरी पूजा पाठ न जाननेवाला भी जान जाता है क्या फायदा है जनाने से। हां! जिसको श्रद्धा भक्ति हो वह हमारे पास आए।

हमसे घरबार मकान की बात क्या करते हो? बिना मतलब न हमसे बात करो। हमारे पास ज्ञान है, ज्ञान की बात करो। मेरा ज्ञान अन्दर से निकलता है तो छुप जायेगा। जो अन्दर से निकलता हैद्वज्ञान वही छपता है। दूसरे की नकल को छपाने का क्या लाभ? हम ज्ञान अन्दर से बोलते हैं। देखो तुम्हारा अनूप जलोटा पहले तो भजन खाली गाता था तो उसकी आवाज में वह मधुरता, वह रस नहीं था परन्तु जब गाते गाते उसमें भक्ति भी पैदा हो गई तो देखो आज प्रभु के भजनों के प्रताप से वह बड़ा गायक बन गया। आज उसके भजन सुनकर आनन्द आता है। वाणी तब मीठी होती है जब प्रभु के प्रेम का प्याला अन्दा चला जाता है। प्रेम के रस से री हृदय से वाणी से मिठास निकलती है। जब हम परमात्मा को पीते हैं तभी अन्दर से मिठास निकलती है। पंडितों की पुस्तकों में जो पता पावे को नथों। जो पुस्तक में लिखा होता है वह पंडित सिर्फ बांच देते हैं। पर जो पंडित उस ईश्वर से प्यार करता होगा उसी की वाणी में मिठास होगी। उससे तुमको भी ज्ञान सुनने में प्रभु का आनन्द अन्दर भर जाएगा।

गीता में साफ लिखा है कि ज्ञानी मेरा ही स्वरूप है। उसमें और मुझमें कोई भेद नहीं है। क्योंकि अद्वैत बुद्धि होती है। अद्वैत ब्रह्म में आराम है। इसीलिये समझदार व्यक्ति अद्वैत में मन लगाता है। अतः साधू के दर्शन करो। दर्शन साधू के साहब आवें याद। खाली दर्शन सेक ही साहब नहीं याद आता उसके वचन को भी मानना पड़ता है। जब भगवान खुश होकर भक्त की इच्छा पूरी करता है, पदवी देता है तो तुम खुश हो जाओ।

तुम्हारे बड़ेपन को डाउन करने के लिये गुरु बालक कहता है। तुम

उमर से बड़ा छोटा देखते हो पर हमारे यहां ज्ञान के हिसाब से पदवी मिलती है। जो ज्ञान में आए हैं वह बड़ा है उसको ऊँची पदवी दो। चाहे वह छोटा हो चाहे बड़ा।

गुरु चाहे तो काल को भी हटा कर फेंक दे। तुम मानो! गुरु जब तक संकल्प नहीं करेगा तब तक उसके पास काल भी नहीं आ पाएगा। गुरु का ऐसा योगबल होता है। काल भी बड़ा चालाक है। बिल्ली की तरह छिप कर आता है। जो बूढ़ा हो और प्यार से ज्ञान सुनता हो तो उसको हम जल्दी मरने नहीं देते। शंकर को जब पार्वती छोड़कर चली गई चिता में तो शंकर इसलिये नहीं रोते थे कि उसकी पार्वती चली गई–अब कौन उसका मनोरंजन करेगा–बल्कि वह इसलिये रोते थे कि अब राम की गाथा कौन सुनेगा? तुम लोग तो अपनी बुद्धि से कहते हो कि शंकर भी तो अपनी स्त्री से बिछड़कर रोए।

लोग तीरथ करने जाते हैं। कहते हैं ये छोड़ा वा छोड़ा पर कहां छोड़ते हैं। हम दिन रात रगड़ करते हैं, ज्ञान में रहते हैं तब तो विकार जाते नहीं। ये एक मिनट में छोड़े आए।

हमारी सास ने कहा "हम बद्रीनाथ में जाकर क्रोध छोड़ आए" तो हमको बहुत आश्चर्य हुआ कि हम तो दिन रात ज्ञान में रहते हैं तब तो क्रोध जाता नहीं–भले ही कम हो गया हो–तो इन्होंने कैसे एक मिनट में छोड़ दिया। हरिनाम बड़ा सुखदाई ना लागे पैसा पाई।" हरिनाम मैं तो गुण हैं ही।

राखे राम तो मारे कौन?

मारे राम तो राखे कौन?

अतः तुम निश्चिंत रहो। जो छोटे दायरे में रहता है, वह उसी का काम करता है पर जब वह बड़े दायरे में आ जाता है तो तुम बोलो कि जज तो है पर घर का काम भी करे तो वह कैसे करेगा। वैसे ही हम अब ज्ञान के दायरे में जो बहुत बड़ा है–चले गए हैं तो छोटा मोटा काम कैसे करें। इसीलिये हमारे जितने कर्तव्य कर्म हैं, सत्संग से पहले ही करके आते हैं। देखो यहां आकर हम ज्ञान में इतने लीन हो जाते हैं कि फिर यहां से जाकर काम नहीं कर पाते। तुम यह न समझना कि हम घर के काम नहीं करते। हां! समय देखकर जल्दी जल्दी कर लेते हैं।

21.8.86

प्रदर्शन नहीं 'दर्शन'

जब भगवान में मन लगता है तो सबका कल्याण होता है। हम भी 'जब ज्ञान में जाते थे तो बहुत कष्ट उठाते थें, पसीना बहाते थे, तो देखो आज मारा मारी होती है कि हम अपनी स्कूटर पर बैठाएं, कोई कहता है हम अपनी।

पूर्ण भगवद्भाव के बिना काम नहीं होता। भगवान न्याय वाले हैं, न्याय में होगा, भगवान भी उसका साथ देता है। गीता भी सत्य न्याय पर बनी है। कैसी भी महफिल हो, भगवान को महफिल में आराम नहीं आता। गुरु के बिना वह भगवत्प्रेम में नहीं आ पाता। तुम हमको महेफल में मत बुलाओ। देखो! हम शादी में भी मजबूरन जाते हैं। क्योंकि भक्त हमारा ध्यान लगाए रहता है। हम जाना नहीं चाहते हुए भी चले जाते हैं। तड़प के बिना हम नहीं आते–चाहे सकार में आएं चाहे सपने में।

जैसी भगवान की इंच्छा होती है, वैसा ही होता है। हृदय का लगावा जिसका मुझसे होता है, वह मेरे न चाहते हुए भी मुझसे काम करा लेता है। प्रभुजी का ऐसा ही लगाव है मुझसे वह मुझको छोड़ता ही नहीं।

22.8.86

आज पूज्य गुरुजी का पदार्पण सत्संग में नहीं हुआ अतः हम लोग गुरु दर्शन से वंचित रह गए। इसमें भी हमारा दोष है। भक्त भगवान के दर्शन को आतुर हो और भगवान न आए–ऐसा हो नहीं सकता। गुरुजी सच ही कहते हैं कि प्रभु का दर्शन तभी नहीं होता है जब भक्त के मन में विकार होते हैं। अतः हम सबको प्रभू के दर्शन की तड़प को और बढ़ना चाहिये। यही सोचना चाहिये कि ऐसी भक्ति बढ़ाएं कि प्रभु दर्शन देने को विवश हो जाएं। भक्त वत्सल भगवान को कहते हैं, यह अकाट्य सत्य है पर हम हर समय भक्त नहीं होते। हमारा मन कभी तो पूर्ण भक्ति में होता है तो कभी पूर्ण अभक्त बन जाता है। यह कैसी भक्ति? यह नशा कैसा कि कभी चढ़े कभी उतरे। भगवान का नशा हमको ऐसा होना चाहिये जो कभी न उतरे। गुरुजी कहते हैं

नाम खुमारी नानका,
चढ़ी रहे दिन रैन।

गुरु इसी नाम में मस्त रहता है। उसी भगवद् नशे में डूबा रहता है

तभी हमको ज्ञान देता है। मनुष्य खुद देह में होते हैं, तो गुरु को भी देह में समझते हैं तभी गुरु के भगवान होने में शंका करते हैं। अर्जुन भी श्रीकृष्ण को देह में देखकर चिंता करता रहा पर जब कृष्ण ने कहा "तु खुद ही परमात्मास्वरूप है", तब अर्जुन ने अपने को पहचाना तभी वह श्रीकृष्ण को भगवान पहचानकर नमस्कार करता है। सत्य केवल आत्मा है। लोग खुद उपाधि में रहते हैं तो हमको भी उपाधि में देखते हैं। गुरु को निराकार निरंजन माने तो अच्छा है। तुम पत्थर को तो देवी माता मानते हो, जो तुम्हारा विकार नाश नहीं करता। तुम्हारा मन तो रोज महिषासुर की तरह रूप दिखाता है। गुरु तुम्हारे मन का मर्दन करता है तो तुम गुरु को भगवान नहीं मानते।

जगत की दशा ऐसी है कि ठीक करते करते आदमी बूढ़ा हो जाता है पर जगत की हालत नहीं सुधरती। संतोषी माता का व्रत करते हो। पर क्या संतोष मिला तुमको?

तुम खुद को भी वही भगवद्स्वरूप मानोगे तभी तुम गुरु को भी पहचानोगे कि वह साक्षात् भगवान है। हमने अपने को पहचान लिया है, तुम अपने को नहीं पहचान पाया है। तुमको तुम्हारी मां ने नामरूप बताया, तुम वह सत्य मान गए पर गुरु कहता है 'तू आत्मा है, आनन्दस्वरूप है' पर तू नहीं मानता। अरे! तू खुद भगवान है। नामरूप का अभ्यास पक्का हो जाने के कारण तू अपने को नहीं पहचान पा रहा है। हमने अपने को पहचान लिया है अतः अगर हम अपने को भगवान कहते हैं तो क्या गलत है।

जो एक परमात्मा को जान लेता है उसका सारा काम अपने आप होता है। उसको सोचना नहीं पड़ता कि क्या करें क्या न करें?

संत की महिमा वेद न जानी। कहते हैं संतो के ऊपर सब छोड़ दो तो खुद जब संत सब काम करेगा तो तुम्हारा अच्छा होगा। तुम कहते हो हमने यह नहीं किया वह नहीं किया। पर हम परमात्मा के सहारे पर रहते हैं तो हमारा सब काम परमात्मा करता है। उसके हाथ से जो होगा वह अच्छा होगा।

जब गुरु मिलता है तो हंमसे अनायास भजन करा लेता है। तुम भजन करनेवाले नहीं थे। तुमको कोई जबरदस्ती यहां ले आया तो गुरु की नजर में कैद हो जाते हो। जबरदस्ती गुरु ने तुमको खराब कर दिया। यह कितने भग्य की बात है जो भगवद्भाव में आता है फिर वह गुरु के कर्म के नहीं

जहां तक जाती दृष्टी है वहां तक फैली सृष्टी है
सर्व मम रूप है, सर्व मम रूप है।

मैं हूं सब में और न कोई
मेरी ज्योति सब घट परगट होई
ऐसा अदभुत रूप जाने का जाने कोई - कोई भूप। सर्व मम रूप...

मुझसे उत्पन्न है संसारा चन्दा सूरज विद्युत तारा
जगमगाती सृष्टी है सारी आत्म दृष्टी है। सर्व मम रूप...

इन्द्र जाली जाल बिछाया ईश जीव बन देखन आया
आप से आप ही भूला माया के भरम में भूला। सर्व मम रूप

देखता है। तुम मिश्री को सफेद मानकर शुद्ध समझकर खाते हो। वर वह जिस गुड़ से बनती है उसमें कितनी मक्खियां लगती हैं उसको क्या तुमने देखा है? तुम तो समझते हो, यह सफेद कपड़ा पहनता है इसी को ज्ञान है पर उनके अंदर तो पता चलेगा उनके दोष। हम तो हर तरह का कपड़ा पहनते हैं, खाते हैं पर तुमको ज्ञान देते हैं। तुम बाहरी बातों से प्रभावित होते हो।

तुम साधु को ही महान समझते हो पर हम गृहस्थी वाले कितने कष्ट सहते हैं, फिर भी ज्ञान का चिंतन करते हैं, ज्ञान देते हैं। तुम्हारा मन भूत है। मन भूत को संकल्प द्वारा गुरु को दे दो, भगवान अपने योगबल से तुम्हारी रक्षा करता है अर्जुन का जला हुआ रथ भी इसीलिये चल रहा था क्योंकि भगवान, उसके रथपर, चक्र लेकर बैठे थे।

जब भगवान सामने आता है तब मनुष्य नहीं मानता। जब वह चला जाता है तब उसकी महिमा गाते हैं। क्राइस्ट को कितना कष्ट दिया गया, तब उसकी पूजा नहीं की गई, जब वह चला गया तब उसकी महिमा गाते हैं। मीरा जब जिंदा थी तब गाली देते थे उसे, जब चली गई तो उसके भजन गाते हैं। कृष्ण रासलीला करते थे तो उसको उस समय गाली देते थे लोग और भगवान नहीं मानते थें। आज उसी कृष्ण की झांकी हर वर्ष सजाते हैं। कितने मूर्ख लोग हैं। किसी श्री संत, परमात्मा को चैन से जीने नहीं देते और जब वह चला जाता है तो उसकी पूजा करते हैं।

आज जो तुमको बना रहा है, तुम्हारे हृदय में जो भूत भरे हैं उनका निकाल रहा है, उसको तो मानते नहीं। पुराने राम, कृष्ण, देवी को मानते हो। तुम्हारे भूत–पिशाच अगर पूजा से गए हों तो पूजा करो नहीं तो पूजा छोड़ो। पहले परमात्मा की नींव डालो। जैसे अर्जुन के अंदर कृष्ण ने भगवान की नींव डाली, उसी नींव पर पूरी मंजिल मरमात्मभाव की तैयार हो गई। जब तक महाभारत खतम हुई तब तक अर्जुन की परमात्मा की मंजिल तैयार हो गई।

जब तक हमारे जीवन में परिवर्तन नहीं आता तब तक हमारी पूजा, अर्चना व्यर्थ है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश सभी हैं परन्तु तुम्हारे मन–भूत को तो किसी ने नहीं मारा। जो हालत पर आराम दिला दे वही भगवान है। आज तक कितने अखंडानंद का ज्ञान सुना, 1008, 1020 सबका–पर आराम नहीं आया पर जब गुरु मिला तब मन ठीक हुआ।

जब सत्गुरु का दर्शन हुआ तब मन शांत हुआ। दर्शन होवें साधु के

साहब आवें याद। जिसने हमारा मन स्थिर किया, जिसने हमारे चंचल मन में हरिमूर्ति ठहराई, वह भगवान है, पूरा भगवान है। जब कोई तुमसे पूछता है कि तुम्हारा भगवान कहां है? तो तुम अपने गुरु को भगवान ठीक से नहीं बता पाते। तुमको जो अनुभव हुआ है, वही बताना है। अपनी तरफ से कुछ बना चलाकर नहीं बोलना है।

तुम मूर्ख हो। भगवान का जन्म दिन मनाते हो। अरे वह न जन्मता है, न मरता है तो क्या जन्म दिन मनाना। तुम कहते हो इंसान भगवान नहीं हो सकता। अरे हम कहते हैं इन्सान ही भगवान होता है क्योंकि अगर भगवान साकार बनकर न आए तो तुम्हारे मन भूत को कौन मारेगा? जब भगवान इनसान रूप में आया तब लाखों जीवों का उसने उद्धार किया।

जब राम (साकार) के रूप में आया, कितनों का उद्धार किसा, कृष्ण के रूप में आया तो बहुतेरों का उद्धार किया। क्राइस्ट के रूप में आया तो उसने भाग भाग कर लागों का कल्याण किया। इन संतों ने अपना चैन, आराम कुछ नहीं देखा। वे सबका कल्याण करते रहे। डाक्टर इस तरह का होगा तभी तुम्हारी बिमारी निकालेगा। चेतन भगवान ही तुम्हारे अंदर निराकार निरंजन की स्थापना करके खुद फिर चला जाता है।

तुम एक ऐसा प्रश्न छोड़ो कि उसी पर ज्ञान चल जाए। जल्दी जल्दी ज्ञान लो, चले जाओ। हम कहते हैं तुम भी भगवान हो, इसपर सिर्च करो। जब तुम खुद को आत्मा जानोगे तो तुमको पता चल जायेगा कि तुम्हारा भी वही स्वरूप है। हम पूछते हैं–घर में सत्संग होता है या मन में। सत्संग मन में होता है, श्रद्धा में सत्संग होता है। वह कमरे में आराम से नहीं होता है। हम तो पैरे में भी सत्संग करते हैं। तुम सत्संग बातों से कराते हो। सत्संग प्यार से होता है। तुममें सत्संग के लिए प्यास हो तो हम खुद बिना बुलाए चले आते हैं। सत्संग स्वार्थ से नहीं होता है। सत्संग नजरों से होता है। बुलाने से पहले सोचो कि तुम्हारी नज़रें सत्संग के लिये बिछी हैं। प्यास होगी तो तुमको सत्संग के लिये बुलाना नहीं पड़ेगा। तुम कहते हो, हम बुलाते हैं, भगवान हमारे घर सत्संग नहीं करते। अरे! पहले अपने दिल से पूछो कि तुमको सत्संग की उतनी प्यास है।

हमारा सत्संग कोई बोझा नहीं है। हम हल्के हैं। चिड़िया की तरह मर्जी हो हम इकट्ठा हो जाएं, मर्जी हो हम अलग अलग जाएं। हमने सब फ्री रखा है। हमारे यहां कोई बंधन नहीं है। मन हो तो आओ और मन हो न आओ। ऐसा सत्संग आरामवाला है हमारा।

भजन मकान से नहीं होता है। तुम बोलोगे हमारा बड़ा हाल है, आ जाओ पर हम मौजीराम हैं। मन होगा तो छोटे कमरे में भी सत्संग कर लेंगे। दिल का हाल बड़ा होना चाहिये। तुम लोग हमको क्या भूखे समझते हो? हम आते हैं सत्संग करने। तुम हलुआ पूड़ी बनाते हो। हमको ऐसा खाना–पीना नहीं चाहिए। खाना पीना बंद कर दो ऐसे में सत्संग नहीं होता–खाली खाना पीना रह जाता है। हमको अब किसी का खाना चाय नहीं चाहिये। माला रोज पहनाते हो, खाना रोज खिलाते हो हमको बिल्कुल बिल्कुल पसंद नहीं है। हाँ! खाली पानी पिला दो। तुम घर घर में बुलाते हो, खाने का झंझट करते हो। तुम खाली ज्ञान सुनने के लिये बुलाओ तो अच्छा होगा। ज्ञान के बीच में खटरबट् हमें बिलकुल पसंद नहीं है। जहाँ सत्संग खतम हो जाता है।

अब यह वादा करो कि तुम कुछ नहीं बनाओगी तो हम सत्संग में आएंगे। कुछ भी खाने पीने का झंझट करोगी तो हम खुद नहीं आएंगे। जब गुरु को चप्पल फाड़ फाड़ कर ढूढ़ते हैं तब गुरु की कदर होती है। शादी के लिये जैसे भटक भटक कर लड़का मिलता है तब उसकी कदर होती है। इसी तरह गुरु की भी कदर होनी चाहिये।

गुरु से भय होना चाहिये जब इतना डर होगा तभी मन सीधा होगा। मन रावण है। रावण की तरह खड़ा हो जाता है। सच मनुष्य को आना ही पड़ेगा। भले ही भाग जाए पर एक बार देखने के बाद फिर कहीं नहीं जा पायेगा। संतो की आँख ऊपर ही होती है (आँख ऊपर होने का अर्थ वृत्ति परमात्मा में) इसलिये तुम आँख ऊपर ही रखो।

तुम प्रसाद न बनाओ। हमारे प्रशाद परमात्मा लाता है। जिसके घर में सत्संग हो वह प्रसाद न बनाए। जहाँ हम खुद रहेंगे वहाँ खुद ही प्रसाद आ जाता है। हम अन्नपूर्णा माता हैं।

भगवान का प्रसाद खुद ही आता है, न चूल्हा जलाया जाता है, न खाना बनाया जाता है पर खाना आ जाता है। तुम बवाल मत करो। भगवान का प्रसाद भगवान खुद लाता है। आए तो खाओ, न आए तो मत खाओ। चाय भी नहीं बनेगी। हमको ज़रूरत होगी तो हम खुद मांग लेंगे।

हा एक आदमी मौन रहकर अपनी गलती महसूस करो। करता धरता कुछ नहीं, खाली बड़बड़ाता है। मेरे पास भी मत आना। अगर तुमको बड़बड़ाना हो तो अपने घर रहो। हमसे भी ज्यादा बात मत करो। हम हर समय परमात्मा में रहते हैं। तुम हमको संसार के कीचड़ में मत फंसाओ।

भगवान का प्रेम जब अंदर आता है तो शांत हो जाओ। कितनी भी कठिनाई पड़े जीव जीवन में, फिर भी जो मनुष्य हँसता रहता है, वही ज्ञानी है। जगत में तो कुछ न कुछ अच्छा बुरा होता ही रहता है पर हर हालत में शांति में रहना ही उचित है।

15.8.86

हम लोग बचपन में झाबर खेलते थे। अब जिंदगी में झाबर खेलते हैं। जब मनुष्य अपने घर तन, मन को ज्यादा बनाकर भगवान को न्यून बनाता है तो कमी ही कमी होती है। जो भगवान को घर परिवार से ज्यादा महत्व देता है उसको नफा ही नफा होता है। जब भी जिसको घाटा हुआ है, उसने भगवान से ज्यादा अपने परिवार को समझा होगा, महत्व दिया होगा। जो भगवान के लिये ही अपना त्याग करता है तो वह हमारा आधा हिस्सेदार होता है।

कौन हमको कितने प्यार से बुलाता है, हम जानते हैं। जो हमको हृदय में बिठाए रहता है, वहां हमको अपने तन का भी होश नहीं रहता है। हम धूप में चले जाते हैं। घर के मामले में मुमको गुरु को नहीं डालना चाहिये। हम तो परिवार की बात नहीं बतियाते। हम परमात्मा के ध्यान में रहते हैं। हमको घर के पचड़ों में मत डालो। तुम अपनी बुद्धि से घर का जो फैसला है निपटाओ, हमको बवाल में न डालो।

महाभारत इसी कारण हुआ क्योंकि उन लोगों ने भगवान को बीच में डाला। अतः घर के झगड़ों में भगवान को बीच में मत डालो। गुरु को झमेले में डालने वाला महामुर्ख होता है। घरेलू बातों में गुरु कभी भी नहीं पड़ेगा। तुम ज्ञान की बात करो। सबके दिलो–दिमाग में हम ठंडक पहुंचाते हैं। तुम अपने घर का झमेला डालकर विघ्न मत डालो। मुझे free छोड़ो। हम भजन करते हैं, हमें भजन करने दो। हमने तुम्हारे मन में बुद्धि का दीप जला दिया। उसी दीपक को लेकर घर का काम करो। समाज में गुरु को मत डालो।

तुमको जब जोश, क्रोध आए, गुरु के पास मत आना नहीं तो तुम्हीं को कष्ट आएगा। अभी तुमने गुरु को अपना बनाया ही नहीं है। जब तुम्हारा स्वभाव इतना खराब है कि झुकना जानते नहीं तो आगे कैसे निभेगी। आज हर घर में बेटे बेटी उल्टे चलते हैं।

गुरु के घर सर नीचे करके जाना चाहिये। तुम घर में बैठे बैठे हमको गाली देते हो और बोलते हो गुरु हमको देता नहीं। अरे! गुरु के पास अपार

भंडार है, तुम लेना नहीं जानते। तुम्हारा स्वभाव खराब है।

जब तुम Nothing बनोगे तभी गुरु मिला समझना।

सद्गुरु मिला तब जानिये मिटे मन की ताप

तुम अपना मन झुकाना सीखो। जब तक हर्ष–शोक दूर नहीं हुआ, तब तक जो भी गुरु किया, बेकार है। गुरु हर्ष–शोक से दूर करता है।

जो प्रेम करता है, उसको आराम मिलता है। तुम प्रेम सीखोगे तो जहां जाओगे आराम आएगा। तुम काम करने वालों को तो बहुत जरूरत है प्रेम का स्वभाव बनाने की।

मर्दों को बस प्रेम और नम्रता सीखना चाहिये। माना पिता ने क्या इसी दिन के लिये तुमको पाला पोसा, बड़ा किया कि तुम बड़े होकर परशुराम बन जाओ। अभी तुम भी आगे देखना जब तुम्हारे ये बच्चे बड़े होकर तुम्हारे आगे अपना रूप दिखाएंगे। जो मिलता है उसी में शांति से रहो।

जब तक गुरु चेले से फुटबाल की तरह न खेले तब तक अहंकार नहीं जाता। तुम पहले जलते थें जब हम तुम्हारे अहंकार पर चोट करते थे। पर देखो हम ही सही थे। हम किसी के साथ अन्याय नहीं करते। मन को गाली न दे तो क्या पूजा करें। जो मन तुमको बार बार परेशान करता है उसको तो हम अवश्य मानेंगे। नेवले–सांप की तरह हमारा तुम्हारा सम्बन्ध है। मेरे सामने तुम्हारा मन रूपी सांप आएगा तो हम तो उसको काट काट कर टुकड़े टुकड़े अवश्य करेंगे।

सतगुरु सत्य में ले जाता है तुमको। तुम मेरे कोई दुश्मन नहीं हो। हम तो तुम्हारे मन के दुश्मन हैं। तुम अपने इस मन को गुरु के चरणों में पटको और बोलो हे गुरुजी! मेरे मन को भस्म करो। गुरु तुम्हारे मन को अच्छा बनाएगा। तुमको जरा लोकलाज तो होनी चाहिये कि हम गलत चलेंगे तो दुनियां क्या कहेगी। तुम आज मियां बीबी लड़ते हो, बाहर के लाग सुनते हैं, फिर बाद में तुम एक हो जाते हो तो क्या तुम्हारी बदनामी नहीं होगी। तुम्हारा शो बाहर क्यों गया?

भजन करने वालों को हमेशा शांति में रहना पड़ता है। तुम शोर करोगे तो सब यही कहेंगे, देखो ये सत्संग करता है। कैसा सत्संगी है? आज देखो हम अपने सास ससुर बड़ों के नीचे दबकर रहे तो आज इस पदवी पर हैं। जो दबता है, वह बाद में महान बनता है। रगड़ करने के बाद ही मनुष्य अच्छा बनता हैं।

जो भी झंझट होता है बोलने से होता है। तुम मौन नहीं रहते। जिस घर में मौन नहीं है वहां शांति कभी नहीं हो सकती। बाहर से मौन रहो अंदर भले ही जलो। पहले बाहर से ही चुप हो जाओ। बाद में सत्संग मिलेगा अंदर से भी मन शांत हो जायेगा। तुम सब घर घर में बड़बड़ करते रहते हो।

मन बोलता है, मैं पापी हूँ, भगवान के पास कैसे जाऊँ? अरे! अजामिल, गणिका क्या पुण्यात्मा थे? भगवान में इतनी शक्ति है जो उसके सन्मुख रहता है उसका अंतःकरण शुद्ध हो जाता है। पापी से पापी भी भगवान तार देता है। क्योंकि उसका पश्चाताप तो होता है। पुण्यात्मा तो अहंकार में होता है।

करने वाले को भी कर कर का अहंकार होता है। करके फिर आदमी सोचता है, इतना किया यश नहीं मिला। अरे करके भगवान पर छोड़ो। अरे! निष्काम हो जाओ। यह तो संसार है। कोई भी यश, धन्यवाद नहीं देता। घर घर में यही होता है कि हमने इसके साथ इतना किया, इसने नहीं किया न धन्यवाद दिया। अरे! धन्यवाद की भी क्या इच्छा करना। इच्छा मात्र अविद्या। कहते हैं भिखारी न बनना। उस शहंशाह से ज्ञान ही मांगना। तुम तो जगत की वस्तु ही मांगते रहते हो।

जो अपने सुख के लिये जीता है, वह सुखी नहीं होता। अरे! जनता के सुख के लिये जियो तो, तुमको भी तो सुख मिलेगा ही। ज्ञान मे तुम्हारी कितनी श्रद्धा की है। ज्ञान सी ही शांति मिलती है। तुम लाख गुरु बनाओ पर उससे ज्ञान न लिया तो क्या फायदा?

सद्गुरु मिला तब जानिये,
जब मिटे तन की ताप।

जीव को तुम्हारे पाँचों (काम, क्रोध, मद, लोभ, अहंकार) खा रहे थे और तुम बोलते थे कि हमने तो गुरु कर लिया। क्या फायदा हुआ तुम्हारे गुरु करने का?

भगवान राम ने भी बहुत मर्यादा की पर शांति नहीं मिले। उसके बाद उन्होंने जब वशिष्ठ जी से ज्ञान लिया तभी आराम आया। बिना गुरु किये शांति नहीं मिलती। कहते हैं–

हर्ष शोक व्यापे नहीं, तब गुरु आपै आय

हमको कोई भगवान कहता है, कोई बुरा कहता है पर हमारा क्या घटा? हमारा निश्चय ही हमारा भगवान है। तुम शब्द को मानते हो। हमने अपने को पहचान लिया है। हम उस ब्रह्मपद को पा चुके हैं। अतः मेरा स्वरूप भगवान है।

अशब्दी ब्रह्मपद को पाय के,
योगी हुआ उपराम।

तुम ये योचो–मैं अद्वैत ब्रह्म हूँ। जब तुम ये सोचोगे तो तुमको शब्द नहीं लगेगा। गुरु गुरु करना ठीक है। पर मन को बदलो। तुम पहले किये गुरु को आज भी नहीं समझता। समझता है, गुरु छूट गया पर गुरु कभी नहीं छूटता है। वह अनेको रूप धरकर आता है।

तुम गुरु पहले करते रहते हो पर वही गुरु आखिर तक नहीं रहता। पहली कक्षा का गुरु दसवीं कक्षा की पढ़ाई एम.ए. की पढ़ाई नहीं करा पायेगा। जब तुम ऊँची क्लास के गुरु की याद करते हो। कहते हो छूट गया। पर वही एक गुरु जीवनभर साथ रहता है, केवल रूप बदल जाता है। अब तुम ऊँची क्लास में हो और कहो कि वही गुरु हमको उसी शरीर में आकर पढ़ाए तो ये कैसे हो सकता है?

तुम ज्ञान के द्वारा रोष और जोश को दूर करो। तुम मेरे ज्ञान का सहारा लेकर काम करो तो सफलता अवश्य मिलेगी। तुम गुरु के साथ रहकर मन की रगड़ करो तब मन शांति में आजाएगा। और घर भर में शांति हो जावेगी।

निराकार को साकार में निश्चय करना बड़ा कठिन है। परमात्मा–परम + आत्मा– तू आनन्दस्वरूप आत्मा से भी परे है। तुम अपने स्वरूप को पहचानो। तुम तो जीव भाव में फँसे हो। जीव भाव दुःख का कारण है। सबसे महागंदगी जीव भाव का निश्चय है। ब्रह्म भाव में आ जाओ तो यही होगा कि इधर भी मैं हूँ, उधर भी मैं हूँ, सब कुछ परमात्मा है। ऐसा निश्चय करो। अद्वैत में टिको। शांति भी तभी होगी जब तू अद्वैत में टिकेगा। हम भी देखो जब अद्वैत में टिके तभी हमको शांति मिली। हमारा गुरु अद्वैत में था, तभी हम भी अद्वैत में हैं।

परमात्मा क्या है? विचार करो। तुम मेरे को परमात्मा दूसरे के कहने से अभी मानते हो परन्तु जब खुद का जीव भाव नाश करेगा तभी तुमको परमात्मा वास्तविक निश्चय होगा।

सब गुरु को तुम खिलाते हो तो वो तुम्हारी जैसी बातें करते हैं पर

तुम हमें लाख खिलाओ, गाली ही देंगे, जब तक तुम्हारा मन अच्छा नहीं होगा। ज्ञान में आने के बाद बोलो–भगवान मन छोड़कर जाते हैं। तुम तो खाना पानी गुरु को देना चाहते हो पर तुम वह न दो, मन दे दो तो तुम्हारा मन अच्छा हो जायेगा। आज गाली मिलती है तो अच्छे बनो। बाद में पता चलेगा इसका महत्व। तुम गुरु के सामने बालक बनो।

आदर्श आदमी को अपने सामने रखो। विवेकानंद को सामने रखो। देखो! वह कितना महान था। रामतीर्थ का उदाहरण देखो तो तुम भी ज्ञान में ऊपर चढ़ जाओगे।

शांति बाहर से नहीं बल्कि अंदर से आती है। पर ये मन भूत शांति लेने नहीं देता। संतोष भी नहीं लेने देता। जब असंतोष मन में आए तो सड़क पर गरीबों को देखो तो पता चलेगा कि तुम कितने आराम में हो।

तुम्हारी तो अच्छी हालत है, फिर भी हँसी नहीं आती। मन में कोई भी ख्याल आए तब भी हँसो तो ही अच्छा रहेगा। हम घर बिगाड़ते नहीं, बनाते हैं। हमने तो चिंता को विदा कर दिया। कहाँ तक चिंता करें। भाड़ में जाए चिंता। सत्संग बोलने से कुछ नहीं होता। तुम गुरु के ज़रिये रिश्ता मानोगे किसी से तो कायम रहेगा। तुम गुरु को छोड़ कर direct रिश्ता करोगे तो गुरु होने नहीं देगा।

राम का नाम अन्तरात्मा से लिया जाता है। जो गुरु भक्ति को जानता है उसके घर ही सत्संग होता है। जब गुरु का भय होगा तभी मन अच्छा बनेगा, मौन रहेगा। घर घर में जो झगड़े हो रहे हैं वो बोलने सी ही हैं।

हम हैं सदा बहार हीरो। दिन में भी राम राम, रात में भी राम राम। जब हमको टाइटिल मिली तो सदा बहार हीरो की ही मिली। तुम प्रसाद भी प्रेम से बाँटो। मेरा प्रसाद खाना। देखो! ये लोग दूर से भूखे आते हैं, खा लेते हैं तो तुमको भी आराम मिलेगा।

अपने संकल्प भाव में दृढ़ता से रहो। गुरु का बंधन बुरा लगता है लेकिन गुरु का बंधन जगत से छुड़ा लेता है।

26.8.86

मनुष्य ख्याल ज्यादा करता है, काम नहीं करता है। अरे! शरीर तो किसी का भी सदा अच्छा नहीं रहता है। अन्दर ज्ञान पाने कि लिये गुरु की गुलामी करनी पड़ती है। गुरु की आज्ञा में राजा हरिश्चन्द्र की तरह त्याग करते हैं ये लोग। तब इनके अन्दर ज्ञान गया है। राजा हरिश्चन्द्र

के गुरु ने जो भी आज्ञा दी उन्होंने उसको शिरोधार्य किया।

गुरु का नाम जपने से ही मन बस में होता है। रात दिन घर की गुलामी, भक्ति करता है और चाहता है ज्ञान हो जाय, ऐसा नहीं हो सकता।

मन बेचे सतगुरु के पास, तिस सेवक के कारज रास।

अतः गुरु की भक्ति करने से ही ज्ञान होगा। गुरु भक्ति से ही मन वश में होता है। अपने आप से मन को वश में करने से नहीं होता। गुरु के प्रेम से ही यह मन वश में होता है। देखो! तुम्हारे जीवन में कितनी परेशानी थी, हलचल थी, पर गुरु ने ही दूर की। देवी दुर्गा तुम्हारे .... को कभी दूर नहीं कर पाते।

अहंकार दो होते हैं–सूक्ष्म और स्थूल। एक भगवान के लिये आता है तो हम उसमें अहंकार को झाड़ देते हैं। गुरु की गाली से मन जलता है पर आराम में आता है। चंचल मन को गुरु ही वश में करता है। गुरु पहले अपने जाल में फंसाता है (जैसे मछुआ मछली को फंसाता है।) फिर उसको सजा संवार देता है। प्रेम में मनुष्य गुरु की गाली भी सह लेता है और अच्छा बन जाता है।

जिसने गुरु की सेवा दिल से की है वह कभी नीचे नहीं गिरा है। मेरा भक्त गरीब से अमीर बन गया है। भौतिक सुख तो मिले ही ज्ञान ऊपर से मिल गया, **चार पदारथ जो कोई मांगे, साधु जना की संगत लागे।** गुरु हर एक को जो उसकी शरण में आया, मालामाल कर देता है, ऊपर से ज्ञान से भी भरपूर कर देता है।

तुम मुझसे सरल हृदय से रहो तो हर वस्तु मिल जायेगी। तुम्हारा वैराग्य मसानी है। जरा सामने की नहीं हुई, गुस्सा आया तो जंगल भाग गया और आकर कोई मनाएगा तो फिर वापस आ जायेगा। अरे! वैराग्य भी बहुत कठिन है। माया ठगिनी आकर ठग लेती है। परन्तु सद्गुरु की शरण को पक्की तौर से ग्रहण किये रहता है उसको घर में ही वैराग्य हो जाता है।

जब मनुष्य सब ओर से हार जाता है तभी गुरु की शरण लेता है। अर्जुन ने जब तक भगवान की शरण नहीं ली, तब तक कृष्ण ने ज्ञान नहीं दिया। मनुष्य अहंकार में रहता है तो किसी की शरण नहीं लेता। जब कष्ट में पड़ता या फंसता है तभी किसी की शरण लेता है। गुरु के पास मन का तार जोड़ने जाना पड़ता है।

न हम किसी का खेत लूटें, न कोई हमारा खेत लूटे। हमारी खेती

हरिनाम की खेती है। अपनी खेती को हम बिना परमीशन के हाथ नहीं लगाने देंगे। हम अपनी खेती किसी को काटने नहीं देंगे। हाँ! हम भी किसी की खेती नहीं काटेंगे। हम दमदार होंगे, हम अपनी खेती खुद काटेंगे। तुम्हारा अंतःकरण खेती है और हृदय जमीन है। परमात्मा बीज है। हम तुम्हारे अंतःकरण में परमात्मा की खेती करते हैं तो उसकी रक्षा भी करते हैं कि कोई दूसरा खेती को नष्ट न कर दे।

हम लोग ही दुनियां को पकड़े हैं। कोई किसी को नहीं पकड़ता। हम समझते हैं जगत हमको पकड़े है। कोई किसी को नहीं पूछता। सत्संग करना कराना आसान नहीं है। आदमी को पाप नहीं करना चाहिये नहीं तो बड़ा भोग भोगना पड़ता है। तुम भजन में आओ तो सावधानी से आओ। रोष जोश में नहीं आना चाहिये। तुम सेवा करके आते हो तो भी रोष में आते हो। भगवान तुमसे सेवा ले रहा है, यह तुम्हारे लिये बड़े भाग्य की बात है। तुम सेवा के अहंकार को भी लेकर मत आओ। मन किसी भी हालत में प्रसन्न नहीं होता। तुम जब स्वयं जाग जाओगे तो सब जाग जायेंगे। तुम्हारे पास सब सुख वैभव होगा तो सब दोस्त तुमको घेरे रहेंगे पर जब तुम पर कठिनाई पड़ेगी सब भाग जाएंगे। पहचानेंगे भी नहीं। मनुष्य का मन इस बात को मानता नहीं जब तक वह ठोकर नहीं खाता।

एक सच्चा होगा तो सब में सच्चाई आ जायेगी। एक घर का बड़ा पा लेगा तो वह तुम छोटों को भी चाहेगा कि खजाना भर दूँ। तुम्हारे अंदर की तपन को तुम्हारा गुरु बुझा देगा। ये मोह की आँखें ऐसी होती हैं कि तुमको तब तक मुक्त नहीं होने देती है जब तक तुमको ठोकर न मिले। जिसमें तुम्हारी आसक्ति होगी, उसी से तुमको ठोकर खानी पड़ेगी।

गुरु बेपरवाह बादशाह है। वह तुम्हारे अंदर की प्यास को देखता है। तभी वह तुमको दर्शन देता है नहीं तो उसको कोई परवाह नहीं। यह सत्संग भाषा का नहीं अंदर की प्यास का विषय है। भगवान अन्दरूनी बात से आता जाता है। तुम बुद्धि से न सोचो कि भगवान आ जाय तो अच्छा है। अंदर का तार गुरु से जोड़ दो तो गुरु स्वयं आ जायेगा।

जब गुरु के पास आओ, तो भैंसे की तरह न आओ। लाख खिलाओ पिलाओ पर हम तो किसी की चलने नहीं देंगे। जब तक तुम्हारा मन अहंकार में होगा हम तुमसे बात नहीं करेंगे। तन मन धन में सबमें मेरी प्रधानता होनी चाहिये। जैसे प्रीत हराम में ऐसी हरि में होय। अतः तुम भगवान को कभी न्यून न बनाना। मन बड़ी नाजुक चीज़ है। इसको बड़े जतन से बचाकर रखो। कभी भी अश्रद्धालु का संग न करो नहीं तो तुम्हारी

वृत्ति को भंग कर देगा। हमेशा निरहंकारी का संग करो नहीं तो वृत्ति का नाश हो जायेगा। गुरु का संग करोगे तो वह तुम्हारी वृत्ति को ऊपर ले जायेगा। तुम्हारे लिये सीट रखी नहीं जायेगी। आगे बैठना है तो जल्दी आओ। तुम लोगों के मन में उत्साह नहीं है कि जल्दी जल्दी गुरु के दर्शन करने चलें।

एक शब्द, एक बात, एक झलक से आदमी खराब हो जाता है। तुम बातों से हमको नहीं जीत सकते। तुम अहंकार छोड़ो। उस आदमी का संग करो जो तुम्हारे मनरूपी घास को काटे, अच्छा बनाए। तुम उस व्यक्ति का साथ करो जो तुम्हारे मन को काटे छाँटे। स्वार्थी का साथ न करो। अहंकारी का संग करोगे तो वह तो है ही अहंकारी, तुमको भी अहंकारी बना देगा। तुमको सेवा करना हो तो करो, न करना हो तो न करो। जाओ पर मेरे सामने अहंकार लेकर न आओ।

28.8.86

सेवा आदमी को कहाँ से कहाँ पहुँचा देती है, मनुष्य सोच भी नहीं सकता। जब तुम दिल खोल कर सेवा करते हो तो भगवान तुमको कहाँ से कहाँ पहुँचा देता है, तुम देखकर हैरान हो जाओगे। सेवा एक ऐसी चीज़ है। हम सेवा करें और उसका अहंकार न करें तो सेवा का फल अवश्य मिलता है। सेवा करनेवाले को सेवा का अवसर अवश्य मिलता है।

मनुष्य को हर काम के लिये तत्पर रहना चाहिये। गुरु जो कहे उसको तुरंत करने को तत्पर रहे तो संसार से मुक्त हो जाता है। सत्संग में आनेवाले को बंधन में न खुद होना चाहिये न दूसरे को डालना चाहिये। गुरु की गुलामी जगत की गुलामी से छुड़ा देती है। गुरु ने तुमको निर्बन्ध ा कर दिया है, तुमको मुक्त कर दिया है। इसी तरह गुरु के निर्बन्ध करने से जगत के दुःख से भी मुक्त रहेगा।

जो गुरु की हृदय से सेवा करता है वह निर्बंध हो जाता है, उसको खुशी आ जाती है। सेवा करके भी यदि खुशी नहीं आती है तो ये देखना चाहिये कि क्या कारण है। खुशी न आने का कारण है कर्त्ताभाव करने का, जस मिलने की इच्छा।

जो हृदय से निष्काम भाव से किसी की सेवा करता है तो उसका यश उसको अवश्य मिलता है। जो कर्त्ता भाव में रहकर सेवा करेगा, उसको

जस कभी नहीं मिलेगा। जब तुम अपने को दीन समझकर मिली सेवा का शुक्राना मनाओगे तो सोचोगे कि हम तो इस सेवा के काबिल न थे परन्तु गुरु ने कृपा करके सेवा करने का अवसर दिया तो उसका फल अवश्य मिलेगा।

तुम सेवा करने लायक कोई न थे पर भगवान ने कृपा करकें तुमको सेवा दी तो वह सेवा जो तुमने की वह भगवान की शक्ति से ही की। जो सेवा करके भी दूसरे के आगे झुक कर चलेगा तो सेवा का जस अवश्य मिलेगा। मछली पकड़ने जाओ तो पकड़ते पकड़ते फिसल जाती है, इसी तरह मन की भी हालत है।

गुरु की सेवा करता रहे और किसी से राग द्वेष न करें तो वह सेवा सेवा है। निरभिमानता से सेवा करना बड़ी बात है अतः निरभिमानता से सेवा करना चाहिये। सेवा करने पर भी जो मिले उसको प्रभु की कृपा मानो।

पट्टी पर पहले के जो हरूफ हैं उनको पोछना पड़ेगा तब दूसरे अक्षर लिख पायेंगे। अतः जो पहले की लिखा पढ़ी है, उसको मिटाना पड़ेगा गुरु के द्वारा। उस स्वर्ग को पाने के लिये ही गुरु जल्दी करता है। गुरु ऊपर पहुँचाना चाहता है, हम लकीर के फकीर बने रहते हैं। गुरु उनको मिटाना चाहता है पर तुम कुछ मेहनत ही नहीं करना चाहते। अपने मन को गुरु को सौंप दो, वह चाहे जैसा करे। जैसे धान को ओखली में बार बार डालना पड़ता है कूटना पड़ता है तब कहीं चावल मिलता है। इसी तरह धान के ऊपर मन का आवरण चढ़ा है। उसके अंदर शुद्ध अन्तःकरण है। जब गुरु मन को कूट कूट कर साफ करेगा तब अन्तःकरण रूपी चावल निकल आवेगा। तुम्हारे अंदर मन भूत के विकार पड़े रहते हैं, गुरु उन्हीं को मार मार कर निकालता है। देखो जिसके जितने भूत गुरु ने निकाल दिये हैं वह आनन्द में हैं।

प्यार तो सबसे होता है मां बाप का पर फिर भी जो सरल स्वभाव का होगा उससे प्यार स्वतः ही हो जाता है। इसी तरह गुरु भी सबसे प्यार करता तो है पर जो गुरु की हर तरह से मानता है उस पर गुरु का प्यार स्वतः ही हो जाता है।

जब तुम्हारा प्यार जन जन से होगा तो गुरु भी तुमको खूब प्यार करेगा। गुरु भी समझता है कि गुरु से कौन स्वार्थ से प्यार करता है और कौन निःस्वार्थ। वह गुरु नहीं करता है, वह तो अकर्ता है। वह तुम्हारे अपने स्वभाव के हिसाब से तुम्हारा काम करता है। गुरु तुमको जितना जितना

अपना समझता है उतना उतना वह तुम्हारी गलती देखकर टोकता है और तुमको अच्छा बना देता है।

तुम बोलते बहुत हो, कम बोलो। बोलने से ही टंटा खड़ा होता है। एक भक्त को पक्का अनुभव हुआ कि जब विपदा आती है और लाख प्रयत्न करने पर भी नहीं टलती तो गुरु का ही सहारा काम आता है। उस भक्त का अनुभव यह है कि वह रात को एक जगह फंस गया। उसकी गाड़ी कहीं फंस गई। लाख यत्न करने पर भी नहीं चल रही थी। अंत में हार कर उसने गुरुजी को याद किया और उसकी गाड़ी चल पड़ी। वह भक्त यह महिमा बताते बताते आत्म विभोर हो रोने लगा। उसकी अश्रुधारा बता रही थी कि वह शुक्राने में तथा महिमा में डूब गया है।

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरु देवो महेश्वरः
गुरु साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।

जो गुरु को हृदय से मानता है, पकड़ता है। उसी दिन से उसका भाग्य खुल जाता है। न मिलती हुई चीज़ भी मिल जाती है। गुरु नाम दाता मेरी सम्पदा है।

चार पदारथ जो कोई मांगे,
साधु जना की संगत लागे।

यदि किसी को चार पदारथ चाहिए तो गुरु के साथ निःसंकल्प होकर रहे तो देखना जीवन कैसा होता है। आनंद, भक्ति, धन, वैभव सब भर जायेगा। मांगना भी नहीं पड़ेगा। जब मनुष्य सब तरफ से हार जाता है और हृदय से पुकारता है भगवान को तब भगवान झट सुनकर आ जाता है। परन्तु ऐसी पुकार चीखवाली पुकार–जल्दी निकलती हो नहीं। नहीं तो चीख भरी पुकार निकलती है तो भगवान भाग कर आता है। समय भी नहीं देखता।

जब तुम्हारा मन प्रभु के लिये पीउ पीउ करेगा तो उसको बुलाना भी नहीं पड़ेगा। वह स्वयं आ जाएगा। हम जब भगवान में लगे हैं, सच्चाई में लगे हैं तो कौन हमसे नाराज होगा। कबीर के घर में कुछ नहीं था। भगवान ने ऊँट पर सामान लादकर पहुँचाया। वह कहानी तो पुरानी हो गई। मुझे भी ऐसा अनुभव हुआ। जब मेरे घर शादी हुई, कितने लोग आए पर किसी चीज की कमी नहीं हुई। जितना खाते थे, उतना ही बढ़ता जाता था। अतः भगवान के प्रेम में जो रहता, भगवान उसका घर भर देता है। किसी चीज की कमी नहीं होने देता। इतने मेहमान आए थे कि कमी पड़ सकती थी

पर हम भगवान में लीन थे, उसी पर निर्भर थे तो हमारे यहाँ कमी नहीं हुई। तुम भी पूर्णरूप से भगवान पर निर्भर होकर देखो तो! हम तो भगवान पर पूरा भरोसा नहीं करते, बस चिंता करते हैं। भगवान यहां का यहीं देता है। जो गुरु का नाम लेता है वह उसका काम पूरा करता है।

29.8.86

जिस औरत का बेटा उसे न रुलाए तो उसका मोह छूट ही नहीं सकता। बेटा चाहे जितना सताए पर फिर भी मोह नहीं जाता। ये मन बड़ा दुष्ट है। जो हालत है उसमें खुश नहीं होता।

जो भी हालत होती है, उस हालत में खुश होकर जीना ही हमारा ज्ञान है। हालत तो कर्मानुसार आती ही रहती है, चाहे पाताल तक के पाप हों, उनको सहना ही पड़ता है पर हर हालत में शांत रहना चाहिये। शोर करने से कोई फायदा नहीं। अन्दर तो सबके ज्वाला जलती है पर उसको भी खामोशी से सहना तुम्हारा काम है। यही हमारा ज्ञान है। हर हालत में तुम खुश रहो।

तुम्हारा जिससे जिससे जो जो कर्जा होता है, चुकाना पड़ता है। बेटा–बेटी असली कर्ज चुकवानेवाले सम्बन्धी हैं। दूसरे का कर्जा हम भले ही न चुका पाएं पर बेटी बेटे का कर्जा तो हम प्यार, आसक्ति और मोह के वशीभूत होकर चुका देते हैं। इसीलिये कर्जा चुकवाने वाले बेटे बेटी के रूप में लोग आते हैं।

गुरु की सेवा जो हृदय से करता है, उसी को सच्ची खुशी मिलती है। इन्सान परिस्थितियों से घबराकर मरने की सोचता है पर ऐसा संकल्प न करो। हालत में खुश रहना सीख जाओ, मरने का संकल्प छोड़ दो। तुम घबराते हो, बेटे–बेटी की शादी कैसे होगी? अरे सब भगवान पर छोड़ दो। तुम तो परेशानी में भी अकड़ नहीं छोड़ते। आज कहीं काम मिलता है तो बेइज्जती समझकर नहीं करते। अब भूखे मरने से क्या फायदा? हमारे हिन्दुस्तान में यही कमी है। नाक बड़ी ऊँची है भले ही भूखे मरें। गरीबी इसीलिये नहीं जा रही है क्योंकि कोई भी काम करने में मनुष्य अपनी बेइज्जती समझता है।

जो रानी टंकुअन चले, विपत पड़े तो कुटुअन करे।

अतः भगवान कब कैसा वक्त लाता है, कुछ कहा नहीं जा सकता।

31.8.86

गुरु न्याय अन्याय कुछ नहीं करता। वह कर्मानुसार फल देता है। गुरु की मानने से तुम्हारे कर्मफल का भोग थोड़े में कट जाता है। खाली लगन की जरूरत है। लगन लगती है तो लगन से अगन पैदा होती है, अगन से कर्म जल जाते हैं।

देखने में आता है कि भगवान ने बड़ा अन्याय किया पर भगवान दयालु है। वह तुम्हारे कर्म भोग का उतना कड़ा दंड फिर भी नहीं देता है। एक औरत का एक ही एक बेटा मर गया। नौकरी करता था, तनख्वाह लाता था और अचानक मर गया। मगर वह अन्याय नहीं करता। तुम्हारा पिछला कर्म, लेन देन ही ऐसा है। जैसे को तैसा मिलता है। कहते हैं–

जैसे के लिये तैसा दरबार ही ऐसा है।

अतः भगवान सदा न्याय करता है वह अन्याय कभी नहीं करता। वह बहुत दयालु है।

पूर्व जन्म का कर्जा चुकना ही पड़ता है। पर ज्ञानी काटे हँस के अज्ञानी काटे रोय। ज्ञानी सोचता है ये पिछला कर्म है, अतः भोगना अवश्य है तो रोकर क्यों भोगें, हँस हँसकर भोगें। पर अज्ञानी रोता ही रहता है।

जिसके अन्दर कुछ न कुछ नाम रूप घुसा होता है उसको शांति नहीं आती। मन बेकार में ही दोस्त बना लेता है दुश्मन बना लेता है। जगत में जैसा राग द्वेष है वह अब भी करते हो। ज्ञान में आकर तो क्या फायदा है ज्ञान लेने का। अरे! सबको भगवान मानकर छोड़ो। यह तुम्हारे मन का स्वभाव है। बिना सोचे समझे "हाँ" कहो कि तुम यहाँ भी राग द्वेष पालते हो। तुम मानो या न मानो, जिससे तुम्हारी दोस्ती होती है उसके अंडे बच्चों से भी तुम अपना सम्बंध बना लेते हो। तुम सबमें जानवरों के हर गुण हैं–सुअर, कुत्ते, घोड़े आदि के। हमारे घर में जो भी आते हैं, संत आते हैं। उनके पैरों की धूल लेकर मस्तक पर लगाना चाहिये। लखनऊ में कितने लोग हैं जो यहाँ भजन करने आते हैं अरे कहां हैं संतों की धूल, लेकर करूँ मैं श्रृंगार रे।

तुम सबके गुण दोष न देखो, सबको नमस्कार करो। ऋषि मुनि जंगल में जाकर तपस्या करते हैं, वे अपने आप को भी नहीं देखते। भगवान में तल्लीन हो जाते हैं तो उनको **(आप विसर्जन होय तो सुमिरन कहिये सोय)** भगवान मिल जाता है।

तुम भगवान को न्यून मानोगे तो बंधन आ जायेगा। देखने में आता है कि दूसरा बंधन लगाता है पर बंधन तुम्हारा ही बनाया हुआ है।

बंध अभिमानी बंध है, मुक्त अभिमानी मुक्त।

तुम्हारे सब साथी हैं, कोई दुश्मन नहीं।

प्रश्न सब तरफ जलती आग देखते हुए भी, दुख की मार पड़ते हुए भी घर से जाने का मन क्यों नहीं होता?

उत्तर एक होता है मसानी वैराग जो परिस्थिति से होता है, वह क्षीण होता है, पर एक वैराग सत्य को लेकर होता है। राजा जनक को वास्तविक वैराग था। उन्होंने स्वप्न देखा कि वे कंगाल हो गए हैं पर जब जागे तो पाया कि राजभवन में सो रहे थे। वह अपने गुरु के पास गये और पूछा कि वह सत्य था या यह सत्य है जो मैं अब देख रहा हूँ? गुरु ने कहा "न वो सत्य था, न ये सत्य है।" अतः इसीलिये अष्टावक्र जनक से कहते हैं कि यदि तू मुक्ति चाहता है तो–

विष सम विषय तज तात रे,
आरजू क्षमा राम, सम दया पी सुधा दिन रात रे।

कोई चीज़ अच्छी लगती है, मानो विषय है पर विषय होते हुए भी उसमें मन नहीं जाता समझो विरक्ति हो गई है और इसी को वैराग्य कहते हैं। जब हम असत्य को समझ जायेंगे और सत्य का निश्चय करेंगे कि सत्य क्या है तो पता चलेगा कि संसार असत्य है, परमात्मा ही सत्य है तो तुरन्त वैराग्य हो जायेगा।

आज हम भजन के सिवा जगत में कहीं नहीं जा पाते हैं। संसार का कुछ भी अच्छा नहीं लगता–यह कैसे हो गया। वह ऐसे कि तुम्हारा जैसा मन होता है वैसा ही वातावरण अपने आप तैयार हो जाता है। भजन की इच्छा होगी तो भजन का वातावरण अपने आप पैदा हो जायेगा।

प्रभू की हर बात में भलाई होती है। हमारा मन ही जलता मरता रहता है। एक ही आदमी खाली सेवा करेगा तो थक जायेगा पर दूसरा सेवा करता है तो मन जलने लगता है।

दुनिया आदमी तभी जी सकता है जब हर हालत में–चाहे अच्छी हो या बुरी–शुकराना माने। जगत में कष्ट ज्यादा है और सुख कम। पर मनुष्य तभी जी सकता है जब गुरु की मानकर हर हालत में शुकराना माने।

गुरु कपट विधा से नाराज होता है। दुर्योधन से भगवान क्यों नाराज

किस्मत लिखने वाले करतार यही लिखना
मेरे हिरदे के अन्दर सतगुरू का प्यार लिखना

मैंरे मस्तक पर लिखना सतगुरू की ही तस्वीर
नित ध्यान धरूँ उनका कोई चाहूँ न जागीर
नयनों में सतगुरू का दीदार ही बस लिखना।। किस्मत..

मेरी जिहवा पर लिखना सतगुरू का प्यारा नाम
मैं और न कुछ चाहूं जपू नाम मैं आठो याम
कानों में शब्दों की झनकार ही बस लिखना।। किस्मत...

मेरे हाथों में लिखना इक सतगुरू की सेवा
तन मन धन सब वारू मेरा सतगुरू ही देवा
जहां जाऊँ पैरो से, गुरू द्वार ही बस लिखना। किस्मत..

मेरा सतगुरू से दाता कभी नहीं बिछुड़ना हो
पूरा जीवन साथ रहें बस यही तुम लिखना हो
बनूं दास मैं सतगुरू का संसार का मत लिखना। किस्मत.

था? और अर्जुन से क्यों खुश था? क्या अर्जुन उसको लड्डू देता था? नहीं। भगवान अर्जुन से इसलिये खुश था क्योंकि उसमें कपट नहीं था जबकि दुर्योधन कपटी था। ऊपर से तो अच्छा व्यवहार करता था पर अन्दर छल रखता था। भगवान अंदर की बात देखता है। तुम्हारा हृदय अन्दर से स्वच्छ होगा और भगवान में लगा होगा तो तुमको शांति अवश्य मिलेगी। जगत में तो दुःख आता ही रहता है पर परमात्मा में रहे तो अशांति आयेगी भी तो लगेगी नहीं। जीवन में कष्ट न आए, ऐसा नहीं हो सकता पर तुम कष्ट में होकर परमात्मा के ध्यान में ही शांत रह पाओगे।

चित्त का सौदा भगवान से हो जाने के बाद जगत में चित्त लगाने से आराम नहीं आता है। यदि हम भगवान को छोड़कर संसार में ध्यान लगायेंगे तो परेशानी अवश्य आएगी। तुम भगवान से थोड़ा सा चित्त हटाओ तो नाद नगारा बजेगा कि तुम परेशान हो जाओगे।

हम लोगों के जैसा हंसनेवाला संसार में कोई नहीं मिलेगा। जगत में सब रोते ही रहते हैं। राजा दुखिया परजा दुखिया, सकल सृष्टि का राजा दुखिया।

तुम भगवान से होशियारी मत करो। गलती किससे नहीं होती पर गलती की माफी मांगना ही अच्छा है। घर में भी देखो पग पग पर संभल संभलकर चलो तो भी गलती हो जाती है। चाय बनाने जाओ कप टूट जाता है, गिलास टूट जाता है। इसी तरह से गलती तो होती ही रहती है।

वेदान्त ने भी कहा है, भूल होती रहती है पर होशियारी नहीं करना चाहिये। मन गुरु से भी होशियारी करने लगता है। दुर्योधन से भगवान श्रीकृष्ण इसीलिये नाराज़ थे क्योंकि वह उनसे होशियारी करता था। झूठ कपट करके वह अन्याय से पाण्डवों को पांच गांव भी नहीं देना चाहता था, इसीनिये भगवान उससे नाराज़ थे। अन्तरात्मा में भगवान है, पर मानता नहीं। क्योंकि मन में कपट होता है।

आंसू भी हज़ार तरह के होते हैं। जब तुम rest में हाओगे तो घर में rest होगा। ज्ञान लेने के बाद अगर तुमको बाल बच्चे होते हैं तो ज्ञान के द्वारा तुम शांति में रहोगे तो वह भी rest में रहेगा। जब तुम अन्तरात्मा में उतरना जानोगे तो वह भी कभी अन्तरात्मा में जाएगा, ज्ञानी बनेगा। अष्टावक्र ने गर्भ के अंदर ज्ञान सुना तो वे इतने बड़े ब्रह्मज्ञानी हुए। उसका बाप श्लोक पढ़ता था, कुछ गलत हुआ तो अंदर पेट से अष्टावक्र ने वह श्लोक सुनाया तो बाप ने क्रोधित होकर उसको श्राप दे दिया। कैसे कैसे

लोग अहंकार और क्रोध के वशीभूत होकर श्राप दे देते थे। अभिमन्यु को भी पेट में रहते ही ज्ञान हो गया था। उसकी माता ज्ञान सुनती थी। चक्रव्यूह की विद्या, जब वह पेट में था, तब पिता के द्वारा सुनी थी परन्तु चक्रव्यूह से निकलने की विधि सुनते सुनते मां सो गई तो वह सुन नहीं पाया तो चक्रव्यूह से निकलने का तरीका उसे नहीं आ पाया। अतः मां ज्ञान सुनती है तो बच्चा ज्ञानी पैदा होता है।

सब सुख साधन हमारे पास थे। सब आराम होते हुए भी हमको एक बेचैनी थी कि अभी भी ये सुख कम है। इसी बेचैनी ने हमको परमात्मा की तरफ मोड़ दिया। हमको कोई कष्ट नहीं था। पर वास्तविक सुख की खोज़ थी। अतः हमको वही सुख मिला जो परमात्मा का था। देखो! आज हम भरपूर आनंद में हैं।

मन जब भगवान में लगता है तो माया पीछे लग जाती है। तुमको भगवान के रास्ते से हटाने के लिये तुम जिधर जिधर जाओगे माया तुम्हारे पीछे पीछे जाएगी पर जब तुम उसको भी पार कर जाओगे तो सुख ही सुख है।

अध्यात्म विद्या का गुरु साक्षात भगवान ही होता है। इन्सान बुद्धि से बात करता है। अध्यात्म विद्या बुद्धि के परे की बात है। विद्या से कुछ नहीं होता। अध्यात्म विद्या सब विद्याओं से श्रेष्ठ है। आज देखो! तुम सब एक से एक बुद्धि वाले बैठे हो पर हमको तो कुछ नहीं आता। पर हमारे पास जो अध्यात्म विद्या है, वह तुम्हारे पास नहीं है इसीलिये तुम हमको गुरु, भगवान मानते हो। अध्यात्म का ज्ञान हो जाएगा तो तुम कोई भी विद्या बोलोगे तो हम समझ जायेंगे। आज एक से एक विद्वान आकर क्यों नतमस्तक होते हैं क्योंकि हमारे पास अध्यात्म विद्या है।

सब साधन सुख के मिल जायें पर फिर भी सुखी नहीं होता कारण है, वह मन की गुलामी में है। जब मनुष्य गुरु के बताए हुए परहेज़ में होगा तो खुशी अवश्य आयेगी। गुरु की एक एक बात मानने से ही खुशी आती है। जो गुरु की बात नहीं मानता, उसको खुशी नहीं आती। गुरु भाग्य विधाता है। तुम सोचोगे यह आदमी है, भाग्य क्या बनाएगा। पर ऐसी बात नहीं है। गुरु में ऐसी शक्ति है। हृदय से तुम खुश हो जायेगा तो तुम्हारा भाग्य बदल देगा। मणिग्रीव से नारद ने कहा था तुमको भगवान मिल जायेगा तो उसको खुशी हुई, भगवान ने दर्शन दे दिया।

जगत का बन्धन संतों के संग से कटता है। मन का बन्धन भी गुरु वचनों का पालन करने से खुलता है।

30.8.86

नरक में भी शुकराना माने तो आराम आ जायेगा पर मन की आदत है, शुकराना नहीं मानता। आज हम भी नरक साफ कर रहे थे पर फिर भी शुकराने में थे। भगवान जब जब भी पृथ्वी पर आया दानव हमेशा तैयार रहे। भगवान को कभी भी दानवों ने चैन नहीं लेने दिया।

जो कठिन से कठिन काम भी हँस–हँसकर किया जाता है वही काम सफल होता है। शुकराने से किया हुआ काम ही सफलता देता है। प्यार करना बुरा नहीं है। बस नज़र का फरक होता है। तुम्हारी नज़र में शुद्धता होनी चाहिये। भगवान से ऐंठबाजी करके हम काम नहीं करा पायेंगे। उससे ऐंठबाजी कभी नहीं करना चाहिये। प्यार से ही काम बनता है। मनुष्य अहंकार में रहता है अतः भगवान का रस नहीं ले पाता। भगवान ही रस है, उसी की कृपा से रूप रस गंध है। कहा है मेरे सिवा और कुछ नहीं है, जिधर देखो मैं ही मैं हूँ। बार बार नमस्कार करो।

हम पूजा नहीं छुड़वाते बल्कि मानसिक पूजा कराते हैं। **एक घड़ी आधी घड़ी, आधी से पूनि आध। तुलसी संगति साधु की कटे कोटि अपराध।** तुम बड़ी तकदीर वाले हो जो जवानी में भजन करते हो। तो लोग रो धो कर खून सुखाकर फिर यहाँ आते हैं। तुम बेटे के लिये बेकार रोते हो, यहाँ सब सम्बन्धी स्वार्थी हैं।

चाहे तुम रामेश्वर जाओ चाहे बद्रीनाथ, जान तो हमीं से मिलती है। सद्गुरु का दर्शन चारों धाम से ज्यादा है। हमारे दर्शन से ही तुम्हारे में जान आती है। तुम अपना गुरु को मानों। औरत का गुरु क्या बोलते हो। मेरा गुरु है, ऐसा तुमको जिश्चय होना और बोलना चाहिये।

परमात्मा की कृपा से ही दवाई भी लगती है। तुम दुआ करो तभी दवाई लगेगी। मनसा वाचा कर्मणा से गलती होती रहती है। तुम उस प्रभू से क्षमा मांगोगे तो अवश्य क्षमा मिलेगी। सद्गुरु के अंदर ज्ञान की अग्नि जलती रहती है, उससे तुम्हारे सारे पाप जल जाएंगे। सद्गुरु ही तुम्हारे पाप क्षमा कर सकता है।

संकल्पमय सृष्टि है। शुद्ध संकल्प करो तो तुम्हारा सब हो जायेगा। तुमको कुछ चिंता नहीं करना है। सकल्प काम करता है–मोह नहीं काम करता है। दृढ़ संकल्प ही काम करता है। शुद्ध संकल्प रखोगे तो काम अच्छा हो जायेगा।

भगवान भक्त का सब कुछ सहन कर सकता है पर भक्त उसको

भुला दे, यह नहीं सह सकता।

1.9.86

तुम्हारा संकल्प भी कंजूस है। संकल्प करने में पैसा तो लगता नहीं फिर क्यों नहीं शुद्ध संकल्प करते। हम लोग संकल्प करना ही भूल जाते हैं। तुम्हारा संकल्प में ही आत्म निश्चय हो। ऐसा जो करता है कि मैं निराकार निरंजन आत्मा हूँ, तो वह वैसा ही बन जाता है। तुम जैसा निराकार निरंजन अपने को महसूस करोगे तो एक दिन तुमको पक्का हो जायेगा। मां ने कहा तू बेटी है, औरत है, तो तुम्हारा ये अध्यास पक्का हो जाता है। फिर कोई तुमको मर्द कहेगा तो तुमको सच नहीं लगेगा। इसी तरह तुमको गुरु आत्मारूप बताता है तो तुम यह भी निश्चय करो कि तुम आत्मस्वरूप हो। बस देह में ही औरत मर्द है–असली स्वरूप तुम्हारा आत्मा है।

एक बार ऐसा निश्चय कर लिया है कि जैसे गिन्नी होती है। एक बार चित्त वृत्ति ऐसी पक्की बन जायेगी तो चाहे घोर से घोर कर्म करोगे तो भी आत्मा में ही रहोगे। जैसे कीचड़ में गिन्नी बरसों पड़ी रही परन्तु निकाल कर धोने पर वह गिननी ही रहेगी इसीतरह जब तुम आत्मरूपी गिन्नी के निश्चय में रहोगे तो घोर संसार के कीचड़ में भी तुम अपना आत्मरूप नहीं भूलोगे।

मेरे अन्दर प्यास हुई, तुम्हारे अंदर प्यास हुई तो हम शीघ्र आ गए। ऐसी मिलने की तीव्र इच्छा होती है तो कहीं भी छिपे रहो मुलाकात हो जायेगी। हम तो भाषण नहीं बोलते, लाउडस्पीकर नहीं लगाते पर तुम हमारे पास आ गए। तुम्हारा हमारा पुराना सम्बन्ध था। तुम योग भ्रष्ठ थे अतः फिर जन्म लेकर आ गए हो और फिर हमारा मिलन हो गया तो तुम योग में लग जाओगे। तुम योग में इसीतरह रहो जैसे जल में कमल। जगत में रहते हुए भी, जगत का काम करते हुए जगत का ताप तुमको नहीं लगेगा जब तुम योग में रहोगे। सब भगवान पर छोड़ो बोलो–

जीवन का मैने सौंप दिया सब भार तुम्हारे चरणों में,
उद्धार पतन अब मेरा भगवान तुम्हारे हाथों में।

तुमको ब्लड प्रेशर क्यों होता है? कारण तुम सब कुछ भगवान पर नहीं छोड़ते। शुकराना नहीं करते। खुद रोते हो, दूसरों को भी रुलाते हो। पहले क्या था? उससे अब कितना ज्यादा है। सोचोगे तो शुकराने में डूब जाओगे।

शुकर कर शुकर कर शुकर में गुज़ार।

हमेशा भगवान की जब तुम जय जय बोलोगे तो हर बात में भलाई दिखेगी। भगवान तो बुराई देखता है। कर्म का फल फिर भी तुमको कम करके देता है। ज्ञानी कर्म का लेन देन देखकर दुख को भी शांत होकर सहता है पर अज्ञानी भांय भांय रोता रहता है। हम लोग कहते हैं जो कष्ट दे रहा है वह खराब है पर जो कष्ट सह रहा है वह खराब है। उसने वैसा कर्म किया होगा। भगवान न्यायशाली है। तुम ये न कहना भगवान खराब है।

सारा जगत–जलचर, थलचर, नभचर–सब चल रहा है। भगवान सबको दे रहा है। ज्ञान से ज्यादा सबर की ज़रूरत है। तुम धीरज नहीं रखते हो, घबराते हो पर सदा दिन ऐसे नहीं रहेंगे। आज घबराकर धीरज खोकर परेशान हो जाते हो। जब सुख आएगा तब सुख का आनन्द भी कैसे लोगे?

देखो! हम लोगों को बहुत सुख है। पर मुँह देखो गंदगी जैसा बनाया है। ये मन कभी आराम नहीं लेने देता। इस मन को जितनी गाली दी जाए कम है। कितना भी ध्यान लआओ, मन भटका देता है भगवान से। गिरगिट की तरह मन भी हरा लाल पीला रंग बदलता रहता है।

तुम अपना कर्म मत बनाओ। जो मिले, भगवान का शुकराना मनाओ। जो मिले खाओ। तुम आंख से, हाथ से हर तरह से करम बनाते रहते हो अतः कर्म मत बनाओ। भगवान व्यापक है। शरीर में, उपाधि में देखते हो तो सोचते हो, भगवान तो छोटा है, पर देखो! भगवान जब भी आया साकार रूप में, छोटा ही रूप धरकर आया। वाराह, नरसिंह रूप धरकर आया। जब जब धर्म ही हानि होती है, भगवान कोई न कोई रूप धरकर अपने भक्तों की रक्षा करने आता है।

तुम तो डरते हो लोगों से कि वे कहेंगे कि धर्मव्रत आदि नहीं करता। हर जगह ब्रह्म देखना बहुत बड़ी बात है। कबीर से किसी ने पूछा–तुम कैसे भगवान को मानते हो, न व्रत करते हो, न जप। कबीर ने जवाब दिया–

कबिरा ऐसा कठिन ब्रत राख सके ना कोय,
एक घड़ी बिसरू राम को, तो ब्रह्म हत्या मोंहि होय।

अद्वैत की भक्ति ही सही है। अमुक है, प्रभु है तो द्वैत हो गया जब तक खाली नहीं रह जाए तब तक भक्ति पूरी नहीं हुई। पार्लियामेंट की सीट मिनिस्टरों के लिये खाली रहती है, उसी तरह भक्त की सीट भी

भगवान के सामने खाली रहती है। तुम किसी बात की चिंता न करो। भगवान को बुलाना होता है तो कोई न कोई बहाना बना देता है।

जब तुम्हें मेरी याद आए तो कोई न कोई बहाना लेकर आ जाया करो। हम तो कुछ नहीं करते। तुम्हारी भक्ति ही तुमको दौड़ाकर ले आती है। भगवान की ताकत को आदमी तभी मानता है जब अपनी ताकत खतम हो जाती है। एक न चले चाल, लाख यतन करे उसके आगे, गले न किसी की दाल।

भगवान को मानने न देने वाला अहंकार ही है। संसार में हर इंसान सुख के लिये भागता दोड़ता रहता है पर सुख कहीं है ही नहीं। सुख केवल परमात्मा में ही है। हम कहते हैं कि जगत में आराम नहीं है पर ego ही चैन नहीं लेने देता।

माँ और गुरु जो लड़ते हैं उसमें भी प्यार छिपा रहता है। लोग दूसरों को नहीं बोलते, अपने को ही बोलते हैं क्योंकि उसपर अपना अधिकार भी होता है और प्यार भी होता है। तुम ध्यान लगाते हो! क्या ध्यान लगाते हो? फिर भी तो तुम्हारा मन भागता रहता है। हम बात करते करते भी ध्यान में आ जाते हैं और तुम ध्यान लगाते हो फिर भी तुम्हारा चित्त भागता रहता है। सहज योग में हमारा ध्यान खुद लगता है। सहज योग में ध्यान करना नहीं पड़ता है। खुद ही हो जाता है। कुछ भी करना नहीं पड़ता।

योग में थकान आती है तो झुंझलाहट आती है पर हम लोग तो देखते देखते सुनते सुनते ध्यान में आ जाते हैं। मनुष्य बाहर देखकर टाइम बरबाद करता है, अन्दर नहीं जाता। अशब्दी ब्रह्म पद को पाय के ज्ञानी हुआ निर्वाण। अशब्दी ब्रह्म को पाने कि लिये सब शब्दों का त्याग करना पड़ता है। रूप, रस, गंध शब्द में सब disturbance हैं। अशब्दी ब्रह्म भी उसके साथ हो ले तो अन्दर चले जायेंगे। बैठते बैठते सुनते सुनते भी गाइड के साथ नहीं चलते। उसके साथ चलें तो अन्दर चले जाएंगे–खजाना मिल जायेगा।

तुम कहते हो, यह काम नहीं हुआ, वह काम नहीं हुआ पर यह तुम्हारी ही कमी है। तुम खजाना लेना नहीं चाहते। भगवान का भजन करे और उसे कुछ न मिले, ऐसा हो नहीं सकता। न होने वाला काम भी हो जाता है। तुम्हारे भाग्य में जो वस्तु नहीं होगी वह भी वह दे देगा।

तुम बाहर ही बाहर रहते हो तो ताप लगता है। जब गाइड के साथ अंदर जाओगे तो सुरंग दिखाई देगी। अंदर जाओगे तो पता चलेगा कि

भगवान का भंडार भरा है। हम ले ही नहीं पाते। हम कहते हैं–ये कमी, वो कमी है। पर आप अंदर जाइये तो पता चलेगा।

मेरे गुरुदेव ने मुझको दिखाया मार्ग उस दर का, भरा भंडार था जिसका,

महक उसकी नशा उसका, पिया जिसने वही जाने।

कभी न छूटनेवाला भगवान का प्रेम ही real है। जिसके ऊपर भगवान का हाथ होता है तो उसका क्या बिगाड़ सकेगा आंधी और तूफान। तू और कहीं मैं और कहीं, ये नाम का सिजदा कौन करे। भगवान की बात बहुत ऊँची होती है। हमारे यहां नाम का सिजदा होता है।

2.9.86

भगवान करने करानेवाला है। सब भगवान ही करता है। मनुष्य चिंता में ही गलता रहता है। जब ऐसा प्रतीत होने लगता है, भजन करते करते, कि सब भगवान करता है तो भगवान अवश्य करता है। मम चिंता क्या हो, मेरी चिंता हरी करे। जब भगवान भूलता है तो दुःख ही दुःख आता है। इच्छा के मारे ही आदमी रोता रहता है। दुनियां के कष्टों से दबा पड़ा मनुष्य रोता रहता है। हम लोग दिल से हंसते हैं तो भगवान कहेंगे एक दिन कि ये तो हंसते रहते हैं तो दुख भी नहीं देंगे। हम लोग देखो कैसे बौरहों की तरह हंसते रहते हैं।

सब कुछ भगवान पर डालो। जब सब कुछ भगवान पर डरलते हो तो भगवान परेशान हो जाता है तुम्हारे लिये। भगवान अपने आप तुम्हारी गाड़ी चलाता है परन्तु हम लोग अपने अहंकार में रहते हैं कि गाड़ी हम चलाते हैं। हम कितना भी अहंकार करें पर गाड़ी भगवान ही चलाते हैं। जगत में तो कुछ न कुछ होता ही रहता है। पर भगवान पर छोड़ दो तो न होनेवाला काम भी हो जाता है। जीवन का सारा भार भगवान को सौंप दो! वे अपने आप तुम्हारे भार को उठाएंगे।

जब तुम खाते पीते आत्मा में रहते हो तो गुरु कुछ नहीं बोलेगा। पर जैसे ही तुम्हारी आत्मशक्ति क्षीण होने लगती है, गुरु हल्ला मचाता है। गुरु जप तप से छुड़ाकर सहज योग में ले जाता है। एक राजा अपने गुरु को बहुत मानता था। गुरु ने उसका जप तप तीरथ व्रत सब छुड़ा दिया। यह देखकर सब लोग कहने लगे कि तुम तो कुछ भी पूजा पाठ जप तप नहीं करते तो बार बार कहे जाने पर राजा का मन डोल गया और वह फिर पूजा पाठ करने लगा तो गुरु झट आ गया। गुरु ने गुस्सा किया तो राजा

को अपनी गलती समझ में आ गई।

गुरु को मनुष्य जानते जनम जनम होत श्वान। गुरु साक्षात भगवान है। गुरु के सामने जोश, क्रोध से मत आओ। ब्रह्म एक ही है लेकिन देह अध्यास के कारण जान नहीं पाते। पूजा जप तप सब देहभाव से करते हैं। तुम बोलते हो, पहला गुरु अच्छा था। पर आज वह नहीं है तो तुम्हारे विकार कौन तुमको बताएगा और बिना बताए कैसे तुम्हारे विकार दूर होंगे? **अतः बिन सत्संग ज्ञान नहि उपजे, कर ले जतन हज़ार**। इसी तरह अगर आज तुम्हारे पेट में दर्द है तो आज का सिविल सर्जन ही तुम्हारा इलाज करेगा फोटो का डाक्टर नहीं। इसी तरह ज्ञान के लिये आज का गुरु चाहिये। हमारे भी बहुत से भगवान राम कृष्ण सब थे पर उनसे ज्ञान नहीं मिला हमें। जब जिंदा गुरु हमें मिला तो आज शांति आई।

हम देखो उसी ज्ञान से आज शाहंशाह हैं, इंदिरा गांधी की तरह। अगर हम ज्ञान न लेते तो सब बेटे बेटी अपने अपने घर के हो गए हैं तो हम रोते रह जाते। पर अब हम सबसे निश्चिंत हैं। ऐसी निश्चिन्तता गुरु ही दे सकता है–ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, राम किसी से नहीं आई थी। आज हमको ज्ञान से कितना धीरज आ गया। आज हैवान से इन्सान बन गए। पहले पहल जात छोड़ा धर्म छोड़ा। हमारे यहाँ पर्दा होता था, वह भी छोड़ दिया था। **पग घुंघरू बांध मीर नाची रे**।

चाहे अच्छा हो बुरा, सबको इस शरीर को छोड़ना पड़ता है। देखो! ये माता जी कितनी अच्छी हैं, किसी को सतातीं भी नहीं हैं पर शरीर ही उसका साथ नहीं देता। शरीर का कोई भी भरोसा नहीं है। इसीलिये जो जवानी में ईश्वर को पकड़ लेता है वह सबसे अलविदा लेकर बैठता है। आसक्ति से हटना बड़ा कठिन है। देखो! ज्ञानी लोग किसी से भी बात नहीं करते। ऊपर ही देखते है। क्योंकि वह जानते हैं **'किस नाल दी दोस्ती, सब जग चालनहार।'** झूठी माया, झूठी काया, सब कुछ क्षणिक है। अतः मन को भगवान में लगाओ। मन को रस बाहर नहीं, अंदर ही है। जब हमें रस अंदर नहीं मिलता हैं, तभी हम बाहर ढूढ़ते हैं। अतः अन्दर जाओ।

तुम जब दूसरे की श्रद्धा जगाते हो तो उसका कल्याण हो जाता है। क्या भी हो जाए, दूसरे की श्रद्धा मत तोड़ो। जिसके पति पुत्र की श्रद्धा बढ़ती है, समझ लो उस औरत में श्रद्धा होगी। अतः तुम अपनी श्रद्धा जगाओ।

पहले हमको भगवान से मांगना पड़ता था। आज तुम बस सोचो, हो

जायेगा। जब तक हमारी आँख तुम पर होगी, माया की दाल नहीं गलेगी चाहे लाख फंदा डाले। परन्तु हमारे बार बार कहने पर भी जो नहीं सुनता वही गलती करता है तो हम अन्तरात्मा से उसको छोड़ देते हैं तो वह माया के कीचड़ में फंस जाता है।

यह मन बड़ा कुत्ता है। एक गुरु ही तुम्हारे मन को सीधा कर सकता है तुम पर दुःख पड़ता है तो लोग जान जान कर तुमको रुलाने की कोशिश करेंगे। एक गुरु ही ऐसा है जो तुमको दुःख में भी हँसा सकता है। हमारा ज्ञान डाक्टर से भी बड़ा है। इन्सान कितने भी कष्ट में हो, हमारा ज्ञान दवाई का काम करता है।

करना था सो ना कियो, पड़्यो मोह के फंद।

अतः जो करना है आज ही कर लो। अपने लिये कुछ करो। तेरे कर्मा का पर्चा तेरे ही पेश आना है। यहां कोई दूसारा किसी के काम नहीं आता, यहां तक कि यह शरीर भी यहीं छोड़ देता है। अतः जो साथ जानेवाली वस्तु है, उसे ग्रहण करो वह है भगवान का भजन। अतः भगवान का भजन करो।

जो परमानंद में विलीन हो जाती है, बह आत्मा शांति में रहती है। क्योंकि वह जीवात्मा परमात्मा में मिलकर एक हो गई। हमारी वृत्ति का कनेक्शन ईश्वर से होना चाहिये। तुमको ईश्वर सबसे प्यारा होना चाहिये। मन को तो जगत के सम्बन्ध प्यारे लगते हैं। पर जो परमात्मा को प्यार करता है, उसकी वृत्ति कही नहीं जाती, वह आनंद में रहता है। जगत तो हमको चर लेता है। जैसे गाय घास को चर लेती है उसी तरह जगत हमारे विवेक को चर लेता है। खाना पीना बुरा नहीं है पर तुम्हारी वृत्ति उससे अलग होना चाहिये। ये मन ही शंका दिलाता है। अरे! कहो कुछ नहीं होगा–जो होगा अच्छा ही होगा। जो गुरु पर विश्वास करता है।(गुरु वाक्य सत्व) तो सत्य हो जाती है वह बात। अतः शब्द मरें तां फल पावे।

गुरु की सेवा करने से लोग मरे जाते हैं पर देखो कितना सब अच्छा हो गया। जो सच में भजन करता है, उसके दोनो हाथ घी में होते हैं गुरु की सेवा करने सी ही मनुष्य Balance में होता है। घर का काम भी करता है और ज्ञान भी लेता है।

हम छत्ते में शहद बनाते है। दुनियां वाले उसे चाट लेते हैं। इसीलिए हम कहते हैं तुम जगत में न जाओ। गुरु हमारे हृदय रूपी छत्ते में श्रद्धा वाला परमात्मा का शहद भर देता है। जगत में जाने पर अश्रद्धा वाला उसे

चाट लेता है।

जगत वाले तो बोलते ही रहते हैं। कमी ही बताते हैं। तुम क्यों रोते हो? अपना काम सही सही करो। भगवान तुम्हारा काम अपने आप करा देता है। हम तो देखो खाली भगवान की जय जय मनाते हैं तो समय समय पर अपने आप चीज़ मिल जाती है। तुम भी खाली भगवान भगवान करो और हँसो।

3.9.86

जब-जिस बात के लिये आदमी निरीच्छा होगा वही चीज़ की भरमार हो जायेगी। हम हमेशा कहते हैं श्रद्धा वाली बात करते हैं। पहले तो कोई गुरु भक्ति करता नहीं, मानों किसी तरह करता भी है तो लोग अश्रद्धा पैदा करा देते हैं जैसे बोर्डिंग में रहनेवाला जितना अच्छी तरह से पढ़ सकता है उसी तरह गुरु के घर को भी बोर्डिंग समझ कर रहे तो मन अच्छा बनता है। गुरु के सामने रहकर ही मनुष्य कर्म में mould होता है। यदि गुरु की मानता जाए तो ही मन मुड़ता है। बड़ी मुश्किल से मनुष्य घर का बंधन काटकर गुरु के घर रहता है पर तुम उसको अश्रद्धा दिला देते हो। एक जीव ऊँची चीज़ पकड़ता है तो तुम स्वार्थ से उसको गिरा देते हो। जो मनुष्य भगवान में जीवन लगा देता है, उसका इहलोक और परलोक दोनों अच्छा हो जाता है। देखो! हम भी गुरु भक्ति करते हैं तो हमको दूध पूत अन्न किसी की कमी नहीं है। अरे! भगवान सब भर देता है। जो गुरु भक्ति करता है, उसको अश्रद्धा वाले का संग नहीं करना चाहिये। हम जब तुमको मना करते हैं तो तुमको बुरा लगता है पर वह तुमको अश्रद्धा में डूबने नहीं देना चाहता। मन नाना करते भी अश्रद्धा वाले की बात में फंस जाता है। जब बाद में गुरु भक्ति कम हो जाती है तो गुरु पर दोष लगाता है। अभी हमको गुरु ने सब बंधनों से छुड़ाकर निज घर में पहुँचा दिया। अन्दर आत्मा का घर ही अपना है। जब गुरु से जीव राजी होता है तब गुरु निज घर तक पहुंचा देता है।

मेरे जीवन से देखो। हम भी कठिनाई से चले भजन में तो आज भरा भरा है। यह कहना कि कमी है, बेवकूफी है। तुम दिल से भजन नहीं करते। हमारे पास तो भरा भरा ही है। हम तो पाएं सैकड़ों लागों को खिलाएं, फिर भी भरा रहेगा।

तुम भगवान को आनेदकंद भगवान क्यों कहते हो। देखो! हम तो आनंदकंद भगवान अब बन गए। हम जब छोटे थे तो अपने पिता जी को

हर समय आनंदकंद दामोदर बोलते देखते थे तो हम जहां भी होते थे, भाग कर आकर उनका मुंह देखते रहते थे। वे एक भजन और गाते थे। भजो रे मन! राम नाम सुखदाई। हम मांस में (शरीर में) फंसे होंगे तो वह हमको शायद जगाकर बताते थे। जैसे हनुमान की शक्ति को बंदरों ने बार बार कहकर जगाई थी, उसी तरह लगता है हमारे पिताजी भी हमको हमारा रूप याद दिलाते रहते थे। तुम लक्ष्मी बुलाते हो। अरे! तुम भगवान को अपने हृदय में बंद कर लो तो लक्ष्मी खुद ही भागती आ जायेगी।

भगवान को भक्त की गुलामी करनी पड़ती है। धन्ना भगत ने ऐसा ही किया। पर भगवान ने देखा उसकी वृत्ति थोड़ी इधर उधर हटी तो भगवान चुर्की खड़ी करके भागे। यह तो स्थूल बात है पर इसके मतलब हैं एकाग्र वृत्ति की ज़रूरत पड़ती है। भगवान और गुरु के कर्म में मत जाओ। कर्म न जाना मर्म न जाना।

भगवान सबकी तकदीर बनाता है। तुम्हारे लिये कैसे कैसे फूल बनाता कैसी कैसी सुख सुविधा करता है, ऐसे भगवान को तुम बुरा मत कहो। तुमने भक्त को देखा ही नहीं है। मीरा, हनुमान की भक्ति देखी। मीरा ने भगवान के लिये राजपाट छोड़ा–ऐसी भक्त थी। हनुमान ने भी अपना सुख चैन भगवान के लिये छोड़ा तो उसका नाम हुआ। सुग्रीव तो भगवान का दोस्त था पर उसका नाम क्यों नहीं हुआ? क्योंकि वह राज्य का लोभी था। प्रेम और मान दोनों साथ नहीं मिलते। या तो प्रेम मिलेगा या मान। मान के मारे लोग प्रेम को छोड़ देते हैं। राम को जब तक सीता ने हृदय में रखा, कहीं नहीं छोड़ा राम ने पर जैसे ही उसकी नज़र हिरन में गई राम ने छोड़ दिया। जो इन आंखों से भगवान न देखकर दूसरी चीज़ देखता है तो भगवान हट जाता है और भगवान के हटते ही दुःख मिलता है।

मनुष्य को सुख मिलता है तो वह भगवान को छोड़ देता है पर तुम यह नहीं जानते कि भगवान से ही सुख है। भगवान का रस सबसे मीठा रस है भगवान तुमको किनता मीठा लगा बताओ? तुम आत्मा हो। प्रेम करना तुम्हारा स्वभाव होना चाहिये। तुम खाली नहीं रहते। चिंता करते हो। बोलते हो ऐसा नहीं करूंगा, ऐसा करूंगा। अरे तुम भगवान की कृपा मानो जो दे उसका ले लो, शुकराना करो। **न कर तू शिकायत न कर तू पुकार, शुकर कर शुकर कर शुकर में गुज़ार।**

बार बार श्रद्धा की बात करो। अश्रद्धा वाले का संग आज ही छोड़ो। तभी तुम्हारे अन्दर भगवद्भाव जगेगा। परमात्मा नवनीत जैसा है। जगत का अश्रद्धा वाला प्राणी पत्थर जैसा है। अतः नवनीत और पत्थर का कैसा

संग हो सकता है। रूह का भोजन जब मिलता है तभी अच्छा होता है। बाहर का खाना घोड़ा (शरीर) को पालने कि लिये खाते हैं। रूहानी खुराक अलग है। तुम्हारी आत्मा हमारी आत्मा से जुड़ती है, अद्वैत ब्रह्म में आती है। तभी हमारा तुम्हारा मेल होता है। तुम यह सोचो मैं निराकार निरंजन हूँ। राजा जनक को जब गुरु ने ज्ञान दिया तब वह बोलता है गुरु से कि मैं अब समझ गया–जगत प्रपंच स्वप्नवत है। जब हम भी आत्मा में रहेंगे तो जगत स्वप्न सा लगेगा जब देह में होंगे तभी जगत भासेगा, दुःख सुख भासेगा। तुम क्या चिंता करते हो? पहले से दूने हो, धीरे धीरे चौगने में आ जाओगे डाक्टर बोलता है, तुम्हारे दिल में धक धक होता है। तुम मत डरो। भगवान का सहारा होता है तो कुछ नहीं होगा।

जिस तरह ट्रक लदा होता है तो गाड़ी चलाने वाले को कितना कष्ट होता है, उसी तरह जब तुम्हारे हृदय में संसार का बोझा होगा तो भी गाड़ी चलाना कठिन हो जायगा। तुम क्यों घबराते हो परमात्मा तुम्हारे साथ है। जो परमात्मा की खोज करता है तो परमात्मा भी उसकी खोज करता है। तुम परमात्मा को अभी भी अच्छी तरह नहीं पहचानते। ये पंडित विद्वान क्या होते हैं? देवी देवता की भी पूजा होती थी पर हमको अच्छा नहीं लगता था। इतनों को पूजना, ये झंझट है। गुरु के मिल जाने पर सबसे छुट्टी।

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरु साक्षात परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः।

गुरु को इतनी पदवी देने से ही हकीकी इश्क मिलता है–मजाजी इश्क बेकार है। अब हमें हकीकी इश्क हो गया है, अब तो हम सिवा परमात्मा के कुछ नहीं देख पाते। बड़ी मुश्किल से तुमको देख पाते हैं। समझो बड़े नसीब हैं तुम्हारे।

मन से अलग होने से कुछ नहीं होता। विचार से हटना ही हटना है। सत्य को समझकर हटो तो अच्छा है। बजरंगी ने सताया तो नफरत से हटे, वैराग्य से नहीं हटे। लोग (सगे संबंधी) इतना सताते हैं तो भी तो तुम्हारा मन उनका ही नाम लेता है। अरे! अगर ये लोग न सताएं तो मन भजन करने ही न दे।

बिना कष्ट के सुख नहीं मिलता। प्रेम ही परमात्मा है। तुम किसी से प्रेम करोगे तो वह तुमको भुला नहीं पाएगा। प्रेम में रहोगे तो तुम राज भोगोगे ये हमारा आशीर्वाद है। हनुमान ने भगवान की सेवा की, हनुमान भगवान के पास से हटते नहीं थे। राम के भाइयों ने सलाह किया कि इसको हटाएं।

सबकी सेवा निश्चित की और हनुमान से कहा कि तुम्हारी कोई सेवा नहीं, आज छुट्टी। हनुमान दुःखी हो गए। हनुमान ने कहा 'अच्छा! भगवान जब जमुहाई लेंगे तो हम चुटकी बजाएंगे' कहकर भगवान के पास दिन भर बैठे रहे। रात में भी बैठे रहे तो सीताजी ने कहा बाहर जाओ तो बोले पता नहीं कब रात में जमुहाई आ जाए। तो वह बार बार कहे जाने पर बाहर जाकर चुटकी बजाने लगे। लगातार जब चुटकी बजाने लगे तो भगवान का मुँह खुला रह गया। सब घबराए तो विश्वामित्र वशिष्ठ आदि बुलाए गए तो उन्होंने कहा सब भक्तों को बुलाओ। सब आ गए पर हनुमान बाहर बुर्ज पर बैठे थे। जैसे ही उन्हीं नीचे आने को कहा, चुटकी बजना बंद हो गई और भगवान का मुंह भी बन्द हो गया, तो सबने आशीर्वाद दिया।

एक बार हनुमान को सीताजी ने खाना खिलाया। हनुमान भंडारे का सारा सामान समाप्त कर गए तो सीताजी परेशान हो गईं। कौशल्याजी से खाना मांगकर लाई तो हनुमानजी बोले "ये तुम्हारे हाथ का बनाया हुआ नहीं है, इसलिये हम नहीं खाएंगे।" डरके मारे राम के पास गईं, बोलीं, "हनुमान खाते ही जा रहे हैं फिर मांग रहे हैं।" राम ने एक तुलसीदल दिया तो उसको खाते ही हनुमान की भूख शांत हो गई तो बोले "माँ! पहले ही क्यों नहीं दे दिया।" वह राम के हाथ का प्रसाद खाना चाहते थे। जो भगवान में लगा होता है, भगवान उसका बेड़ा पार करता है। उसकी नाव तरी है और तरेगी–कभी नहीं डूबेगी। तुम भक्ति खंडित मत करो। परिवार में कष्ट आने का कारण है, हम सच्ची भक्ति नहीं करते। सब चिंता छोड़ो, भगवान भगवान करो, गीता अवश्य पढ़ो। क्यों 8, 10 बजे तक सोते हो। जल्दी उठो–गीता पढ़ो तो दिशाएं खुल जायेंगी। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश–पांचों तत्व में भगवान को देखो। हर प्राणी पांच तत्व का बना है तो परमात्मा ही तो है। चारों दिशाओं में भगवद्चिंतन करो। फिर बड़े बड़े तत्वों में भगवद् चिंतन करो, फिर अपनी इंद्रियों में भगवद् चिंतन करो।

दर्शन साधू के करे, साहब आवै याद। भगवद् दर्शन से ही चेहरा लाल होता है–खून चढ़ाने से ही चेहरा लाल नहीं होता। गुरु को नातेदार, रिश्तेदार कुछ तो मानो। कितनी ही औरतें कहती हैं "मैं भगवान को पति मानती हूँ।" पर उनका मुँह सूखा पड़ा है–ऐसे कैसे पति माना। तुम्हारा मुँह से बोलना बेकार है। भगवान छल्ला उछालते हैं। भगवान की याद आ जाए तो कैसा मीठा रस आ जाता है।

एक औरत भगवान को खिचड़ी खिलाती थी। भगवान उसकी खिचड़ी

रोज खाने आते थे। एक दिन देवी देवता घबरा गए कि ये तो भगवान को अपने वश में कर लेगी। नारद मुनि उसके पास आकर बोले "तुम भगवान को बिना नहाए धोए खाना खिलाती हो। सफाई भी नहीं रखती हो।" वह उसके कहने में आ गई। उसने नहाना धोना शुरू किया। दूसरे दिन उसको इन्हीं कामों में देर लग गई। भगवान अपने समय पर आ गये। देखा वहां खिचड़ी बनी ही नहीं थी। भगवान फिर खिचड़ी खाने नहीं आए। इसीलिये कहते हैं अश्रद्धा वालों का संग नहीं करना चाहिये। कभी भक्त को गिराओ नहीं, उसकी भक्ति बढ़ाओ, खुद भी बचो दूसरे को भी माया से बचाओ। देखो कितने लोग माया में चले गए। तुमने उनमें अश्रद्धा पैदा की अब तो जो बचे हैं उनको बचाओ। जो बचेगा वह तुम्हारे काम आएगा, तुमको भी पानी देगा।

जगत में जैसे एक आदमी मिल जाता है तो सब आ जाता है। उसी तरह भगवान भी आ जाता है तो सब कुछ आ जाता है। जब मनुष्य भगवान के दर्शन की इच्छा रखता है तो बन्धन नहीं आता। जब तुम गुरु के बिना नहीं रह सकते तो गुरु जान जाता है। एक नजर से गुरु पहचान लेता है कि ये मेरा प्रेमी है या नहीं। श्रद्धावान की श्रद्धा गुरु को पहले ही पता चल जाती है, इसीलिये गुरु को अन्तर्यामी कहते हैं। गुरु अंतर की सब बात जानता है। तुम्हारा कपट कब चलता है, गुरु जान लेता है। कब राग चल रहा है कब क्या हो रहा है, गुरु को पता चलता है।

कहते हैं **राजा दुःखिया, परजा दुखिया, सकल सृष्टि का राजा दुःखिया, सुखिया केवल नाम अधार**। जो नाम के आधार पर है उसी को खुशी होती है।

हर वक्त हंसी, हर वक्त खुशी,
हर वक्त अमीरी है बाबा।

जगत में कमल के फूल की तरह रहना चाहिये। जो हो सके, करो जो न हो सके न करो। आराम से सो जाओ। मनुष्य करता कम चिंता ज्यादा करता है। कर्तापन का अहंकार ऊपर से लेकर बैठता है। अरे! सब भगवान करता है। कृष्ण अर्जुन से कहता है, तू निमित्त मात्र बन जा, बाकी काम मैं करूँगा। अतः तुम अपना सब भार भगवान पर छोड़ो। कहते हैं **"मेरी चिंता हरि करें, मम चिंते क्या होय?"**

ये तुम्हारी ममता ही तुमको सताती है। कहते हो ये कष्ट देता है, वो कष्ट देता है। दुनियां में कोई किसी को दुःखी नहीं करता। हमारी ममता, हमारे विकार ही हमको तंग करते हैं। हम खाली दोष दूसरे को लगाते हैं।

ज्ञान सुने, गुने और उसे व्यवहार में लाए तो ही शक्ति आएगी। तुमको लोग कहते हैं "हार्ट की बीमारी है। तुमको कोई हार्ट की बिमारी नहीं है। तुम डाक्टर के कहने पर बिस्तर पर पड़ जाते हो। तुम सत्संग करनेवालों को कोई हार्ट वार्ट की बीमारी नहीं होती है। तुम मत मानना कि हार्ट की बीमारी है। ज्ञान सुनने वाले को हार्ट की बीमारी नहीं होती।

हमारे सत्संग में कोई बंधन नहीं। काम ज्यादा पड़ गया हो, थक गए हो तो लेटकर सुन लो। यह शर्त नहीं है कि गुरु आया है तो कैसे लेटें? तुम आराम में आ जाओगे।

भजन करता है, सुनाता है तो कोई परेशानी आती है तो बोलता है ऐसा हो गया पर असली बात नहीं सोचता कि बच गया। पता नहीं कौन सी सूली आनेवाली होती है, संत सूली को कांटा कर देता है।

संत की महिमा वेद बखानी,
वेद कहत सकुचावत है।
नारद भी वीणा को लेकर
गीत संतों का गाते हैं।

ज्ञान आश्चर्यवत है। सुनने सुनानेवाला दोनो आश्चर्यवत है, जगत तो अपने आप चलेगा जो भी पाप ताप हैं, जल जायेंगे ज्ञान से। गीता का अध्ययन ही अच्छा है। गीता में हमारा मन आठों याम टिक जाए तो जीवन सुंदर प्यार वाला बन जायेगा। जो जीवन सुंदर बना है वह अपने से नहीं राम से बना है पर मन भूल जाता है। इसीलिये नित अभ्यास, नित वैराग करने सी ही यह बात पक्की होती है। जिस दिन हम आत्मा में टिक जायेंगे, उसी दिन हमें पूरा आराम आ जायेगा।

गुरु जैसा बोले, वैसा चले तो बड़ी भलाई होती है। गुरु सब की पालना करता है। हम तुम्हारे कष्ट को समझते हैं। गृहस्थी वाले को क्या क्या ताप कष्ट है, हम सब जानते हैं। हम भी उसी गृहस्थी से गुज़रे हैं। अतः तुम घबराओ नहीं। एक दिन आराम आ जायेगा।

किसी भी क्रिया को बोझ नहीं समझना चाहिये। क्रिया को बवाल मत समझो। काम को कर्तापन के बोझ से हटाओ और बोलो जो किया भगवान ने किया। उसमें फिर कोई तुम्हारे काम की बड़ाई करे या न करे, दुःख नहीं लगेगा क्योंकि तुम कर्तापन में थे ही नहीं। भगवान का शुकराना देखो कि तुम कितना काम कर लेते हो, फिर भी सदा जवान बने रहते हो।

दुःख में सुख पैदा करो। हम जिंदगी भर क्यों रोते रहें? भगवान का शुकराना करो–हारिये न हिम्मत, बिसारिये न राम। जिंदा रहे नर तो बसाता रहे घर। जब हम ही नहीं रहेंगे तो आगे का सुख कौन देखेगा? अरे जो भी होता है, उसे खेल समझकर देखो। डाक्टर की मां ने ज्ञान लिया तो अपने पति के देहान्त के समय भी सबको ज्ञान दे रही थी।

हमारी जितनी जितनी वृत्ति उपराम होती जाती है, वैसे वैसे दुनियां हमारे पीछे पीछे आती है। जब हमारा नुकसान होता है तो उसके कारण हम स्वयं हैं। जैसे जैसे हमारी वृत्ति भगवान में लगेगी, काम अपने आप होने लगेगा। आप हाथ से काम करिये, जो कर्म है, अवश्य करिये, पर मन में राम ही राम हो। तुम राम राम करोगे तो तुम्हारा सब काम हो जायेगा।

भगवान को जो ज्यादा पहचान लेता है, तो भगवान का सारा ऐश्वर्य उसे मिल जाता है परन्तु त्रिगुणमयी माया उस वृत्ति तक पहुंचने ही नहीं देती।

ऐसे आत्मस्वरूप को जो जानने लगता है, त्रिगुणमयी माया उसके वश में हो जाती है। उसका सब कुछ अपने आप हो जाता है। लेकिन माया फंसाने के लिये पैर घसीटती रहती है, लेकिन जो गुरु की आज्ञा में चलता है तो वह माया का उल्लंघन अपने आप कर जाता है।

तू और कहीं मैं और कहीं, ये नाम का सिजदा कौन करे? पास दूर से मतलब नहीं है, वृत्ति से चित्त से दूरी या नजदीकी मानी जाती है। चित्त लगा हो तो चाहे कितनी भी दूर मनुष्य हो, वह गुरु के नजदीक ही है। चिंतन करते करते जब अचिंत्य हो जाए तो मनुष्य को रोम रोम में परमात्मा आ जायेगा। तुम बोलोगे फिर काम कैसे करेंगे? पर भगवान समय समय पर जगाकर काम करा देता है।

मूर्ति में भगवान मानना सरल है पर अपने रूप में ही भगवान मानना, देखना बड़ा कठिन है। अपनी मूर्ति में जब भगवान दिखने लग जाय तभी अच्छा होता है।

तुम बोलते हो, कपड़ा सादा हो पर कपड़ा पहनने से कुछ नहीं होता है। चित्त भगवान में होना चाहिये, फिर चाहे जो भी कपड़ा पहनो। गुरु के पहले जो भी कर्म किये वे सब माफ हो गए पर गुरु के पास आने वाले को फिर सतर्क होकर रहना चाहिये। पहले जो भी किया उसकी कोई बात नहीं। आज जो मर्यादा में नहीं चलता, वह मेरे पास न आए। यहां आओ तो सोच समझकर, सतर्क होकर आओ। हमको भेदभाव कुछ नहीं है पर

मर्यादा भी एक चीज है मेरी मर्यादा तुमको रखनी ही पड़ेगी। पहले मेरे से पूछ लेना कि अमुक जगह जाएं या नहीं। तुम ऐसी बात मत करना जो गुरु पर लोग उंगली उठाएं।

गुरु किसी से कुछ नहीं मांगता बस तुम केवल ज्ञान सुनो। तुम सिर न झुकाओ, खाली नमस्कार करो। तुम खाली देखकर खुश हो जाओ–तुम्हारे दिल में हमारी बात हो, ये अच्छा है। ये फूल माला सब बेकार है। इन्द्रियां तो शुद्ध और निर्मल बनाते नहीं, वश में करते नहीं और पूजा करते हो। ठीक है एक बार पूजा कर ली, हर आदमी फूल डाले, माला डाले, उससे ज्ञान में विघ्न होता है, समय बेकार होता है।

आप ज्ञान समझो–तू निराकार निरंजन अजर अमर अविनाशी है। तुमको कष्ट नहीं लगना चाहिये। शोक चिंता तो मनुष्य को सताते रहते हैं। मर्यादा से चलो, सबसे अच्छा है। गुरु हर बात जानता है। अब तुम मेरे पास आ गए, मेरी कैद में आ गए। पहले जो किया सो किया पर अब मर्यादा से चलना चाहिये।

यह तो मयखाना है। पीनेवाला आएगा, आज पियेगा कल चला जायेगा। संत इसी मयखाने में ज्ञान सुधा पिलाते रहते हैं, जो आता है वह पीता है। संत बड़े परमार्थी होते हैं–स्वयं कष्ट सहकर जगत का कल्याण करते हैं।

मन शुकराना नहीं करने देता। अरे शुकराना शुकराना करो, पहले जब थोड़ा था, तब भी ठीक था, पर आज कितना है फिर भी शुकराना नहीं निकलता। इसीलिये कहते हैं, छोटे बच्चे कितने अच्छे होते हैं। जो पहना दिया जाता है, खिला दिया जाता है, खुश हो जाते हैं। पर जैसे जैसे समझ आती है, शुकराना भूलने लगता है।

तुम अपनी शकल क्यों बिगाड़ते हो। कारण है–अन्दर मशीन विचार चलते रहते हैं। हमेशा एक सी हालत नहीं रहती। Change होती रहती है। लेकिन हर हालत में खुशी मनाओ तो ही अच्छा है। जगत में तो कुछ न कुछ होता ही रहता है। हमारे गुरुजी कहते थे–हमेशा छोटे बनकर रहो, बड़ा होने में राग द्वेष सताने लगते हैं।

रूखा सूखा खाय के ठंडा पानी पीव। प्रेम से रहो। प्रेममय जीवन अच्छा होता है। खाली घंटी बजाने से क्या फायदा? सबसे प्रेम करो बस पूजा हो गई। जन जन से प्रेम करना ही पूजा है।

नम्रता, सेवा और जन जन में भगवत भाव ही सही पूजा होती है। घर घर में कलह कलेश होते रहते हैं। जो कुछ भी मिला है सोचो कि किसकी कृपा से मिला है। भूल जाते हो। बार बार घर बनाने का संकल्प करो तो भगवान की कृपा से बन जायेगा। बनाने से क्या नहीं बनता। तुम केवल शुभ संकल्प करो, सब ठीक होगा। संकल्प में इतनी शक्ति है कि न होनेवाला काम भी हो जायेगा। जिंदगी सिर्फ धीरज की नाव है। धीरज से चलो, घबराओं नहीं। चल चल रे नौजवान, रुकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान।

लेन-देन का भोग अवश्य आता है लेकिन परमात्मा के नाम पर रहो तो सब ठीक हो जायेगा। जो भी सोचोगे, हो जायेगा। संकल्प मय सृष्टि है। अतः अच्छा संकल्प करो। हारिये न हिम्मत, बिसारिये न राम। राम राम करो। राम राम करने से क्या नहीं हो सकता। एक आदमी को जेल मिली। हमने राम राम का जप करना शुरू कर दिया तो ६ महीने बाद ही वह बाहर निकल आया। राम में इतनी शक्ति है। राम राम जपो तो कितना अच्छा होता है। सिर्फ राम राम करो।

6.9.86

जैसा संकल्प होता है, वैसी सृष्टि बनती है। संकल्प में सिद्धि होती है। आज देखो कोई भी चीज़ safe (सुरक्षित) नहीं है। आज हवाई जहाज़ में सौ आदमी मर गए। शब्द मरे ता फल पावे। जो गुरु के एक एक शब्द को मानता है, उसका हमेशा भला होता है। तुम कहोगे शब्द तो माना पर अच्छा तो हुआ नहीं। ऐसा नहीं है–शब्द हीं नहीं माना।

जब तक हम स्वयं ज्ञानस्वरूप नहीं होगे तब तक मुक्ति नहीं मिलेगी। तुम नाम मुक्ति रखोगे तो उससे क्या? पर अगर ज्ञान नहीं लिया तो नाम से नहीं मुक्त होता। राहू केतू हम बाहर समझते हैं पर हमारा मन ही राहू केतू है। मन जब अहंकार में होता है तभी राहू केतु खुद ही कहलाता है। बेटे बेटी का नाम मुक्ति भक्ति रखने से मुक्त नहीं हो जायेगा। अरे! ज्ञान लेने से मुक्ति मिलती है तुमको। ज्ञान न हो तो नाम से क्या होगा?

अहंकार भूत है। ज्ञानी हो और ज्ञानी गुरु के साथ हो तो ज्ञान स्थिर रहेगा। मनुष्य कितना बोल के ठीक होता है कितना बेरुखी से ठीक होता है? आखिर विवेक तो उसके पास है। ज्ञान बघारना अच्छा नहीं होता। उल्टी परिस्थिति आने से मनुष्य घबरा जाता है। जिस मनुष्य ने ज्ञान हृदय में

स्थिर कर लिया है वह हर परिस्थिति में शांत और समान रहता है। जिस मनुष्य को श्रद्धा न हो उसे बात नहीं करना चाहिये। बात करने से बात बढ़ती है अतः चुप रहो।

हमको कोई बुरा कहता है तो कहने दो। हम देह में हैं ही नहीं तो हमको दुःख नहीं लगेगा। जिस बात में तुम्हारा वश न हो उसमें चुप हो जाओ। जो करना चाहे करे तुम न बोलो।

7.9.86

ज्ञान से जैसे जैसे तुम्हारी प्रीति होगी तैसे तैसे तुमको आनन्द आयेगा। ज्ञान सिर्फ बायले की बात नहीं है। ज्ञान से जब सचमुच प्रीति होगी तभी मिठास होगी। आज कितने ज्ञान सुनने वाले बैठे हैं पर उनकी वाणी नहीं चलती। कारण है ज्ञान के लिये जिगर फिदा नहीं है। जिस तरह एक औरत प्रेम में पागल होकर अपने पति पर फिदा होती है तभी वह पतिव्रता कहलाती है उसी तरह तुम्हारी भी प्रीति होनी चाहिये। जब तक तुमको अपनी देह नहीं भूलेगी, तब तक तुम्हारे मुँह से ज्ञान नहीं निकलेगा।

तुम्हारी प्रीति घटने बढ़ने वाली है। कभी रहती है, कभी नहीं रहती। अद्वैत की भक्ति करो उसमें आत्मा ही प्रधान होता है। द्वैत की बुद्धि में अपनी प्रधानता हो जायेगी। जब तुम में ego आयेगा तो तुम उस अद्वैत की भक्ति नहीं कर पाओगे। जब तुम्हारी ज्ञान से प्रीति होगी तभी गुरु से भी प्रीति होगी। जिसको ज्ञान से प्रीति नहीं होती उसको गुरु से भी प्रीति नहीं होती। वह प्यार सच्चा नहीं जो कभी तो हो और कभी न हो। जो गुरु के बिना न रह पाए वही अच्छा होगा। प्यार करनेवाला आगे नहीं देखता कि क्या होगा। पर जो सुख दूख के हिसाब से प्यार करता है वह right नहीं है। गुरु की भक्ति हमेशा एक सी चाहिए चाहे दुःख आए चाहे सुख मिले।

तुमको ज्ञान के बगैर चैन आता है कि नहीं? ज्ञान में तो गाली भी मिलती है। उसके बाद भी तुमको बेचैनी होती है। क्या बात है? गुरु आज गाली देता है तो कसम खाता है कि कल नहीं आएंगे पर आ जाता है। कोई मतलब के आज्ञाकारी होते हैं। गुरु आज जगत में जाने को कहता है तो मतलब से आज्ञा कहकर चला जाता है। गुरु काम के लिये कहता है तो भागता है। तब कहां गई आज्ञा?

तुम्हारा मन बन्दर की तरह नाचता है। देह के निश्चय में रहता है। जो परमात्मा के जिश्चय में रहता है। वह जगत में कभी नहीं जाता। मन

लपलप करके ज़ाता है क्योंकि वहां उसका कोई न कोई आधार है। अभी बाहर जाओ, जूता मिलेगा तो भागा आओगे। अभी हम किसी को किसी बात के लिये मना करते हैं तो वह नाराज़ होता है। कारण है बुद्धि की मलीनता।

गुरु खुले आम ज्ञान देता है। किसी के अंदर ज्ञान जाता है किसी के अन्दर नहीं जाता क्या कारण है? उसका कारण है तुम्हारे अंदर कोई दूसरी वस्तु नामरूप घुसा है। सूक्ष्म में भी मानापमान का होता है तो ज्ञान नहीं होता।

हमारे में यही सच्चाई है कि जरा भी लकीर का फकीर होगा तो हम ज्ञान नहीं देते हैं। भगवान से ज्यादा तुम्हारे अन्दर किसी भी वस्तु का महत्व होगा तो तुम्हें ज्ञान नहीं होगा। जब परमात्मा को अन्दर रखोगे तो बुद्धि मिल जायेगी अन्यथा बुद्धि खराब हो जायेगी। जो गुरु को छोड़कर किसी और को पकड़ता है उसको समझ में भी नहीं आता।

एक व्यक्ति के लिये तुम्हारे मन में राग द्वेष आता है, समझो तुम्हारी भक्ति सच्ची नहीं है और तुमको कुर्सी नहीं मिलेगी लेकिन अगर तुम में राग द्वेष नहीं होगा तो तुमको कुर्सी अवश्य दी जायेगी। सदा मर्यादा में चलना चाहिये। जो नहीं चलता वह ज्ञान का अधिकारी नहीं होता। भगवान राम ने इतनी मर्यादा रखी, इतना त्याग किया तब कहीं जाकर उनको ज्ञान हुआ। जो मर्यादा से चलेगा, भगवान में डूबकर चलेगा तो उसका नाम अवश्य होगा परन्तु यदि तुम उल्टी चाल चलोगे, मर्यादा से नहीं चलोगे तो दुनियां वाले पीठ पीछे कहेंगे देखो कैसा ढोंगी है, ज्ञानी बनता है।

जिसका ध्यान स्थूल या सूक्ष्म में कहीं भी भोग में होगा, उसको गुरु की नज़र कभी नहीं मिलती क्योंकि वह गंदा हो गया है। तुम प्रेम तो गुरु का चाहते हो पर अन्दर कुछ और रखा है तो गुरु कैसे प्यार करेगा। गुरु गाली तभी देता है, जब कोई स्थूलता से तो गुरु के पास है पर अन्दर से घर में है तो ठीक नहीं। लेकिन जो स्थूलता से तो घर पर उसकी तार भगवान से जुड़ी है तो गुरु उसी को पसन्द करेगा। पास रहनेवाले को गुरु नहीं पसंद करेगा। यही गुरु की अन्तर्यामिता है।

देखने में आता है गुरु छोड़ता है पर ऐसी बात नहीं है। तुम ही गुरु को छोड़ते हो। जब तुम हमारे बिना नहीं रह सकते हो तो हम चाहते हुए भी तुमको नहीं छोड़ सकते। हमारी सेवा Nature करती है। हम किसी चेले के गुलाम नहीं हैं। हमने भगवान पर भरोसा रखा है। अतः भगवान ही हमारी सेवा कराता है। भगवान ही हमारा आधार है। हम कितना भी खिलाएं, हमारा भंडारा भी कम नहीं होता, हमारा भंडारा भगवान भरता है।

पेट के काज कहां कहां भटके हम। दूसरे के लिये–अपनी संतान के लिये भटकते हैं कि दूसरा भी किसी दूसरे के आगे हाथ न फैलाए क्योंकि जिंदगी का कोई भरोसा नहीं। एक जीता है अपने लिये, एक जीता है दूसरे के लिये। एक खाता है अपने लिये, एक खाता है दूसरे के लिये। जो दूसरे के लिये जीता है, वही आदमी है, ज्ञानी है।

संकल्पमय सृष्टि है। जैसे जैसे ज्ञान में मन लगेगा, तुम्हारे संकल्प में सिद्धि आ जायेगी। इसीलिये हम कहते हैं, तुम संकल्प शुद्ध करो। जो कमांडर ठीक से कमांड करना नहीं जानता, उसको छोड़ दो। सरकार कुछ काम कहती है, ठीक से नहीं कर पाता तो सरकार निकाल देती है। इसीतरह तुम भी भगवान से अपनी बुद्धि जोड़ो। जो भगवान से दूर कर दे उसका संग न करो।

9.9.86

विवके से काम होना चाहिये। एक व्यक्ति में भी श्रद्धा आ गई तो पूरे घर भर मे श्रद्धा आ जाती है। ऐसे तो मन है ही परन्तु फिर भुलाता हुआ भी महिमा याद दिलाता जायेगा। तुम तो रोज आते हो तो फिर तुमको श्रद्धा हो जाती है–मन की सफाई हो जाने के कारण। लेकिन जो नहीं आता उसको तो धीरे धीरे तुम्हारी श्रद्धा से श्रद्धा हो जायेगी।

तुम्हारा काम नहीं होता। कभी सोचा है क्यों नहीं होता? तुम्हारे मन की खराबी है। तुम आते हो हमारे लिये तो फायदा है पर तुम्हारा vibration भी तो हम सह पाएं। जब तुम भगवद् भाव से आओगे तो हम कुछ नहीं बोलेंगे। पर तुम तो बुद्धि भाव में देह भाव में आते हो। गुरु तुमको क्यों भगाता है क्योंकि तुम्हारे पास से देह अध्यास की बदबू आती है। हम किसी को भगाते नहीं। तुम्हारा देह अध्यास ही तुमको भगाता है।

जब तुम्हारे अन्दर परमात्मा नहीं होता तो जुड़ा हुआ व्यक्ति भी छूट जाता है। दूसरे को दोष देते हो–वह हमको गुरु से दूर करता है। एक ने पूछा तुम एक साथ दो को प्यार कर सकते हो। हमने कहा–हम दो को क्या सारे विश्व को प्यार कर सकते हैं। इंसान केवल एक समय में एक को ही प्यार कर सकता है।

भगवान संकीर्ण नहीं, विशाल है। बस भगवद्भाव से ही जुड़ सकते हैं। राम कृष्ण परमहंस थे। काली जी की पूजा करते थे तो रास मणि ने एक हाल बनवा दिया–सत्संग के लिये। एक दिन रासमणि का कहीं मुकदमा था। समय हो चुका था। गुरु के सामने बैठे बैठे उसका ध्यान कोर्ट में चला गया। गुरु ने समझ लिया। खड़ाऊँ खींचकर उसको मार दी और

बोला "गुरु के सामने तेरा ध्यान कोर्ट में क्यों गया? क्या तुझको विश्वास नहीं है? रानी विवेक वाली थी। मौन रह गई। मुकदमा बिना कोर्ट गए जीत गई।

बातों से कुछ नहीं होता, काम करके दिखाना चाहिये। जो गुरु भक्त होता है, कुछ करके दिखाता है। बातों से हम खुश नहीं होते--कुछ करके दिखाओ। ज्ञान से बड़ा अहंकार आता है। यदि भक्ति मिश्रित ज्ञान होता है तो मनुष्य अहंकार नहीं करता। भक्ति के साथ ज्ञान होना चाहिये। केवल ज्ञान से अहंकार आ जाता है। हमको जब कोई सत्संगी अच्छा लगता है तो समझो भक्ति से अच्छा लगता है। तुम्हारी हमारी निगाहें तभी एक होती हैं जब तेरे मेरे बीच में प्रभु होता है।

12.9.86

बहुत कोशिश करने पर भी अगर कोई काम नहीं बनता है तो उसमें भी भगवान का कोई रहस्य छिपा होता है। बहुत प्रयत्न करने पर अगर कोई काम होता है तो उसमें भगवत्कृपा होती है। हम समझ नहीं पाते इसीलिये रोते गाते हैं, परेशान होते हैं।

तुम देह की चिंता करते हो। यहां सबके पास दर्द है पर क्या करें? भजन किये बिना चैन नहीं आता। फिर मारे राम तो राखे कौन? और राखे राम तो मारे कौन? शरीर में कुछ न कुछ तो होता ही रहता है। सारी मेहनत करने पर भी उसकी रज़ा में ही राजी होना पड़ता है। यह सोचकर कि प्रयत्न करने पर भी काम नहीं होता आगे हाथ पर हाथ धरकर बैठना ठीक नहीं।

तुमको क्रोध बहुत है। अरे! सतगुरु के पास बैठकर अपने मन पर मूसल चलाए। धान को कूटने के लिये दा दो मूसल चलाए जाते हैं, तब कहीं चाक्ल साफ होता है। इसी तरह जब गुरु और गुरु भक्त मिलकर आरा चलाते हैं तब मन बनता है, तुमको कोई सत्संगी कुछ कहता है तो तुम उससे लड़ पड़ते हो। पर एक गुरु अकेला तुम्हारे मन को नहीं मारता सत्संगी भी तुमको बोलेंगे। तुमको मौन रहकर सुनना पड़ेगा तभी तुम्हार मन बनेगा।

तुम प्यार से सबको भगवान के रिश्ते से देखो। जो भी गुरु का भक्त है वह भी तुम्हारे सिर का ताज होना चाहिये। गुरु के घर के कुत्ते को भी सर का ताज समझना चाहिये। तुमको जन जन में भगवान देखना चाहिये। सबको प्यार से देखो। बहुत देवी देवता पूजे पर तुम्हारे मन को कोई नहीं बना सका। लेकिन हमने तुम्हारे मन को अच्छा बना दिया। जड़ जड़ ही

है, चेतन चेतन ही है। अगर ज्ञान जड़ से मिलता होता तो कोई भी टीचर आज न पढ़ाते होते। विद्या प्राप्त करनी है तो आज का ही टीचर चाहिये। गुरु के बिना ज्ञान नहीं हो सकता। आज हमारे मन की तपन को कौन बुझाता है, वह गुरु ही है। कहते हैं बिन सत्संग ज्ञान नहि उपजे, कर ले जतन हज़ार। ब्रह्म ज्ञानी के सामने आकर नत मस्तक हो जाना चाहिये। तुम बोलते हो, गुरु ऐसा देता है, वैसा देता है पर जो जैसा भाव लाता है, उसको वैसा अनुभव हो जाता है।

पैर छूना भी एक प्रथा है। लगन और चीज़ है। प्रेम होना चाहिये। कहते हैं प्रेम में कोई दुखिया नहीं होता। मन ही आगे पीछे की तमाम बातें सोचता है। जो होगा सो देखा जायेगा। सदा बोलते रहो "सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।" मनुष्य कर्म करे, फल की इच्छा न रखे तो भी फल मिलता है। वह भगवान की इच्छा से ही होता है।

संतोषी माता कुछ साल पहले नहीं थीं। लोगों ने एक दूसरे को डरा धमकाकर व्रत कराना शुरू करा दिया। नाम तो है संतोषी, व्रत भी किया पर किसी को भी संतोष नहीं आया। तुम बोलोगे यहां अंधविश्वासी आते हैं पर ऐसा नहीं है। हमारे यहों एक से एक विद्वान हैं। वे सोच समझकर आते और बैठते हैं। खटाई क्या है? हमारे मन का विषय विकारों में जाना ही खटाई है। यह स्थूल बात कहते हैं कि खटाई मत खाओ लेकिन उसका असली अर्थ है कि हमारे मन का विषय विकार रूपी खटाई में जाना।

त्रिगुणमयी माया भगवान में मन लगने ही नहीं देती। विष्णु बैठे हैं तो लक्ष्मी (माया) साथ है, शंकर हैं तो पार्वती (माया) साथ हैं। अतः शंकर विष्णु में जाओ। हम नामरूप में फंस जाते हैं। नामरूप नाश है तो ब्रह्म का प्रकाश है। जब हमारा मन नामरूप में जाता है तो हम भगवान से हट जाते हैं। गुरु करें जान के, पानी पिये छान के। अतः सोच समझकर गुरु करो। कोई जबरदस्ती नहीं है। हमको भीड़ की जरूरत नहीं। जो सच्चा होगा कभी नहीं डरेगा। गुरु तो कई तरह के होते हैं। पर अध्यात्म का गुरु ही सच्चा होता है। न वह पाप करता है न पुण्य करता है। वह जानता है, इधर भी मैं हूँ, उधर भी मैं ही हूँ, तो मैं किस पर पाप करूँ किसको सताऊँ?

जंतर मंत्र तंत्र से कुछ नहीं होता। हम चित्त में भगवान को डाल लें तो वैसे ही हमारा कल्याण होगा। जो जंत्र मंत्र करता है तो आज वह तुम्हारा अच्छा भी कर सकता है और कल बुरा भी कर सकता है। तुम्हारे अंदर निराकार का निश्चय हो जायेगा तो कल्याण हो जायेगा। परमात्मा का आनंद ही सच्चा आनंद है। हम पर लोगों ने तंत्र मंत्र किये पर बाल न बांका कर सके जो जग बैरी होय। मीरा को राजा ने मारना चाहा पर वह

कुछ नहीं कर पाया क्योंकि उसके अंदर भगवान था।

लोग नाम के लिये लाउडस्पीकर माइक आदि लगाते हैं, पेपर में छपवाते हैं लेकिन जो सच्चा होता है वह किसी को बुलाने नहीं जाता। शमां जलती है। परवाने हटाए ही नहीं जाते, ये दीपक प्रेम के ऐसे बुझाए ही नहीं जाते। सच्चे ज्ञानी को शोहरत करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

निरीच्छा वाला, गुरु ही गुरु है। गुरु जब अपने को पूर्ण ज्ञानी समझता है। तो वह अहंकार में रहता है। वह गद्दी के लिये लड़ता है। तांत्रिक गुरु चेले को डराते रहते हैं ताकि वह उनको छोड़कर कहीं और न जा सके। मरने जीने का भय भी दिखाते रहते हैं पर भगवान चाहे तो कौन किसी को मार सकता है, तुम डरो नहीं। भगवान की रज़ा में राज़ी रहो, जो होता है वह अच्छा ही होता है। तुम घबराओगे तो चिंता करते ही रह जाओगे। मनुष्य राम राम करता कहता रहे तो आगे अच्छा भी हो जायेगा। जो होता है उसमें भी भगवान की मर्जी जो नहीं होता उसमें भी भगवान की मर्जी होती है।

13.9.86

जहां प्रेम ज्यादा हो जाता है, वहां महिमा ही महिमा आदमी के मुंह से निकलती रहती है। दुनियां में मन का डाक्टर कहीं नहीं मिलेगा। बाहर बाहर रहते हो, पर तुम क्या करते हो, यहां मालूम हो जाता है। आदमी अपने मन के वश होकर बुरा करता है। भगवान बुरा नहीं कराता। जो अच्छा होता है वह भगवान कराता है।

तुम मरने का संकल्प कभी मन करो। हम तुम्हारे मन से मेहनत करते हैं और तुम मरने का संकल्प करते हो। मरने का ऐसा, संकल्प मत करो। मां बाप जो खुशी बच्चों को दे सकते हैं वह कोई नहीं दे सकता। अतः तुम्हारे बाल बच्चे हैं तो तुम मरने का संकल्प क्यों करते हो? भगवान भगवान करो। माया अपने आप मर जाती है। दुनियां वाले मूर्ख हैं जो माया के पीछे भागते हैं। अरे! भगवान भगवान करो तो सब हो जाता है।

संतों का शरीर अजर अमर अविनाशी है। गुरु तो साक्षात ब्रह्म है। अतः वह कभी नहीं मरता। जब मनुष्य भगवान को ऐसा जानने लगता है तो उसको भय नहीं रहता है। उसको जहां तहां भगवान दिखाई देने लगते हैं। वह निर्लेप निर्द्वन्द्व हो जाता है। इसलिये अगर गुरु की आज्ञा में रहोगे तो ज्ञान हो जायेगा। कहते हैं गुरु वाक्य सत्यं। शब्द मरता फल पावे। अतः गुरु की आज्ञा में रहोगे तो ज्ञान स्वतः हो जायेगा।

6.10.86

गुरु योग बल के द्वारा ही तुम्हारे मन को सुधारता है। गुरु के योग बल से तुम्हारे भूत प्रेत तुमको सता नहीं पाते। जब मनुष्य गुरु से जुड़ जाता है तो उसमें दैवी गुण आ जाते हैं। मनुष्स में दैवी और आसुरी दोनो गुण होते हैं जो बारी बारी से मनुष्य में आते जाते रहते हैं। जब मनुष्य परमात्मा में अपना मन लगाता है तो उसमें दैवी गुण प्रवेश करते हैं और जब संसार के कीचड़ तथा दुष्टजनों में मन लगाता है तो आसुरी गुण आ जाते हैं। गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है सब भूत प्राणियों में सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण ये तीन गुण होते हैं कभी किसी का वेग होता है तो कभी किसी का।

ज्ञान द्वारा ही मनुष्य में सतो गुण वृत्ति आती है परन्तु ज्ञान सुनने से ही यह नहीं हो पाएगा। ज्ञान का मनन चिंतन भी आवश्यक है। ज्ञान तो सबमें है परन्तु वह मल विक्षेप के आवरण में ढका है। उस आवरण को हटाते ही परमात्मा का साक्षात्कार होने में देर नहीं लगती। परन्तु जिस प्रकार अंदर तों आग जल रही है पर ऊपर राख पड़ी है अतः राख के कारण वह आग ढक गई है। बस राख हटा दे तो आग तो तुरंत दिख जाएगी। उसीप्रकार हमारे मन पर जो अज्ञान रूपी राख पड़ी है जब हम उसको गुरु के ज्ञान द्वारा हटाएंगे तो परमात्मा का दीदार हो जाएगा।

प्रश्न क्या ज्ञान प्राप्त करने कि लिये सत्संग में नित्य आना आवश्यक है? घर बैठे पुस्तकों द्वारा नहीं हो सकता?

उत्तर किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये उसका नियम होना आवश्यक है। फिर ज्ञान तो बहुत ऊँची चीज़ है। बिना नियम के किसी भी कार्य की पूर्ण जानकारी नहीं होती। पीतल का लोटा तभी साफ होता है जब रोज मांजा जाए। आप बोलेंगे एक बार मांज लिया बस काफी है। परन्तु वह फिर खराब हो जायेगा, गंदा हो जायेगा। अतः लोटे को नित्य मांजने से ही वह चमकेगा। इसी तरह नियम से सत्संग करने पर ही आपका मन रूपी लोटा चमकेगा। हम रोज दोनों टाइम खाना खाते हैं, बर्तन गंदे होते हैं, दोनों टाइम मांजे जाते हैं। क्या उसी बर्तन में दुबारा खाना बनाया जा सकता है? उसी प्रकार मन को भी, जो संसार रूपी जूठन से बार बार गंदा होता है, बार बार नियम से मांजने पर साफ होता है। ये ज्ञान रूपी मंजाई सत्संग में गुरु द्वारा होती है। गुरु हमको कभी प्यार से कभी डांट

से समझाता है और मन की सफाई करता है। अतः ज्ञान प्राप्त करने के लिये सत्संग में नियम से आना अति आवश्यक है। फिर नित्य सत्संग का नियम करने से मनुष्य के हृदय में प्रेम, नम्रता, धीरज का प्रवेश होता है। वह कठिन से कठिन परिस्थितियों को भी धैर्य से पार कर ले जाता है।

प्रश्न क्या ज्ञान प्राप्त होने पर अहंकार समाप्त हो जाता है?

उत्तर ज्ञान प्राप्त करने का भी अहंकार हो जाता है कि हम तो ज्ञानी हो गए। हमने ज्ञान ले लिया है। परन्तु गुरु इस अहंकार को भी रहने नहीं देता। कोई भी विकार शिष्य में होना गुरु को सहन नहीं होगा। गुरु एकएक के आगे झुकना सिखाता है। जब तुम एक एक को महत्व दोगे, उसकी बात मानोगे, नम्रता से बात करोगे तो समझ लो तुमको ज्ञान हो गया। प्यार, सेवा, त्याग ही बड़ापन है।

भगवान का लगाव कभी नहीं छोड़ना चाहिये। इसके लिये तन मन की शुद्धता आवश्यक है। अपनी वृत्ति को भगवान में लगाओ। तुम्हारी वृत्ति इधर उधर भटकेगी तो तुमको गुरु भी पसंद नहीं करेगा। अरे इतनी दूर से आए हो, तो कुछ लेकर जाओ, अपनी वृत्ति को एकाग्र कर लो बस तुम्हारा गुरु के दरबार में आना सफल हो गया।

अरे! बड़ी कठिनता से ये वृत्ति परमात्मा में लगती है, अतः इसको छिपा कर रखो। एक प्रभू के सिवा कहीं मत देखो। जब वृत्ति परमात्मा में टिकने लगती है तो परीक्षाएं भी बहुत आती हैं। ध्रुव, प्रहलाद, सीता, मंदोदरी सबकी परीक्षाएं हुई पर वे अटल रहे। उनकी वृत्ति एक परमात्मा के सिवा कहीं नहीं गई तो उनका नाम कितने आदर से लिया जाता है। अतः तुम भी अपनी वृत्ति को परमात्मा में एकाग्र करो।

7.10.86

प्रत्येक मनुष्य मन के वशीभूत हो दुःखी सुखी होता रहता है। अरे! यह मन तो स्वर्ग में भी दुःखी रहता है। ये मन हमेशा, चाहे जितना भी सुख हो एक न एक कमी दिखाता रहता है। और सुख में भी दुख ढूंढ निकालता है। इसका कारण है शुकराने की कमी। कूलर हो चाहे फ्रिज हो, परंतु मन में शांति नहीं तो क्या लाभ है? वस्तु से शांति नहीं। वस्तु से शांति हो जाती तो इतने बड़े बड़े सेठ साहुकार दुखी क्यों हैं? उसका

कारण है शुकराने का अभाव। उनको उतने में भी कुछ कमी का अनुभव होता है। मन में शांति तभी आती है जब मनुष्य भगवान के नाम पर आधारित हो भगवान की हर बात में शुकराना मनाता है। कहा भी है नानकजी ने–

राजा दुखिया परजा दुखिया
सकल सृष्टि का राजा दुखिया,
सो सुखिया जो नाम अधार।

प्रश्न मन को शांति कब मिलेगी?

उत्तर मन को शांति तभी मिलती है जब अहंकार रूपी मन का नाश होता है। मनुष्य अपने अहंकार के कारण कहीं सुख नहीं पा पाता। इस अहंकार के कारण मिला हुआ आनन्द भी चला जाता है। किस बात का अहंकार करना? मा मा करते हो। अरे मा मा करने से मूरख कभी हरि का मरम न मिले। ये अहंकार भी रावण के दस सिरों के समान है कि बार बार मारने पर भी पैदा हो जाता है देखने में आएगा कि अमुक व्यक्ति हमारा दुश्मन है पर मन ही हमारा दुश्मन है जो हमारे को दोस्त दुश्मन बनाता रहता है।

प्रश्न सब कुछ होने पर भी, पूजा पाठ करने पर भी मन अशांत क्यों रहता है?

उत्तर सब ऐश्वर्य होने पर भी मन में अशांति इसीलिये रहती है क्योंकि तुम भगवान को भूल गये हो। पूजा पाठ करने से, व्रत करने, या घंटी बजाने से शांति नहीं मिलती क्योंकि मन तो तुम्हारा भूत वैसे का वैसा ही खड़ा है। जब तक मन भूत तुमको परेशान करेगा–मन में सच्ची शांति कभी नहीं आएगी। अतः इसी भूत मन को जलाने, खतम करने के लिये गुरु की शरण में आना पड़ता है। आज तक तुमने इतनी देवी दुर्गा, ३३ करोड़ देवी देवताओं की पूजा की फिर भी शांति नहीं मिली। उसका कारण है तुम्हारा मन जिसको उन्होंने कभी नहीं ठीक किया। इस मन–भूत को आज का सत्गुरु ही ठीक कर सकता है। वह मूक मूर्ति तुमको क्या बता पाएगी कि तुममें विकार है, इनको दूर करो। गुरु तुम्हारे विकारों को देखकर ही तुमको दूर करने का उपाय बताता है। आज तुम्हारे पेट में दर्द है तो आज का जिंदा डाक्टर ही दवाई बताता है। फोटो वाला डाक्टर जो मर कर चला

गया वह दवाई नहीं दे पाएगा। उसी प्रकार आज तुम्हारा मन खराब है तो आज का जिंदा सत्गुरु ही तुम्हारे मन को साफ कर पाएगा न कि फोओ वाला भगवान। अतः मन को शांत करने के लिये और आनंद का अनुभव करने के लिये सत्गुरु की ही आवश्यकता है।

प्रश्न ये बात कहां तक सत्य है "दुःख दारू सुख रोग भया।"

उत्तर यह बात अकाट्य सत्य है कि जब मनुष्य पर दुःख पड़ता है तो वह भगवान की ही ओर दोड़ता है। सुख में मनुष्य भगवान को भूला रहता है। माया बड़ी लुभावनी है। उसके चक्कर में पड़कर ही मनुष्य सोचता है आज तो सुख भोग लें, कल भजन कर लेंगे। पर जब कल कल करते करते समय बीत जाता है और वह माया के चंगुल से नहीं छूट पाता। परन्तु जब माया झटका देकर चली जाती है तो रोता पछताता है। फिर भगवान के पास आता है। इसीलियें दुःख ही अच्छा हुआ कि कम से कम मन भगवान में लगा तो जो सदा साथ में रहने वाला है। भगवान इसीलिये माया देते डरता है कि मनुष्य भगवान को भूल जायेगा नहीं तो भगवान के पास भरा भंडार है। ये माया ही भगवान से दूर करती है परन्तु ज्ञान के द्वारा ये दबी रहती है। माया हो धन हो इसके बाद भी मनुष्य भगवान को न भूले, ये बहुत बड़ी बात है।

एक बात हमने देखी है—माया में जितनी परेशानी है उतनी भगवान में नहीं। परन्तु मन इतना लोभी कुत्ता है कि माया की तरफ ही दौड़ता है। ज्ञान की हर एक को बड़ी आवश्यकता है। तुम स्वयं ही देखो तो पता चलेगा। पहले का जीवन क्या था और आज का कैसा है? वही घर है, वही आदमी हैं पर पहले सब दुश्मन लगते थे, बुरे लगते थे पर आज वही सब कुछ है वो वैसे ही हैं पर हमको अच्छे लगने लगे हैं इसका क्या कारण है? कारण है हमने ज्ञान द्वारा अपने मन को बना लिया है। हमारा मन अच्छा हो गया तो वो भी अच्छे दिखने लगे।

निष्कर्ष यह कि हम ही अपने को बुरा समझकर अपना सुधार करें तो दूसरा कोई बुरा नहीं है। खराबी अपने में ही होती है। अतः अपने मन को सत्गुरु के हाथों में दे दो—कहा भी है **"मन बेचे सद्गुरु के हाथ तिस सेवक के कारज रास।"** तुम गुरु को मन चढ़ाओ। तुम तो फूल माला चढाते हो। फूल चढ़ाना आसान है, मन चढ़ाना बड़ा कठिन है।

प्रश्न एक शिष्य कल की चिंता तो न करे पर बिना कल की सोचे आज कैसे कर्म करेंगे?

उत्तर कर्म तो करना ही पड़ेगा पर उसका चिंतन मत करो। चिंता करने से कर्म नहीं होता। सब भगवान पर छोड़ो। कर्म सही तो करना ही पड़ेगा पर उसके फल की चिंता छोड़नी होगी। जब तुम सारी चिंता भगवान पर छोड़ोगे और स्वयं खाली हो जाओगे तो भगवान तुम्हारी चिंता अवश्य करेंगा। तुम्हारे पास जब तक एक भी पाई है, खर्च करो, कल की चिंता मत करो तो देखो भगवान कैसे भरता है। परन्तु तुम तो भगवान पर छोड़ते ही नहीं हो तो फिर कहते हो भगवान ने बुरा किया।

8.10.86

आज खाली भजन हुए।

9.10.86

नवरात्रि के उपलक्ष्य में आज खाली भजन हुए। भंडारा प्रभु की कृपा से किया।

10.10.86

चाची की ओर से भंडारा।

हमसे प्रकाश ने प्रश्न किया आपको खेती प्यारी या हम बेटे बेटी? तो हमने कहा हमको दोनों प्यारे हैं। जिस प्रकार किसान को अपनी खेती लहलहाती देखकर आनन्द आता है और अपने बच्चों को भी देखकर आनन्द आता है, उसी प्रकार सत्संग हमारी खेती है। अतः जब वे सब प्रसन्न होते हैं तो उनको प्रसन्न (लहलहाता) देखकर हमको हमारा परिश्रम सफल हुआ जानकर प्रसन्नता होती है। और तुम भी भजन करने लगे हो देखकर अपार खुशी होती है। उस मां की कोख धन्य है जिसके बाल बच्चे भजन करते हैं।

कहते हैं "ज्ञान अग्नि कर्म दग्ध" अर्थात् ज्ञान रूपी अग्नि में सारे कर्म जल जाते हैं। पाप ताप सभी नष्ट हो जाते हैं। भंडार भर जाता है। कहा

है "मेरे गुरुदेव ने मुझको बताया मार्ग उस घर का, भरा भंडार था जिसका, महक उसकी नशा उसका, पिया जिसने वही जाने।" अतः तुम भगवान भगवान करो। जब मां बाप बूढ़े हो जाते हैं, वे चाहते हैं उनके बच्चे भी भजन को आगे बढ़ायें तथा आने वाली पीढ़ी को भी भजन से प्रेम कराएं। देखो खाली प्रेम और विश्वास से चाची। (श्रीमती तारा रानी चोपड़ा) स्वयं भजन में लगीं और अपने परिवार को भी लगा लिया। उसका पूरा परिवार आज भजन करता है। जिसका पूरा परिवार भजन करता है, उसका ही भजन करना सार्थक और सच्चा माना जाता है। इसके लिये हमको स्वयं को ही पहले ज्ञान द्वारा बनना है। जब हमारा व्यवहार घर वालों को अच्छा और नम्रतापूर्ण लगेगा तो वे स्वयंमेव ही भजन में आने लगेंगे। ये जो हमारा पूरा परिवार भजन में नहीं आ पाता उसका कारण हैं हमारा घर वालों के प्रति दुर्व्यवहार। अतः तुम अपने को ही बदलो।

11.10.86

मेहरा साहब की ओर से भंडारा

तुम्हारा एक एक का मन बहुत गंदा है। जरा भी मन की उल्टी हुई कि रोने लगेगा। अरे! सबकी रक्षा भगवान करता है। जो भी हालत है उसमें सुखी रहना ही हमारा ज्ञान है। जगत तो असत्य है। नाटक अर्थात न टिकने वाला है। जो हालत आज है वह हमेशा नहीं रहेगी। हर सुख के बाद दुख और दुख के बाद सुख आता है। ज्ञानी इन सब दशाओं में समता में रहता है। परमात्मा फिर भी हर हालत में तुम्हारी रक्षा करता है। अपने को कर्त्ता मानकर तुम दुखी सुखी क्यों होते हो? तुम भगवान पर छोड़ कर निश्चिंत हो जाओ तो भगवान सारा भार तुम्हारा संभालेगा। परन्तु तुम तो जरा सी हालत बुरी आई कि रोने लगते हो। हर हालत में खुश रहो। दृष्टा बनकर जगत का नाटक देखो। हालत पर खुश रहना ही पूजा है।

तुम एक एक के गुण देखो तो तुमको खुशी होगी। मन का स्वभाव है किसी में १२ गुण होंगे वह नहीं देखेगा। बस एक अवगुण होगा उसका ढिंढोरा पीट देगा। अरे! हर एक में गुण और अवगुण दोनो होते हैं। तुम अपने में भी देखो तो गुण और अवगुण दोनों होंगे। अतः दूसरों के अवगुण न देखो, गुण देखो और अपने गुण न देखकर अवगुणों को देखो और उनको दूर करने की चेष्टा करो तो तुम सद्गुणी बन जाओगे। हर एक के गुण रूपी

पुष्प को लेकर एक गुलदस्ता बनाओ तो तुम्हारा गुलदस्ता बहुत बड़ा बन जाएगा।

एक भक्त घर के झंझटों से भागकर मन होता है वैराग्य ले लें।

गुरुजी जगत की परिस्थितियां एवं कठिनाइयों से घबरा कर भागने को वैराग्य नहीं कहते हैं। इसको मसाना वैराग्य कहते हैं कि आज परेशानी आई तो भाग गए। कल फिर उनकी याद आने लगी फिर घर आ गए। अरे! वैराग अंदर की चीज़ है, जगत में रहते हुए भी जगत से न्यारे। हर परिस्थितियों को सहते हुए जीवन पार कर लेना और अन्दर में उनके प्रति किसी भी प्रकार की आसक्ति न होना ही सच्चा वैराग्य है।

प्रश्न क्या बिना कर्म किये भी भगवान सबको भोजन देता है?

उत्तर कर्म तो प्रधान अवश्य है परन्तु जो भगवान पर पूर्ण निर्भर होता है उसका भगवान अवश्य खाना देते हैं। परन्तु हम यदि आधा भरोसा अपने बल पर आधा भगवान पर करेंगे तो भगवान नहीं देगा। कहा भी है "**अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम।**"

अतः भगवान पर भरोसा अवश्य रखो। कर्म करना तो मनुष्य का धर्म है परन्तु फिर भी फल भगवान पर निर्भर है। भगवान सबकी पालना करता हैं। इस प्रसंग में एक कहानी है।

एक बार लक्ष्मीजी ने विष्णुजी से पूछा आप कहते हैं कि मैं सबका भरण पोषण करता हूँ। क्या ये पूर्णतया सत्य है? विष्णुजी ने कहा, हां देवी मैं ही सबका भरण पोषण करता हूँ। तब लक्ष्मीजी बोलीं आज भी आपने सबको भोजन पहुँचा दिया है? विष्णुजी बोले हाँ! इधर लक्ष्मीजी एक डिबिया में एक चींटी को बंदकर आई थीं। वे तुरंत वहाँ गईं, डिबिया खोलीं तो देखा उस चींटी के मुंह में चावल का दाना है। यह देखकर लक्ष्मीजी आश्चर्य चकित हो गईं। जब वे डिबिया बंदकर रही थीं तो उनके माथे पे लगा चावल का दाना उस डिबिया में गिर गया था। तब उनको यह विश्वास हो गया कि सबकी पालना भगवान ही करते हैं। परन्तु इस दृष्टांत को सुनकर आलसी लोग सोचेंगे "तब तो फिर काम करना, नौकरी करना बेकार है—जब बैठे बैठाए भगवान खाने को देता है।" तो ऐसी बात नहीं है। जो पूर्णरूपेण भगवान पर निर्भर होता है, उसीको भगवान बैठे बैठे देता है। प्रत्येक मनुष्य ज्ञान को अपने मतलब के हिसाब से समझ लेता है पर वैसा भाव रखता नहीं।

हर रूप में भगवान है। जो हो रहा है, सही हो रहा है। हमारे लायक ही हो रहा है। बुरा कुछ नहीं हो रहा है। हम दुख में दुःखी होते हैं और सुख में सुखी परन्तु संसार कूड़ा है, नाटक है, अर्थात न टिकने वाला है। अतः सेसार को झूठा मानकर दृष्टा बन कर देखो। सदा भगवान को याद करो तो संसार का दुख सुख तुमको नहीं व्यापेगा। कहा भी है– जब भूली तू आपको तब व्यापे संसार। भगवान के नाम का स्मरण हर समय करो। नाम से हमारा कितना भी प्यार हो पर अहंकार बना रहता है। ये अहंकार गुरु के वचन द्वारा ही जाता है। बिना गुरु के ज्ञान के अहंकार कभी भी नहीं जा सकता। गुरु हमारे मन का मर्दन उसी प्रकार करता है जैसे आटे को मलते समय होता है। गुरु मार ताड़ लाड़ करके मर्दन करके मन को कोमल नम्र बनाता है। फिर निरीक्षण करता है कि मन का मर्दन भली प्रकार हो गया है या नहीं। अहंकार नाश हो गया है अथवा नहीं। जैसे डाक्टर मरीज का "चेक अप" करता रहता है उसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्य की चित्त वृत्ती का निरीक्षण (चेकअप) करता रहता है कि चित्त वृत्ति भगवान में है अथवा नामरूप में। यदि वृत्ति पूर्णरूपेण भगवान में लग जाती है तो गुरु गाली नहीं देता, वरना, फिर मन को गाली देकर सीधा करता है।

जब मनुष्य सत्संग का नियम बनाता है तो संसार के लोग नगाड़ा बजाने लगते हैं। उल्टा सीधा बोलने लगते हैं। पर फिर भी यदि मनुष्य भजन कर ले जाय तो उसने बहुत बड़ी तपस्या कर ली।

12.10.86

दशहरा

भंडारा हो रहा है।

आज दशहरा है। जगह जगह रावण के पुतले जलाए जाते हैं। इसी तरह तुम अपने मनरूपी रावण को जलाओ। हमने तुम्हारे मन रूपी रावण को मारकर तुम्हारे मन में अपनी राजगद्दी बनाई है। तुम राम में केवल अनुराग रखो। जो राम के प्रति श्रद्धा रखता है, उसी को आनंद शांति मिलती है।" तुम फूल माला चढ़ाते हो। वस्तु चढ़ाते हो। पर भगवान को जो अहं चढ़ा देता है वही शांति में रहता है। तुम दीवाली भी दिये जलाकर करते हो जो थोड़ी देर में बुझ जाते हैं। अरे! तुम अपने हृदय में ज्ञान का दीपक जलाओ तभी सच्ची दीवाली कहलायेगी। दीवाली का मतलब है हृदय

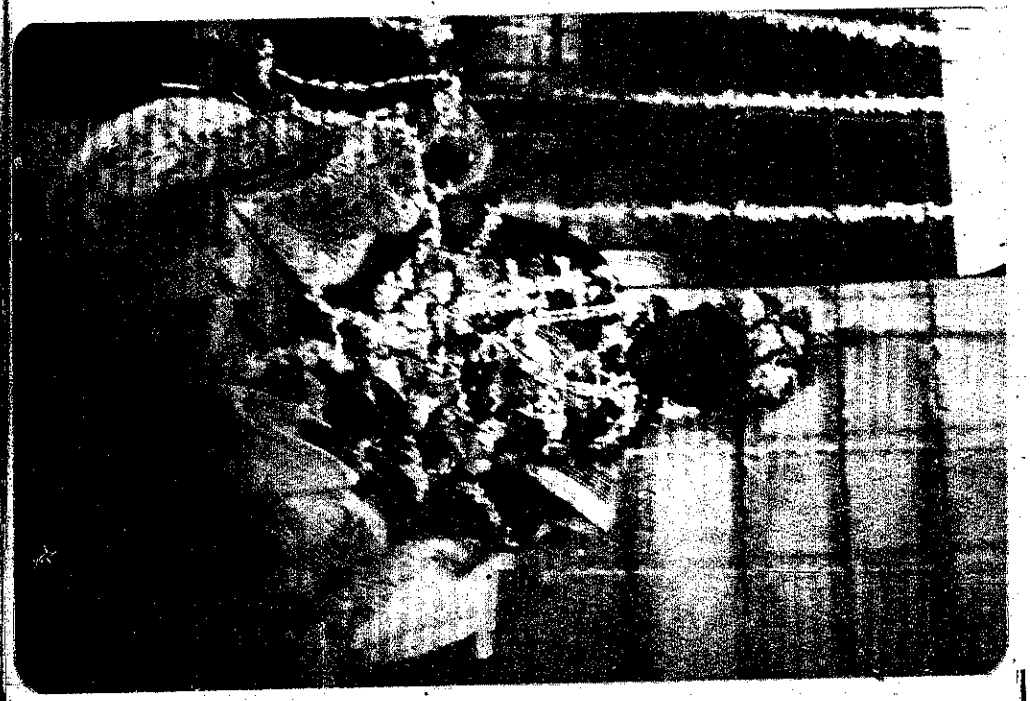

सतगुरू को पाते हैं वही, दिल में जिनके सच्चा प्यार है
सदा फिरते है वो खोये खोये, रहता दिल भी उनका बेकरार है।
नहीं गरज उनको जमाने से, बने रते है वो दिवाने से
नहीं चाह इज्जत मान की, गुरू कृपा ही दरकार है।

कोई चिन्ता न कोई फिकर है, सदा गुरू का ही जिकर है
जाये खाली कोई स्वांस न, क्योंकि जिन्दगी दिन चार है।

सतगुरू पे होते जो फिदा, नहीं कोई उनका और खुदा
नहीं रूकती धारा प्रेम की, हो जाता जब दीदार है।

सारे तीरथ गुरू चरणों में है, छूटा है जनम मरण यही
नहीं पाप पुण्य की चिंता है, सच्ची सिर पे जब सरकार है।

में आनंद छलकना। सच्ची दीवाली तभी समझो जब तुम सबके हृदय में ज्ञान का दीपक जले और सारे विश्व में सदा को उजाला हो जाए।

विश्व में जो कुछ भी हो रहा है, सब खेल है, झूठ है, क्षणिक है। अभी है, थोड़ी देर बाद खतम हो जायेगा। खेल समझकर आनन्द में रहे तो अच्छा रहेगा। ये जो भजन हो रहा है, यह फिर भी सत्य है। ये भी थोड़ी देर बाद खत्म हो जायेगा। अतः ये भी सच्चा नहीं है। तुम खाली परमात्मा में रहो, भगवान भगवान करो तभी आनन्द आएगा। इसके लिये तुम सत्गुरु से सम्बंध जोड़ो। जो सत्गुरु से अपना सम्बंध जोड़ लेता है वह भगवान को पा जाता है। जो परमात्मा में रहता है। कहा भी है "लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल।" कहा है "शमा जलती है, परवाने हटाए ही नहीं जाते। ये दीपक प्रेम के हैं ऐसे बुझाए ही नहीं जाते।"

हम तुमको बुलाने नहीं जाते कि हमारा ज्ञान सुनने आओ। तुम खुद ही चले आते हो। जैसे शमा खुद परवाने के पास नहीं जाती बल्कि परवाना शमा के पास आता है। शमा उसको ठुकराती नहीं वरन जला देती है अर्थात उसकी हस्ती को (जो अहं ही है) जला देती है। हमारे पास तो अमेरिका हांगकांग से लोग आते हैं हम उनको बुलाने नहीं जाते।

तुम केवल साखी दृष्टा बनकर संसार को देखो और भगवान भगवान करो। हमको मां बाप समझकर मत देखो। तुम अपने साथ भगवान लेकर आओ फिर तुम्हारे जीवन में अहंकार आए तो हमको बताना। जब हम प्रभू को याद करते हैं तो दोस्त दुश्मन भूल जाते हैं। हमारा सबसे प्रेम हो जाता है। तुम सब तरफ हर रूप में भगवान देखो। जब तुमको नाम रूप दिखाई देने लगते हैं तब हम तुमको गाली देते हैं। तुम बोलते हो गुरुजी गाली देते हैं परन्तु हम गाली तभी देते हैं जब तुम्हारे मन में कोई खोट होता है नहीं तो हमको क्या पड़ी है कि हम तुमको बिना बात पर गाली दें।

तुम निरभिमान में गुरु के पास आओ तो गुरु तुमको अपनी कृपा से मालामाल कर देगा। कितने लोग कहते हैं गुरु तो खत्रियों का है। यह बात बिलकुल गलत है। गुरु किसी जांति पांति का नहीं है, वरन सारे जगत का है। वह तो सबका कल्याण चाहता है।

मेरे लिये सब बराबर हैं चाहे वह किसी भी जाति का हो। जिसके अंदर प्रभु की भक्ति आ गई वही हमारा है। यहां समधी समधिन का कोई

रिश्ता नहीं है। ये भक्ति की जगह है। यहां जो भी परमात्मा की भक्ति करेगा उसी को हम ज्ञान देंगे। तुम हमारे लिये कभी ऐसी बात मत करना। हम जानते हैं जो परमात्मा सर्व व्यापक है वह सबमें है। ब्राह्मण, ठाकुर, शूद्र सबमें है वह सबमें है अत' हमारा किसी से भी द्वेष नहीं। जो परमात्मा को प्यार करता है वह हमारे जिगर का टुकड़ा है। किसी ने ठीक ही कहा है **"जाति पांति पूछै नहिं कोई, जो हरि को भजे सो हरि का होई।"**

अतः भगवान को किसी जाति पाति के भेदभाव में मत डालना। भगवान सबका है। हम जिसके लिये जो बात–चाहे वह अच्छी हो या बुरी–बोलते हैं वह बात उसमें होती अवश्य है। हम एक व्यक्ति के लिये नहीं वरन सबके लिये बोलते हैं। जमाने के हिसाब से ही बोलते हैं कि यद्यपि संसार झूठ है तथापि व्यवहार सही ही करना चाहिये। झूठ में भी झूठ समझकर झूठ का व्यवहार करना ही पड़ता है। उसमें फंसना नहीं चाहिये। व्यवहार भी नाटक समझकर करना चाहिये। जैसे नाटक में हम अपना जो पार्ट होता है उसको सही सही करते हुए भी ये समझते हैं कि हम तो खाली अभी थोड़ी देर इस पार्ट को कर रहे हैं, थोड़ी दर बाद तो जो हम हैं वही रहेंगे। इसी तरह जगत के सारे व्यवहार उस समय सही तो करेंगे पर उसका रूप नहीं बन पाएंगे।

प्रश्न करनी का फल उल्टा क्यों मिलता है?

उत्तर प्रत्येक मनुष्य यही सोचता है कि हम तो सही कर्म करते हैं पर हमें उल्टा ही फल मिलता है। यह बात गलत है। करनी करके उल्टा फल मिलने का कारण है। अंदर में कोई इच्छा है। करनी का फल मिलता अवश्य है, परन्तु देर सबेर मिलता है।

तुम दूसरों पर दया करो तो वे भी तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे। किया हुआ कहीं जाता नहीं। हाँ! शर्त है कि काम को निष्काम होकर करें। निष्काम होने पर जो भी काम होगा उसका फल अवश्य मिलेगा। हम जो भी करनी करते हैं, अच्छा या बुरा इसका फल वैसा ही हमको मिलता है। सब कर धर का भी निरीच्छा में रहो। सच के शब्द चाहे वह उल्टे ही क्यों न बोले सहो। यही निष्काम कर्म है। गीता का यही ज्ञान है। कृष्ण ने अर्जुन से कहा है मैं निष्काम कर्म से पूर्ण हूँ। काम तो जगत में करना ही पड़ता है तो फिर निष्काम होकर क्यों न करें। संसार में किसी को किसी से कुछ नहीं मिलता। मनुष्य मुर्दे की भांति है और संसार गिद्ध। जिसप्रकार एक

लाश को गिद्ध नोंच नोंचकर खाते हैं उसीप्रकार ये संसार भी मनुष्य को सता सता कर मारता है। इतने पर भी अगर तुम भगवान भगवान करो तो कल्याण हो जायेगा।

तुम कहते अच्छा कर्म करने पर भी बुरा मिलता है तो तुम अहंकार में हो। तुमको इस बात का अहंकार है कि मैं अच्छे कर्म करता हूँ। अच्छे और बुरे की तुमको पहचान नहीं है। तुम किस वृत्ति से काम करते हो ये भगवान जानता है। हम यदि आज अच्छा बोएंगे तो पैदावार भी अच्छी होगी। हमने अपने खेत में भुट्टा बोया, बीज में छेद था–फिर भी बो दिया। नतीजा क्या हुआ। पेड़ भी बढे, भुट्टे भी निकले लेकिन उसमें दाने नाम मात्र को थे। इसका मतलब ये हुआ कि बीज खराब था। हमारी गलती थी। हमने बो दिया नतीजा भी वैसा ही निकला। इसीप्रकार तुम्हारे अन्तःकरण में बीज खराब पड़ेंगे तो फल भी बुरा निकलेगा। अतः अपने अन्तःकरण रूपी खेत में अहंकार का बीज न बोकर परमात्मा का बीज बोओ जिससे तुममें भक्ति रूपी फल पैदा हो। तुम्हारा परिवार भी वह फल खा सके।

तुम अहं में आकर मा, मा करते हो। जो भी अच्छा काम होता है वह भगवान द्वारा ही होता है। तुम खाली अहंकार में रहकर बोलते हो कि मैंने तो अच्छा किया पर बुराई मिली। यह तुम्हारी अज्ञानता है। तुम जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल मिलेगा। भगवान सबके कर्मों का निरीक्षण करके उसके कर्मानुसार न्याय करता है। कहा भी है–

कोई कोठी बंगलों का मालिक,
और चढ़े वह कारों में,
कोई बेचारा पैसा पैसा,
मांगत फिरे बाजारों में।

अच्छा कर्म करते भी कहाँ हो तुम लोग। जो कर्म भूल से हो जाता है वही निष्काम कर्म कहलाता है। निष्काम कर्म बहुत बड़ी चीज़ है। करते करते चलते चलते भी मनुष्य भूल कर बैठता है और सकामता में आ जाता है। भगवान कृष्ण ने निष्काम कर्म की महत्ता बताते हुए कहा "वैसे तो मैं सभी यज्ञों में पूजित होता हूँ, परन्तु निष्काम कर्म यज्ञ से मैं अत्यधिक प्रसन्न होता हूँ।

इसलिये गुरु अपने विचारों पर चलाते हुए निष्काम कर्म करा लेता है। भगवान इंसाफ है। भगवान के जैसा इंसाफ वाला न हुआ है न आगे

होगा। तुमने भगवान को दोष लगाया। तुम बहुत अच्छा कर्म करते हो फिर भी भगवान खुश नहीं होता, बुराई मिलती है। इसका कारण कभी तुमने नहीं समझा। अच्छा करके बुराई मिलने का कारण है तुमने सही काम नहीं किया–तुमने अहंकार में किया।

अरे! तुमको भगवान को श्रेष्ठ मानना ही पड़ेगा। हमारे कर्म इतने बुरे हैं कि सड़क चलते पाप होते हैं। सड़क पर चलते चलते राह में कितने कीड़े पैरों से दब जाते हैं। दही खाते हैं उसमें कितने कीड़े पेट में जाते हैं। हमसे अनजाने में कितनी हत्या हो जाती है पर वह माफ कर देता है। भगवान का नाम इसीलिये पतित पावन, दीन दयालु पड़ा।

13.10.86

तुम्हारी वृत्ति भगवान में होनी चाहिये। यदि तुम्हारी वृत्ति कहीं दूसरे नाम रूपों में होगी तो हम तुमको पसंद नहीं करेंगे। अरे! तुम्हारी तो नजर लाश पर होती है। अंदर परमात्मा है उस पर नजर नहीं जाती वरन लाश पर नजर झट चली जाती है। ये जगत के जितने भी नाम रूप हैं–लाश ही हैं–आज नहीं तो कल लाश बन ही जायेंगे। अतः इनपर से अपनी नजर हटाकर भगवान में लगाओ। आज हम तुममें से किसी से खुश नहीं इसका कारण क्या है? इसका एक ही कारण है–तुम्हारी मन, कर्म, वचन से एक वृत्ति नहीं है।

गरीबी बीमारी आदि अवस्थाओं का प्रभाव तुम पर तभी पड़ता है जब तुम सही भजन नहीं करते। तुमको अपना दर्शन करना है यानि कि जो तुम्हारे घर (अंदर) में प्रभु है उसका दर्शन करना है मेरा नहीं। तुम्हारा हमारा तो विषय ही अलग है। हम भगवान की बात करते हैं तो तुम जगत के सुख दुख घर–परिवार की बात करते हो। तुम हमसे सांसारिक बातें मत पूछो। तुम हमसे मन के विषय में प्रश्न करो तो हम तुम्हारा समाधान करें। तुमको तो पैसे का अभाव खटकता है। तुम्हारी नजर पैसे पर रहती है। अरे! भगवान पर नजर रखो तो पैसा तो अपने आप ही मिल जाता है। जो भगवान पर भरोसा रखता है उसका कर्त्ता-धर्ता, भर्ता भगवान हो जाता है। परन्तु शर्त यह है कि पूर्ण विश्वास हो जरा भी मन डगमगाए नहीं। इस प्रसंग में एक कहानी बताते हैं–एक बार स्वामी विवेकानन्द के गुरु स्वामी रामकृष्ण दो दिन तक भूखे रहे। अचानक उनके नाम २० रू० का मनीआर्डर आया–पता चला विश्वनाथ ने बनारस से भेजा है। जब उन्होने विवेकानन्द

से बताया दो दिन से भोजन नहीं किया था तो स्वामी विवेकानन्द ने कहा हमको क्यों नहीं बताया। तब स्वामी रामकृष्ण बोले अरे! विश्वनाथ बाबा भेज देते हैं हमको मालूम है तो किससे मांगता?

इसी तरह जब तुम विश्वनाथ में ध्यान दोगे तो विश्वनाथ अवश्य देगा। तुम तो अपने बल पर ध्यान देते हो। उस परमात्मा पर ध्यान रखो तो वह अवश्य देगा। यदि हमको भवसागर से पार होना है तो गुरु की एक एक बात को ब्रह्मवाक्य समझकर माने।

तुम सारे संसार से अपना लगाव हटाओगे तभी परमात्मा को पा पाओगे। परन्तु यदि एक भी अश्रद्धालु व्यक्ति से लगाव रखोगे तो परमात्मा में नहीं चढ़ पाओगे। याद रखो, जैसा कि कहा गया है गुरु मिला हीरा अनमोल, गुरु वास्तव में कीमती है। अतः गुरु से अन्दरूनी लगाव रखो–बाहरी पकड़ से लाभ नहीं होगा। मीरा की कृष्ण से अंदरूनी पकड़ थी तो उसको कोई कृष्ण से अलग नहीं कर पाया। मीरा ने सबसे नाता तोड़कर एक प्रभु से नाता रखा। उसका एक पद इसी प्रसंग में याद आता है–

तात मात बंधु सखा, आपनो न कोई।
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
अंसुअन जल सींच सींच प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गई आनंद फल होई।

मीरा की तरह ही तुम भी लगाव रखो तभी कल्याण होगा। तुम अपने तन, मन, धन से दूसरों की सेवा करो–स्वार्थी मत बनो। कहा भी गया है:

तन का, मन का, धन का, जन का,
दूजों को दे जो दान रे,
वह सच्चा इन्सान रे, इस धरती का भगवान रे।

जब तक सांसारिक रिश्ते नातों से दिल लगाया कभी आनन्द नहीं आया, परन्तु जब परमात्मा से, गुरु से इश्क लगाया तभी सच्चा आनन्द आया। तुम तो खोखले हो गए हो, संसार ने तुम्हारा हृदय रूपी गूदा खाकर तुमको खोखला कर दिया है। तुम भगवान के लिये वस्तु, माला मत लाओ। खाली अपना दिल ले आओ यही सच्चा सौदा गुरु का है।

रूह का रिश्ता बड़ा अलौकिक है। उसको निभाने के लिये बहुत

झुकना पड़ता है। शरीर के रिश्तों के लिये कितना करते हो, फिर भी आनन्द खुशी नहीं मिलती। इतना ही या इससे भी आधा यदि गुरु के आगे झुक जाओ तो गुरु मालामाल कर देता है। गुरु तुम्हारा बंधन भी छुड़ा कर मोक्ष दिला देता है। कहते हैं–

ये मत कहां से पाई साधो
बंध मोक्ष की कल्पना मिटाइ ही साधो।

आध्यात्मिकता की डिग्री बहुत बड़ी है। आध्यात्म विधा सब विधाओं में श्रेष्ठ है। भौतिक विधा तो संसार के कार्य व्यवहार ही सिखाती है। भौतिक विधा पा जाने के बाद अध्यापक से (गुरु से) सम्बंध छूट जाता है। लेकिन अध्यात्म विधा के गुरु से सदा सम्बंध बना रहता है। क्योंकि अध्यात्म विद्या जीवन पर्यन्त लेनी पड़ती है। पल पल में मनुष्य मोह की पालना करता, लोभ करने लगता है, रोग से दुखी होने लगता है। ऐसे समय में अध्यात्म विधा से ही शांति मिलती है। अभी तो जितना परिश्रम भौतिक विधा पाने के लिये किया उतना आध्यात्म विधा के लिये किया ही नहीं। ज्ञान पाने के ध्येय से जो आता है, उसे ज्ञान मिल जाता है। उसको सत्संग में आने का रास्ता भी मिल जाता है। उसको संसार भवसागर नहीं वरन सुख सागर लगने लगता है। तभी हर बात में प्रभु का शुकराना आने लगता है। इस सुख शांति को पाकर गुरु को धन्यवाद दो और प्रार्थना करो।

"तेरा मयखाना साकी सलामत रहे।"

साकी ने मयखाना खोला है यह उसका धन्यवाद है। जगत में तो किसी को कोई ठिकाना नहीं, बस एक भगवान का ठिकाना ही ऐसा है जहां शरण मिलती है। अभी तुम यहां घंटों बैठते हो पर इतनी देर जगत में किसी के यहां जाकर बैठो तो वे थोड़े ही दिन में तुमसे ऊब जायेंगे। भगवान को पाने और जानने के लिये अथक अभ्यास की आवश्यकता होती है। एक जगह टिक कर एक को मानकर ही भगवान को पाया जा सकता है। आज भवसागर को पार करने के लिये आज के गुरु को मानना पड़ेगा। तुम बहुत से देवी, दुर्गा को मानते हो पर आज तो वो देवी दुर्गा पानी में गई। अगले साल फिर आयेंगी। तब तक तुम खाली रहोगे। अरे! भगवान कभी विलीन नहीं होता। देवी दुर्गा की मौन मूर्ति तुमको क्या बना पाएगी। तुमको आज कष्ट है तो आज की जिन्दा देवी ही तुम्हारा कष्ट दूर कर पाएगी। अतः आज के गुरु को मानकर उसके बताए रास्ते पर चलो तो भवसागर से पार हो जाओगे।

जो गुरु सदा ब्रह्म निश्चय में रहें, वही पूरा गुरु है। जो अपने को ब्रह्म स्वरूप मानता है वही सच्चा और पूर्ण गुरु है। एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति। ब्रह्म से अलग किसी की भी पृथक सत्ता नहीं है। जो गुरु को देखकर खुश होता है और खुशी में नाचने लगता है, उसको अपना होश भी नहीं रहता, संसार क्या कहेगा ये भी ध्यान नहीं रहता बस आत्म विभोर हो नाचने लगता है इसी तरह धीरे धीरे गुरु के प्यार द्वारा दुःख सुख हानि–लाभ, जीवन–मरण से ऊपर हो जाता है।

तुम खाली राम राम करो तो कुछ नहीं करना पड़ेगा। जब तक गुरु नहीं मिलता तभी तक भगवान का जप करना पड़ता है। जब गुरु मिल जाता है तो वह खुद तुम्हारा जप करने लगता है और तुम्हारा जीवन सुखमय बना देता है।

प्रश्न क्या संकल्प में इतनी शक्ति होती है कि जैसा सोचो हो जाता है?

उत्तर हां! संकल्प में इतनी शक्ति होती है कि जैसा सोचो हो जाता है। चाहे अच्छा हो अथवा बुरा। इसीलिये हम कहते हैं कि सदा शुभ संकल्प करो–अपने लिये भी और दूसरों के लिये भी। इसी प्रसंग में एक कहानी है–

नाम देव एक बार राह में जा रहे थे। बहुत थक गए थे अतः उन्होंने सोचा कि यदि घोड़ा मिल जाता तो अच्छा होता। भगवान के परम भक्त तो थे ही अतः भगवान स्वयं साईस (घोड़ीवान) का रूप धरकर घोड़ी लेकर पहुंच गए। नामदेव ने पूछा तुम कौन हो तो, उसने कहा मैं मुसलमान हूँ। पूछा कहाँ जा रहे हो तो वह बोला वृन्दावन जा रहा हूँ। इतने में नामदेव को संशय आ गया कि यह तो मुसलमान है और वृन्दावन जा रहा है। वहां जाकर यह क्या करेगा? फिर भी वे घोड़ी पर बैठ गए। इतने में नामदेव ने सोचा घोड़ी कहीं बच्चा न दे दे और ये साईस उस बच्चे को कहीं मुझे लादने को न कहे। इतने में ही घोड़ी ने बच्चा दे दिया और साईस ने नामदेव से उस बच्चे को कंधे पर लादने को कहा। इस तरह यह सिद्ध हुआ कि संकल्प में कितनी शक्ति होती है।

तुम क्यों उदास होते हो, तुम्हारी बात भगवान सुनता रहता है। तुम

यह सोचकर कि मेरा ही मेरे मन की नहीं करता है–रोने लगते हो तुम्हारा मोह ही तुमको दुखी करता है। बड़े बड़े काम भगवान की कृपा से हो जाते हैं। तुम क्यों रोते हो? चिंता करते हो कैसे होगा, क्या होगा? तुम इधर सोचते हो उधर भगवान भर देता है। फिर छोटा काम क्या रुक जायेगा? तुम अपना खून क्यों जलाते हो? मेरा भी आज नहीं सुनेगा तो कल तो सुनेगा। धीरज धरो। जगत में धीरज की बड़ी आवश्यकता है। तुम आज तो चिंता और उलझन में पड़कर बीमार हो जाते हो। कहीं फिर अच्छा होगा तो तुम्हारा शरीर शिथिलता के कारण आनन्द नहीं ले पाएगा। अतः आज में जियो, कल की चिंता मत करो। औरत में धीरज की अति आवश्यकता है। शादी कोई फूलों की सेज नहीं है। वो तो शादी के समय फंसाने के लिये फूल माला सजाकर भेजते हैं ताकि लालच में पड़कर खुशी खुशी शादी कर ले। उसके बाद का जीवन देखो कितना कष्टदायी है। जिसकी हो गई वह भी पछताता है जिसकी नहीं हुई वह भी पछताता है। शादी के बाद तो खाली ठकाठक होती है।

कोई भी ताप लहर आती है तो तुम क्यों भूल जाते हो कि तुम ब्रह्मस्वरूप हो? तुम तो कैसे होगा बच्चों का क्या होगा, पति का क्या होगा करके रोने लगते हो। तुम जब अपने को कर्ता मानते हो तभी रोते हो लेकिन भगवान सबकी पालना करता है। देखो! जब बच्चा पेट में होता है तो उसके जनम लेने से पहले ही प्रभु दूध का प्रबंध कर देता है। तो जब इतने असहाय और छोटे बच्चे का प्रबंध भगवान करता है तो क्या हम बड़ों का नहीं करेगा?

यह सोचकर कि बच्चों का क्या होगा अपने को चिंता में गला देना घोर कष्ट है। आज तो अपने को गला दिया, कल जब वह महान बनेगा, अच्छा आदमी बनेगा तो क्या आनन्द ले पाओगे? हिम्मते मर्दा तो मददे खुदा। देखो आज हमको सब सुख मिला, कल यदि कष्ट में रो रोकर हमने अपने को गला दिया होता तो ये वैभव कैसे देख पाते? इसलिये तुम भी आनेवाले कल की चिंता छोड़कर वर्तमान में जियो।

तुम्हारा जैसा जैसा विश्वास होगा, वैसा वैसा काम होगा। जब हृदय में राम होता है तभी काम होता है। तुम्हारी खाली पुकार होनी चाहिये। भगवान तो घट घट वासी है। वह तुम्हारी पुकार सुनता रहता है–दौड़कर आ जाता है। तुम अपना सब भार भगवान पर छोड़कर खा–पीकर निश्चिंत हो जाओ। भगवान तुम्हारा भार उठा लेगा। तुम बोलते हो चल नहीं पाता

हूँ, गिर जाता हूँ। क्यों नहीं चल पाते। अरे! भगवान का नाम टानिक है। वह तुम्हारी रक्षा करता है। हमारे पास एक मेजर की औरत आती है। उसका सिर पहले हिलता रहता था। सत्संग में आने और ज्ञान सुनने से ठीक हो गया। इसलिये शरीर की भी चिंता छोड़कर खाली भगवान में मन लगाओ। किसी ने ठीक ही कहा है–

चिंता में दोनों गए, माया मिली न राम।

मनुष्य सदा अपने को सही और दूसरे को गलत मानता रहता है। अरे! सबके गुण देखो। हर एक में अलग अलग गुण हैं। प्रत्येक मनुष्य अपने स्वभाव के वश है। किसी का रोने का स्वभाव होता है तो वह रोता ही रहता है। किसी का हंसने का स्वभाव होता है तो वह हंसता ही रहता है। तुम हंसने वाले का गुण ले लो और हर हालत में खुश रहना सीख लो। इसी तरह जिसमें जो भी गुण दिखे वह तुम सीख लो। स्वभाव अलग अलग होने के कारण घर घर में कटायुद्ध चलती रहती है। हर स्वरूप में भगवान है तभी खट खट बंद होगी।

तुम अपने को अकेला समझकर रोने लगते हो। सोचते हो, मेरी घर में चलती नहीं। अरे! तुम अपने को मालिक क्यों समझते हो? औरत का पति नहीं होता तो वह अपने को निराधार समझने लगती है। अरे! तुम परमात्मा को अपना पति बनाओ जो अजर अमर अविनाशी है। सदा तुम्हारा साथ निभाता है। शरीर का पति तो आज नहीं तो कल साथ छोड़ देगा। तुम तो मिट्टी के मटके (खिलौना) की तरह हो। तुम ख्याल मत करो। ख्याल से ही बीमारी होती है। हार्ट फेल भगवान की देन नहीं है–हमारे चिंतन की अपनी देन है।

दीवाली उसी के घर में जली जिसके हृदय में परमात्मा आ गया। हर रूप में भगवान है–सबको नमस्कार करो। कुछ दिन पहले दो भाईयों में लड़ाई हुई। एक भाई जो शिकायत लेकर हमारे पास आया था उसको समझाया कि तुम अपने भाई में गुण गिनो कितने हैं। तो वह हमारी बात सुनकर हंसने लगा। बोला हां उसमें अच्छाई भी बहुत है। आज उसने हमारी बात मानी तो दोनों में प्रेम हो गया। ये मन बड़ा दुष्ट है। हमारा ही दुश्मन है। यह मन ही हमको अवगुण याद दिलाकर दुश्मनी पैदा करता है।

गुरु मन पर लगी विकारों की काई को हटाकर स्वच्छ एवं निर्मल बना देता है। इसीलिये कहते हैं मन, गुरु के हाथों में सौंप दो।

मन बेचे सत्गुरु के पास,
तिस सेवक के कारज रास।

अतः तुम अपना मन रूपी बोझा गुरु को सौंपकर निश्चिंत हो जाओ। गाड़ी पर बैठकर भी बोझा सर पर लादे रहो तो उसमें तुम्हारा ही दोष है न कि गाड़ी का। तुम तो सोचते हो, बोझा मैं ढो रहा हूँ पर सच पूछो तो भगवान ही तुम्हारा बोझा ढोता है।

तुम समय से पहले बूढ़े हो जाते हो—इसी जगत की चिंता के कारण। फिर बोलते हो मर जाऊँ। अरे! मरो नहीं योगबल पैदा करो। योगबल के आगे काल भी नहीं आ पाता। मनुष्य में इतनी संकल्प की शक्ति है कि जब तक वह स्वयं मरने का संकल्प नहीं ले तब तक नहीं मरता। जब कष्ट से बेहद परेशान होकर मरने का संकल्प करता है तभी मरता है। हम लोग तो योग न करके बाल बच्चों की चिंता में फंसे रहते हैं। आज तुम उनकी चिंता करते हो। वो तो कल खा पीकर सुखी हो जाएंगे पर तुम्हारा शरीर शिथिल पड़ जायेगा। अतः चिंता छोड़ो। भगवान भार उठाता है, क्या चिंता करते हो? पैसे से अधिक भगवान को महत्व दो। तुम जब भगवान को जपोगे तो भगवान चाहेगा तो छप्पर फाड़कर दे देगा। भगवान चाहता है तो छप्पर फाड़कर देता है। नहीं चाहे तो रखा हुआ धन भी चोरी चला जाता है। मेरे तो प्रत्यक्ष अनुभव में है कि भगवान छप्पर फाड़कर देता है।

15.10.86

माया होती है तो भी आफत नहीं होती तो भी आफत। ज्ञान बोलने लिखने पढ़ने से फायदा होता है। तुम ज्ञान बाहर वालों को लिखकर भेजो तुम्हारा ही लाभ होगा। अरे! ये ज्ञान जो हम बोलते हैं वह ब्रह्म की वाणी है, इसको लिख लेना चाहिये। ज्ञान की प्रत्येक मनुष्य को आवश्यकता है। हमारा ज्ञान व्यावहारिक ज्ञान है—खाली बांचने का नहीं। अतः तुम एक एक लोग ज्ञान लिखो तो कितना अच्छा होगा।

हम जब ज्ञान बोलते हैं तो लोग समझते हैं हम ही को बोला जा रहा है। लेकिन हम तो सबके लिये बोल देते हैं। कहते हैं चोर की दाढ़ी में तिनका। अतः जिसके मन की बात बोली जाती है तो वह समझता है गुरु जी ने हमारे लिये बोला। गुरु में श्रद्धा होती है तभी ज्ञान मुख से निकलता

है। इतने लोग कितने दिन से ज्ञान सुन रहे हैं पर कोई कोई ही ज्ञान बोल पाता है क्योंकि उनमें गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा है।

संत लोग चित्त को एकाग्र करने के लिये ॐ की धूनी लगाते हैं। ओहम सोहम जपते हैं। हम नहीं जपते, न धूनी रमाते हैं कारण हम स्वयं ॐ स्वरूप हैं। पूर्ण संत कभी धूनी नहीं लगाते। दर्शन साधू के करे, साहब आवें याद। जो ज्ञान मनुष्य को आत्मा में खड़ा कर देता है, रोते हुए को हंसा देता है, वही सच्चा ज्ञान है। तुम जो कहते हो **"अंधे को नैन देत कोढ़िन को काया"** यह बात आज भी सच्ची है। सत्संग और गुरु के प्रताप से क्या नहीं हो सकता। जिस पर गुरु की कृपा हो जाती है वह क्या से क्या बन जाता है। हमारे सत्संग में एक बूढ़ा व्यक्ति आता था। उसको कोढ़ हो गया। लोग तो उससे घृणा करते थे पर हम उसको नहीं भगाते थे। धीरे धीरे ज्ञान सुनने से उसका कोढ़ दूर हो गया। एक बूढ़ी स्त्री हमारे पास आती थी उसको रतौंधी का रोग था। वह शाम को आती तो थी सत्संग में परन्तु उजाला रहते ही भागती थी। धीरे धीरे जब हमने उसको रोकना शुरू किया तो उसकी रतौंधी गायब हो गई। फिर तो वह रात रात तक सत्संग से जाती थी। एक बार मंदिर वाली माताजी फांसी के तख्ते पर से उतर आई। अतः गुरु की कृपा से सब कुछ हो सकता है।

ज्ञान बांचने से कुछ नहीं होता। उसका अमल करना बड़ा कठिन है। जिसके पास सारे सुख हैं और वह ज्ञान सुनता है तो वह देखने में चमकेगा। लेकिन जो गृहस्थ की आग में पिसता और फिर भी परमात्मा में रहता हो तो वह पूर्ण ज्ञानी होगा और चमकेगा। सुख में भले ही कोई ध्यान रखे या न रखे, दुःख में तो रखना ही चाहिये।

कितने लोग दुष्ट होते हैं जो दूसरों के बगीचे के फूल तोड़कर अपना गुलदस्ता बनाते हैं। अरे! अपना बगीचा तैयार करो। अपनी खेती तैयार करो। दूसरे की लहलहाती खेती उजाड़ना कितनी बुरी बात है। दूसरे की खेती में आंख रखने वाले की आंख फूट जानी चाहिये। हम तो दूसरे की खेती कभी नहीं उजाड़ते हम तो चाहते हैं दूसरे की खेती भी लहलहाए। हम दूसरे के चेले को बुलाकर नहीं भड़काते, दूसरा भी ऐसा न करे तो अच्छा है। एक नाव पर बैठने वाला ही पार होता है—दो नाव पर पैर रखने वाला बीच मंझधार में डूब जाता है। अभी कृष्ण की नगरी मथुरा वृन्दावन में जाओ और दूसरे देवी देवताओं का चिंतन करो तो वह मूर्खता नहीं होगी तो और क्या होगा। एक में निष्ठा रखने वाले का ही कल्याण होता है।

तुलसीदास ने राम में श्रद्धा रखी, राम कृष्ण का रूपधर कर आए तो तुलसीदास ने कहा–

का छवि बरनौं आपकी भले बने हो नाथ।
तुलसी मस्तक तब नवै जब धनुष वाण लेहु हाथ।।

तात्पर्य यह कि भगवान तो केवल एक है पर रूप अनेक धारण करते हैं। फिर भी एक में श्रद्धा रखने वाले का उसी रूप से कल्याण होता है जिस रूप को उसने अपना इष्ट माना होता है। आज ज्ञान की हर एक को आवश्यकता है। ज्ञान लेने के बाद भी मनुष्य वही चाल चलता है कितनी बड़ी मूर्खता है। बोलता है, पहले का किया हुआ गुरु कैसे छोड़ दें। वह गुरु आज है नहीं।

आज तुमको शोक ताप सता रहा है तो कल का गुरु कैसे तुम्हारे शोक ताप को शांत करेगा। उसके लिये आज के सत्गुरु की शरण लेनी पड़ेगी। पढ़ाई तो आगे तक करनी पड़ती है। हां! पहले के गुरु ने तुमको यहां तक पहुंचा दिया उसका धन्यवाद करो। पढ़ाई तो आगे भी करनी है। अच्छा! पहले के गुरु से डोरा बांधकर बैठ जाओ तो आगे की पढ़ाई कैसे होगी? जैसे छोटी कक्षा की पढ़ाई किसी और से करनी पड़ती है, फिर बी. ए. की पढ़ाई विश्वविद्यालय में जाकर करनी पड़ती है। तुम बोलो वही प्राइमरी का गुरु पढ़ाए तो कैसे होगा? उसका ज्ञान बी.ए. के अध्यापक से सीमित है तो वह कैसे आगे की विद्या पढ़ाएगा। फिर एम.ए. की पढ़ाई दूसरे अध्यापक से पढ़नी पड़ेगी। लेकिन अध्यात्म विद्या सबसे ऊँची विद्या है। उसके लिये तो सत्गुरु के पास ही जाना पड़ेगा। तभी गुरु आत्मा का ज्ञान देकर शोक ताप पाप से मुक्त करा देता है। संत जिज्ञासु को एक रास्ता बता देते हैं। उसके बाद विद्या आगे बढ़ती जाती है। अंत में आत्मा की पढ़ाई करने पर ही संसार की तपन से आराम आता है। बिना ज्ञान के तपन नहीं बुझती।

गुरु सिखाता है, हर जगह ब्रह्म का चिंतन करो। जहां तहां भगवान ही भगवान देखो। प्रहलाद ने ऐसा निश्चय किया तो जब उसका पिता हिरण्यकश्यप उसको अग्नि के तपते खम्भे में लगाने लगा तो बोला "अब बता तेरा भगवान कहां है जो आकर तुझको बचा ले?" उसी समय प्रहलाद ने अग्नि के खम्भे पर चींटी चलती देखी और पिता से बोला "**खड्ग में, खंभ में, तुझमें, मुझमें जहां तहां भगवान ही है**। यह सुनते ही जैसे ही

हिरण्य कश्यप ने खम्भे में गदा मारी कि भगवान प्रगट हो गए। इस तरह प्रहलाद ने सबमें ब्रह्म देखा तो भगवान उस अग्नि के खम्भे में भी प्रकट हो गए। अतः तुम भी यत्र तत्र सर्वत्र ब्रह्म ही देखो। एक ही ब्रह्म सब नामरूपों में व्याप्त हैं।

हम अभी तक भागते ही रहे। किसी ने कहा हनुमान को जपो, हनुमान काम करेंगे। हम हनुमान की तरफ भागे। किसी ने कहा शंकर तो बहुत जल्दी प्रसन्न हो जाते हैं, उनके पास जाओ, वही काम करेंगे। तो उनकी तरफ भागे पर शांति कहीं नहीं मिली। जब सत्गुरु मिला तो उसने हमारा भटकना छुड़ा दिया, सर्वत्र ब्रह्म दिखा दिया। सत्गुरु ने बताया तेरे अंदर ही परमात्मा है। एक सत्गुरु ही बताता है कि तू ही निराकार निरंजन स्वरूप हैं इसमें ही चलो तो आनन्द आएगा।

संसार में तो कुछ न कुछ शब्द आते ही रहते हैं। दुख–सुख, बीमारी अमीरी, गरीबी लगी ही रहती है। इन सब कष्टों से छुड़ाने वाला गुरु ही है। गुरु कहता है तू निराकार निरंजन ब्रह्म स्वरूप है तो दुख कहां। पति, पुत्र, मां, बाप सब में एक ब्रह्म ही तो है। भगवान ही अनेक रूप धारण कर तुम्हारी पालना करता है।

तुम पति के लिये रोती हो। अरे! सच्चा पति भगवान है। तुम्हारा प्राण पति तो तुम्हारे अंदर बैठा है। सच्चा प्राणपति कभी न जानेवाला है। हस्ती भांति प्रिय प्रभू ही है। हस्ती भांति प्रिय कभी नहीं बदलता नामरूप ही बदलता है।

संत तुमको भगवान का रास्ता बताते हैं। जब ब्रह्म ज्ञानी गुरु मिलता है तो तुमको एक रास्ता बताता है। फिर तुमको इधर उधर नहीं भटकना चाहिये।

तुमको हम कहते हैं–कल के लिये मत रोओ। संसारी रोते हैं। देखो! तुमको ज्ञान की इच्छा थी तो तुम इतनी दूर (कलकत्ते से) आ गई। अरे! तुम कुछ सोचो विचारो नहीं–खाली भगवान से लगन लगाओ। रासता मिल जाएगा। बोला है "**मैं हूँ संसार के हाथों में संसार तिहारे हाथों में**।" तुम खाली भगवान में मन लगाओ। राम ही कर्त्ता हर्ता, भर्ता होता है। ज्ञानी कुछ करता नहीं उसका काम अपने आप हो जाता है। अतः तुम भी चिंता मत करो–अकर्त्ता बनकर रहो। भगवान सबको नाच नचाकर अलग हो जाता है।

तुम कोई भी चिंता मत करो। खाली भगवान पर छोड़ो। चिंता से शरीर घुलता जाता है। नानक ने ठीक ही कहा है–

चिंता में दोनो गए माया मिली न राम।
नानक चिंता मत करो चिंता चिता समान।।
मम चिन्ते क्या होय, मेरी चिंता हरि करे।
तुम कभी हैरान परेशान मत हो।।

तुम जगत का खेल अकर्त्ता तथा साखी दृष्टा बनकर देखो। तुम तो खेल देखकर डर जाते हो। तुम अपने को कर्त्ता मानते हो तो कभी सुखी होते हो कभी दुखी। संसार तो ऐसे ही चलता रहता है–इसमें किसका भरोसा किया जाय? संसार ऐसा ही झूठा है। कहा है संसार कदली का वन है। अदला बदली का खेल है–हम लोग उसी में रोते गाते रहते हैं। इंसान व्यर्थ ही रोता है। अरे! दुख आया तो सुख भी अवश्य आएगा। रात है तो उजाला भी अवश्य होगा ही। अतः क्या चिंता करना क्या रोना? भगवान की कृपा जो होगी वही होगा। तुम कर्म करो चिंता मत करो। लेकिन तुम कर्म तो कम करते हो चिंता ज्यादा करते हो। खाली होकर रहो। अरे! शरीर ही नहीं होगा तो क्या होगा। इसलिये खुद जियो और दूसरे को जीने दो। तुम पहले खुद जीना सीखो।

हम लोगों को भी जीना नहीं आता था। जब गुरु मिला तो खाना पीना सीखा। हर हालत में जीना सीखो। पल पल में संसार में परिवर्तन होता रहता है। अतः जगत को नाटक का खेल समझकर देखो। भगवान रक्षा करता है। जो दिल से भजन करता है उसकी पालना भगवान करता है। हम अपने कर्म ठीक करें। आज से ही ठीक कर्म करें। कल जो हो गया सो ठीक है–वह चाहे गलत हुआ चाहे सही उसे भूल जाओ पर आज अच्छे कर्म करो। होशियारी छोड़कर भगवान भगवान करो। तुम्हारा डाक्टर तुमको नशे की गोली देकर सुलाता है। हम कहते हैं आतम विचारो और चिंतन करो कि तुम आत्मा हो तो तुमको नींद आ जायेगी। तुम राम में रहो। समय समय पर तुमसे जेसा होना होगा हो जायेगा।

ये संसारी डरते रहते हैं कि गुरु सन्यासी बना देगा। हमारे पास तो इतनी जगह भी नहीं है कि तुम्हें अपने घर में रख सकें। तुम इतनों को हम अपने पास कहां रख पायेंगे। तुम घर से चलो भगवान भगवान शुरू करो। सबमें भगवान है, ऐसा निश्चय करते हुए आओ। भगवान जहां याद आया पाक हो गया। जहां भगवान भूला नापाक हो गया। मन कहता है

अच्छा अच्छा हमने किया बुरा बुरा भगवान ने किया। मन को बताओ कि कीर्ति मति गति सब भगवान से ही है। एक आदमी से पूछा–ये खेती बड़ी सुन्दर है, ये बैगन किसने लगाए–बोला हमने, ये टमाटर किसने लगाए–बोला हमने। सब पूछने के बाद एक मरे बैल पर नजर गई। पूछा ये कैसे मरा, बोला भगवान ने मारा। इसी तरह मन का स्वभाव है। अच्छा अच्छा किया अपना किया बताता है, बुरा होता है तो भगवान पर दोष लगाता है।

तुम तो मा मा करते हो। आत्मा, सत्य, शिव और सुंदर है। इससे अच्छा और कुछ नहीं है। मनुष्य का मन बड़ा चंचल, दुष्ट, धूर्त चोर है। अरे! इसको कितनी भी गाली दो, थोड़ी हैं हम तो तुम्हारे मन को गाली देते हैं तो तुम नाराज हो जाते हो। लेकिन गलती मान लो तो कल्याण हो जाय। जब हम भजन के लिये खास तौर से तैयार होकर आते हैं तभी भजन होता है। देखो! भजन में भी कितना परिश्रम करना पड़ता है। भगवान बोलता है मेरे लिये तुम खास समय निकालो। तुम भी खास आए हो, हम भी खास आए हैं तभी भजन हो रहा है। घर में भजन नहीं होता। तुम तो जिंदगी भर भटकते रहते हो, कभी इधर कभी उधर। फूल तोड़ लाते हो, माला ले आते हो। अरे! हम फूल माला से खुश नहीं होते। तुम फूल बगीचे में नहीं खिलने देते। अरे! फूल बगीचे में खिलने दो। फूल बगीचे की शोभा है। तुम दिल की माला लाओ। मंदिर के पुजारी से पूछो वह रात दिन कितनी फूल मालाएं चढ़ाता है? क्या भगवान उससे खुश हुआ? उसे दर्शन दिया भगवान ने? अरे! भगवान बाहरी फूल से खुश नहीं होता।

सभी कठिनाईयों को सहते हुए यदि भजन दिल से कर ले जाए तो उसको सब सुविधा मिलती है, शक्ति मिलती है। भजन में पहले पहल कठिनाईयां अवश्य आती हैं जिनको देखकर मनुष्य घबरा जाता है और भजन छोड़ देता है। जिसको राग, द्वेष, पाप, पुण्य, तेरी, मेरी से कोई मतलब नहीं रहता वह सच्चा भजन कर ले जाता है। तुम खाली राम राम करो। खाली राम राम करने से सारा विश्व तुम्हारा हो जाएगा। राम का ही तो सारा पसारा है। ऐसा जब हम सोचेंगे तो कोई हमारा दुश्मन नहीं होगा। ऐसा सोचो–ये सारा विश्व मेरा है। मेरा ही रूप है, इधर भी मैं हूं तो बस छुट्टी मिल जायेगी। **"मैं हूं सबमें और न कोई, मेरी जोति सब घट घट रमट होई।"** ऐसा अद्भुत रूप जाने कोई कोई, भूप सर्व मम रूप है।

हमारा मन स्थूलता में जाता है। इसीलिये हम भगवान देख नहीं पाते।

हस्ति भांति प्रिय सब प्रभू का ही तो है। एक ही परमात्मा सबमें है पर हमको नाम रूप देखने में आता है। व्यक्त संसार लगता है और अव्यक्त परमात्मा लगता है परन्तु जब सद्गुरु ज्ञान देता है तो अव्यक्त परमात्मा व्यक्त सा लगने लगता है और संसार झूठा प्रतीत होने लगता है। परमात्मा ही सत्य है।

ज्ञान की अग्नि जिस योगी के हृदय में जल जाती है उसके सम्मुख आने पर मनुष्य के सारे कर्म जल जाते हैं। कहा भी है ज्ञान अग्नि कर्म दग्ध। तुम जैसे हवन कुंड में हवन सामग्री डालते हो और स्वाहा करते हो तो सब जल जाता है उसी तरह हमारे हृदय में ज्ञान रूपी अग्नि प्रज्जवलित हो रही है। यहां भी होम हो रहा है। ज्ञानी का चतुष्ट अन्तःकरण ही हवनकुंड है जिसमें तुम्हारा अहंकार रूपी आहुति स्वाहा हो रही है।

तुम निष्काम कर्म करो यही सबसे बड़ा यज्ञ है। हमारे यहां न कोई चन्दा है न ही हम तुमसे कोई टैक्स लेते हैं–ये फूल माला भी हमको झंझट लगता है। फूल माला तो बाहरी बात है। तुम खाली परमात्मा से प्यार करो बस हम समझेंगे तुमने फूल चढ़ा दिया। प्रभू से बोलो "निगाहों में तुम हो, खयालों में तुम हो। ये जन्नत नहीं तो फिर और क्या है।"

हनुमान ने अपने रोम रोम में राम बसाया तो आज सारे लखनऊ का ही नहीं, सारे विश्व का लड्डू उसको चढ़ता है। हनुमान से किसी ने पूछा कौन सा साल है, बोला राम! पूछा कौन सा महीना है बोला राम। फिर पूछा कौन सा दिन है–बोला राम। हनुमान ने राम को ऐसा दिल में बसाया था कि राम के सिवा किसी बात का ज्ञान नहीं था। तुम भी अपने हृदय में ऐसा राम बसाओ। अरे! राम के आगे मधु भी मीठा नहीं लगता। हमको तो आज मिठाई भी अच्छी नहीं लगती क्योंकि मिठाई से ज्यादा राम मीठा लगने लगा है। राम रस के आगे सभी रस फीके लगते हैं। तुम मिठाई क्यों लाते हो। तुम खुद चले आओ, राम का भजन करो हमको मिठाई मिल गई। सच्चा नाता परमात्मा का होता है। ये खाना पीना लाकर हमको तंग मत करो। इसी से बहुत से संत डिग जाते हैं। तुम खाली भगवान का भजन करो।

अभी देखो हम फूल माला पर गाली दे रहे थे। अभी फूलों की बरसात हो गई। क्या करें? देखो! हम कुछ नहीं करते। हम अकर्त्ता हैं अभी तुमने प्रत्यक्ष देखा। भगवान की ऐसी ही महिमा है। कभी कांटा मिलता है, कभी

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना
कि मैं बोझ उठाने काबिल नहीं हूं
मैं आ तो गया हूं तेरे दर पर लेकिन
मैं इस दर पे आने के काबिल नहीं हूं

तेरा नाम हरगिज जुबां पर न लाया
जमाने की चाहत में खुद को मिटाया
तलबदार था न मैं वफादार था न मैं
तुझे मुंह दिखाने के कांबिल नहीं हूं। तेरी.....

ये माना कि दाता हो तुम सब जहां के
मगर झोली कैसे मैं फैलाऊँ आ के
जो पहले दिया है वही कम नहीं है
उसी को उठाने के काबिल नहीं हूं। तेरी.....

तुम्ही ने अता की है तुझे जिन्दगानी
मगर तेरी महिमा अभी मैने जानी
करजदार हूं मै तेरी दया का
कि करजा चुकाने के काबिल नहीं हूं। तेरी.....

तमन्ना यही है कि मै सिर झुकाऊँ
तेरी महिमा जी भरके एक बार गाऊँ
सिवा दिल के टुकड़ों के ऐ मेरे मालिक (सतगुरू)
मैं कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूं। तेरी.....

फूल बरसते हैं। घर के बड़े लोग हमेशा कुछ लाभ पाने के लिये भटकते रहते हैं। उसमें उनको अपने मान अपमान का भी ध्यान नहीं रहता। एक बार एक व्यक्ति सड़क पर खूब लोट लगा रहा था, कभी इधर तो कभी उधर। उसके बच्चों ने अपने पिता को इस तरह सड़क पर लोटते देखा तो उनको बेइज्जती सी प्रतीत हुई तो बच्चों ने कहा पिताजी ये क्या कर रहे हैं–अच्छा नहीं लग रहा है, उठिये घर चलिये परन्तु वह नहीं माना। उसी तरह अंधेरा होने तक करता रहा। रात में जब घर लौटा तो गिन्नी की एक थैली बच्चों को दिखाता हुआ बोला अरे! मैंने सड़क पर गिन्नी की थैली पड़ी पाई थी–अगर वह उस समय उठाता तो लोग मुझे चोर समझते। अतः मैं उस थैली को उठाने के लिये उसके ऊपर लोटता रहा अब उठाकर लाया। यह बात सुनकर बच्चे खुश हुए।

इसी तरह जो समझदार है, घर के बड़े होते हैं, वह भटकते हैं। यहां आकर ज्ञान से उनको आनन्द मिलता है। यही सच्ची गिन्नी है जो स्वयं भी लेते हैं और अपने बच्चों को भी देते हैं। जब आप ज्ञान में आनन्द रस लेंगे तो आपके बच्चे भी आनन्द लेंगे– यहां आ जायेंगे। यहां आकर जब आप प्रभु–प्रभु कहेंगे तो आपको सब मिल जायेगा।

संसार में सब कुछ करने पर भी आराम नहीं मिलता। सच्ची खुशी खाली भगवान में होती है। बोला है **राजा दुखिया परजा दूखिया, सकल सृष्टि का राजा दुखिया। सो सुखिया जो नाम अधारा।** अरे! यह संसार जंगल है, धोखे की दुनिया है। न तेरा है, न मेरा है। यह प्रभु ही कभी धोखा नहीं देता, सदा तुम्हारा साथ देता है। इसलिए प्रभु प्रभु करो।

हमारे भजन में किसी प्रकार का बंधन नहीं है। हम खाना पीना कुछ नहीं छुड़ाते। तुम जो भी खाओ, जो भी पियो, यहां तक कि जैसा कपड़ा पहनना हो पहनो। बस हम तुम्हारी वृत्ति लेते हैं। जो वृत्ति जगत में नामरूपों में फंसकर कब्र पर जा रही है। उसी वृत्ति को संसार से छुड़ाकर परमात्मा में लगाते हैं। तुम व्यर्थ ही भटकते हो। आज तक काशी, काबा, मथुरा, वृन्दावन, बद्रीनाथ, जगननाथ सबमें भगवान ढूंढ़ते रहे पर हमारे हृदय में ही प्रभु है ये पता नहीं था। जब सत्गुरु मिला तो उसने बताया कि प्रभु तो दिल में है–काशी काबा में नहीं। कबीर ने कहा है **"मोको कहां ढूंढ़े रे बंदे, मैं तो तेरे पास में, हर सांसों की सांस में।"**

भगवान ने शरीर बनाया। सारी इंद्रियों के देवता शरीर में बैठ गए

पर शरीर नहीं चला। जब भगवान दिल में आकर बैठा तभी शरीर चला। अतः शरीर भी भगवान की ही शक्ति से चलता है। कहते हैं **"तेरे पूजन को भगवान बना मन मंदिर आलीशान।"** अतः भगवान ही सर्वशक्तिमान है।

तुम कर्त्तव्य अवश्य करो। निष्क्रिय होकर मत बैठो। अर्जुन कृष्ण से बोला "मैं युद्ध नहीं करूंगा। इतने प्रिय जनों को अपने सामने मरते नहीं देख सकता।" कृष्ण ने कहा " तू मोह में अंधा होकर बात कहता है। तू युद्ध क्यों नहीं कर सकता? अधिकार की लड़ाई तो तुझको लड़नी ही पड़ेगी। कृष्ण के उपदेश देने पर अर्जुन ने तब युद्ध किया। तुम भी मोह में पड़कर ही कहते हो कि मैं ऐसा नहीं कर सकता। तुम मोह को हटाओ, अपने कर्त्तव्यों को निष्काम होकर करो, यही तुम्हारी पूजा है, यही तुम्हारा धर्म है।

16.10.86

हमारे ज्ञान से मुर्दों को जान मिलती है। अंधों को आंख मिलती है। भगवान खुद उठकर भी भक्त को बचा लेता है। तुमको परहेज़ करना पड़ता है। मैं हूँ–यही रोग है। तुम मन के रोगी से दोस्ती मत करो। जब तुम दुनियां को छोड़ोगे तो तुमको भक्ति हो जायेगी। तुम भगवान का चिंतन नहीं करते हो, बीमारी का चिंतन करते हो। मैं बीमार हूँ, तुम्हारा यही चिंतन चलता है। तुम यह क्यों नहीं समझते कि मैं आत्मा हूँ। हमने हज़ार बार कहा तू आत्मा है–वह नहीं याद रहता। तुम रात दिन घोड़े (शरीर) का चिंतन करते हो। तुम सोचो मैं निराकार ब्रह्म हूँ। समुद्र में लहरें आती हैं लेकिन समुद्र उससे अलग है। कितने दिन आत्मा सुनाया पर फिर भी तुम बकरी की तरह मैं मैं करते हो। हरि में ऐसी प्रीति होनी चाहिये जैसी तुम्हारी दूसरों में होती है। कहते हैं– " जैसी प्रीत हराम में तैसे हरि में होय।" ज्ञान के द्वारा बुढ़ापा भी भूल जाता है। मुझको भी कष्ट है पर देखो ज्ञान बोल रहे हैं। तुम ऐसा निश्चय करो कि मैं निराकार ब्रह्म हूँ, मैं देह से परे हूँ। भगवान सारे पाप ताप जलाते हैं, तुम कोई भी शब्द आए भगवान भगवान करो तो शांति मिलेगी। शब्द नहीं लगेंगे। भगवान में जैसे जैसे मन लगता है, भगवान अपने से अपने भक्त को दूर नहीं रखता। न होनेवाला काम भी हो जाता है।

जो कुछ भी न चाहते हुए भी भगवान की जय जय मनाता है उसको सब कुछ यहीं मिलता है। तुम गया क्यों करते हो? जो ज्ञान में है, वह गया नहीं जाता। गुरु के पास गया तो हज हो गया। गुरु से बढ़कर गया नहीं होता है। ये पुरानी लकीर के फकीर हैं जो कहते हैं यहां खिलाओ, तो पितर तर गए समझो। अरे! ज्ञान सुनो, ज्ञान सुननेवालों को खिलाओ, पितर तर जायेंगे। लोग ब्राह्मण को खाना खिलाते हैं। हम बोलते हैं जहां से पितर को खाना जायेगा, वहीं से हमारा ज्ञान भी जायेगा। ज्ञान से पितर तरते हैं, खाना खिलाना भ्रम है। तुम तो साल में एक दिन पितर खिलाते हो तो समझते हो पितर तर गए। हम तो रोज ज्ञान सुनाते हैं हमारे पितर तो बिल्कुल तर गए।

ज्ञान का अभ्यास अलग रहकर ही होता है। भगवान जब एकांत देता है तो ज्ञान का श्रवण, मनन, निदिध्यासन करो। जो हालत है उसमें शुकराना करो। तुमको योग में आरूढ़ होना है। जब तुम सच्चा योग करोगे तो तुमको सही आनन्द मिल जायेगा। एक औरत का पति तीन लड़कियों को लेकर अलग हो गया तो वह रोने लगीं। हमने कहा तुम क्यों रोती हो? अच्छा है, शुकराना मनाओ तुम्हारी जिम्मेदारी ले गया। अरे! संसार की हालत दृष्टा बनकर देखो। जगत तो नाशवान है। संसार की हालत देखकर तुम दुखी होते हो। ये सब क्षणभंगुर है। फिर भी व्यवहार ठीक ठीक ही करना पड़ेगा। तुम काम तो सही करते नहीं और जरा सी हालत में रोने लगते हो। तुमको तो एक दो बच्चे ही सताते हैं तो तुम रोने लगते हो। सुअर के कितने कितने बच्चे होते हैं, नोचते रहते हैं। अरे! तुम खाली आत्मा को जानो तो सही फिर तुम कर्म भी सही करोगे। जब तुम चौगिर्दा सही काम करोगे तभी आत्मा कहलाओगे आत्मा जानने वाले में आत्म शक्ति होती है। आत्माकार इतना होशियार होता है कि युद्ध करते हुए भी आत्मा में स्थित रहता है। कृष्ण पूर्ण योगी थे, ज्ञान के सहारे ही सारे कर्म किये। ये जो घर छोड़कर भागते हैं और अपने को योगी समझते हैं, ये सच्चे योगी नहीं हैं। बाहर भी नोचले वाले मिलते हैं। तुम घर से भागते हो यह पाप है। तुमको घर में आसनी न मिलती हो तो बाहर भागो। लेकिन जब घर में आसनी मिलती है भजन का अवसर मिलता है तब भागते हो तो तुम मूर्ख हो। जो भी घर छोड़कर भागता है वह मूर्ख है। तुम राज में ज्ञान लो। हमने कभी पूर्ण भजन किया तो आज राज्य में रहते हुए भी योग में हैं। तुम हमको साधारण जानकर बाहर ऋषियों मुनियों की ओर भागते हो। क्या राजा जनक राज काज चलाते हुए भी ज्ञान में नहीं था? योगी नहीं था क्या? याज्ञवल्क्य जैसे

बड़े ऋषि का लड़का भी राजा जनक से ज्ञान लेने गया तो क्या इतना बड़ा ऋषि मूर्ख था? अरे! राज में रहते हुए भी जिसकी वृत्ति परमात्मा में हो वही योगी कहलाता है। तुम तो जो अग्नि में तपता है, एक पैर पर खड़ा होता है, उसको बड़ा मानते हो। भगवान लीलाधारी है। जब लीला होती है तब तुम कहते हो इससे अच्छा तो ज्ञान है। जब तुम भगवान मानते हो तो भगवान लीला करता है। भगवान इसलिये लीला करता है कि जिनका मन भजन में नहीं लगता वे फालतू आदमी चले जायें।

तुम हमको मारने का प्रयत्न करते हो। अरे! ऐसा पाप तुम कभी मत करना **"संत का दोषी, महा हत्यारा।"** तुम ऐसा नीच काम करोगे तो नरक में पड़ोगे। देखो! क्राइस्ट जैसे बड़े संत को जहां मारा गया वहां आज भी औलाद सही नहीं पैदा होती। इसलिये ऐसा पाप तुम कभी मत करना। कहते हैं "संत की महिमा वेद न जानी।" गुरु ग्रंथ कहलाते हैं। नाम प्रभु का गाते हैं। जब जब भी प्रभु संत का रूप धरकर आते हैं तो लोग पहचान नहीं पाते और उन्हें सताते हैं। जब वे चले जाते हैं तो फोटो पर फूल माला पहनाते हैं। तुम ऐसा मत करना। कभी कभी मनुष्य एक पल में अपनी लापरवाही से हीरा खो देता है। इसलिये तुम गुरु के खाने पीने का भी सदा ख्याल रखो। गुरु का जीवन अपने लिये नहीं होता बल्कि दूसरों के उद्धार के लिये होता है। गुरु जिंदा रहेगा तो कितनों को अपने ज्ञान के द्वारा आनन्द शांति देता रहेगा। अभी तुम गुरु को रोज देखते हो तो तुमको उसकी कीमत नहीं समझ आती। जब वह कहीं दूर जायेगा तो तुमको दुख होगा। इसलिये गुरु के सामने गुरु के बचनों में ध्यान रखो। तुम्हारी ओर से उसे कोई कष्ट न हो ऐसा ध्यान रखो। गुरु जगत की लू ताप से पीड़ित व्यक्तियों को कूलर की तरह ठंडक पहुंचाता है। कहते हैं **"भोले भाव मिले रघुराई।"**

चतुराई से चतुर्भुज नहीं मिलता। गुरु की दिल से खाली सेवा कर लो तो जो चाहो मिल जायेगा। ये लड़की (बबली सुमन डा०) दिल से हमारी सेवा करती थी, पेड़ पालती थी तथा एकाग्र वृत्ति में थी तो देखो पीलीभीत से लखनऊ आ गई और भगवान की कृपा ऐसी हुई कि उससे भी अच्छी और ऊँची जगह पर आ गई। अब दांत की डाक्टर बनेगी और सबकी सेवा करेगी। अरे! तुम दिल से भगवान की सेवा करो तो देखो क्या नहीं हो सकता। न होनेवाला काम भी हो जाता है।

काम जो तुम्हारा होता नहीं या होते होते रह जाता है उसमें हमारी

ही कमी होती है। हम जो भूखे प्यासे बनतें हैं ये हमारे अपने ही बुरे कर्मो का फल है। जो सच्चाई से भगवान की सेवा करता है उसको कभी कमी नहीं होती। बुरा जो मिलता है वह हमारे कर्मो से मिलता है, अच्छा जो मिलता है वह भगवान की तरफ से मिलता है। भगवान की महिमा जितनी भी गाई जाये कम है। भगवान तो हमको भर देता है। हम तो उसके लायक भी नहीं थे जितना उसने हमको दिया है। जो काम होता है वह तुम्हारी योग्यता से नहीं बल्कि भगवान की कृपा से ही होता है।

चारों दिशाओं में भगवान हैं। भगवान को छोड़कर कौन सी ऐसी जगह जाओगे जहां भगवान न हो। कण कण में पत्ते–पत्ते में भगवान व्याप्त है। एक डाकू बच्चे को जंगल में ले जाता है, मारने कि लिये, वहां भी भगवान है। वहां भगवान सांप बनकर डाकू को काट लेता है और बच्चा बच जाता है। भगवान सबकी रक्षा करता है।

भगवान इंसाफ है वह किसी के साथ अन्याय नहीं करता। पहले जब हम कहीं मंदिर आदि में जाते थे वहां सड़को पर अंधे, लंगड़े, लूलों को देखते थे तो बहुत दुख होता था। हम यही सोचते थे कि भगवान ने बड़ा ही अन्याय किया इन बेचारों पर लेकिन जब हम ज्ञान में आए तो हमें ऐसा लगा कि भगवान् इंसाफ है। वह किसी को दुख नहीं देना चाहता लेकिन जो जेसा कर्म–अच्छा या बुरा करता है उसको वैसा फल देता है। हमको यह भी शुकराना लगा कि हमारे तो कर्म इनसे भी ज्यादा बुरे थे, लेकिन भगवान ने थोड़ा ही कष्ट दिया है।

हर बात में भलाई मानो तो कष्ट प्रतीत नहीं होगा। लेकिन ये मन ही बड़ा धूर्त पापी कपटी है–बार बार शुकराना भुला देता है। शुकराना भूलने का कारण है हमारा अहंकार। ज्ञान का मतलब है निरभिमानता। हरी पहले पहल जब आया था इसका स्वभाव बहुत तेज़ था। गुस्से में आकर बड़ा नुकसान कर देता था। पर जब से हमारी शरण आया इसका स्वभाव परिवर्तित हो गया। आज हम जितनी भी गाली देते हैं चुपचाप सुन लेता है। हमसे बहस नहीं करता–बल्कि हां में हां मिलाता है। अब वह जानता है कि इनसे टकरायेंगे तो आफत है। अब वह हमारे आगे सदा झुक कर रहता है। जो मनुष्य एक के सामने झुक कर चलता है तो वह आगे भी सबके सामने झुक सकता है।

भगवान से विमुख होने पर प्रकृति भी उल्टी हो जाती है। यह तो

अच्छा है जो कोई तुम्हारे मन के विपरीत चलता है, नहीं तो तुम वहीं बैठे रह जाओगे। भजन भी नहीं कर पाओगे। दु.ख ही अच्छा है जो भगवान की तरफ भेजता है।

दुखों से अगर चोट खाई न होती,
तो तुम्हारी प्रभू! याद आई न होती।

मन इतना दुष्ट पापी है कि इतना दु.ख और चोट खाने पर भी उसी ओर भागता है। घर परिवार की आसक्ति उसे फिर सताने लगती है। घर के लोग कितना ही विपरीत चलें, मनुष्य को फिर भी वैराग्य नहीं होता। हम तुम्हारे मन को अच्छा बनाने के लिये ही गाली, मारताड़ करते हैं। सांप को देखो! कैसे मारा जाता है। जब बहुत डंडे पीटने पर भी नहीं मरता तो भाला खोंपते हैं तब कहीं जाकर वह मरता है। इसी तरह मन रूपी सांप जो बार बार नामरूपों में फंसता है, हम मारते हैं। तुम भी अपने मन को हमसे मार खिलवाओ तो हम तुम्हारे मन को मारकर दुबारा अच्छा बना दें लेकिन तुम तो भाग जाते हो।

तुम मोह छोड़ो। सबसे दिल हटाकर भगवान से जोड़ो। तुम तो मोह में अंधे हो रहे हो। तुम मोह के भंडार हो। सबके लिये रोते रहते हो। अभी भी संसार की इतनी लथाड़ खाते हुए भी भगवान में मन नहीं लगाते। सत्संग चल रहा था। गुरुजी किसी के मन को गाली दे रहे थे। इतने में आगे वाले ने इस जिज्ञासा से कि गुरु जी किसको डांट रहे हैं पीछे मुड़ कर देखा। बस उसको मुड़ते देख गुरुजी ने उसे ही डांटना शुरू कर दिया। बोले "तुम पीछे क्या देखते हो? तुम्हारा मन क्या उसके मन के अच्छा है? तुम तो उससे भी कहीं ज्यादा खराब हो। तुम दूसरे को मुड़ कर देखते हो तो हमें कष्ट होता है। हम जब किसी की भी ओर देखकर बोलते हैं तो तुम मुड़कर देखते हो तो ये हमको बिलकुल पसंद नहीं है। हम तो सबको बोलते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को सोचना चाहिये कि गुरुजी हमको ही, हमारे मन को डांट रहे हैं तब तुम्हारा मन अच्छा हो जायेगा। लेकिन अगर तुम दूसरे को देखोगे तो कोरे के कोरे रह जाओगे। तुम यहां अकेले होकर बैठो—यही सोचो एक मैं हूँ और दूसरा मेरा गुरु है। इसके अलावा दूसारा कोई है ही नहीं। जो भी गाली या प्यार मिल रहा है वह मुझको ही मिल रहा है। तभी तुम्हारा कल्याण होगा। सबका मन एक सा ही है अतः सदा अपनी ओर तथा अपने मन की ओर देखो। हम तुमको गाली नहीं देते। तुम तो हमारे अच्छे हो—तुम्हारा मन खराब है। हम चाहते हैं तुम अंदर बाहर

से पवित्र बन जाओ। तुम किसी की ओर मुड़कर न देखो। एकाग्र वृत्ति में रहो। दूसरे में नजर न रखो। दूसरों के दोष न देखो बल्कि अपने दोष देखो। दूसरे के गुण देखो तो तुम्हारा भला होगा। तुम पूजा करने आए हो तो सच्ची पूजा करो। जन जन में भगवान देखो तो तुम्हारी पूजा स्वीकार होगी। तुम सिर्फ भगवान का दर्शन करने आओ। देखो! काली माता के सामने जाकर तुम काली माता पर ही नजर रखो तो वह तुम पर प्रसन्न हो जायेंगी। काली माता के दरबार में आकर अगर दूसरे पर नजर डालोगे तो काली माता नाराज होकर प्रलय कर देंगी।

तुम माला क्या पहनाते हो? काली माता तो मुंडों की माला पहनती हैं। तुम भी अहंकार रूपी मुंडो की माला पहनाओ तो हम तुमसे खुश होंगे। तुम काली माता को अपने कर्मो से परेशान मत करो। उसको जगाओ मत। भक्त जब भक्ति में आता है तो काली माता सोती रहती है और जब भक्ति में नहीं रहता है तो वह जाग जाती है, प्रलय कर देती है। पार्वती जब अपने पिता के घर यज्ञ में गई तब शंकर समाधि में थे। यज्ञ में अपने पति का स्थान न पाने के कारण पार्वती को बहुत अपमान महसूस हुआ। उस अपमान को न सह पाने के कारण पार्वती यज्ञ के अग्नि कुण्ड में कूद पड़ीं तो शंकर के गणों ने हाहाकार मचा दिया। जब शंकर को जाकर बताया गया तो उनकी समाधि टूट गई और जब वे जागे तो उन्होंने वीरभद्र (जो शंकर का दूसरा रूप था) को राजा का यज्ञ विध्वंस करने भेजा। इसलिये तुम कभी ऐसा काम मत करो जिससे भगवान को कष्ट हो और वह क्रोध में आ जायें। तुम जप तप ध्यान योग में रहोगे तो भगवान तुमसे कभी नाराज नहीं होगा। तुम मनसा, वाचा, कर्मणा से एक नहीं होओगे तब तक भक्ति पूर्ण नहीं होगी। कहा भी है—**तन,मन एक रस, तो सुमिरन कहिये सोय**।

हमारे यहां कोई बंधन नहीं है। जो खाना हो खाओ, जो पहनना हो पहनो। जहां घूमना हो घूमो, जहां रहना हो रहो पर वृत्ति भगवान में रखो। तुम आत्म निश्चय में रहो। आत्म निश्चय के बिना ज्ञान नहीं होता। तुम आत्मा हो, अपनी आत्मा का चिंतन करो। मैं ब्राह्मण हूँ, मैं ठाकुर हूँ का चिंतन न करो। तुम्हारी वास्तविक जात तुम्हारी आत्मा है। "जात मेरी आत्मा परमेश्वर परिवार।" ब्राह्मण, ठाकुर का चिंतन करने से अहंकार होता है।

हम भी कितना काम करते हैं पर फिर भी उल्टा सीधा काम नहीं करते। तुम तो ज्ञान सुनकर भी कर्म उल्टा सीधा करते हो। कर्म करते

हो तो ज्ञान भूल जाते हो। हम ज्ञान और कर्म को एक सा करते हैं। गृहस्थ में ज्ञान और कर्म दोनों का महत्व है। तुम भी कर्म के समय कर्म को ठीक ठीक करो। तुम चौतरफा बनो। ज्ञानी का लक्षण है सब काम सही सही करना।

जगत में दुख ही दुख है। जब मनुष्य दुख से बहुत परेशान होकर गुरु की शरण में आता है तो उसको कूलर की सी ठंड का अनुभव होता है। जगत में तो दुख ताप की लू चल रही है। गुरु के ज्ञान से शक्ति मिलती है। गुरु जो बोले, वह सुनो। तुम मौन रहो। गुरु के साथ साथ तुम भी बोलते जाते हो– यह तुम्हारा अहंकार है। वैसे भी संसार में भी ऐसा नियम है कि कोई बड़ा बोलता है तो छोटे बीच में नहीं बोलते–यह भी एक अदब है।

दुनियां में कष्ट ही कष्ट है, लेकिन गुरु के दर्शन से आराम आता है। तुमने गर्भ में वादा किया था कि भजन करूंगा पर तुम अपना वादा भी भूल गए हो। तुम बोलोगे शंख चक्र गदा वाला भगवान होगा पर जो तुम्हारा दुख दूर कर दे वही तुम्हारा भगवान है। प्रत्येक उलझन की दवा ज्ञान है। ज्ञान न होता तो मनुष्य जी नहीं सकता। ज्ञान से ही आराम आता है। कहा भी है–

राजा दुखिया, परजा दुखिया।
सो सुखिया जो नाम अधार।।

जब तुम नाम के आधार पर रहोगे तो सब ठीक होगा। तुम्हारी जीवन की गाड़ी भगवान चलाता है लेकिन तुम समझते हो हम चला रहे हैं। तुम अपने को कर्त्ता समझते हो–तुम अकर्त्ता बनकर कर्म करो तो दुख ताप नहीं लगेगा। अपने जीवन की नैया को भगवान के हवाले कर दो। **नैया कर दे प्रभु के हवाले। लहर लहर हरि आप संभाले।**

तुम दुख में भी हंसो। हंसने से आधी बीमारी दूर हो जाती है। तुम अपनी आत्मा प्रकट करो तो शरीर का कष्ट नहीं लगेगा। तुम आत्मा हो। राजा होकर भीलों के देश में पहुंचकर अपने को भील समझने लगे हो। तुमने मन को अपना राजा बना लिया है और स्वयं राजा होकर उसके नौकर बन गए हो। मन जैसा नचाता है, नाचते हो। जब सत्गुरु मिलता है वह तुमको तुम्हारा सच्चा स्वरूप दिखा देता है। **"भूला मारग जिसने बतलाया-ऐसा गुरु बड़भागी पाया।"**

तुम खाली भगवान भगवान करो तो कष्ट नहीं व्यापेगा। ऐसा नहीं है कि कष्ट आएगा ही नहीं। हम जैसे कर्म करते आए हैं उसका प्रारब्ध कर्म तो आएगा ही परन्तु गुरु के सुमिरन से वह ज्यादा प्रतीत नहीं होगा। तुम बस आनंद के समुद्र में डुबकी लगाओ।

तुम मोह ममता को हटाओ। आत्मा में रहो। अर्जुन आत्म शक्ति भूल कर जब मोह में आया तभी वह कहता है कि मैं युद्ध नहीं करूंगा। पर जब कृष्ण ने ज्ञान देकर मोहासक्ति को दूर करके मोह का पर्दा हटाया तब उसने युद्ध किया। इसी तरह सत्गुरु भी तुम्हारी मोह, आसक्ति को दूर कर आत्मा का ज्ञान देता है और जीवन की लड़ाई को लड़वाता है। बोलते हैं, **"जबसे मिले मेरे सत्गुरु जी, जाग उठी तकदीर मेरी।"**

वर्षों का अंधकार हो और दिया जलाने वाला वहां पहुंचकर दिया जला देता है तो अंधकार दूर हो जाता है। सत्गुरु भी तुम्हारे मन के अंधकार को ज्ञान का दीपक जलाकर दूर करता है।

हम दुख सुख का अनुभव तभी करते हैं जब आत्मा भूलते हैं। परमात्मा को पाने के लिये दुख सुख से ऊपर उठना पड़ता है। खुदी मिटानी पड़ती है। तब कहीं परमात्मा का दीदार होता है। "आप विसर्जन होय जब, सुमिरन कहिये सोय।"

देखो! हम भी अपना शरीर भूलते हैं तभी तुमको ज्ञान देते हैं। आज हमको शरीर में अत्यधिक पीड़ा है। पर फिर भी हमको कष्ट नहीं प्रतीत हो रहा है और हम ज्ञान बोल रहे हैं। इसका कारण हमारा चित्त भगवान में है। रामतीर्थ बालू में जा रहे थे जो धूप से तपकर गरम हो गई थी। वे नंगे पैर चल रहे थे। इसका क्या कारण था? उनको अपनी देह का भान नहीं था। परमात्मा के ध्यान में ही देह का कष्ट भूल जाता है।

17.10.86

प्रेम का तार ऐसा है कि जिसमें मनुष्य खिंचकर चला आता है–बुलाना नहीं पड़ता। हम सोचते हैं हमको बुलाया नहीं। परन्तु अगर तुम्हारे हृदय का तार ठीक होगा तो वह स्वयं आ जाएगा। जो भी प्यार, सुंदरता, अच्छाई है वह सब भगवान में लगनी चाहिये तभी कल्याण होगा। छोड़ना कुछ नहीं पड़ता। हमने स्वयं भी कुछ नहीं छोड़ा है, न तुमको छुड़ाते हैं। हम तो कहते हैं–उदासीन बनकर मत रहो–सब कुछ खा पीकर मौज करके भी वृत्ति को

भगवान में टिकाओ। हमारा सत्संग भी एक क्लब की तरह है। हंसो गाओ। हमारा क्लब तो ऐसा है जहां रोता हुआ व्यक्ति भी आकर हंसता है और आराम पाता है। तुमको ऐसे प्रेमी, ऐसा प्यार और कहां मिलेगा? ये लोग तुमको मरने भी नहीं देंगे क्योंकि यहां ही मनुष्य का सच्चा और निष्काम प्यार मिलता है। परमात्मा की शक्ति से ही सब कुछ है। देखो! सूरज निकला, प्रकाश हो गया और अंधेरा दूर हो गया।

तुमको दुनियां के शब्द न लगें तभी समझना कि तुमको ज्ञान हो गया है। दुनियां तो सदा नोचती रहती है पर वह नोचना भी तुमको न लगे, और शब्द भी न लगें तब ही समझना तुम ज्ञानी हुए। यह जगत ऐसा ही है। हर एक की इच्छा हमेशा लेने की ही होती है और समय समय पर लूटता रहता है। हमने अपना सारा तन, मन, प्राण जगत के लिये लगा दिये पर शांति नहीं मिली। शांति की खोज में हम भटकते भी रहे। लेकिन अब पता चल गया है कि शांति कहीं दूर नहीं अपने ही अंदर है।

तुम क्या मूर्ति पूजा करते हो? जब तक गुरु नहीं मिला था, तुम पूजा करते थे। यह भी अच्छा ही हुआ। जब तुम को सत्गुरु मिलता है तो वह तुमसे सच्ची पूजा कराता है। घंटी बजाना, आरती करना तो बाह्य (स्थूल) पूजा है। गुरु इससे भी ऊपर की पूजा बताता है–वह है ज्ञान। अतः तुम चित्त को दुनियां के रागद्वेष, झंझटों से अलग रखो। देखने में आता है दूसरा हमें जलाता है पर पहले तुम्हारा मन ही तुम्हारा दुश्मन बनकर तुमको जलाता है। अपना मन ही अपना दुश्मन है। तुम अपना मन सत्गुरु को सौंप दो–फिर देखना जीवन कैसा सुंदर बनता है। कहा है–

मन बेचे सत्गुरु के पास, तिस सेवक वे कारज रास।

इसलिये तुम अपना मन गुरु को सौंप दो और एक एक से नम्रता और प्रेम का व्यवहार करो।

आज तक हम भगवान को जगह जगह ढूंढते रहे पर हमको यह पता नहीं चला कि भगवान तो हमारे हृदय में है। जब सत्गुरु मिला तो ही यह भेद पता चला। हम उसी प्रकार भगवान को ढूंढ़ते थे जैसे हिरन अपने ही अंदर मौजूद कस्तूरी को ढूंढ़ने के लिये इधर उधर भटकता है क्योंकि उसे यह ज्ञात ही नहीं है कि–

हिरन की नाभि में कस्तूरी, समझ न पाए है मजबूरी।

हिरन की तरह ही हम भी भटकते हैं। जब सत्गुरु मिलता है तो हमारी भटकन समाप्त हो जाती है। परमात्मा को ढूंढ़ने कहीं बाहर नहीं जाना है वह तो हमारे ही अंदर है। घट घटवासी परमात्मा सबके हृदय में है। कबीर कहते हैं **"मोको कहां ढूढ़े रे बंदे मैं तो तेरे पास में।"**

प्रश्न हम तो हर एक को प्यार करते हैं पर फिर भी हमको प्यार क्यों नहीं मिलता?

उत्तर जब तक हम दूसरे से प्यार पाने की इच्छा रखेंगे हमको प्यार नहीं मिलेगा। कहते हैं "इच्छा मात्रम् अविद्या संसार में प्रत्येक व्यक्ति इच्छा के ही कारण दुखी है। घर घर में इसी बात का झगड़ा है कि कोई हमें प्यार नहीं करता लेकिन उसका कारण कोई नहीं सोचता–उसका कारण है पहले हममें ही देने के लिये प्यार नहीं होता। हम खाली यही चाहते रहते हैं कि बेटी प्यार करे, बेटा प्यार करे, पति प्यार करे। अरे! हम ही पहले प्रेम देना शुरू कर दें और प्रेम स्वरूप बन जाएं तो कितना अच्छा हो। तुम खुद प्यार करो–दूसरे से धन्यवाद की भी इच्छा न करो तो आनन्द आएगा। जब तुम खुद निरीच्छा होजाओगे तो सब तुमको प्यार करेंगे। तुम सेवा तो करते हो पर फिर भी दुखी होते हो। सोचते हो इतना किया पर फिर भी कोई खुश नहीं। अरे! तुमने प्यार का मतलब ही नहीं समझा। प्रेम का "प" भी तुमको अभी नहीं आता। कहते हैं **"ढाई आखर (अक्षर) प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।"** तुम परमात्मा समझकर प्यार करोगे तो प्यार मिलेगा। नामरूप करके प्यार करोगे तो कभी भी प्यार नहीं मिलेगा। नामरूप का प्यार नरक में ले जाता है। हम किसी को प्यार करते हैं, वह हमको छोड़कर चला जाता है या हम उसको छोड़कर चले जाते हैं तो रोना पड़ता है। परमात्मा का प्यार अमर होता है इसलिये राम राम करो।

हम लोग हमेशा दूसरे का सुख ज्यादा समझते हैं और अपना सुख कम। दूसरे का काम कम और अपना काम ज्यादा समझते हैं। हर व्यक्ति परिश्रम करता है। देखो! नौकरी करने वालों को कितना सहना पड़ता है? खाना भी सुख से नहीं मिलता। दफ्तर में सबकी सुननी पड़ती है। तुम घर में रहने वालों का कर्तव्य बनता है कि उसका ध्यान रखो–यह भी ज्ञान का एक अंग है। खाली ज्ञान बांचना, सुनना ही अच्छा नहीं, व्यवहार भी अच्छा करना आवश्यक है।

कहते हैं "**दयामय अपने भक्तों का सदा उद्धार करते हैं। निराधारों की नैया भंवर से पार करते हैं।**" ये बात बिल्कुल सत्य है। कितना भी कष्ट आता है, भगवान ही रक्षा करते हैं। भंडार भी भर देते हैं। हमको किसी वस्तु की आवश्यकता होती है, भगवान तुरंत भेज देता है। पहले हमको भगवान से मांगना पड़ता था, आज खाली संकल्प से ही काम बन जाता है। चिंता करके खून जलाने से क्या लाभ? जब भी कष्ट पड़े उस समय यदि धीरज से काम किया जाय तो ज्यादा दुख नही लगेगा। तुम कल की क्या चिंता करते हो? अरे! भगवान सबकी चिंता करता है। "**सो साहब चिंता करे जिन उपजाया जग।**"

हम खाली हाय हाय करते हैं। बेटे की शादी कैसे होगी? बेटी का क्या होगा? अरे! भगवान पर छोड़ दो निश्चिंत हो जाओ—वही सब ठीक करेगा।

प्रश्न गुरुजी मेरा मन मुझको बहुत सताता है, कैसे पीटूं इस मन को?

उत्तर मन को भगवान में लगाओ। ये मन अपने आप कभी सीधे से भगवान में नहीं लगता। अतः इसको बैल की तरह हल में जोते रहना चाहिये।कभी भजन में, कभी प्रभू महिमा में, कभी चिंतन में लगाए रखो तभी ठीक होगा। तुम इतना भजन करो कि भजन की आदत पड़ जाए। पहले भजन जबरदस्ती करना पड़ता है, बाद में जब आदत पड़ जाती है तो अपने आप होने लगता है। इसी से कहते हैं नित अभ्यास नित वैराग से ही मन काबू में होता है। तुम बोलते हो इतनी पूजा करते हैं, भगवान का इतना ध्यान करते हैं। तुम पूजा सच्ची नहीं करते। बाहरी पूजा करने से फायदा नहीं होता। जब मन खराब होता है तो पूजा से भी काम नहीं बनता। ज्ञान ही काम आता है। मेरी मां भी बहुत पूजा करती थी, हमसे ही पूजा का सामान मंगाती थी, पूजा के बर्तन मंजवाती थी। हमको यह सब झंझट लगता था। ये जो फूल माला तुम लाते हो, यह भी हमको झंझट लगता है। हमको ऐसा सत्गुरु मिला जिसने हमको बाहरी पूजा से छुट्टी दिला दी। अंदर के मंदिर की पूजा ही सच्ची पूजा है। हमारे गुरु ने बताया तो हमको बाहरी पूजा से हमेशा के लिये छुट्टी मिल गई।

प्रश्न दिमाग में उलझन होने के कारण मेरा मन नहीं लगता, क्या करूँ?

उत्तर तुमको उलझन नहीं है। तुम्हारा मन भगवान से हटकर माया में चला गया है। इसीलिये कष्ट है। सांसारिक झंझटों से नहीं है। तुमको माया

मिले तो उसको दान पुण्य में लगाओ तभी पैसा फलीभूत होता है। यही पैसा यदि भगवान में नहीं लगाया जाता है तो किसी न किसी रूप में—चाहे वह बीमारी हो या लाचारी—डाक्टर को चला जाता है। क्या लाभ है बीमार होकर डाक्टर को भरने से? तुम भजन में, शुभ कामों में पैसा लगाओ तो तुम्हारा कल्याण हो जाएगा। पहले जब ज्ञान में नहीं थे, तब कर्म कांड करते थे। तब भी किसी शुभ काम को करने से पहले भगवान का हिससा लगाया जाता था। अतः आज भी पैसे को भगवान के कामों में लगाओं तो शुभ होगा। देखो! मकान बनाते हो, शादी करते हो तो सोचते हो भगवान का हिस्सा निकाल दें ताकि मकान, शादी फलीभूत हो। इसीप्रकार तुम किसी गरीब, गुरबों को अपने धन का कुछ हिस्सा बांट दोगे तो तुम्हारा पैसा सलामत रहेगा और हमेशा बढ़ता ही रहेगा।

हर बात में तुम शुकराना मनाओ। संसार में आंख उठाकर देखो तो कष्ट ही कष्ट दिखाई देगा। तुमको तो इतना कष्ट भी नहीं है। तुम शुकराना मनाओ—जो कष्ट आता है वह जाता भी तो है। तुम समझते हो अब यह कष्ट तो जायगा ही नहीं पर ऐसा नहीं होता। जो आता है—सुख या दुख वह जाता भी अवश्य है। दुख आया है तो सुख भी आएगा। रात आई है तो सवेरा अवश्य ही होगा। यहां तक कि हम भी संसार में आए हैं तो जायेंगे भी अवश्य। इसलिये चिंता मत करो—हर हालत में प्रभु का शुकराना अदा करो।

18.10.86

जगत में तो कुछ न कुछ होता ही रहता है—क्या चिंता करना है? गुरु तो सबको जो उसकी शरणागत होता है, रक्षा करता रहता है। गुरु हर पल रक्षा करता है। इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण गुरु नानक की कहानी से ज्ञात होता है। वह कहानी इस प्रकार है—एक बार की बात है वे सो रहे थे। अचानक किसी ने उनको सोते से जगा दिया। वे बहुत दुखी होकर बोले कि अरे! तुमने मुझे अभी व्यर्थ ही जगा दिया। मेरे भक्त का चीनी का थैलों से भरा जहाज समुद्र में डूब रहा था—मैं उसको बचाने के लिये प्रयत्न कर रहा था। बाद में पता लगाया तो सही में उनके भक्त का जहाज पानी में डूब रहा था। इससे स्पष्ट है कि गुरु हर पल अपने भक्त की रक्षा करता है।

प्रश्न ज्ञान प्राप्त करने कि लिये क्या नित्य का सत्संग आवश्यक है?

उत्तर ज्ञान प्राप्त करने के लिये नित्य नियम से सत्संग में आना अति आवश्यक है। नियम बहुत काम करता है। भजन का नियम दुख सुख हानि लाभ से उपराम करा देता है। भजन से जीने की शक्ति मिलती है। घर बैठे पुस्तकें पढ़ने से जीवन की परिस्थितियों को सहने की शक्ति नहीं मिलती। जगत झूठा है–केवल परमात्मा ही सत्य है। यह दृढ़ निश्चय भी सत्संग के नियम से आता है। जिस प्रकार बर्तन दोनो पहर गंदा होता है और मांजे बिना दुबारा काम नहीं आता उसी प्रकार भजन से भी मन दोनो समय साफ और शुद्ध होता है। बिना नित्य के अभ्यास के कोई भी छोटी से छोटी वस्तु भी प्राप्त नहीं होती तो फिर सत्संग और ज्ञान तो बहुत ऊँची बात है। इसलिये सत्संग का नियम परम आवश्यक है। नित्य अभ्यास, नित्य वैराग्य से ही मनुष्य जगत से उपराम होता है। नहीं तो ये मन भूत कभी चैन से नहीं जीने देगा। नित्य के अभ्यास से मूर्ख से मूर्ख भी ज्ञानी बन जाता है। कहा भी है–**करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान। रसरी आवत जात से सिल पर परत निसान।**"

तुम बोलते हो भजन कोई नहीं सुनता। अरे! तुम्हारे ही हृदय में जब राम रस नहीं है तो कौन भजन सुनेगा। तुम ख़ाली हृदय से भजन करोगे तो सुनने वाले अपने आप आ जायेंगे। देखो! तुम रात दिन नियम से भजन करने आते हो तो हम कोई भी हालत हो तुम्हारे बुलाने पर चले आते हैं। तुम भजन दिल से तो करते नहीं और सोचते हो गुरुजी आ जायें। परन्तु गुरुजी भी ऐसे आने वाले नहीं। बिना सत्संग के गुरु जी राजी नहीं होते। तुम पहले नियम से सत्संग करो। सत्य का, संग करो। जब तक हम भजन के लिये स्पेशल (खास) नहीं आते तब तक भजन नहीं होता–घर में भजन नहीं होता।

कितने ही लोग ज्ञान को बुरा कहते हैं। लेकिन बिना सत्संग के विवेक नहीं जागृत होता और न भगवान ही याद आता है। कहा भी है "**दर्शन साधू के करे, साहब आवें याद।**" अगर घर में बैठकर किताबें पढ़ने से ज्ञान हो जाता तो सत्संग की महिमा वेदों में न गाई गई होती। अरे! दिन रात भजन की धुन में रहने पर भी अंत समय में तो भगवान याद नहीं आता तो कभी कभी भजन करने वालों को कैसे भगवान याद आयेगा।

भगवान से जिसका प्यार हो जाता है, उसका बेड़ा पार हो जाता है। तुम कहीं मत भटको, तुम्हारे अंदर ही परमात्मा है। "**आतम में ही है परमात्म, जीव भरम और माया।**" तुम्हारी मूर्ति, तुम्हारे ही अंदर विराजमान

है–सांसारिक माया मोह रूपी आवरण से ढक गई है। ये कूड़ा कचरा हटाओ तो तुमको परमात्मा की मूर्ति दिखाई दे जायेगी।

तुम सच्चे साधू की शरण में रहो। तुमको ज्ञान भी हो जायेगा और चारों पदारथ भी मिल जायेंगे। किसी ने कहा भी है "**चार पदारथ जो कोई मांगे, साधु जना की संगत लागे।**" लेकिन शर्त यह है कि संत सच्चा हो। आजकल तो ठगी भी इतने हो गए हैं कि सच्चे झूठे की परख करना कठिन हो गया है। सत्य में जोड़ने वाले कोई बिरले ही संत होते हैं।

दुनियां की वस्तु तो स्वतः ही मिलेगी। तुम खाली भगवान को पकड़े रहो। जहां भगवान होंगे वहां लक्ष्मीजी तो अवश्य ही रहेगी। बड़े बड़े राजाओं का धन अचानक क्यों चला जाता है। इसका कारण है उन्होंने प्रभु से प्रीत तोड़ दी है इसीलिये लक्ष्मी भी नाराज होकर चली गई।

तुम खाली पुजारी बनकर फूल माला, मिठाई मत चढ़ाओ। तुम प्रेम बढ़ाओ। अपने अंदर में मंदिर बनाओ। बाहर के मंदिर में जाने के लिये आज शरीर साथ देता है तो चले जाओगे पर जब यही शरीर शिथिल हो जायेगा तो कैसे जाओगे? इसलिये अपने दिल में ही मंदिर बनाओ ताकि हर हालत में अपने अंदर ही परमात्मा का दीदार कर सको।

तुम एक को चाहे जिसको भी गुरु बनाओ पर फिर उसी को सदा पकड़े रहो। तुम एक जगह कुंआ खोदो। दस जगह थोड़ा थोड़ा खोदने पर कहीं भी पानी नहीं पा पाओगे। एक जगह खोदोगे तो कभी न कभी पानी मिल ही जायेगा। तुम किसी के बहकावे में मत आओ!

आत्मबल की हर एक को आवश्यकता है। तुम सोचते हो हम ज्ञान सुनते हैं–हममें ही आत्मबल है। पर ऐसा नहीं है। बड़े बड़े वीर योद्धा, महात्मा गांधी, नैपोलियन, ऋषि–मुनि सबमें आत्मबल था तभी तो बड़े बड़े काम किये और आज उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाता है।

मनुष्य भगवान का भजन करता भी है तो सोचता है लाभ होगा कि नहीं। लेकिन अगर संशय छोड़कर खाली भजन का संकल्प किया जाय कि कुछ भी हो जाय मैं भजन करूंगा तो भजन हो जायेगा। हमेशा शुद्ध संकल्प करो तो अनहोनी भी होनी हो जायेगी। भगवान भगवान करो। सत्संग के प्रताप से बड़े बड़े कष्ट दूर होते हैं। एक औरत झांसी से आई थी–उसको बीमारी थी कि सदा नाक से पानी बहता रहता था। बड़ी

परेशानी में थी। सत्संग में आने पर उसकी बीमारी जाती रही।

संतों को जगत की हलचल से सदा छिपे रहना चाहिये। झांसी में ओरछा नामक स्थान पर एक संत था जो गुफा में रहता था। कोई भक्त दर्शन करने आते तो वह अंदर से हाथ बढ़ा कर ले लेता लेकिन बाहर नहीं निकलता था। अपनी वृत्ति को बहुत बचाना पड़ता है। तुम जगत में न किसी से दोस्ती रखो और न बैर। रागद्वेष दोनो छोड़ो। तुम एक एक के आगे झुको। झुंकना ही बड़प्पन है। मां भी जब बच्चों के लिये मिटती है, तभी प्यार पाती है। तुम्हारा जिससे द्वेष हो उसी के आगे झुको तभी द्वेष जायेगा।

प्रश्न कर्म करते हुए भी कर्म का नाश कैसे हो?

उत्तर तुम कर्ता होकर काम करते हो इसीलिये अहंकार रहता है और कर्म का नाश नहीं होता। अहंकार छोड़ दो। अहकार जल्दी नहीं जाता। जब मनुष्य सब कर्म काके भी हार जाता है सफलता नहीं मिलती और अपने को बेआसरा समझने लगता है, तभी भगवान कृपा करता है। गजराज भी ग्राह से बल लगाता रहा पर जब हार गया तो प्रभु को पुकारा–प्रभु तुरन्त नंगे पांव आ गए। क्योंकि उसने पुकारा था "हे गोविन्द राखो शरण अब तो जीवन हारे।"

इसलिये अहंकार का त्याग करो। शुद्ध हृदय से ही भगवान खुश होता है घंटी बजाते पूजा करते जिंदगी बीत गई पर तुम्हारी आदत नहीं बदली। पांव छूने की भी तुमको आदत पड़ गई है। तुम केवल शुद्ध हृदय से भगवान के वचनों पर चलो तो हम खुश हो जायेंगे। इतने लोग रामायण पढ़ते हैं। अखण्ड रामायण करते हैं लेकिन किसको ज्ञान है? अखण्ड रामायण तो एक दिन में पढ़कर पूरी हो जाती है लेकिन रात दिन भगवान का चिंतन करना सच्ची अखण्ड रामायण है।

प्रश्न क्या मोह ममता करना पाप है? या ज्ञान में आने के बाद बच्चों से दूर दूर रहना चाहिये?

उत्तर मोह बुरा नहीं है। मोह न हो तो मां बच्चे की पालना कैसे करेगी? यह मोह कर्त्तव्य मिश्रित है। इसमें कोई बुराई नहीं जो मोह वासना का रूप धारण करता है, वह बुरा होता है। मां के लिये मोह की परम आवश्यकता है। यह मोह तो भगवान स्वयं मां में पैदा कर देते हैं। ऐसा न हो तो बच्चे

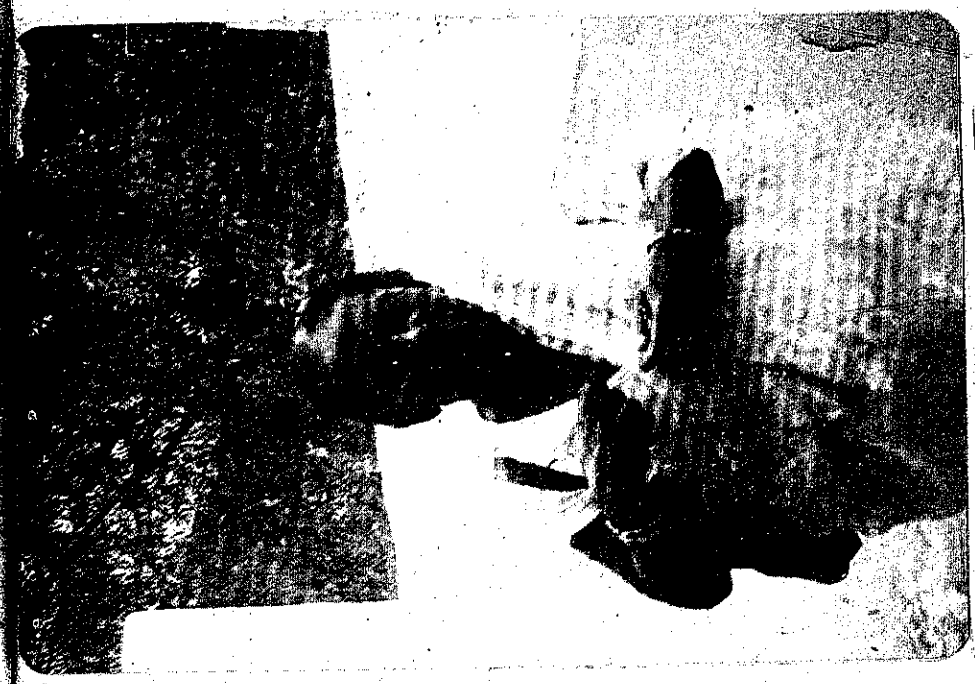

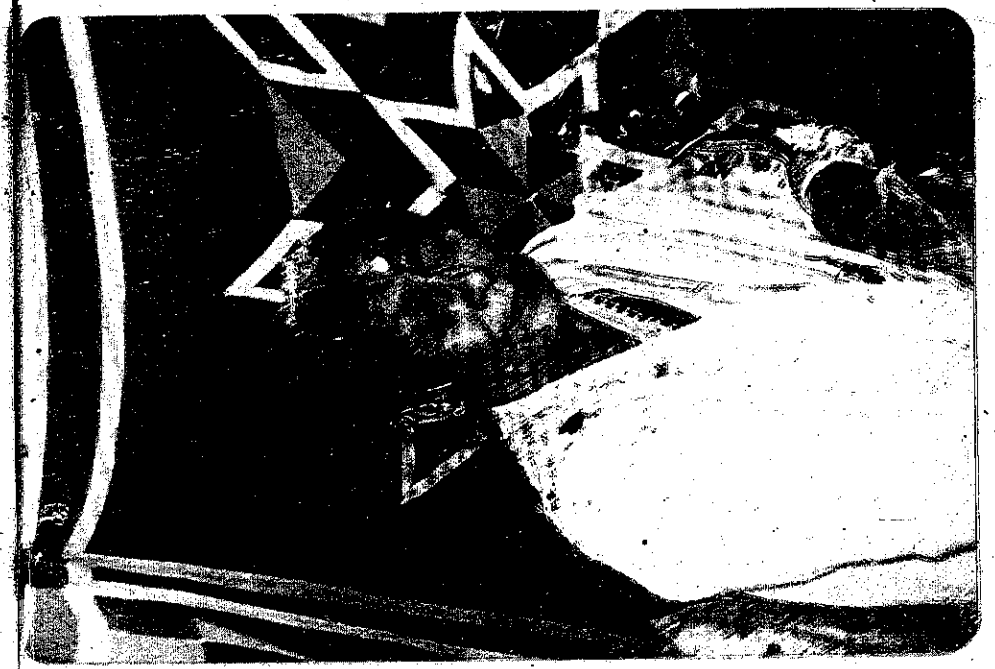

पूरा सतगुरू मिला दिया सर को झुका
जिसे जग ढूढता है वह मिल गया (दो बार)
पाठ पूजा भी की द्वारे मन्दिर गये
योग अभ्यास से मुझे मिल न सका
पोथी पुस्तक पढ़ी फेरी माला बहुत
पर मुरझाया दिल मेरा खिल न सका
संशय दूर हुए मिल गया है हरी मुझको।

कर स्नान तीरथ को क्यों जाऊँ मैं
हरि की पौड़ी मिली मुझे हरि मिल गया
पूरब जन्म के कर्म खुले थे यहां
घर बैठे मुझे सतगुरू मिल गया
नफरत बीत गयी दिल में प्यार आ गया।। पूरा सतगुरू

कभी राम बने गुरू नानक बने
कभी बांसुरी वाला बनकर आ गया
दुनियां निन्दा हमेशा ही करती रहे
पर भक्तों के मन को सदा भा गया
मैं हूं प्रेमी तो तू है मुरार मेरा। पूरा सतगुरू ...

की पालना ही नहीं हो सकती। आसक्ति मिश्रित मोह अच्छा नहीं है। जो मोह परमात्मा से दूर कर दे वह खराब है। वासना मिश्रित मोह अंधकार है। प्रेम मिरित मोह (यानी परमात्म भाव का प्रेम) उजाला है। अभी हम नामरूप को प्यार करते हैं। वह आज है। कल जब हमको छोड़ कर चला जायेगा तब हम उसके मोह में दुखी होकर परेशान हो जायेंगे। इसलिये मोह छोड़कर सबसे प्रेम करो।

मन को कहां से रस आता है, हमको मालूम है। तुम्हारा मन जब इधर उधर जाता है तब हम गाली देते हैं। तुम अपना दिल भगवान में रखो। कहते हैं **"हाथ हज में, दिल यार में।"** संसार के सारे कर्म करो पर दिल भगवान में रखो। जगत तो धोखा है। एक भगवान ही सत्य है जो तुम्हारे पैदा होने से पहले भी ध्यान रखता है। तुम जब गर्भ में आए तो पहले ही दूध का प्रबन्ध किया और अब भी करता है। नंगे आए बाद में वस्त्रों का प्रबन्ध किया। ऐसे भगवान को याद रखो। उसकी कृपा का धन्यवाद दो।

गुरुद्वारे में हमने देखा। वहां पर भक्त बड़े सवेरे जाकर सफाई करते हैं। चादर बिछाते हैं। सेवा करते हैं।—कितनी अच्छी बात है। तुमको भी ऐसा करना चाहिये। जहां सत्संग हो वहां की सफाई तुमको भी करना चाहिये। भक्त के बैठने का प्रबंध करना चाहिये। भक्त जायें तो चादर उठाकर ठिकाने पर रखना चाहिये। यह नहीं कि ज्ञान सुना और चल दिये।

19.10.86

तुम्हारा ज्ञान लेने का भाव नहीं होगा तो हमारी वाणी चलेगी ही नहीं। जब तुम्हारी ज्ञान लेने की तीव्र इच्छा होगी तभी हमारी वाणी चलेगी। जब भी आओ ज्ञान लेने की जिज्ञासा से आओ। मन क्रम वचन से जो ज्ञान लेने की इच्छा रखेगा उसी व्यक्ति को ज्ञान होगा। परमात्मा को प्राप्त करनेवाला जिज्ञासु ज्ञान प्राप्त करने के लिये अपनी सारी शक्ति लगाता है तभी ज्ञान प्राप्त कर पाता है नहीं तो संसार के भोगों में ही भटक कर रह जाता है।

भटक भटक भव के भोगों से,
कबहूं न शांत भयो,
कबहूं हंस्यो कबहूं रोयो,
एहि विधि जीवन गयो।

तुम्हारी श्रद्धा से ही तुमको ज्ञान होता है भगवान के प्रति थोड़ी थोड़ी श्रद्धा से काम नहीं बनता। भगवान को सर्वशक्तिमान मानना अति आवश्यक है। हम तो भगवान को भूलकर जगत को ही बड़ा मान बैठे हैं। इसीलिये ज्ञान प्राप्ति में देरी लगती है।

ज्ञान लेने की चीज़ है–देने की नहीं। तुम सोचो मैं कुछ नहीं हूँ–परमात्मा ही सब कुछ है। आज से कसम खाओ, भगवान के सिवा कुछ नहीं देखूंगा, तो तुमको संसार का कष्ट नहीं व्यापेगा। "एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति"। ऐसे ब्रह्मम को सर्वत्र देखो।

मनुष्य का मन भजन में नहीं लगता–सदा भागने की सोचता है। बाने बनिया बाज़ार नहीं लगती। जब तुम स्वयं भजन की तीव्र इच्छा से आओगे तभी भजन कर पाओगे।

प्रश्न श्रद्धा का आधार क्या है?

उत्तर श्रद्धा, भक्ति नास्तिक के द्वारा नहीं की जा सकती। जब हम अहं को खतम करेंगे तभी ईश्वर की श्रद्धा भक्ति हो सकती है। मस्तिष्क के द्वारा हम ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकते। विवेक द्वारा ही हम ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। जब विवेक जागृत होता है तभी ज्ञान की शुरूआत होती हैं। अंधश्रद्धा से जब हम गुरु को पूर्णरूपेण अपना मानते हैं तभी ज्ञान होता है। स्त्रियों को इसीलिये भक्ति शीघ्र हो जाती है क्योंकि वे झुकना जानती हैं। उनमें अंधश्रद्धा होती है। वे हर बात में अपनी बुद्धि नहीं चलाती हैं। बुद्धि से भगवान नहीं मिलता।

प्रश्न हमारे घर में सत्संग भी नहीं होता गुरु भी हमारे पास नहीं हैं तो ज्ञान कैसे होगा?

उत्तर इसी तरह कभी कभी आते आते गुरु के सामने टकराते टकराते ज्ञान हो जायेगा। अभी भी आप इसी टकराव से ही तो आए हैं और इतनी देर बैठे हैं।

प्रश्न वह चीज़ जब तक हमको तर्क बुद्धि किये बिना समझ में न आए तो कैसे अपनाना चाहिये?

उत्तर मन वैसे भी शीघ्र नहीं समझ पाता कि यह अच्छा है अथवा नहीं। परन्तु बार बार मिलने से व देखने से स्वतः समझ में आ जाता है कि अमुक

व्यक्ति पूर्ण है अथवा अपूर्ण। अर्जुन भी भगवान कृष्ण को साधारण व्यक्ति समझता था परन्तु जब वह युद्ध के मैदान में युद्ध से घबराने लगा और कृष्ण की शक्ति का ज्ञान हुआ और उसको शक्ति मिली तभी उसने कृष्ण को भगवान माना। आप भी किसी के कहने से गुरु न मानिये। कहा भी है **"जब न देखे अपने नैना तब न माने किसी का कहना"** और **"गुरु करे जान के पानी पिये छान के।"** बिना श्रद्धा के तो कोई यहां जी ही नहीं सकता। श्रद्धा ही ज्ञान की नींव है। आपको भी जब श्रद्धा हुई तभी तो आप यहां आए हैं। जब जब आप हमारे वचनों को जीवन में लगायेंगे आराम आएगा तो श्रद्धा हो जायेगी। श्रद्धा करना नहीं पड़ता अपने आप हो जाती है। पहले तो आप दूर थे। जब यहां आए तो परखा, तभी तो श्रद्धा हुई। कहते हैं–

अतिसय रगड़ करै जो कोई,
अनल प्रगट चंदन से होई।

अतः संग से ही काम होता है। श्रद्धा भी सत्संग में आने से होगी। भगवान के नाम में उल्टा सीधा नहीं होता।

प्रश्न मंदिर जाना भी तो एक आदत है, श्रद्धा हो यह जरूरी नहीं। मंदिर जाते हैं तो सभी देवी देवताओं की मूर्ति पर हाथ धरकर छूते जाते हैं। तो क्या ये आदत नहीं?

उत्तर मंदिर जाने की आदत पड़ गई है इसलिये जाते हैं पर फिर भी अच्छा तो है कहीं और जाने से। किसी भी तरह राम के मंदिर में जाए तो उसका फल कुछ न कुछ होता अवश्य है। कहा भी है–

उल्टा नाम जपत जग जाना,
बाल्मीकि भए ब्रह्म समाना।

भगवान की पूजा किसी भी तरह भाव से करो, फल अवश्य मिलता है। लेकिन जब सत्गुरु मिलता है यह भी छुड़ा देता है। वह बताता है **"भीतर है सखा तेरा सखा मान लगा के देख। अंतःकरण में ज्ञान की ज्योति जला के देख।"** जब सत्गुरु ऐसा ज्ञान दे देता है तो मंदिर मस्जिद जाने की भी इच्छा समाप्त हो जाती है–फिर तो एकांत ही अच्छा लगने लगता है।

प्रश्न गुरुजी! अंधश्रद्धा भी जिस जिसने की है वह पहले से खुश है अथवा दुखी—ये बताइये।

भक्तगण सभी खुश है।

गुरुजी जिसकी मानसिक स्थिति अच्छी न हो, हज़ार डाक्टर की दवाई से न सुधरी हो, यदि उसको एक दर्शन से आराम आ जाता हो तो वह कौन होगा? जो हमको आराम दे, हमारी मानसिक स्थिति को बदल दे वह है सर्वशक्तिमान भगवान। मनुष्य में ऐसी शक्ति नहीं है जो वह मानसिक कष्ट को दूर कर सके एक पल में। इसी को अलौकिक शक्ति कहते हैं।

प्रश्न वह अलौकिक शक्ति कैसे दिखाई दे? और कौन दिखा सकता है?

उत्तर वह अलौकिक शक्ति गुरु द्वारा ही दिखाई देती है। जिसप्रकार जब सब तरफ धुआं होता है तो घुटन और अंधेरे के कारण सब कुछ उपस्थित होते हुए भी दिखाई नहीं देता। जब धुआं समाप्त हो जाता है तो सब कुछ दिखाई देने लगता है। इसी तरह मन पर से जब माया की छाया का अंधकार हटता है तो सर्वत्र उस अलौकिक शक्ति "सुप्रीम पावर" का दर्शन होने लगता है। ये दर्शन गुरु के बिना नहीं हो सकता। ऐसे तो सभी कहते सुनाई देते हैं कि सर्वत्र राम ही राम है पर जब सर्वत्र राम ही राम है तो व्यवहार भी तो उनके प्रति अच्छा ही होना चाहिये। वह क्यों नहीं हो पाता? इसका कारण यह है कि खाली भौतिकता में इसप्रकार बोलते है। यथार्थ में बिना गुरु के सर्वत्र राम जानना बड़ा कठिन है।

प्रश्न श्रद्धा कैसे उत्पन्न हो? किसी में श्रद्धा होना क्या अंधश्रद्धा कहलाती है?

उत्तर गुरु के द्वारा जब परमात्मा का आनन्द आने लगता है तो खुदी मिट जाती है तो श्रद्धा अंधश्रद्धा नहीं कहलाती है। स्वयं ही परख करने तथा सत्पुरुष (गुरु) का संग करने के बाद जो आस्था होगी वही स्थायी होगी और वही श्रद्धा कहलायेगी। एक व्यक्ति की श्रद्धा होने पर दूसरे भी स्वयं चले आयेंगे। उसी प्रकार जब एक मरीज़ किसी डाक्टर से ठीक होने लगता है तो दूसरा भी आता है और इसी तरह उस डाक्टर के इलाज से लाभ देख देखकर और लोग भी इलाज कराने लगते हैं। क्योंकि उन्होंने उस डाक्टर को परख लिया है कि वह बहुत होशियार और अनुभवी है। इसी तरह जब गुरु से एक व्यक्ति को मानसिक शांति मिलेगी, उसके स्वभाव में परिवर्तन होगा तो सभी परिवार और समाज के लोग यही देखने

आयेंगे कि वह कौन व्यक्ति है जिसने अमुक व्यक्ति को सुशील बना दिया और जब उनमें भी वही श्रद्धा जागृत होगी तो वे भी भक्त बन जायेंगे। यही श्रद्धा सच्ची श्रद्धा कहलायेगी।

इसलिये श्रद्धा को बढ़ाने के लिये हमेशा ज्ञान की दृष्टि में ऊँचे चढ़े हुए व्यक्ति का संग करना चाहिये ताकि वह तुममें भी वही श्रद्धा उत्पन्न करें। अश्रद्धा वाले का संग कभी भी मत करो—वह तुम्हारी लगी लगाई श्रद्धा को भी अपनी बातों से समाप्त कर देगा। जो गुरु में पूर्ण श्रद्धा रखता है उसको ज्ञान अवश्य होता है। तुम गुरु के कर्मों पर मत जाओ। बस गुरु के लिये ऐसा विचार करो कि गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है। कहा भी है **"गुर्रु ब्रह्मा गुर्रु विष्णु गुर्रु देवो महेश्वरः।"**

जब गुरु में ऐसी आस्था होती है तभी ज्ञान होता है।

प्रश्न क्या गृहस्थी वाले गुरु से ज्ञान लेना चाहिये?

उत्तर ज्ञान लेने के लिये यह आवश्यक नहीं है कि गुरु वैरागी ही हो। राजा जनक राजयोग में थे, सारा राजकाज चलाते थे पर मुनियों में सर्वश्रेष्ठ व्यास जी ने अपने पुत्र को जो कि जन्म से ही विद्वान थे राजा जनक के पास ज्ञान लेने भेजा। कारण कि वेद व्यास जानते थे राजा राज्य में रहते हुए भी वैरागी है। जब याज्ञवल्क्य राजा जनक के पास गए तो राजा रानियों से घिरे बैठे थे। उन्होंने सोचा यह कैसा वैरागी है? राजा ने उनके मन की बात जान ली। वहीं द्वार पर एक दिन खड़े रखा फिर अंदर बुलाया। राजा सारे ऐश्वर्य उन्हीं के सामने भोग रहे थे। रानियां पैर दबा रहीं थीं, इत्र फुलैल लगा रहीं थीं। अब तो याज्ञवल्क्य को और भी संदेह हुआ। इतने में राजा ने सबको जाने का आदेश और याज्ञवल्क्य से कहा आओ ज्ञान चर्चा करे। इतने में बाहर से किसी सेवक ने आकर कहा "महाराज बाहर आग लग गई है।" लेकिन राजा ने ध्यान नहीं दिया। वे उसी तरह ज्ञान चर्चा करते रहे। थोड़ी देर पश्चात फिर सेवक आया। बोला "राजन! अब तो आग महल में भी लगने की आशंका है। फिर भी राजन शांत चित्त थे। सेवक से कहा तुम लोग बुझाने का प्रयत्न करो। इतने में याज्ञवल्क्य को अपने दण्ड और कमंडल का ध्यान आया जो वे बाहर द्वार पर छोड़ आए थे। वे राजा जनक से बोले "कृपया कुछ पल रुकिये। मैं अपना कौपीन और कमंडल बाहर छोड़ आया हूँ। कहीं वह जल न जाय।" बस इतना सुनना था कि राजा जनक बोले "अरे! आप तो वैरागी कहलाते हैं और मैं

भोगी। आपका इतनी सी वस्तु कौपीन और कमंडल में इतनी आसक्ति है और मेरे राजमहल में आग लगने वाली है–कितनी हानि हो जायेगी–फिर भी मैं निश्चिंत हूँ। इतना सुनते ही याज्ञवल्क्य को यह ज्ञान हो गया कि राजा राज्य करते हुए भी वैरागी हैं उन्होंने राजा के चरण पकड़ लिये और उनसे क्षमा मांगा। इससे सिद्ध होता है कि वैराग्य के लिये यह आवश्यक नहीं है कि घर ही छोड़ा जाय और न यह आवश्यक है कि ज्ञान लेने के लिये गुरु भी वैरागी हो। ज्ञान में सिर्फ वृत्ति का सवाल है।

प्रश्न इच्छाओं का दमन ही क्या भगवान का रूप है?

उत्तर इच्छा मात्र अविद्या। जो पूर्ण निरीच्छा है–वही भगवान है। जीव इच्छा सहित है ब्रह्म अर्थात भगवान इच्छा रहित है। भगवान देखने में कर्म से इच्छावान दिखाई देता है पर वह अंदर से पूर्ण निरीच्छा होता है। कृष्ण ने कितने घोर कर्म करवाए–युद्ध में सहभागी भी बने पर फिर भी वे निरीच्छा वाले इसीलिये कहलाए क्योंकि वे निष्काम कर्म करते रहे। पूर्ण निरीच्छा हुए बिना काम नहीं बनता। भगवान की पदवी वही पा सकता है जिसकी कोई भी इच्छा नहीं है।

प्रश्न क्या ज्ञान में आने के बाद भी कष्ट आते हैं?

उत्तर ज्ञान में आने के बाद भी जो प्रारब्ध कर्म हम पहले कर चुके हैं वे तो अवश्य आयेंगे–चाहे सुख के रूप में चाहे दुख के रूप में। लेकिन ज्ञान में आने पर वह हमको व्यापेगा नहीं। अज्ञान में जब हमसे हमारा कोई प्रिय व्यक्ति छूटता है या मर जाता है तो हम रोते हैं। लेकिन ज्ञान में आने के बाद आसक्ति कम हो जाने के कारण दुख की लहर तो आती है पर उतना कष्ट नहीं लगता?

प्रश्न मसानी वैराग्य स्थाई कैसे हो?

उत्तर **चलो गुरु ज्ञान मारग में,**
जहां सत्संग जारी है।

वैराग स्थायी तभी होता है जब सत्संग किया जाता है। सत्संग में सत्पुरुष जब सत्य की बात बताते हैं तो हमारा मन प्रभु से जुड़ जाता है। तभी वैराग स्थाई होता है। कहा भी है "नित अभ्यास नित वैराग।" वैराग प्राप्त करने एवं स्थाई करने के लिये ज्ञान प्राप्त करना एवं उसका चिंतन

मनन करना अति आवश्यक है।

प्रश्न भगवान क्यों कहते हैं मेरा जप करो, मेरा नाम जपो?

उत्तर भगवान नहीं कहता है कि हमें जपो। हमको ही उनका नाम जपे बिना आराम नहीं आता। उनका नाम जपने से हमको आनन्द आता है तो हम स्वयं उनका नाम जपे बिना नहीं रह सकते।

प्रश्न गुरु ने एकलव्य का अंगूठा क्यों कटवाया जब गुरु इतना महान और निष्पक्ष कहलाता है?

उत्तर गुरु जो भी करता वह भलाई में ही करता है। अगर गुरु एकलव्य का अंगूठा नहीं कटाता तो आज उसका नाम कोई नहीं जानता। गुरु अपने शिष्य का नाम करने के लिये स्वयं अपने को कम बनाता है। दूसरी बात द्रोणाचार्य ने अर्जुन को वचन दिया था कि उसके समान विश्व में दूसरा धनुर्धर नहीं होगा।

कीर्तन भजन करना सरल है लेकिन ज्ञान में टिकना बड़ा कठिन है। ज्ञान के प्रश्न और उत्तर से गीता ग्रंथ बना। जब तक पूर्ण संतुष्टि न हो तब तक गुरु से प्रश्न और वाद विवाद करना चाहिये परन्तु नम्रता से कहना चाहिये।

प्रश्न भगवान का भजन ज्यादा करने से सांसारिक कार्यों मे बाधा पड़ती है और उन्नति होने में बाधा है तो ये मेरे मन में ऐसा क्यों आता है?

उत्तर भगवान का भजन करने से उन्नति होती है, अवनति कभी नहीं होती। भजन से आत्मशक्ति उत्पन्न होती है। यह सोचना ही गलत है कि भजन से अवनति होती है। हां! बस शर्त यह है कि केवल अकर्मण्य होकर भजन न किया जाय। कर्म के समय कर्म भी सुचारु रूप से करना चाहिये और भजन करते समय भजन में पूर्ण रूपेण मन को लगाना चाहिये। यह बात गुरु के द्वारा ही हो पाती है। हमारा ज्ञान अकर्मण्य होकर भजन नहीं करना है। हम तो स्वयं भी घोर कर्म करते हैं। जिन्होंने गुरु नहीं किया है वे ही खाली भजन करते हैं अकर्मण्य होकर।

20.10.86

संकल्प से ही काम होता है। तुम एक दूसरे से मन या शरीर से

जुड़कर सत्संग में मत बैठो। मनुष्य भगवान का रास्ता खुद बंद करता है। और दोष दूसरे को देता है कि अमुक व्यक्ति हमारे मार्ग में बाधा डालता है। अतः तुम स्वयं संकल्प करो तो तुमको सत्संग में आने से कोई नहीं रोक सकता। तुम डरो भी मत कि कोई बाधा डालेगा। तुम पहले ही सोच लेते हो कि वह बाधा डालेगा। अब संकल्प (सोचा) तो तुमने किया और तुम्हारे ही संकल्प के अनुसार उसने बाधा डाली तो तुम बोलते हो कि उसने बाधा डाली। ऐसा नहीं है। तुम खाली भगवान का दर्शन करने की चाह रखो–रास्ता तो भगवान बनाएगा।

प्रश्न भगवान कहां दिखाई पड़ते हैं?

उत्तर भगवान तो सर्वत्र हैं। जब सारी दुनियां से मन विरक्त होता है, वैराग्य वृत्ति आती है तभी भगवान दिखाई देता है। जब तक मन विषयों में जायेगा, भगवान नहीं दिखाई देगा। तुम विषयों में मन लगाओ और चाहो कि भगवान भी मिल जाए ऐसा नहीं हो सकता। गौतम (भगवान बुद्ध) ने तो अपना घर बार स्त्री यहां तक कि प्यारा अबोध शिशु भी त्याग दिया। वर्षों कठिन तपस्या की दर दर भटके तब कहीं भगवान का दीदार हुआ। तुम चाहते हो संसार के विषय भी भोग लें और परमात्मा भी मिल जाए–ऐसा कैसे सम्भव है। अरे! भगवान को पाने के लिये बड़ा कठिन तप करना पड़ता है। तुम भगवान को पाने के लिये कुछ न करो, बस अपनी नजर में ज्योति लाओ। तुम अपनी नज़र को एक भगवान के अतिरिक्त कहीं मत ले जाओ। तुम हमारी शरण में आओगे तो हम तुम्हारी नजर को इधर उधर नहीं जाने देंगे। जो हमारे सामने रहकर भी अपनी नजर को इधर उधर दौड़ाता है उसको हम पसंद नहीं करते। जो हृदय से परमात्मा के लिये भूखा प्यासा आएगा उसी को हम ज्ञान देंगे।

तात मातु बंधु सखा आपनो न कोई
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।

भगवान से जब ऐसी प्रीत होती है कि सिवा भगवान के कोई भी अपना नहीं प्रतीत होता तभी भगवान अवश्य दिखाई देता है। उल्लू कहता है कि दिन में भी अंधेरा ही अंधेरा है, उजाला नहीं है। उसकी आंखों में वह रोशनी (शक्ति) ही नहीं है। वह तो दिन में देख ही नहीं पाता–उजाला तो है। इसी तरह हमारी आंख भी माया मोह के पर्दे से ढकी है, अतः भगवान होते हुए भी दिखाई नहीं देता। तुम अपना सम्बन्ध संसार के नामरूप से हटाओ।

निराकार निरंजन परमात्मा को पाने के लिये तुमको बंधन काटना पड़ेगा। तुम यहां आते भी हो तो घर का और इधर उधर संसार का ध्यान करते हो तो परमात्मा कैसे मिले।

मनुष्य को किसी को सेवा करते देखकर खुशी होती है पर हमको खुशी नहीं होती क्योंकि हम देखते हैं कि हमारा भक्त किस भावना से सेवा कर रहा है। उसने तो सेवा की पर हमने गाली दी। ऐसा क्यों? क्योंकि उसकी नजर उसकी पकड़ भगवान में नहीं है। सेवा करते करते भी उसका ध्यान दूसरे में है। मन ऐसा रसिया है कि हर जगह से रस लेता है। यदि हम गलत कहते हैं तो उसका विरोध करो–हमारी बात को काटो और यदि सही है तो मानो।

तुम खुद ज्ञान सुनो। तुम स्वयं वैराग लो। तुम आत्मा में रहो क्या संसार को देखते हो। तुम चाहो कि संसार की रंगीनियों का भी आनन्द ले लें और प्रभु को भी पा लें तो एक म्यान में दो तलवार कभी नहीं रहती। तुम क्या सिनेमा देखते हो जब जगत में वही खेल रोज देखते हो तो क्या देखना। जब दिल में विरक्ति आती है तो कोई भी सांसारिक वस्तु अच्छी नहीं लगती। सब झंझट सा लगता है। जब हर बात से संसार से दिल खट्टा होता है तब भगवान मिलता है। लोग भगवान को पाने के लिये धूनी लगाते हैं। जो पूर्ण संत होते हैं क्या वे धूनी लगाते हैं? नहीं लोग ओहम सोहम जपते हैं–ये भी जपना जी का जंजाल है। जब मैं होऊँ तो मैं जपूं। जब मैं हूं ही नहीं तो क्या जपूं? तुम पुस्तक पढ़ते हो। हम खाली अन्तरात्मा में रहते हैं। अन्तरात्मा में तुम जितना डूबोगे, उतना ही आराम आएगा। पोथी पुस्तक तो स्थूल बाते हैं। **"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।"**

तुम परमात्मा को एक जगह मानो। मथुरा, काशी जाने से कुछ नहीं होता। तुम खाली आत्मा का दर्शन करो। घट में हीं काशी काबा है। आत्मा तभी दिमाग में घुसता है जब ज्ञान मौन होकर सुना जाता है। तुम ज्ञान सुनो पूजा हो गई। तुम गुरु की पूजा इसीलिये करते हो क्योंकि वह कोहिनूर हीरा है। तुम खुद देह में हो तो गुरु को भी देह समझते हो तभी कहते हो भगवान कहां है? अर्जुन भी कृष्ण को साधारण मनुष्य समझता था पर जब कृष्ण ने अर्जुन को ज्ञान दिया, कहा तू आत्मा है और मैं भी आत्मा हूं। जब उसने (अर्जुन) स्वयं को पहचाना तभी कृष्ण को पहचान पाया। फिर कृष्ण ने युद्ध में अर्जुन की सहायता भी की। जब उसने अपने के

पहचान लिया तो कृष्ण को भगवान मान लिया। अतः तुम भी देह से ऊपर उठो, तुम स्वयं भगवान हो। आत्मा में न औरत है न मर्द। विषय वृत्ति और देहवृत्ति होने के कारण ही हम औरत मर्द करके देखते हैं। बेखुदी में रहो, तभी भगवान मिलेगा। कहा भी है– ये संतों की महफिल में आकर तो देखो, जरा खुदी को अपनी मिटाकर तो देखो, बैठा है दिल में तेरा वो प्रेमी, जरा अपने सर को झुका कर तो देखो। राग–द्वेष के कारण भगवान दिखता हुआ भी भूल जाता है। अरे! मेरी मानो रागद्वेष छोड़ो। राग द्वेष में रहते हुए सेवा भी अच्छी तरह से नहीं होती। अरे! जो तुम देखते हो ये मेरी सेवा कर रहे हैं ये सब अपने स्वार्थ से करते हैं। इन्होंने यह आजमा लिया है कि सेवा करने से भंडार भरता है। तुम सत्संग में एक दूसरे को स्पर्श मत करो। तभी ज्ञान मन में जाता है। स्पर्श से उसकी लगी हुई वृत्ति भी भंग हो जाती है। इसलिये यहां आकर अलग अलग बैठो।

जिसकी वृत्ति भगवान में जब तक लगी होती है तभी तक वह ऊँचा आसन पा सकता है। जैसी लिंक होती है वैसा ही स्थान मिलता है। यह सब वक्त होता है। तुम नियम से आते हो तो जगह पाते हो। तुम बोलते हो ड्यूटी के कारण हम नहीं आ पाते यह सब मन की उल्टी बातें हैं। हमारे यहां सब बातें लगन से होती हैं। तुम्हारा मन भगवान में होगा तो तुम्हारी ड्यूटी भी उसी तरह हो जायेगी। भजन के समय तुमको कोई बाधा नहीं पहुंचा सकता। जिसके मन में गुरु के प्रति इतनी खतिरी होती है उसी को गुरु के यहां शरण मिलती है। तुम जब सोचोगे हम भगवान में रहें तो हम अपने घर में ड्यूटी लगा देंगे। तुम सोचोगे गुरु सेवा चाहता है लेकिन हमको तुम्हारे शोरगुल से आराम नहीं आता। हम तुमको इसलिये शरण देते हैं ताकि भगवान का भजन पक्का हो जाए। आज तक हमने अपने दम पर भजन किया है और करते रहेंगे। अभी भी हम घर का सारा काम काज करके आए हैं। हमको किसी की सेवा की आवश्यकता नहीं है। जिसको हममें सच्ची भक्ति न हो उसको हमारे यहां आना भी नहीं चाहिये। यहां आने के पहले यह सोच लेना कि मैं तन मन प्राण गुरु को चढ़ाने जा रहा/रही हूं। भगवान की भक्ति के लिये खड़े खड़े तपस्या करनी पड़ती है तब भी भगवान मिल जाए तो समझो बड़ा भाग्य है। तुमको तो बड़े आराम से भजन करने को मिल रहा है। तुम हमारे यहां आकर भी मौन नहीं रहते। तुम हमारे भक्तों को छोटा न समझो। चाहे वह अमीर हो या गरीब सबकी कदर करो। ये सब हमारे "लाल" हैं। ये सब मेरे बच्चे हैं। तुम हमारे भक्तों से गलत सेवा मत लेना। हमारे भक्त किसी के गुलाम नहीं हैं। किसी के बंधन में भी नहीं हैं। मेरी आज्ञा के बिना इनसे सेवा

भी मत लेना। जिसको मेरे भक्ति से काम कराना हो वह पहले मुझसे आकर आज्ञा ले। जब हम समझेंगे कि सेवा ही आवश्यकता है तब भेजेंगे। मेरी यह बात ध्यान में रखना।

22.10.86

तुम रोज पूजा करते हो यह बवाल है। ज्ञान सुनो, प्रभु की महिमा गाओ–यही तुम्हारी पूजा है। यह बाह्य पूजा करते करते तुम्हारा आधे से ज्यादा जीवन व्यतीत हो गया। तुम्हारी इच्छानुसार तुम्हारे देवी देवता बदलते गए। कभी संतोषी माता के पास तो कभी औलिया बाबा के पास गए। पर किसी के पास जाने पर भी सच्ची खुशी नहीं मिली–खाली भटकते रहे। जो तुम्हारे हृदय की तपन न बुझा सके उसको पूजने से क्या लाभ? गुरु पूर्णिमा आती है–हम माला टीका से परेशान हो जाते हैं। हर साल सोचते हैं कि अबकी बार गुरु पूर्णिमा पर रहेंगे ही नहीं पर दूर दूर से बाहर से लोग दर्शन करने आते हैं इसी कारण हम कहीं नहीं जा पाते। अरे! तुम बस परमात्मा के आनन्द में डूबो–तुम्हारी यही पूजा प्रभु को स्वीकार हो गई। हमको तो धूप बत्ती भी बवाल लगती है। भगवान में मन को लगाओ धूप जल गयी। प्रेम में रहो–माला चढ़ गई। भगवान को हृदय अर्पित करो फूल चढ़ गया। आंखों को गुरु के लिये बिछाए रखो। आरती हो गई। तुम पूजा करते हो, व्रत करते हो कि बेटे की उमर बढ़े, पति की उमर बढ़े पर फिर भी कई माताओं के बेटे आंख के सामने से चले जाते हैं– कई पत्नियों के पति चले जाते हैं। व्रत ने क्या किया? यह तुम्हारी पुरानी परम्परा है जो तुम करते चले आ रहे हो।

भगवान निराकार है। जब तू भी निराकार हुआ तभी आनन्द आया। इस देह रूपी गधे से जब हम ऊपर उठेंगे तभी भगवान से मुलाकात होगी। वह निराकार है–हम साकार हैं तो मुलाकात नहीं होगी। कहा भी है "**आत्मा पश्यन्ति आत्मा**।" ज्ञान ग्रहण करने से ही मोह जायेगा। ज्ञान के बिना शांति नहीं मिलती। ज्ञान के मतलब है अपने को जानना। जब हम जीव भाव को छोड़कर निश्चयात्मक बुद्धि से अपने को ब्रह्म समझेंगे तभी ज्ञान समझ में आएगा। तभी तुम भगवान के ध्यान में रह पाओगे।

सब कुछ करने और कराने वाला भगवान है–मनुष्य के हाथ में कुछ नहीं है। भगवान की मर्जी के बिना कुछ नहीं होता। अच्छा काम भगवान

की कृपा से होता है और बुरा कर्म मनुष्य खुद अपनी बुद्धि से करता है। प्रकृति में कोई भी आवाज आई समझो तुम्हारी गलती है तभी सुधर पाओगे। ज्ञानी होने के मतलब ही हैं अपनी गलती मानना–दूसरा तो ज्ञानी की दृष्टि में होना ही नहीं चाहिये। जीवन भर स्वयं को ही बदलना है, सुधारना है। अन्तर्मुखी बनो–बहिर्मुखी बनने से ज्ञान कभी नहीं होगा।

बहुत से लोग कृष्ण को रसिया कहते हैं पर देखो तो कृष्ण कैसे थे? तुम्हारी दृष्टि का ही दोष है। वह वासना वाले नहीं थे। महात्मागांधी को भी लोगों ने जो चाहा कहा पर उनकी वृत्ति खराब नहीं थी। उन्होंने पहले पहल अपनी ही स्त्री से ब्रह्मचर्य का पालन शुरू किया तभी वे अनेको स्त्रियों के साथ चलने पर भी शुद्धता में रहे। उन पर कोई उंगली नहीं उठा सकता। घर में हमको जो वस्तु मिली है उसको होते हुए भी उपभोग न करें तभी अलिप्त होंगे। आज हम ब्रह्मचर्य की बात कर रहे हैं इसका मतलब है हमने पहले घर में ब्रह्मचर्य शुरू किया होगा। हम पुस्तक की बात नहीं करते–हम व्यवहार में करके दिखाते हैं। जैसे जैसे मनुष्य निरीच्छा वाला होगा–दूसरा भी वैसा ही हो जायेगा।

एक भक्त आप का ज्ञान गुरुजी बेहद व्यावहारिक है–आप जो बोलते हैं वह खुद करके दिखाते हैं। हम लोग तो जरा से कष्ट में घबरा जाते हैं पर हमारे देखते देखते आप पर कितने कष्ट आए और आप हंसते हंसते झेल गए।

गुरु जी तुम शुद्ध संकल्प करो। जैसा संकल्प होता है वैसी ही सृष्टि होती है। तुम्हारे अंदर की बात भगवान सुनता रहता है और पूरी भी कर देता है। तुम ऐसा काम करो कि तुम्हारे ऊपर कोई उंगली न उठा सके। तुम अपनी नीयत अच्छी रखो फिर किसी के आगे हाथ नहीं पसारना पड़ेगा।

एक भक्त परन्तु व्यवहार में ऐसा सम्भव नहीं होता।

गुरुजी ऐसी बात नहीं है–हम अनुभव की बात बताते हैं। हमने तो जब भी जैसा संकल्प किसा–वैसा अपने आप हो गया। अतः तुम भी शुद्ध संकल्प करो।

23.10.86

अनुभव से ही ज्ञान प्राप्त होता है। अभी ज्ञान मिल रहा है–ले लो। समय का भरोसा नहीं कल कहां चले जाओ। सत्संग में किसी भी तरह समय निकाल कर आओ। सत्संग में एक दर्शन से ही लाभ होता है। संसार में पग पग पर कष्ट आते हैं– ज्ञान से ही शांति मिलती है और वह ज्ञान सत्संग में नित्य आने से ही होता है। जीव के कोटि कोटि पाप सत्संग के नियम से समाप्त हो जाते हैं। भगवान सूली को कांटा बना देता है। संचित क्रियमाण कर्म भी गुरु की कृपा से ज्ञान रूपी अग्नि में जल जाते हैं। परमात्मा योग का समय देता है तो उसका पूर्णरूपेण लाभ उठाओ। कष्ट भी अनुभव दे जाता है। कहते हैं–**दुख दारू सुख रोग भया**। अर्थात दुख ही अच्छा जो भगवान की याद दिलाता है। वरना सुख में तो मनुष्य माया के मद में भूला रहता है। सब सुख है और भजन भी कर लो तो दुख क्यों आए। कबीर ने ठीक ही कहा है–

दुख में सुमिरन सब करैं सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे तो दुख काहे को होय।।

तुम दुश्मन को भी मित्र समझो। जो तुमसे द्वेष करे उसको भी परमात्मा समझकर प्यार करो। सोचो वह तुम्हारी गलती को ठीक कराने आया है। कोई शब्द (कड़वी बात) आए तुम मौन हो जाओ। गलती बताने वाले को कभी बुरा मत समझो। बाहर से न बोलना कोई बड़ी बात नहीं, अंदर से भी उसके प्रति बुरा विचार न आए–ये बड़ी बात है।

तुम बोलो, मेरा भगवान है। तुम मेरा भगवान बोलने में सकुचाते हो। देखो: मीरा ने कहा "मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।" तो श्याम राधा का भी था, रुक्मणी का भी और मीरा का भी कहलाता था। सबको "मेरा भगवान" ही कहना चाहिये। सारे घर परिवार और वस्तु को अपना बताते हो और भगवान दूसरे को बताते हो। अरे! तुम बोलो, मेरा भगवान है।

प्रश्न हमने तो बहुत पूजा पाठ की पर शांति क्यों नहीं मिली?

उत्तर पूजा पाठ से शांति कभी नहीं मिलती। यदि मिलती ही होती तो पुजारी तो सबसे ज्यादा पूजा करता है। वह भी अशांत रहता है। कारण ज्ञान नहीं है। शांति ज्ञान से ही मिलती है। और वह भी सत्गुरु की शरण जाने पर। अर्जुन को भी जब मोह ने आ घेरा और उसका मन अशांत हुआ

तो अहंकार रहित होकर ज्ञान देने के लिये उसने कृष्ण से कहा और तभी ज्ञान हुआ और शांति मिली। तू खुद आनन्द स्वरूप है। पर न जानने के कारण सुखी दुखी होते रहते हो।

प्रश्न सब कुछ होने पर भी खुशी क्यों नहीं आती?

उत्तर खुशी न आने का कारण है दुख का सदा चिंतन करते रहना। तुम पर जरा सा भी कष्ट आता है तुम प्रभु का शुकराना भूलकर दुख का चिंतन करने लगते हो इसीलिये जो खुशी मिली भी होती है उसका अनुभव नहीं कर पाते। हमारे पास तो तुमसे भी ज्यादा बवाल है पर हम खुश क्यों रहते हैं? कारण हमारी खुशी होती है कि दुख आता है तो खुश और जाता है तो खुश।

प्रश्न इतने सांसारिक झंझट होने पर भी विरक्ति क्यों नहीं होती?

उत्तर तुम भगवान का चिंतन और जप नहीं करते। अभी कोई कटु शब्द बोलेगा तो उसको बुरा समझ कर भाग खड़े होओगे। कुछ देर बाद जब अच्छा बोलेगा तो सब भूल जाओगे। उसी की तरफ दौड़ोगे तो विरक्ति कैसे हो? भगवान को पाने के लिये सारी दुनियां को लात मारकर भगवान की ओर आना पड़ेगा तभी पूर्ण विरक्ति होगी। तुम्हारा मन बड़ा धूर्त कपटी बेईमान है। इस मन को जितनी गाली दें थोड़ी है। तुम फूल माला चढ़ाकर हमको बेवकूफ मत बनाओ। हम इससे खुश नहीं होंगे। हमको परमात्मा में डूबा हुआ तुम्हारा दिल चाहिये। जो परमात्मा के प्रेमी होते हैं वे दिल देकर जाते हैं। भगवान मिठाई से खुश नहीं होता।

तुम दुख का चिंतन करके अपनी बुद्धि खराब करते हो। तुम तो दिन रात बेटे बेटी का ही चिंतन करते रहते हो। अरे! जो होना होगा वही होगा। तुम सोचते हो बहू आएगी फुर्सत मिलेगी तब भजन कर लेंगे। पर बहू आने के बाद दूसरा बवाल आकर खड़ा हो जाता है। फिर इसी तरह सोचते सोचते समय निकल जाता है। अतः परिस्थितियों पर भरोसा मत करो—वे कभी भी अनुकूल नहीं होंगी। जैसी भी स्थिति है आज से भजन करो।

कहीं भी मन जायेगा तो भगवान की भक्ति नहीं होगी। भगवान बड़ा ही CID है, वह तुम्हारे चित्त को हर समय देखता रहता है कि कहां गया। इसलिये चित्त को भगवान में लगाओ, तुम्हारा सब काम भगवान ठीक कर देगा।

24.10.86

तुम आज ही से भगवान भगवान जपो। कहते हैं "जब भूली तू आपको तब व्यापे संसार।" इसलिये भगवान के चिंतन को एक पल भी न छोड़ो।

प्रश्न हमारा भारत आज गरीब देश क्यों कहलाता है?

उत्तर हमारा भारत आज इसलिये गरीब कहलाता है क्योंकि हम कोई भी काम करने में अपमान समझते हैं। विदेशों में लोग छोट छोटे काम भी खुद करते हैं। और अपनी बेइज्जती नहीं समझते। आज हम सबको भी काम करना चाहिये तभी हमारे देश से निर्धनता जायेगी। लड़कियां, औरतें सोचती हैं हम ये काम नहीं कर सकते पर कौन सा ऐसा काम है जो वे नहीं कर सकतीं। ये तो तुमने अपने को औरत मानकर कमज़ोर समझ रखा है।

तुम सेवा करो। सेवा का फल यहीं मिलता है। दुष्टता का फल भी यहीं मिलता है। तुम सेवा करते हो और बोलते भी रहते हो। की हुई सेवा के बोल देने से सेवा का महत्व खतम हो जाता है।

तुम मौन होकर सबकी सेवा करो सारा झगड़ा झंझट बोलने से ही है। कहा भी है "तुम शांत रहो, कोई शोर नहीं। तुम मौन रहो, कोई और नहीं।" तुम घर में एक एक से जलते हो। ये जलन अपने मन से निकालो तभी तुमको आराम आएगा। जब तक मनुष्य सत्संग की पैरवी नहीं करता तब तक वह खुजली के कुत्ते की भांति रहता है। तुम तो शरीर को लेकर ही बैठे रहते हो, निकलते ही नहीं।

ज्ञान अग्नि कर्म दग्ध। संस्कार तो आते हैं पर गुरु अपने योगबल से उनको भस्म कर देता है अर्थात महानता दे देता है, जिससे उसके संस्कार जल जाते हैं। यहां तक कि क्रियाकलाप कर्म भी समाप्त हो जाते हैं। किसी के लिये कोई ख्याल मन में न रखो—सब परमात्मा के ही रूप हैं। सब प्यारे हैं तो प्यारों से क्या जलना।

तुम्हारा बुढ़ापा सफल हो गया। घर में चाहे जितने भी बवाल हों, सत्संग में आकर तुम आराम में आ जाते हो। तुमको यहां कोई सता नहीं सकता। गुरु का हाथ जिसपर हो उसको नौ ग्रह देवता आदि कुछ नहीं कर सकते। मन भूत भी दुखी नहीं करते। विकार विषय भी हमला नहीं कर सकते। तुम बोलते हो, विकार तो अब भी है पर तुम स्वयं अपना

निरीक्षण करो तो पता चलेगा कि पहले से अब में कितना अंतर है। पहले तो तुमको बात बात में रोना आ जाता था, हंसी आती ही नहीं थी पर आज कितना हंसते हो।

अभी किसी के यहां रोज रोज जाओ तो एक दो दिन तो आदर सत्कार करेगा लेकिन रोज रोज आते देखेगा तो ऊब जायेगा। यहां तो रोज रोज आते हो। एक ही जगह ऐसी है जहां आकर तुम आराम महसूस करते हो–वह जगह है सत्गुरु की शरण। तुम बस मौन होकर रहो–जहां भी तुम ज्यादा बोलोगे कोई रहने नहीं देगा।

तुम एक एक के आगे नम्रता से झुको। जब तुम ऐसा करोगे तो तुमको भी सब नमस्कार करेंगे। बड़े बड़े धुरंधर भी देखो आज हमारे सामने क्यों झुकते हैं? कारण, हमने भी अपने को इतना मिटाया होगा। इसीलिये हम तुमको भी कहते हैं। हम अनुभव की ही बातें तुम सबको बताते हैं। ज्ञानी का धर्म ही है–झुकना। तुम सोचते हो–दूसरे तुम्हारे आगे झुकें पर हम तो तुमको ही झुकने को कहेंगे क्योंकि तुमने ज्ञान लिया है।

25.10.86

भगवान ने विवेक इसीलिये दिया है कि तुम उसका यथासमय उपयोग करो। गुरु ने एक शिष्य से कहा "जहां तहां भगवान है।" तो उस शिष्य ने उस बात को पकड़ लिया। एक बार एक पागल हाथी आ रहा था। महावत कह रहा था "हट जाओ।" वह शिष्य हटा नहीं और गिर गया और उसके चोट लग गई। जब गुरु के पास गया तो गुरु के पूछने पर उसने सब हाल बताया। गुरु ने कहा "जब महावत ने तुम्हें सावधान किया तो तुम वहां से क्यों नहीं हटे? इस पर शिष्य ने कहा "आपने ही तो कहा था सबमें भगवान है। इसलिये मैंने सोचा हाथी में परमात्मा है, वह मुझे कष्ट नहीं देगा।" इसपर गुरु ने कहा "सबमें परमात्मा है तो उस महावत में भी तो परमात्मा था जो तुमको सावधान कर रहा था। इसी तरह हम भी ज्ञान सुन तो लेते हैं पर उसका प्रयोग सही नहीं कर पाते–यह कला गुरु ही बताता है और वही समझ पाता है जिसका विवेक जागृत हो जाता है। अतः विवेक से ही काम करना चाहिये।

कर्म हमेशा अच्छा ही करना चाहिये–फल कैसा भी हो। मनुष्य कर्म करके आशा लगाए रहता है कि फल अच्छा ही मिले। निष्काम कर्म करने

से ही अच्छा फल मिलेगा। कृष्ण ने अर्जुन से यही कहा कि वैसे तो मैं सब प्रकार के सत्कर्मों से प्रसन्न होता हूँ पर निष्काम कर्म से मैं अति प्रसन्न होता हूँ।

26.10.86

हर बात में भलाई होती है। यह भावना तभी आती है जब हम नियम से सत्संग करते हैं। वैसे तो जगत में कुछ न कुछ होता ही रहता है। सुख भी आता है, दुख भी आता है लेकिन ज्ञान में आने के बाद जो भी कुछ होता है उसमें भगवान की भलाई दिखाई देती है। एक गुरु ही मनुष्य में इस भावना को दृढ़ कराता है। गुरु देह भाव को भुलाकर आत्मा में टिकाता है। तभी दुख सुख में भी मनुष्य भलाई समझता है। कहा भी है **"आप विसर्जन होय तो सुमिरन कहिये सोय।"**

सब बातों का यही निष्कर्ष निकलता है कि संतों के संग से ही मनुष्य जीवन में लाभ होता है। कहा भी गया है "मिल साधू संगत, भज केवल राम।" देखो हम सब मिल करके रोज भजन करते हैं। घर में इतनी देर बैठ कर कहां भजन कर सकते हैं। घर में हम भजन करते भी हैं तो ध्यान इधर उधर भी जाता रहता है। कहते हैं **"मनुंवा तो चहुं दिस फिरे ये तो सुमिरन नाहिं।"**

तुम किसी भी तरह समय निकाल कर यहां आओ। एक भक्त ने गुरु जी को माला पहनाई तब गुरु जी ने कहा "ये तुम माला रोज क्यों पहनाते हो? तुम अपने को माला के रूप में कब अर्पित करोगे।

27.10.86

संकल्पमय सृष्टि तो है ही मनुष्य उल्टा सीधा संकल्प करता है फिर भगवान पर दोष लगाता है कि ऐसा कैसे हुआ? मनुष्य एक नजर से गुरु के दिल से हट जाता है। गुरु तुम्हारे हृदय की क्रिया पहचानता है। यदि आदमी गुरुमति पर चलता है, उसके बाद ना ना किया तो आत्मघात ही end होता है। संत ज्ञानेश्वर के पिता झूठ बोलकर गुरु के पास ज्ञान लेने गए कि मैं कुंआरा हूँ। एक दिन उनकी स्त्री उन्हीं गुरु के पास आई तो गुरु ने पुत्रवती होने का उसे आशीर्वाद दिया तो स्त्री रोई और बोली पुत्र कैसे होगा–मेरा पति तो आपके यहां है। पता चला वही संत उसका पति

है जिसने झूठ बोला था कि शादी नहीं हुई। गुरु ने उन्हें फिर भेजा। पर इतने दिन सन्यास के बाद उसका मन उसी को काटता रहता था। बाद में चार बच्चे हुए। इसीलिये कहते हैं गुरु से कपट नहीं करना चाहिये। अंत में वह डूब कर मरा। इतने में भगवान ने देखा–आत्महत्या करेगा तो आत्मघाती कहलाएगा तो सांप से कटवाकर मारा ताकि आत्म हत्या का पाप न लगे। उनके (संत ज्ञानेश्वर) बच्चों को उसी के कारण बड़े कष्ट सहने पड़े। गुरु के चरण की धूल उठाए बिना कोई भगवान को नहीं पा सकता। गुरु आज्ञा देता है तो कैसी भी हालत हो करना चाहिये परन्तु मन के वशीभूत होकर आसक्ति वश गुरु की हर बात को ना कर देता है। पर आज्ञा मान कर देखे तो कल्याण हो जाय।

हमारा हृदय हमारी लगन के बिना भजन में नहीं रह पाता। इसीलिये आज हमको कोई नहीं रोक सकता। तुम ऐसा मत बोलो कि भगवान ने बंद कर रखा। ऐसा नहीं है। लगन तुम्हारी नहीं होती। लोग कहते हैं अपनी बहू बेटी को तो नहीं लाते–हमको आने को कहते हैं। अरे! जो भी आएगा हम उसको नहीं भगाएंगे। वो आयें तो क्या हम उनको भगायेंगे।

भगवान पर विश्वास होगा तो भगवान सब काम अपने आप कर देगा। भगवान के रास्ते में जो दिल खोल कर खर्च करता है उसका भंडार भगवान भर देता है। सब यहीं मिलता है। कितना भी दुनियां में उल्टा सीधा कार्य होता है उसको लेकर अपने को सुखाना मूर्खता है। खाना पीना भगवान के इंसान के लिये ही बनाया है, हम नहीं खाते यह हमारा अहंकार ही है। भगवान ने केला बनाया–छिलके से ढक कर बनाया–सब सामान तुम्हारे लिये बनाया और तुम न खाओ ये तुम्हारा अहंकार है।

तेरी नेकी बदी नहीं उससे छिपी सब देख रहा भगवान। अतः शांत होकर रहो। मां के हृदय को जलाना सबसे बड़ा पाप है। तुम आत्म निश्चय में रहो तभी आनन्द आता है। जगत में तो दुख सुख मिलता है–परमात्मा में आनन्द ही आनन्द है। ऐसे परमात्मा में जो आ जाता है, जो शक्ति ब्रह्माण्ड में है, वही हममें है। जैसा निश्चय होता है वैसा ही होता है। हमने औरत का भाव किया तो औरत समझने लगे मर्द का भाव किया तो मर्दपने में हैं। जब गुरु ब्रह्म निश्चय कराता है तो हम ब्रह्म निश्चय में हो जाते हैं। फिर हम साक्षी भाव से जगत को देखते हैं। बुद्धिमान व्यक्ति ब्रह्म को ही पकड़ते हैं। बोला है–"**राजा दुखिया परजा दुखिया सकल सृष्टि का राजा दुखिया। सो सुखिया जो नाम अधार**। जितना रस नाम में है उतना

किसी में नहीं।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रैन

जो नाम को पीता रहता है वह अलौकिक नशे में रहता है। "**तेरी महफिल के दीवाने नशे में चूर होते हैं। वो इस दुनियां में रहने पर भी दिल से दूर होते हैं।**" देखो! घर में बहुत चीजें हैं पर परमात्मा के बिना उसको कुछ नहीं अच्छा लगता है। क्योंकि वह नाम को पीता है।

नाम से जगत की विस्मृति होती है। हवाई जहाज़ पर बैठने वाला नीचे सब कुछ होते हुए भी ऊपर ही रहता है और देखता रहता है। इसी तरह परमात्मा में डूबा व्यक्ति जगत से उपराम रहता है।

सदा वसत् तुम साथ। तुम सबमें वही परमात्मा है। एक जाग गया है एक सोया है। संशय वृत्ति से भगवान नहीं दिखाई देता। रामकृष्ण भगवान होता है। पावर (शक्ति) एक ही है। जैसी जैसी जगत की आवश्यकता हुई वैसी शक्ति लेकर भगवान आया। ये सब देवी माता की भक्त थीं पर राग द्वेष विषय में जलती रहती थीं। पर देखो! आज आया है देवी रूप में। भगवान रक्षा, कृपा करता रहता है। देखो! तुम्हें कैसे पाला? बाहर आए दूध ा दिया। मां चिंता करती है, क्या खायेगा? उसके बाद बड़ा होता है। उसकी तकदीर लिखी पड़ी है।

(पूरा ज्ञान नहीं मिल पाया।)

तारीख नहीं

चीर हरण की लीला का वर्णन

कृष्ण ने गोपियों का चीर हरण इसलिये किया क्योंकि उन औरतों को कृष्ण से बड़ा लगाव था। यदि कृष्ण ही देहधारी घूंघट न खोलते तो और कौन खोलता? देह रूपी घूंघट खोलने के लिये ही कृष्ण ने चीर हरण की लीला की। चीर चुराना तो ये स्थूल बात है। देह अध्यास को हटाने के लिये ही कृष्ण ने ऐसा किया। इसी तरह व्यक्ति का देह रूपी चीर गुरु हर लेता है। जीव भाव का चीर जब तक न हरा जाय तब तक ज्ञान नहीं होता। अर्जुन ने बहुत कुछ कृष्ण से सीखा फिर कृष्ण से बोला "मुझे गोपनीय रहस्य चाहिये।" तब कृष्ण ने अर्जुन को राधा जी के पास भेजा

तब अर्जुन ने गोपनीय प्यार पाया।

अपने स्वभाव को बदलो। इधर की उधर मत करो। पहले के पाप से इतना कष्ट मिला अब क्यों करते हो? कभी कभी झुंझलाहट में मनुष्य बहुत कुछ कह जाता है जो उसके मन में भी नहीं होता अतः गम (धीरज) खाओ। बहुत गम खाना पड़ता है। घर आफिस दुकान सब जगह गम खाना पड़ता है। मेरी यह बात ध्यान में रखो। मेरी बात के महत्व को समझना चाहिये। मेरी बात मानकर चलोगे तो हर क्षेत्र में तुमको सफलता मिलेगी।

भक्ति की पराकाष्ठा न लिख सकता है न बोल सकता है। यह बात रहस्यमय है–यह बस अनुभवगम्य है। तुम्हारा चीर हरण भया ही नहीं तो तूं क्या जाने है। मनुष्य पूर्णरूपेण भगवान से नहीं मिल पाता। जीवभाव पूरी तरह से नाश हुए बिना वह शक्ति आ ही नहीं सकती। देह रूपी कपड़ा (जीवभाव) जब तक गुरु नाश नहीं करेगा तब तक भक्ति नहीं हो सकती। तत्व को जानने के लिये प्रश्न उत्तर करो।

प्रश्न ये क्यों कहा गया है "मोरे मन प्रभु अस विश्वासा। राम ते अधिक राम कर दासा।"

उत्तर हनुमान राम की अविरल भक्ति के कारण बड़ा कहलाया। राम में चित्त को पूरी तरह डुबाया। गुरु मन के हठ को तोड़ता है। मन का मुड़ना बहुत ही अच्छा है। अपनी जानकारी (Thinking) को हर आदमी right समझता है। जो जहां बैठा है वहां से खिसकना नहीं चाहता। गुरु के पास आकर भी अपनी मर्जी चलाना चाहता है। जहां तक तपस्या कर ले गया ये तो अच्छा है पर यह सोचना कि मैं हर समय गुरु के साथ ही रहूंगा–यह कहां तक ठीक है। रजा में राजी रहे तो गुरु तो स्वयं ख्याल रखता है। रज़ा में जो राज़ी रहता है तभी उसको प्रभुता मिलती है। बोलो हे भगवान! जो तेरी मर्जी वही मेरी मर्जी–तभी गुरु की नज़र मिलती है। मन को इतना तैयार होना चाहिये कि जैसा गुरु बोलेगा वैसा करूंगा। जो इंसान गुरु के कहने से चलता है मन मानें या न मानें जबरन चलता है–तो वह अच्छा होता है। गुरु कहे बैठ जाओ तो बैठ जाओ, कहे चले जाओ तो चले जाओ। जब मन में तेज़ी हो तो उस टाइम गुरु के पास से चले जाना चाहिये नहीं तो उस समय गुरु के पास बैठकर उल्टी चाल चले तो महापाप होता है। गुरु की मानने से ज्ञान होता है–गुरु के पास बैठने से ज्ञान नहीं होता। मन से आना, मन से जाना अंच्छी बात नहीं।

प्रश्न मन को कैसे (Mould) मोड़ें?

उत्तर गुरु की मानने से। गुरु खेत में जाने को कहे तो चले जाओ। आरुणि की कहानी है गुरु ने कहा पानी लगाओ। वहां मेंड़ में पानी भर रहा था। मेंड़ में लगाने को मिट्टी भी नहीं थी। वह वहां स्वयं लेट गया। जब ढूंढ़ मची तब पता चला बेचारा गुरुजी की आज्ञा को पूर्ण करने में लगा था। गुरु ने ठंड से थरथराते आरुणि को गले से लगा लिया।

सारा सामान मिलने से क्या फायदा जब तक भगवान न मिले। अरे! भगवान मिलता है तभी सामान भी मिलता है।

निष्काम कर्म योग का फल पुश्त दर पुश्त खाता है।

29.10.86

श्रद्धावान लभते ज्ञानम्। जिसके अंदर अति श्रद्धा होती है उसको ज्ञान हो जाता है। जैसे घर में मां होती है तो गृहस्थ कैसे प्यार से चलता है–मां न हो तो घर न चले बाप भी मां की ही वजह से प्यार करता है। सौतेली मां हो तो प्यार नहीं मिल सकता। इसी तरह ज्ञान में जब तक श्रद्धा नहीं तब तक कुछ नहीं। भगवान ने कुछ दक्षिणा नहीं मांगी ये तो तुम लोग दे देकर बदनाम करते हो। तुम्हारी पूर्ण श्रद्धा ही लाभ करती है। तुम्हारी श्रद्धा ही राम बाण का काम करती है। यदि श्रद्धा नहीं होगी तो ज्ञान पूर्ण नहीं होगा। हम भी हर एक की चीज़ ग्रहण नहीं करते। इधर उधर बांट देते हैं। बढ़िया से बढ़िया भी चीज़ अच्छी नहीं लगती और कभी कभी बहुत घटिया चीज़ भी हम पसंद कर लेते हैं। इसका कारण है तुम्हारी पूर्ण श्रद्धा का भाव।

सत्य की ही हमेशा जीत होती है। दुर्योधन के पास बहुत सेना थी–अर्जुन के पास नहीं थी लेकिन वह सत्यता में था इसलिये उसी की जीत हुई। भगवान शरणागति भाव चाहता है। तुम कितना मनोरंजन के साधन करते हो लेकिन जब दिल जलता है, नुकसान होता है तब भगवान ही काम आता है। तुम मन को भगवान में लगाओ–तुम तो चिंतन करते हो कि कल क्या होगा? भगवान ही माता, पिता, बंधु, सखा यहां तक कि द्रव्य भी वही है। तुम सिर्फ चिंता करते हो–अरे! भगवान पर छोड़ो। मूर्ख आदमी चिंता करता है। भगवान पर विश्वास करने वाला कभी चिंता नहीं करता। खाने की भी चिंता तुम करते हो। अरे! आज खाओ। कल की चिंता

छोड़ो। भगवान ही खिलाता है। तुम भगवान का नाम जपो तो हम तुमको गाली नहीं देंगे। हमको तो तुमसे कुछ भी नहीं चाहिये। मुझे तो मालूम है जो मुझे जरूरत होगी वह भगवान दिला देगा। **"सो साहब चिंता करे जिन उपजाया जग।"**

जो हृदय से भगवान की सेवा करता है उसको यहां का यहीं मिलता है। हमारी बात गलत हो तो काटो। भगवान की महिमा तुम जैसे जैसे करोगे, नेचर (Nature) तुम्हारे लिये मखमल बिछा देगी। तुम भगवान को हटाओगे तो Nature कांटा बिछा देगी। हम तो किसी को शाप, वरदान नहीं देते–भगवान खुद कर देता है। हम तो अक्कड़ बम फक्कड़ बम हैं।

संत की महिमा वेद न जानी,
गुरु ग्रंथ कहलाते हैं।"

भगवान में जिसका दिल लगा रहता है उसका दिल आनन्द से छलकता रहता है। जैसे कोई औरत पायल पहन कर किसी मर्द को देखती है तो पायल छनन छनन करती है, उसी तरह भगवान में मन लगा होने पर दिल आनन्द से छलक छलक जायेगा।

जब हम मरने का संकल्प करते हैं तभी मरते हैं। कितने ही मर्द रोज मरने का संकल्प करते हैं लेकिन ऊपर से करते हैं। भगवान भी तुमको तब तक नहीं मारेगा जब तक तुम्हारा कर्जा का लेन देन नहीं खतम होगा। इसलिये सब कुछ भगवान के हाथ में हैं–जीना, मरना, आना, जाना। अभी हम लंदन जाने का संकल्प करें तो चले जायें पर सब भगवान के हाथ में है। तुम बोलते हो हम विकास (गुरु जी के छोटे पुत्र) को किस रूप में देखते हैं? जो सर्वभूत में परमात्मा को देखता है तो घर वालों को क्या भूत देखेगा? जब हम सबसे प्यार करते हैं तो उनसे भी प्यार ही करेंगे। जब हम सबकी रक्षा करते हैं तो विकास की क्यों नहीं करेंगे? विकास जबर्दस्त आदमी है। तुम बोलोगे उसको तो श्रद्धा विश्वास नहीं है लेकिन उसके अंदर के भावों को तुम क्या जानोगे? रामतीर्थ ब्रह्मज्ञानी है पर ऊपर तन कर देखता है तो तुम बोलोगे महा अभिमानी है। लेकिन वह राम में तना खड़ा है। इसी तरह वह (विकास) भी भगवान में है पर ठाकुर का दिमाग अभिमानी तो है ही लेकिन उसका आसरा तो मेरे में है। चाहे भक्त हो चाहे बेटा हमारे आसरे जब तक होता है तब तक हम उसकी पालना बेटे बाप की तरह करते हैं। जहां बल बुद्धि के कारण आसरा खतम होता

है वहां हम निर्लेप हो जाते हैं। तुम भक्त हो, वे बच्चे हैं–वे तुमसे ज्यादा आसरा मुझमें रखते हैं। इंदिरा गांधी की तरह। हमारे ऊपर जिस जिसने आसरा रखा है उनकी जिंदगी बनी है और बनती रहेगी।

शेर का स्वभाव हांव हांव का है, बिल्ली का म्याऊं म्याऊं है। बिल्ली दूध चोरी से पीती है लेकिन शेर ऐसा नहीं करता। शेर का स्वभाव देखकर शेर को खराब कहोगे पर अंदर से वह क्या है तुम क्या जानो? ऐसा ही हमारा विकास है। जो संत प्रेममय हो उसको सबसे प्यार होता है। संत का स्वभाव प्रेम वाला होता है। वह सबसे बराबर का प्यार करता है। बेटा हो या भक्त, जो भी कमज़ोर होता है, संत उसको उठाते हैं फिर वे ये नहीं देखते, दूसरा उनके साथ क्या कर रहा है।

हम तो हर रूप में भगवान ही देखते हैं। नहीं तो तुम हमें कहां से मिलते। हम तो तुम्हें बुलाने भी नहीं गए। सब तरफ आत्मा ही आत्मा है। मांस काटने वाला, लकड़ी काटने वाला, लेने वाला, देने वाला सब आत्मा ही आत्मा हैं। कहीं कोई मौत होती है, लोग रोते हैं पर आत्मदृष्टि से देखो तो कहां मौत हुई? जेसे कपड़ा change होता है वैसे ही यह देह भी कपड़ा है, बदलता रहता है अतः परमात्मा में ही ध्यान होना चाहिये।

प्रश्न हमारी वृत्ति भगवान में कैसे टिकी रहे?

उत्तर परमात्मा में मन लगाओ। जहां भगवान से मन हटा, मनुष्य खराब हो जाता है। भगवान बहुत परीक्षा लेता है। कभी उल्टा करता है, कभी तुम्हारे मन के अनुकूल करता है। भगवान देखता है, यह कितना मुझमें मन लगाता है? आकाश तत्व पांचों तत्वों में सबसे भारी है। पृथ्वी, पानी सब स्थूल तत्व हैं। आकाश तत्व देखने में नहीं आता। परमात्मा की मिसाल आकाश तत्व से दी जाती है पर इससे भी ऊपर परमात्मा है। वह ध्यान के द्वारा ईगो हीन होने के बाद जाना जा सकता है। जो परमात्मा में बुद्धि वाणी मन से लगता है, परमात्मा धीरे धीरे उसके हृदय की गुफा में बैठ जाता है तभी तत्व का बोध होता है। बुद्धि के द्वारा आत्मतत्व का बोध नहीं हो सकता। बुद्धि का ज्ञान शास्त्र तक ही सीमित है।

हम उसको बड़ा समझते हैं जो बड़े बड़े शास्त्रों का ज्ञाता होता है पर मन शांत नहीं है उसका। विद्वान अवश्य कहलाता है वह। परमात्मा का ज्ञान बुद्धि से परे है।

ऐसा निश्चय करो कि मैं अजर अमर अविनाशी हूं। तुम ब्रह्म स्वरूप का निश्चय करो तभी तुम हमको नहीं छोड़ोगे। तुम खाली हमको भगवान मानता है, अपने को क्या मानता है? जात मेरी आत्मा परमेश्वर परिवार।

तुम भगवान के लिये सर्वस्व जलो। क्या दुनियां के पीछे पड़े हो? तुम बोलोगे हम नहीं करेंगे तो क्या होगा? जो आदमी अपने को भगवान में पूर्ण स्वाहा कर देता है उसका घर अपने आप चलता है। तुम तो आधा जलते हो फिर भाग कर जगत में सुख लेने जाते हो। हवन कुंड में पूर्णरूपेण नहीं जलते।

खाने पीने से कुछ नहीं होता। ये मन का भ्रम है कि ये खाने से पाप होता है। खाना पीना शरीर का धर्म है। परमात्मा शरीर से परे है। परमात्मा मन बुद्धि से भी परे है।

प्रश्न फिर लहसुन प्याज आदि को तामसिक भोजन क्यों कहते हैं?

उत्तर क्योंकि ये गरम होते हैं इसीलिये कहा गया है। संन्यासियों ने ये बना दिया है लेकिन ऐसी बात होती तो ज्ञान उन्हीं को होना चाहिये जो सात्विक हों। पर हर जात में, ज्ञान है। जिस जात में जो खाना पीना होता है, वह खाते हैं पर भगवान के भक्त वो भी कहलाते हैं। हाँ! जो तुमको Suit (सूट) करे वह खाओ, जो न Suit करे वह न खाओ पर उसमें गलतान नहीं कि ये वस्तु नहीं है तो हम खाना नहीं खायेंगे। है तो खाओ, न हो तो न खाओ। किसी चीज़ पर पूर्ण आधारित होना मूर्खता है। जो मिले वह खाओ, जो न मिले उसकी लालसा न रखो कि ये चीज़ नहीं मिलेगी तो हम खायेंगे ही नहीं।

देखो! एक मिनट में परिवर्तन होता है। अर्जुन के मन में आया कि लड़ाई कैसे करूंगा? कैसे अपने सम्बंधियों को मारूंगा? लेकिन जैसे ही कृष्ण ने निराकार का ज्ञान दिया, वह तैयार हो गया युद्ध के लिये। पहले कृष्ण को भगवान मानने में संशय में था पर जब कृष्ण से बात करते करते अंदर से खाली हो गया तो ज्ञान हो गया। अतः खालीपन में ही ज्ञान होता है। खालीपन आपका स्वरूप है–उसी में आराम है, बेखुदी आने लगती है। संत, ज्ञानी, इसी बेखुदी के नशे में होते हैं।

"कहें किससे, सुनाएं क्या, चखा जिसने वही जाने।"

हमारी तुम्हारी भी कई बार लड़ाई हुई होगी पर हम तुम फिर मिल जाते हैं। तुम बाहर की त्याग तपस्या देखते हो तो हमको छोटा समझते हो क्योंकि हमारा व्यवहार कभी कैसा होता है, कभी कैसा होता है। इसीलिये हम तुमको हर समय घर आने को मना करते हैं। क्योंकि तुम्हारी बनी हुई श्रद्धा बिगड़ेगी। हमारी अन्तर वृत्ति को तो तुम पहचान नहीं पाओगे। तुम मुझमें क्या चीज़ देखकर अटके हो पता नहीं लेकिन हमारा तुम्हारा कोई पूर्व सम्बंध अवश्य है जो तुम बार बार हमारे उल्टे सीधे कर्म देखकर भी छोड़ नहीं पाते।

भगवान का खज़ाना भरा है पर हम जगत में भूलकर वह खज़ाना ले नहीं पाते। यह हमारी गलती है। भगवान का ख़जाना कुबेर का ख़जाना है, अकूत ख़जाना है। तुम जबसे आए हो कभी देखा है कि कमी हुई? जो ब्रह्मचर्य में रहता है तभी सबको ब्रह्ममय देख सकेगा। जब सबको ब्रह्म देखेगा तो तुम ही बताओ बेटे को क्या देखेगा?

कर्म का फल सबको मिलता है। बीज चाहे जानकर डालो चाहे अनजान में, पेड़ तो अवश्य निकलेगा पर चलते चलते जिससे बीज अनजान में गिर गए उसको फल न मिलने पर भी अफसोस नहीं होगा। लेकिन जिसने इच्छा से बीज डाला और फल नहीं निकला तो उसको दुख होगा। इसीलिये निरीच्छा होकर किये हुए कर्म का फल अच्छा न मिलने पर कष्ट नहीं होगा। इसलिये निष्काम होकर कर्म करो। मतलब वाला कर्म इतना आनन्द नहीं देता। निष्काम कर्म का फल अधिक और श्रेष्ठ होता है। मन निष्काम कर्म करने नहीं देता। इसीलिये गीता में बोला है "निष्काम कर्म के द्वारा ही मैं पूजित होता हूँ। तुम कर्म उत्तम करो–फल भगवान पर छोड़ो। कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। हम कर्म अच्छा करेंगे तो भूखों कभी नहीं मरेंगे।

संचित कर्म का एकाउन्ट में बैंक बैलेंस सबका जमा है। तेरा क्या है ज़रिया मेरे पास आने का, आंसू ही जरिया है। व्यक्ति है तो रोता है पर जब Nothing हो जायेगा तब परमात्मा की definition मालूम हो जायेगी। खुद Nothing होए तभी मालूम होगा। सबमें परमात्मा देखना दूर की बात है। परमात्मा का रिसर्च करना नहीं पड़ता–खुद ही Nothing हो जायें तो हो जाता है।

जीवात्मा राधा है परमात्मा कृष्ण जैसे राधा मुरली की धुन में अपने को भूली उसी तरह जब तक जीव परमात्मा के नाम में मोहित नहीं होता तब तक कल्याण नहीं होता।

30.10.86

हमको उसी की चिंता रहती है जो ज्ञान को अमृत की तरह पीता है। हममें ध्यान रखता है। उसके योगक्षेम का भार भी हम उठाते हैं। गुरु को कष्ट देने से Nature भी उल्टी हो जाती है। हमको उसी की प्यास रहती है जो सब सुख को लात मार कर भगवान के इश्क में नियम से आता है। ऐसे तो कभी कभी कोई कोई आते रहते हैं।

जब हृदय से भगवान के लिये प्रीत होगी तो भगवान अपने आप उसकी पालना करता है। हृदय में भगवान की प्रीत होनी चाहिये। तुम याद करो और हम न आयें–ऐसा नहीं हो सकता। एक बच्चा जो नादान होता है वह भी अगर याद करता है तो हम हर हालत में पहुंच जाते हैं।

रोजी रोटी भगवान ही देता है। अगर भगवान की मर्जी नहीं होगी तो जेब की रोटी भी नहीं खा पाएगा। ऐसे भगवान को बार बार नमस्कार करो। मेरी इस बात पर तुम्हारा मन टिकना चाहिये। भगवान ही सब कुछ है।

सबका भाग्य अलग अलग होता है। एक ही भाई बहनों का खान पान भले ही एक सा हो पर भाग्य अलग अलग ही होता है। **"मुए को प्रभू देत हैं कपड़ा लकड़ी आग। जीवित नर चिंता करे, ताके बड़े अभाग।"** आदमी अपने ही अंश का खाता है।

गुरु किसी को गाली देता है–यहां तक कि मार भी देता है तो उसकी तकदीर बन जाती है। स्वामी राम कृष्ण ने रानी रासमणि को खड़ाऊँ से मार दिया जब उसका मन कचहरी में चला गया। रानी ने उफ भी नहीं की। मुकदमा अपने आप उसके पक्ष में हो गया। सिद्ध संत ऐसे ही बेपरवाह बादशाह होते हैं। उस मनुष्य की हर इच्छा पूरी होती है जो कपट छोड़कर भगवान का भजन करता है। यह बात मेरे ऊपर शत प्रतिशत लागू होती है। हमने हृदय से राम राम किया तो देखो आज मुझे किसी बात की कमी नहीं। प्रभु ने मुझे ऐसा भर दिया है कि अब मेरी कोई इच्छा बाकी नहीं है।

31.10.86

नरक चतुर्थी

मन के कहने में तुम चलते हो। मन के कहे में चलने से मनुष्य दुखी होता है। गुरु के कहने में चलने से **"हर वक्त खुशी, हर वक्त हंसी, हर वक्त अमीरी है बाबा।"**

मन बुद्धि वाणी नहि जानत वेद कहत सकुचाय। भगवान की यह परिभाषा है जिसकी व्याख्या कर पाना बड़ा कठिन है। तुम इसीलिये कहते हो कि मन चलता है। तो भगवान की बात समझ में नहीं आती। हमारी मन की मशीन चालू रहती है। यह मशीन कैसे रुके? जब भगवान की ज्योति जलती है और देह भूलती है। कृष्ण ने जब अर्जुन से कहा "तू आत्मा है तभी उसको देह भूला–"नहीं तुल राम नाम विचार। मनुष्य जब तक राम नाम का विचार नहीं करता तब तक आराम नहीं आता।

तुम बोलते हो आज दीवाली है, आज होली है। यह तभी तक याद है जब तक राम नहीं है। जब दिन का ख्याल जाता है तभी भगवान मिलता है। दीवाली उसी दिन है जिस दिन परमात्मा हमारे दिल में आए। दिया जले और फिर बुझ जाये–यह कैसी दीवाली है। अरे! हृदय में परमात्मा के प्रेम का दीपक जलाओ। उसी को दीवाली मानना। दशहरा तभी मना समझना जब तुम्हारा मन रूपी रावण मरे। होली तभी समझना जब तुम्हारे मन पर परमात्मा का रंग पक्का चढ़ जाए और वह रंग छूटे नहीं। क्या होली, क्या दीवाली? हर दिन परमात्मा में रहो। तू निरंजन निराकार आत्मा का निश्चय कर तभी तेरा भला होगा।

2.11.86

दर्द भगवान को क्यों अच्छा लगता है। दर्द में मन भगवान में लगातार रहता है। दर्द ही भगवान तक पहुंचानेवाला है।

प्रश्न सूर्य से किरन अलग है या लगी हुई?

उत्तर प्रथम तो किरण सूर्य की प्रतिबिम्ब ही है लेकिन उससे अलग है। इसी तरह जीव भी परमात्मा से एक होते हुए भी अलग है। परमात्मा केवल

शुद्ध अन्तःकरण से भासता है। आत्मा अमर है। सूर्य का बिम्ब पानी भरे घड़े में पड़ता है, अलग दिखते हुए भी जब घड़ा फूट जाता है तो बिम्ब गायब हो जाता है। हमारा अन्तःकरण शुद्ध हो तो व्यक्ति ही आनन्दस्वरूप होने लगता है। तुम बोलते हो–व्यक्ति कैसे आनन्दस्वरूप है। अरे! व्यक्ति नहीं तो क्या पत्थर आनन्द स्वरूप होगा? ये जिन पत्थर की आज तुम पूजा करते हो ये भी किसी व्यक्ति के हैं जो पहले थे। अतः व्यक्ति से ही ज्ञान मिलता है। **"बिन तन संग ज्ञान नहिं उपजे, करले जतन हज़ार।"** भगवान जब जब व्यक्ति रूप में आया तभी तभी मनुष्य का कल्याण हुआ है। जो उसकी मानकर चलता है उसी का कल्याण होता है। लोग आज के दिन पतंग उड़ाते है। देखो पतंग उड़ रही है। ऊँचे ले जाकर काटते रहते हैं। गुरु भी चित्त रूपी पतंग को उड़ाता है। इसी तरह हम भी तुम्हारे चित्त को उड़ाते हैं, ऊपर ले जाते हैं। तुम्हारी चित्त वृत्ति को ऊपर ले जाते हैं।

एक भक्त बोला–आपने भी पतंग उड़ाई होगी?

गुरु जी हमने तो नहीं उड़ाई। एक बात है, उड़ाई तो जरूर होगी। हम पतंग तो उड़ाते है। पर किसी को काटते नहीं। कितने ही संत लोग यही काम करते हैं। हम लंगड़ क्यों मारें? हमको खेलना होगा तो अपनी पतंग उड़ायेंगे। अपनी छत पर पतंग उड़ाओ, जगह जगह भटको नहीं। अपनी पतंग अपनी छत से उड़ाओगे तो गिरोगे नहीं।

राम स्वतः ही जपने लगे तो तुमको चिंता नहीं होनी चाहिये। जमुहाई, डकार भी खुद आते हैं। इंद्रियों के धर्म भी अपने आप होते हैं। इसी तरह राम भी स्वतः निकलने लगे तो राम जायेगा नहीं। बहुत से लोग घबराते हैं कि मरते समय राम आयेगा कि नहीं। लोग कहते हैं–गुरुजी! हम मरें तो आ जाना। पर हम भी कैसे आयेंगे? तुम अपने ही राम को याद करो। जैसे भूख प्यास सर्दी गर्मी महसूस होती है, बुखार आता है तो महसूस होता है, ऐसे ही तुमको राम महसूस होना चाहिये।

तुम्हारा पथ प्रदर्शक (गाइड) जहां जाए वहां जाओ। उसके साथ कदम से कदम मिलाकर रखो तो खजाना मिल जायेगा। **"मेरे गुरुदेव ने मुझको दिखाया मार्ग उस दर का। महक उसकी नशा उसका, पिया जिसने वही जाने। कहें किससे, सुनाएं क्या, चखा जिसने वही जाने।"**

अतः तुम मेरे साथ चलो। तुमको गुरु खजाने के अंदर ले जाता है

तो जाओ। मनुष्य जीवन बड़ी कठिनता से मिलता है। तुम बस राम राम करो–जगत का सब काम हो जाता है। जगत की सब वस्तु झूठी है। जब भगवान में डूब जाता है तो दुख सुख हानि या लाभ सता नहीं पाते। घुइंया के पत्ते पर देखो–पानी होता है, जरा सा हिला दो तो झर जाता है। इसी तरह यह संसार है, अभी है, अभी नहीं है। संसार में तो ताप चल रहा है। जो आदमी परमात्मा को अपने अंदर बिठा लेते हैं–उसको जलाते नहीं।

हनुमान को बाण इसीलिये नहीं लगते थे क्योंकि उसने राम को अपने अंदर बिठा रखा था। इसी तरह परमात्मा को अंदर रखने पर संसार के शोक ताप नहीं सताते–यही हमारा ज्ञान है।

प्रभु के सुमिरन दुख न सताये,
प्रभु के सुमिरन दुश्मन टरे,
प्रभु के सुमिरन काल पर हरे।

काल परहरे का मतलब जब तक तुम संकल्प नहीं करोगे–मरोगे नहीं।

जीवन क्षणिक है। इसलिये भगवान भगवान करो। जो गीता का अध्ययन करता है वह कभी कष्ट में नहीं आता। प्रभु का शुकराना रोम रोम से करना चाहिये। प्रभु की अपार कृपा है। देखो! वैद्यजी के लड़के का क्या हाल था फिर भी भगवान ने रक्षा की नहीं तो बुढ़ापे का पुत्र शोक कितना भारी होता। हमारा पुत्र भी भगवान ने बचा लिया। बचा खुचा धन थोड़ा कि वाह वाह की।

बड़े भाग्य से सत्संग आते हैं। भगवान की कृपा है। भगवान आनन्द रूप में आता है, खाता है–प्यार से सेवा करो। हम भी पहले बीमार पड़ते थे पर जबसे सेवा करने लगे बीमारी भाग गई। अतिथि की सेवा प्यार से करो। भगवान ही अतिथि के रूप में आते हैं। जो भी आता है–भगवान रूप ही है। हम सब पर भगवान का असीम प्यार है। देखो! हमारे सुख के लिये क्या क्या रचा। हम तो भगवान की महिमा बता भी नहीं पाते। जैसे जैसे तुम भजन करोगे तो तुममें जितनी हैवानी शक्ति है वह शांत हो जायेगी। अपनी तो शांत होगी ही, दूसरे की भी शांत हो जायेगी। मेरी मां कहती थीं–चतुर्मुख वाले ब्रह्माजी भी भगवान की महिमा का वर्णन नहीं कर सकते सरस्वती भी नहीं कर पातीं–यह सब जब हम सुनते थे तो हमको बड़

अच्छा लगता था। ऐसे भगवान की महिमा जब हृदय जानने लगता है तो हृदय शीतल हो जाता है। जो भगवान के ऐश्वर्य कृपा, महिमा, ममता को जानता है वह भगवान के गहरे प्रेम समुन्दर में डूब जाता है। समुद्र भी छोटे पड़ते हैं उस गहरे प्रेम में।

भगवान तो जहां तहां है। भजन सबको करना चाहिये। तुम भगवान से भागते हो—क्यों भागते हो? हम तो सबको अच्छा बनाते हैं पर आदमी हमारे पास आता ही नहीं। विद्या से स्वभाव नहीं बदलता। रटा पढ़ा पास हो गए पर स्वभाव गुरु के ज्ञान से ही बदलता है।

3.11.86

गुरु का नाता भी ऐसा होना चाहिये जैसे परिवार का। जैसे परिवार को हम नहीं छोड़ पाते, इसी तरह गुरु से भी ऐसा होना चाहिये। सेवा करने पर आशीर्वाद न देने वाला भी आशीर्वाद दे जाता है। गुरु के सामने चंदन की तरह रगड़ाई होगी तभी मन निखरेगा। आदमी बोलता है—ऐसा करना चाहिये ऐसा नहीं—ये बोलने की बातें हैं। गुरु के सामने रगड़ाई करने पर ही अहंकार मिटता है। जब बच्चे जवान हों तो गुरु के पास बच्चों को भेजना चाहिये। तभी कल्याण होता है नहीं तो जवानी में अहंकार बहुत होता है। गुरु के पास पहुंच जायेगा तो अच्छा बन जायेगा।

जिसको गृहस्थ में ज्ञान मिल गया, वह जंगल में क्यों जाए? यह प्रवृत्ति होती है। मेरी भी यही हालत है। राजा लोग जंगल में जाने को भागते थे पर बाहर धक्का खाते खाते यह महसूस हुआ कि गृहस्थ का ज्ञान ही अच्छा है क्योंकि यहां अपना खाते हैं अपना पीते हैं, आराम से भजन करते हैं—यह ज्यादा अच्छा है। हम आज जब घर घर ज्ञान सुनाते हैं तो हमको उनके खाने खिलाने की चिंता नहीं रहती कि ये हमको खाना खिलायेंगे कि नहीं। हमको तो ये प्रैक्टिकल ही अनुभव हुआ है। देखो! हमारा ज्ञान का दीपक जल गया तो हम इसको तुमको दिखायेंगे (बतायेंगे) तो कितना अच्छा होगा। यही दीपक यदि जंगल में जलता तो क्या फायदा होता? सड़क पर ही बत्ती की जरूरत होती है जहां पर लोग आते जाते हैं— गुफा में नहीं जहां कोई नहीं जाता। ज्ञानी व्यक्ति जगत में ही रहे तो अच्छा है। किसी को ताप, कष्ट होता है तो ज्ञान सुनते सुनते उसको आराम आ जाता है तो कितना अच्छा है। घायल व्यक्ति ही ज्ञानी और ज्ञान का महत्व समझ पाता

है। या फिर अति प्रेम लग जाय तभी ज्ञान होगा।

भजन हमारे खुद के लिये ही जरूरी है। हमको पांच भूत और अहंकार नोचते रहते हैं। हमारे बराबर की उमर की औरतें और जो हमसे छोटी थी उनको देखकर हम हैरान हो गए। आज सब खक्खड़ दिखाई देती हैं। कौन करता है उनको ऐसा? अपने ये (पांच भूत) दुश्मन हैं यह काम करते हैं। ज्ञान के द्वारा ये दबे रहते हैं। यही जगत हमको जलाता था, आज भगवान को प्रधानता दी तो झूम गए—पहले जगत को प्रधानता दी तो रोते रहे।

अपनी कृपा जो आप करे, सो सेवक गुरु की मत ले।

मनुष्य से बहुत गलतियां होती हैं। मनुष्य भगवान की भी चेकिंग करता है। भगवान को व्यक्ति समझता है। मेरे से तू पैदा हुआ—मेरी छटी के बारे में तुमको क्या मालूम? बाप की छटी के बारे में क्या कोई जान सकता है? अतः तुम भगवान से माफी मागो। देखने सुनने से कई क्रियमाण (देखने बोलने सोचने से) कर्म होते रहते हैं अतः भगवान से नम्र होकर बोलो कि हे भगवान! मुझे माफ करो। जो भगवान से बार बार माफी नहीं मांगता (भूल हुई जो प्रतिपल मोसे, क्षमा करो, करुणा बरसाओ) उसका भोग सामने आता है। कृष्ण की भी लोगों ने ऐसी ही चेकिंग की (भगवान कृष्ण को भी लोग ग्वाला रूप में समझते रहे) दादा जी लक्ष्मी भगवान के साथ रहते थे तो लोग बहुत बुरा कहते थे। अगर खराब होते तो यं फुलवारी कैसे इतनी बड़ी फूलती फलती?

प्रेम बहुत शुद्ध पवित्र है। आत्मिक प्रेम के कारण आपस में खीच (आकर्षण) हो जाती है। हम तुम एक दूसरे को आत्मिक प्रेम के द्वारा ही जानते हैं—प्यार करते हैं। भइया जी का सच्चा प्रेम था तभी देखो पूरा परिवार भजन में आ गया—ये है शुद्ध प्रेम। राधा कृष्ण का प्रेम शुद्ध पवित्र था तो आज उनका नाम लिया जाता है। आत्मिक प्रेम जैसा कोई प्रेम नहीं। आत्मा का प्रेम तोड़ने से भी नहीं टूटता। जिसका दैहिक प्रेम होता है वह आज नहीं तो कल टूट भी जाता है। जगत का प्यार सच्चा प्यार नहीं है, भगवान का प्यार ही सच्चा प्यार है। तुम्हारी नजर में कृष्ण मर्द हैं, गोपियां औरत हैं पर भगवान की नजर में न मर्द है न औरत। आत्मिक प्रेम तोड़ने छोड़ने से भी नहीं छूटता। सांसारिक प्रेम में तों तलाक भी होता है पर हमारा प्रेम आत्मिक प्रेम है—इसमें बस त्याग ही त्याग होता है किसी भी प्रकार की चाहना नहीं।

अभी तुम कच्चे हो कि पक्के हमको पता नहीं। अतः तुमको परीक्षा तो देनी ही पड़ेगी। भगवान हर रूप में मदद करता है। उसको बार बार नमस्कार करना चाहिये। बोलो–नमस्तस्तु नमस्तस्तु करो। भगवान भी जब तक नमस्कार नहीं करा लेता, नहीं मानता। तुम भगबान को व्यक्ति करके न मानो। भगवान तो है ही भगवान। तुम पत्थर को ठाकुरजी कहता है, चेतन को ठाकुर जी नहीं मानता। रामकृष्ण जब जिंदा थे, तभी ठाकुर मानते तो कितना अच्छा होता। तब उसको गाली देते थे। जब चला गया तब ठाकुर मानते हैं। जिंदा में ठाकुर माने तब कल्याण होता है। इंसान रिश्तों (समधी–दामाद, पति–पत्नी, बेटा–बेटी) को तो चेतन मानता है पर भगवान को जो सब चेतन रिश्तों का भी चेतन हैं उसको ही जड़ मानता है–कितनी बड़ी भूल है?

4.11.86

बार बार मन को बदलना चाहिये। जब आत्मा में रहते हैं तो हम मन को बदल सकते हैं। आत्म निश्चय में मन का स्वांग तो होता रहता है परन्तु मनुष्य उसमें डूबता नहीं देह में आने पर ही मन खराब काम कराता है। जो कोई गलती बताए उसको मान लो। अपने को अन्दर अन्दर बदलों गुरु को बाहर से पकड़ने से अच्छा है अन्दर से पकड़ होना।

अन्दर से जब तुम परमात्मा से प्यार करते हो, रह नहीं पाते तो भगवान मिलेगा। अन्दर की पकड़ जगत से है और बाहर की पकड़ भगवान से है तो काम नहीं होता। ज्ञान शो की बात नहीं है। रामकृष्ण में कौन सा शो था? उनमें अन्दर ज्योति जगी थी। जो मन को भगवान के रास्ते में कैसे भी प्रेम से लगाए, वही भगवान को पकड़ सकता है। हम लोग जगह जगह भगवान ढूंढ़ते हैं परन्तु ज़ैसे जैसे हमारा मन परमात्मा में लगता है, परमात्मा को ढूंढ़ना नहीं पड़ता।

भीतर है सखा तेरा सखा, मन लगाके देख
अंतःकरण में ज्ञान की ज्योति जला के देख।

जैसा गुरु बोले वैसा करो। मन हठ करता है पर गुरु जैसा बोले वैसा करने में ही आनन्द है। मन को रबड़ की तरह बनाओ। कुछ भी कहे उसमें तर्क, शंका मत करो। मर्जी में मर्जी मिलाने में आराम है। आज तक किसी ने मन का हठ नहीं तोड़ा, गुरु ही मन के हठ को तोड़ता है।

जय श्री गुरु जी की

19.7.87

देखने में आता है गुरु ऐसा करता है वैसा करता है। लेकिन गुरु कितनी बला टालता है–पता नहीं चलता। मनुष्य को बहुत कुछ कर्म भोग आते हैं। कष्ट तो आते हैं पर फिर भी कितने बड़े कष्ट गुरु की कृपा से टल जाते हैं–इसका पता नहीं चलता।

जो हर बात में शुकराना करता है उसको दुःख नहीं होता। हर इंसान मन के कारण दुखी है। कहा है :

राजा दुखिया, परजा दुखिया,
सकल सृष्टि का राजा दुखिया,
सो सुखिया जो नाम अधार।

अतः राम राम ही करो। जो परमात्मा घट घट वासी है, उसी को मन में बसाओ। मनुष्य परमात्मा को बाहर ढूंढ़ता है लेकिन–सदा बसत तुम साथ परमात्मा सबके अंदर ही बसता है। जब जब हमको जरूरत होती है, भगवान सहायता करता है। रात दिन भगवान सुख देने के लिये हमारे पीछे पीछे है पर हम शुकराना नहीं मनाते हैं। मां बाप गलती पर सज़ा देते हैं पर भगवान सज़ा नहीं देता।

तौबा गुनाह मेरे, क्या किया है मैंने?
इस पर भी तू निवाढो, तेरी बंदा परवरी है।

तुम भजन के लिये यदि जीना चाहते हो, निष्काम होकर भजन करना चाहते हो तो भगवान तुम्हारी अवश्य मदद करता है।

हरिनाम बड़ा सुखदाई, ना लागे पैसा पाई।

अतः हरिभजन करो। जब हरिभजन में मन नहीं लगता तो प्रकृति भी उल्टी हो जाती है। जब विषय रस मीठा लगता है तो राम रस अच्छा नहीं लगता और जब विषय रस फीका लगता है तो हरिनाम अच्छा लगता है। कबीर ने कहा भी है:

कबिरा मन तो एक है, चाहे जिधर लगा
चाहे भोग विलास कर चाहे भक्ति करा।

ब्रह्मचर्य से ही आत्मज्ञान होता है। ब्रह्मचर्य में रहने वाला व्यक्ति अपने को शुद्ध पवित्र रखता है। तुम तो खाने में शुद्ध अशुद्ध भाव रखते हो कि ये खाना चाहिये, ये नहीं खाना चाहिए। खाने से कुछ नहीं होता–विचार अच्छा होना चाहिए। नीयत अच्छी रखो तो भगवान बरक्कत करता है। नीयत अच्छी रखकर काम करते जाओ तो बरक्कत अवश्य मिलेगी। तुम चिंता करते हो। चिंता मत करो। जो भी होता है, अच्छा होता है।

ज़िन्दगी देखो! अदला बदली है। कोई भी रहने वाला नहीं है ना। पर हम लोग भूले रहते हैं कि हमको भी जाना है। चला चली का मेला है। इस मेले में ही तुमको भजन द्वारा इतना अभ्यास कर लेना चाहिए कि कोई आए चाहे कोई जाए पर उसका effect (असर) तुम पर न पड़े। तुम तो किसी न किसी के आधार पर जीते हो ये सब आधार छूटने वाले हैं। प्रभू का आधार सच्चा है। भगवान के आधार पर जो रहता है वह जी सकता है। इसीलिये भगवान भक्त को कुछ नहीं देते क्योंकि कुछ मिलते ही भक्त भगवान को भूल जाता है हालांकि भगवान दे तो बहुत कुछ सकता है, कमी नहीं है, उसका भंडार भरा है।

मनुष्य को अहंकार होता है कि हम गुरु का प्यार करते हैं, उसके बिना रह नहीं सकता हूं पर हम यह दिखा देते हैं कि वह सचमुच में (हमारे बिना) नहीं रह सकता या झूठमूठ कहता है। ये हम समय आने पर दिखा देते हैं।

मनुष्य किसी न किसी झूठे आधार पर रहता है, तभी भगवान को भूला रहता है।

प्रेम प्रेम तो सब कहते हैं पर अपने अंदर जाकर देखो कि तुमको कितना प्रेम है। प्रेम की बात करना आसान है पर प्रेम करना बड़ा कठिन है। कहा है:

मुहब्बत की राहों में चलना संभल के।
यहां जो भी आया गया हाथ मल के।
न पाई किसी ने मुहब्बत की मंज़िल।

च... का रास्ता है। इसीलिये कहता है प्रेम की मंज़िल पाना बड़ा कठिन है। ज्ञान ... जो बड़ी जल्दी आती है पर प्रैक्टिकल करना बड़ा कठिन है। कि ... लोग ज्ञान की खाली बात करते हैं।

करतूत पशुओं की मानुष जात, लोक पचारा करें दिन रात।

ज्ञान तो बोलते हैं पर उस पर अमल नहीं कर पाते। एक भी शंका करोगे तो हमारे पास नहीं आ पाओगे। एक बार राम को सांपों ने बांध लिया तो भगवान विष्णु ने गरुड़ से कहा कि जाओ सांपों को खाकर राम को सांपों से मुक्त करो तो गरुड़ को शंका हो गई कि यदि राम भगवान होते तो खुद ही मुक्त हो जाते। मन में इतनी सी शंका आते ही गरुड़ की भगवान से दूरी हो गई। तब गरुड़ को चिंता हुई कि भगान विष्णु उस पर क्यों नहीं चढ़ते। सबके पास कारण पूछने गए गरुड़। किसी ने कहा काग भुशुण्डि के पास चलो। जब काग भुशुण्डि का स्थान 4 कोस दूर रह गया तो वहीं से गरुड़ को आराम आने लगा क्योंकि कागभुशुण्डि जहां रहते थे वहां से चार कोस तक की जगह शुद्ध रहती थी। अतः कागभुशुण्डि के पास जाकर गरुड़ ने जब अपना समाधान कराया। तब भगवान उससे प्रसन्न हुए।

लोग हमारे पहनने ओढ़ने में शंका करते हैं। हम क्या करें? हम तो किसी से नहीं कहते कि हमको माला पहनाओ, साड़ी पहनाओ। लोग भाव से, प्रेम से लाते हैं तो हम क्या करें? हम मजबूर हो जाते हैं पहनने को।

साधू और भगवान में बड़ा अंतर है। साधू भगवान को पाने के लिये साधना करता है पर भगवान भगवान है। वह स्वयं ब्रह्म है तो किसकी आराधना करे?

मन ऐसा कुत्ता है कि अगर कोई अच्छा काम कर दिया है तो उसको सदा याद करता है। द्रौपदी ने एक नेक काम किया और भूल गई। उसने भगवान कृष्ण की उंगली कटने पर बढ़िया साड़ी को भी फाड़कर पट्टी बांधी वह जब सभा (कौरव सभा) में नंगी होने लगी तो भगवान ने साड़ी पर साड़ी बढ़ा कर उसकी लाज बचाई। भगवान कुर्बानी को याद रखता है।

यहां का किया यहीं मिलता है। भगवान की भक्ति अकारथ नहीं जाती है–यहीं दे जाती है। लोग कहते हैं–ऊपर स्वर्ग है पर ऐसा नहीं है। यहां के शुभ कर्म का फल यहीं मिलता है। ऊपर कुछ नहीं है। सब ब्रह्म ही

ब्रह्म है ब्रह्म के सिवाय कुछ नहीं है।

एकान्त की अनुभूति बड़ी मुश्किल से होती है। खाली का सेवन करो वही आराम वाला है। परमात्मा की अनुभूति ही सर्वोत्तम चीज़ है। अपना मन (हृदय) भी देखते रहो–खाली है या चलता है।

जो जवानी से ब्रह्मचर्य रखता है वह भजन कर ले जाता है। बुढ़ापे में यह काम मुश्किल हो जाता है। बुढ़ापे में इंद्रियां और (अधिक) चंचल हो जाती है। क्योंकि ब्रह्मचर्य का अभ्यास जवानी से नहीं किया–आदत बुरी पड़ चुकी है। इसलिये ब्रह्मचर्य का अभ्यास जवानी से करने पर ही बुढ़ापे में इंद्रियों को वश में किया जा सकता है। मन्मनाभव होने पर ही सच्चा भजन होता है। अतः मनसा, वाचा, कर्मणा भक्ति करो।

21.7.87

~~जब–तक~~ मनुष्य गुरु से link जोड़े रहता है तब तक माया खा नहीं सकती। पर मनुष्य गुरु से दूर रहता है। गुरु को छोड़कर वहां जाता है जहां काल है। संसार मृगतृष्णा का जल है–वहां पानी नहीं है।

जो एक भगवान के आसरे रहता है उसका सब काम पूर्ण हो जाता है। मन माया के चक्कर में पड़कर जब उसी में रस लेने लगता है तो काम होता हुआ भी नहीं होता।

गुरु और सत्संग दोनों का होना जरूरी है। मनुष्य कहता है सत्संग तो कर लिया लेकिन गुरु का भी होना आवश्यक है। गुरु को प्रधानता देना बहुत ज़रूरी होता है तभी सत्संग का करना भी सार्थक होता है।

धन मान आने में भी एक मिनट का समय नहीं लगता और जाने में भी एक पल का भरोसा नहीं। अतः धन मान का भरोसा मत करो। भगवान का भरोसा ही सच्चा है, उसी पर निर्भर रहो।

26.7.87

भगवान का काम खुद ही खुद होता है। संसार का काम करना पड़ता है। Rest (आराम) परमात्मा में ही मिलता है। इंसान का मन ही इन्सान को खाता है। मन भूत है, इस भूत को जलाओ।

संसार में सरकार एक समय के बाद रिटायर कर देती है। परमात्मा में तभी रिटायर होता है जब मन भूत जल जाता है। तब मन आराम में आ जाता है। अतः मन को रिटायर करो।

तुम पक्के पक्के भगवान के बने रहो तो भगवान खुद इंतजाम करता है। माला टीका सब हमारे पास अपने आप चला आता है। तुम बोलते हो, हम पूजा कराते हैं। अरे! हमारी तो चमड़ी भी गोरी नहीं है, हम तुमसे ज्यादा पढ़े भी नहीं फिर भी तुम हमारे पास क्यों आते हो? कारण है हमारी आत्मा की शक्ति, ब्रह्म की शक्ति। तुम (संसारी) लोग रूप पर मोहित होते हो, जहां रूप होता है वहीं प्यार करते हो। इसीलिये तुम्हारी पूजा नहीं होती। मंजनू लैला पर आशिक होने के सिवा किसी पर आसक्त नहीं था–इसीलिये उसका नाम लोग बाइज्जत लेते हैं। देखने में आता है हमारी (व्यक्ति) की पूजा होती है पर व्यक्ति की पूजा नहीं होती बलिक हमारे अंदर जो निराकार निरंजन रग रग में बैठा है उसी की पूजा होती है। तुम भी रोम रोम में निराकार निरंजन को बिठाओगे तभी तुम्हारी भी पूजा होगी। जब तुमको सब मानने लगेंगे तभी हम समझेंगे कि तुमने ज्ञान लिया।

तुम मुझमें शक शंका मत करो तो बेड़ा पार हो जायेगा। भगवान को आगे रखकर हम नरक को भी स्वर्ग मानते हैं। जहां विषयों का चिंतन होता है वहीं नरक है। नरक स्वर्ग ऊपर कहीं नहीं है। ब्रह्माकार वृत्ति में मन को टिकाने के लिये चित्त को संभाल कर रखना चाहिए।

हम लाए है ब्रह्माकार वृत्ति गुरु द्वार से,
इस वृत्ति को रखना मेरे मनवा संभाल के।

कर्म कोई भी करो पर वृत्ति भगवान में रखो। कबीर कपड़ा बुनते थे, रैदास जूता बनाते थे, सदना कसाई मांस बेचता था पर इन सभी का नाम संतों में गिना जाता है। कारण उनकी वृत्ति परमात्मा में टिकी थी। कर्म तो जो हमको मिला है करना ही पड़ेगा। राम में डूब कर काम करना बुरा नहीं होता, दूसरे पर आश्रित होना अच्छा नहीं।

गीता का ज्ञान चारों योगों से पूर्ण है। इन चारों योगों में जो पूर्ण होता है वही मुक्त होता है। भगवान की भक्ति बहुत कठिन है। उसके लिये योगी से सम्बंध बनाए रखना चाहिये। ज्ञान भी तभी पूर्ण होता है जब मनुष्य गुरु से जुड़ा रहता है।

किस टाइम में कौन सा जस आ जाए और कौन सा अपजय आ जाए पता नहीं। भगवान केवल प्रेम से जीते जा सकते हैं। वो कुछ नहीं चाहते।

भाव का भूखा हूं भाव ही एक सार है,
भाव से भजे तो, भव से बेड़ा पार है।

मनुष्य विषय के रस में डूबा रहता है और भगवान भी पाना चाहता है–ऐसा नहीं हो सकता। जिसको भबवान का रस पीना होता है उसको संसार के सारे रसों को जलाना पड़ता है। दोनों रस चाहने वाला मेरे सामने आ नहीं सकता। पहले के ऋषि–मुनि जंगल में जाकर क्यों तपस्या करते थे?

कारण भगवान को पाने के लिये एक तर्फा होना पड़ता है। भगवान आसानी से नहीं मिलता। तुम चाहो कि दुनियां के रस भी भोग लें और भगवान भी मिल जाएं तो ऐसा संभव नहीं है। भगवान को पाने के लिये संसार के विषयों को तीली लगाकर जलाना पड़ता है। ये मन पग पग पर गलती करता रहता है।

7.8.87

खुशी भी कई प्रकार की होती है। एक खुशी होती है भगवान से, गुरु से। एक खुशी होती है महफिल से। महफिल की खुशी हमेशा नहीं रहती। भगवान की खुशी हमेशा बरकरार रहती है। पूजा (गुरुजी की पोती) की खुशी हमारे से है यानी गुरु से है। जब तक इसकी ऐसी condition रहेगी–ये यहां सत्संग में आएगीं।

जिनको परमात्मा से अनुराग होता है उसको जगत कभी अच्छा नहीं लगेगा। परमात्मा को पाने के लिये वैराग्य की आवश्यकता है। वैराग्य और वास्तविक ज्ञान वही होता है जिसमें किसी से आंतरिक लगाव न हो।

गुरु मनुष्य को कहीं विषय पान नहीं करने देता। हमको तुम्हारा चेहरा देखते ही मालूम हो जाता है कि तुम्हारी खुशी संसार से है या कि भगवान से है। जिज्ञासु को हमेशा पर्दे में छिपे रहना चाहिये।

सत्संगी होने का शो (Show) करना आसान है पर राम में टिकना आसान नहीं चाहे चना भी भीख मांग कर खाना पड़े और हरिनाम मिल जाए तो बहुत बड़ी बात है। जो गुरु की बात मानकर गुरु के सामने ही

बंधन काट लेते हैं वो ऊँचे पहुंच जाते हैं। तन का, मन का, बोलने का देखने का–ये सारे बंधन हैं। इनसे बचो। सद्गुरु में मन लगाने पर बेख्याली का मजा आता है।

हरिनाम के रस के आगे सब रस फीके हैं पर मनुष्य रस ले तो कैसे ले? मुंह में तो नमक (संसार) की डेली पड़ी है तो राम रस कैसे मीठा लगे। हरिनाम की विधा सारी विधाओं से ऊँची है और श्रेष्ठ है।

मुझे वैराग वृत्ति वाला पसंद आता है। चंचल प्रकृति का मनुष्य मुझको बिल्कुल नहीं भाता। सत्गुरु का रुख देखकर काम करना चाहिए। जो गुरु के रुख से नहीं चलता, उसको Nature दंड देती है। हरिनाम फूल है, विषय कीचड़ है। अतः विषय रूपी कीचड़ में मत फंसो। कहा भी है:

गुरु नानक महा ज्ञानी, जिन्होंने गौर कर देखा,
जगत धोखे की टट्टी है, न तेरा है न मेरा है।
जिन्होंने तैरना सीखा, वही भव पार होते हैं,
अनाड़ी मोह सागर से नहीं उद्धार होते हैं।

ज्ञान खड्ग की धार है अतः संभल कर चलो। जहां जाने से तुम्हारी वृत्ति भगवान से हटती है, वहां मत जाओ। एक वस्तु भी अंदर रखोगे तो धोखा ही धोखा है। गुरु चढ़ाता है, सारा जगत गिराता है। जब तक नज़र का कंट्रोल नहीं होगा हरिनाम अंदर नहीं जायेगा। अतः दूसरे को नज़र से न गिराओ। खुद भी भजन करो और दूसरे को भी करने दो।

हमारी क्लास में वही आ सकता है जिसका मन खाली भगवान में हो। राम में तद्रूप हुए बिना भगवान का सच्चा आनंद नहीं आता। राम के सिवा कुछ नहीं काम आता। कुटुम्ब कबीले में क्यों फंसे हो? आज तो सब अच्छा है। कल कुछ बुरा होगा तो कैसे शांत रहोगे? राम राम करो। राम के सिवा कहीं मत अटको।

8.8.87

हरिभाषा की बात नहीं है। वह हृदय की पुकार का विषय है। वैराग्य से ही हरि मिलता है। अंदर रोम रोम में राम तभी बैठेगा जब हर तरफ से वैराग होता है।

तुम लोग यहां से निकल कर सीधे घर जाओ। बात करने की कोई

जरूरत नहीं। किसी को देखने की क्या जरूरत है? तुम्हारा क्या मतलब है दूसरों की ओर देखने का? मंदिरों में अंदर कीर्तन होता है और बाहर लड़के लड़कियां नज़ारेबाजी करते हैं। यहां का सत्संग ऐसा नहीं है। हमारे यहां उसी की ज़रूरत है जो यहां राम में एक रस हो जाए।

तन मन एक रस, सुमिरन कहिये सोय।

अतः यहां आना है तो शुद्धता पवित्रता से आओ। भाषा का सत्संग मत करो। हमारे यहां मन की पढ़ाई है। मन की तो मन की, अन्तर्मन की पढ़ाई है। यहां का क्लास आत्मा का क्लास है। आत्मज्ञान पाना हो तो विषयों के रस को विष की तरह त्याग करो। राजा जनक ने अष्टावक्र से ज्ञान देने को कहा तो जनक से कहा—**विष सम विषय तज तात रे।** जिसको विषयों में बिलकुल रस नहीं आता, उसी को आत्मा का ज्ञान होता है।

तुम तो विषयों में रच पच कर आए हो। तो पहले विषयों की रगड़कर सफाई करो। देखो! बाथरूम में काई होती है। काई को यदि साफ न किया जाय तो फिसल जायेगा। काई साफ कर दी जाए तो फिर फिसल नहीं सकता। इसी तरह ज्ञान प्राप्त करने के लिये विषय रूपी काई को साफ करना पड़ेगा।

तुम किसी से राग मत करो, न द्वेष ही करो। राग द्वेष दिमाग में खट खट करता रहता है। विकारी शरीर में जिसमें कि सारे कर्म उल्टे सीधे दिखाई देते हैं, उसमें भगवान की आस्था करना बड़ा कठिन है। लोग जड़ को पूजते हैं जो तुम्हारे विकारों को बताता भी नहीं। गुरु हर तरह से शिष्य की परीक्षा लेता है।

जब ज्ञान में बहुत आनंद दिखाई देता है तो गुरु सत्संग में उसके आने पर रोक लगाकर भी देखता है कि इसका मन कहीं महफिल में तो नहीं अटका है। सत्संग के नियम सख्त होने चाहिए। हमको शुद्धता का सत्संग चाहिये। तुम आए हो तो राम लेकर जाओ। गुरु के सामने जैसे ही तुम गल्ती बताओगे, तुम्हारी वहीं गल्ती तुरन्त नाश हो जायेगी। गुरु के यहां ज्ञान की अग्नि जलती है जिसमें सारे पाप जल जाते हैं। अतः गुरु के सामने अपने सारे दोष खोलकर रखो।

एक औरत बहुत परेशान थी। उसने अपने सारे दोष बताए। उस दिन

से उसके सारे दोष जल गए और वह शांति में आ गई। गुरुमुख अपने सारे दोष गुरु से बता देता है। मनमुख नहीं बताता। कृष्ण अन्तर्यामी थे वह अर्जुन के गुण दोष को जानते थे फिर भी उन्होंने अर्जुन से कहा "यद्यपि मैं तेरे बारे में सबकुछ जानता हूं फिर भी तू मुंह से बोल तब तेरा विकार जायेगा।"

जो भगवान के पीछे दिन रात लगा रहता है, उससे तो सारा संसार जला करता है। जो त्याग का अभ्यास कर लेता है गुरु द्वारा वही जनता के काम आता है। ज्ञान में जितना रस है, वह गरुड़ पुराण में नहीं है। जीतेजी तो भजन नहीं किया मरने के बाद गरुड़ पुराण किया तो क्या लाभ।

ज्ञान का मतलब है, जो भी हालत है उसमें समता योग में रहना। ज्ञान लिया ही इसीलिये जाता है। जो भी हालत है उसमें भगवान का शुकराना करो कि ऐसी भी हालत न होती तो हम योग कैसे करते? पति बाहर होता है तो योग ही तो होता है। तुम रोते हो कि हम अकेले हैं। दो में योग नहीं होता। एक में परमात्मा का योग करना आसान है।

राम कहने का मज़ा जिसकी जुबां पर आ गया,
मुक्त जीवन हो गया, चारो पदारथ पा गया।

तुम्हारा मन ही दुश्मन है जो उस परमात्मा का लुत्फ लेने नहीं देता। तुमको मन किसी भी हालत में सुखी नहीं रहने देता। दुःख ही अच्छा होता है। दुख में ही भगवान याद आता है।

दुखों से अगर चोट खाई न होती।
तुम्हारी प्रभू याद आई न होती।

भगवान तो सर्वत्र है पर मन देखने नहीं देता। **"कोई जगह न तुझसे खाली, तू व्यापक डाली डाली है।"** प्राणपति भगवान है। भगवान पत्ते पत्ते में कण कण में है। तुम दूसरे को आधार मानते हो। जो भगवान अजर अमर अविनाशी है उसको तो मन आधार नहीं मानता और जो मरने टूटने छूटने वाली है उसको आधार मानता है।

कोई कोठी बंगले का मालिक, और फिरे कोई कारों में।
कोई बिचारा पैसा पैसा मांगत फिरे, बाज़ारों में।

तुम किसी से मत जलो। सबको कर्मानुसार फल मिलते हैं। सारी

दुनियां अपने को ही दुखी समझती है। शुकराना नहीं मनाती। गुरु के द्वारा जब विकारों पर कंट्रोल करना आ जाता है तो मनुष्य का बुढ़ापा भी आराम से कट जाता है नहीं तो बुढ़ापे में जब इंद्रियां शिथिल हो जाती हैं तब क्रोध आदि विकारों पर काबू पाना कठिन हो जाता है। जब बुढ़ापे से पहले ही गुरु के ज्ञान द्वारा क्रोध पर काबू पाने का अभ्यास कर लिया जाता है तो उस समय (बुढ़ापे) में भी मनुष्य Adjust कर लेता है।

आज पूजा नहीं आई तो पूजा के पापा आ गए। देखा! ये है अखंड कीर्तन। हमारी मां पूजा करती थीं तो हमने उनसे भी धुरन्धर भजन किया। अभी भी जिस घर का एक भी प्राणी भजन में मन लगाता है, उसका घर कल्याण मय बना रहता है। अतः हरिनाम को नियम से लेना चाहिये। तुम्हारे घरवाले इस बात को, नहीं समझते तभी सत्संग में आने में रोक लगाते हैं क्योंकि उनके हृदय में हरिनाम की कीमत नहीं होती। जीवन में पैसे की उतनी जरूरत नहीं जितनी धीरज की जरूरत है। वह धीरज आता है हरिनाम से और हरिनाम आता है सत्संग से, गुरु दर्शन से गुरु के ज्ञान से। इसलिये सत्संग में आने में रोक नहीं लगाना चाहिये।

जो भगवान के लिये सचमुच तड़पेगा, उस पर कोई बंधन नहीं लगा सकता। भगवान के हाथ में सारा संसार है। यह कहना झूठ है कि मेरी बहू दर्शन के लिये तड़पती है। वह सत्संग के लिये तड़पे और रास्ता न मिले यह कहना झूठ है। औरत के बच्चा होने वाला होता है तब कहते हैं दर्द है। अरे! दर्द थोड़ा थोड़ा होता है तो बच्चा नहीं होता। जब असहनीय दर्द होता है तो राह में भी बच्चा हो जाता है। उसी तरह थोड़े थोड़े दर्द से भगवान हृदय में नहीं आता। जब असहनीय तड़प होती है तब भगवान हृदय में पैदा होता है।

इतनी गाली देते हैं तब भी तुम भाग नहीं पाते। इसका क्या कारण है? कारण है हमारी सच्चाई। हमारा Aim तुमको बनाने का है। बंधन अपना मन डालता है। दूसरा कोई नहीं डालता। आज क्या हम लोगों पर बंधन नहीं है? अरे! हम उन बंधनों को तोड़कर भगवान के लिये आते हैं तो बंधन टूट जायेंगे। फिर, जब हमारे घरवाले हमारे व्यवहार को बदला देखेंगे तो बंधन नहीं डालेंगे।

जब हमको राम में सच्चा रस आता है तो कोई बंधन नहीं डाल पाता। जब राम और काम दोनों होते हैं तो बंधन लगता है। लेकिन जब मन खाली

राम में डूबा होता है तो बंधन नहीं लगता। जब तक मनुष्य के अन्दर राम की प्रधानता होती है तब तक उसकी दशा उन्मत्त बालक की तरह होती है।

सत्संग में जो भी विचार आए, प्रश्न आए, शंका आए उसे खोलो तो ज्ञान और आगे बढ़ेगा। एक के द्वारा अनेकों के प्रश्नों का हल होगा। जिसका मन हमारे आगे आकर झुके तो उसका आना सफल होगा, नहीं तो उसका आना जाना व्यर्थ ही होगा।

जतन कर आपना प्यारे,
करम का दोष मत दीजे।

अतः कर्म अच्छे करो। ये जो भी कष्ट होते हैं, न झुकने के कारण है। मनुष्य झुकने का अभ्यास नहीं करता—तोड़ने की भावना रखता है।

12.8.1987

जब तक जगत के सम्बन्धों, सामानों को हम पकड़े रहते हैं तब तक हमको कभी आराम नहीं मिलता। हम दूसरे की खुशी में यदि खुश होते हैं तो हमको भी खुशी मिलती है। हम हमेशा दूसरे की खुशी को देखकर जलते ही रहते हें तो हमें अपनी ही खुशी महसूस नहीं होती। इसलिये दूसरे की खुशी में हमेशा खुश होना चाहिये। यहां का यहीं मिलता है।

गुरु की एक एक वाणी में राज होता है। गुरु कहता है ऐसा करो तो मनुष्य मानता नहीं। जब मन की न हो, फिर भी गुरु के कहने से कर ले तो मन मुड़ता है। जब गुरु के सामने मन मुड़ता है तभी जगत में भी मनुष्य मुड़ना सीखता है और सुखी होता है।

जहां मोह होता है, आदमी वहीं से परेशान होता है। परमात्मा के सिवा मन को कहीं मत लगाओ। जो करो, यहां का यहीं मिलता है। प्रकृति अच्छे का भी बदला देती है और बुरे का भी। बख्शी ताल भी तपोभूमि है जहां संत तप कर तपस्या करते हैं। दूसरों के कल्याण के लिये वह स्थान तपोभूमि ही कहलाता है।

जहां भी जो आदमी रहता है वहीं तपस्या कर सकता है। तुम बचचों को पढ़ाती हो। अगर प्यार से भगवान डालकर पढ़ाओगी तो वही तपस्या कहलाएगी। भगवान का भक्त भगवान के लिये पैदा होता है—दुनियां के लिये

नहीं पैदा होता है।

तुम कष्ट को महत्व देते हो–भगवान को महत्व नहीं देते। अगर भगवान को महत्व दो तो तुम्हारा कल्याण हो जाये। भगवान भक्त की बहुत परीक्षा लेते हैं। पर उसमें भी अहंकार नहीं करना चाहिए कि मेरे जैसा भक्त दूसरा नहीं। एक बार अर्जुन को अहंकार आ गया कि मेरे जेसा भक्त कोई नहीं तो उसके अहंकार को भी कृष्ण ने तोड़ दिया।

एक बार भगवान ने एक परम भक्त की परीक्षा ली। शेर को लेकर भगवान फकीर बनकर उसके घर गए। कहा हमको भूख लगी है। भक्त ने कहा प्रभू भोजन स्वीकार करें। तब भगवान ने कहा हमारे साथ एक शेर भी है, उसको भी भोजन खिलाओ। भक्त ने पूछा क्या खायेगा? भगवान ने कहा तुम्हारे पुत्र का मांस खाएगा। भक्त तुरंत तैयार हो गया। भगवान ने कहा पुत्र की गर्दन पर धीरे धीरे आरा चलाओ फिर उसका मांस पकाओ। भक्त ने भी अपने पुत्र का आधा धड़कर दिया। फकीर ने कहा अब आध ो धड़ को अलग रख दो और आधे का भोजन तेयार करो। जब मांस पक कर आया तो फकीर रूपी भगवान ने भक्त से कहा–तुम अपनी भी थाली परोसो। एक थाली और लगाओ। फिर कहा अब अपने पुत्र को नाम लेकर बुलाओ। भक्त को आश्चर्य हुआ कि वह (पुत्र) तो मर गया अब कैसे आयेगा। पर फकीर के कहने पर उसने (भक्त ने) अपने पुत्र का नाम लेकर आवाज दी तो पुत्र जीवित होकर सामने आ गया। यह है भगवान और उनके भक्तों की महिमा।

इस तरह भगवान परीक्षा तो लेते हैं पर अपनी कृपा भी साथ में रखते हैं। परीक्षा तो वह नाम मात्र को लेते हैं यह देखने के लिये कि भक्त को उन पर कितना विश्वास है। आंख ही कर्म का मुकाम है। गुरु इसीलिये गाली देता है जब भक्त की नजर कहीं इधर उधर जाती है क्योंकि वह जानता है कि आंख से ही कर्म होता है। चाहे अच्छा कर्म हो चाहे बुरा कर्म–नज़र से ही होता है। भगवान का भी कर्म नज़र से ही होता है। नज़र खाली हो तो कर्म बाहर से करेगा तो भी कोई नुकसान नहीं होगा। वृत्ति को अंदर की तरफ ले जाना चाहिये। इसी को योग कहते हैं। जहां मनुष्य का चित्त लगा होता है, वहां न देखते हुए भी चित्त से मनुष्य उसी तरफ देखेगा। अतः नज़र को बचा कर अंदर की तरफ ले जाओ।

मनुष्य कर्म को बढ़ाता है। अच्छे बुरे कर्म के फल सभी के पास आते

हैं पर ज्ञानी अपने कर्म का फल समझकर खुशी खुशी भोगता है–अज्ञानी हाय तौबा मचाकर (कर्म) बढ़ाता है। जो भी कष्ट आता है, अपने ही कर्म से आता है। देखने में आता है कि वह (अमुक) कष्ट दे रहा है पर है अपना ही कर्म भोग।

भक्ति से हमारा कर्म नाश हो सकता है। जब कष्ट आता है तो रोता है पर पहले ऐसा क्यों किया जो कष्ट आया। अतः कर्म अच्छा करो। कितने लोग कहते हैं हमने तो इस जन्म में कोई कर्म बुरा नहीं किया फिर भी हम पर कष्ट आता है तो वह मनुष्य अंधे हैं। जानते नहीं कि अपने ही कर्म जो आगे पीछे किये गये हैं उन्हीं का फल आया है।

13.8.87

जो संग खुद करना है गुरु का, उसी को संग मिलता है। मुंह से राम राम करने से कुछ नहीं होता। अन्दर से राम लेना ही अच्छा होता है। ऐसे तो तोता भी राम राम करता है–वह ज्ञानी नहीं होता। रटाने से रटता है।

जब भगवान में मन लगा होता है तो प्रकृति भी सेवा करती है। जब भगवान से मन विमुख होता है तो मिलती सेवा भी छूट जाती है। एक बार हम बीमार पड़े तो डाक्टर ने फलों का रस कहा। इतना रस फल, साग सब्जी का कहां से लिया जा सकता है? पर प्रभू की कृपा देखो! उन्हीं दिनों एक साग वाली लड़की आ गई। उसका मन भगवान में खूब था। अतः वह खूब बिना कहे साग संब्जी का ढेर लगा देती। हम मना भी करते पर नहीं मानती। फिर देखो! जब हम ठीक हो गए–वह भी पता नहीं कहां चली गई। यही है प्रकृति और प्रभू की कृपा। और प्रभू में मन लगाने का फल। तुम भी जब प्रभू में ऐसा मन लगाओगे फिर देखोगे कि हमारी बात कितनी सच्ची है। भगवान के होकर देखो फिर भगवान ही सेवा करवाते हैं। देखो रैदास, सदना कसाई कितने उदाहरण हैं।

जगत शब्द है शब्द ही जगत है। अशब्दी ब्रह्म पद है। अकल वाला आदमी परमात्मा में ही मन लगाता है तभी अशब्दी होता है। जगत के शब्द तभी तक सुखी दुखी करते हैं जब तक परमात्मा में मन नहीं लगता। देखो पहले का लिया ज्ञान ही काम आता है। जब दुख पड़ता है तो पहले का लिया ज्ञान काम आता है नहीं तो मनुष्य धड़ाम से गिर जाता है।

निष्कामी मनुष्य काम करता है, बकवास नहीं करता। फल भी उसी को मिलता है। प्रेम बातों की बात नहीं है। प्रेम में तो कठिनाई, बंधन है। ये न हो तो प्रेम की पहचान कैसे होगी कि प्रेम सच्चा है कि झूठा है। गुरु से रेशम के तार जैसा प्रेम है और संसार से लोहे की मोटी तार के जैसा प्रेम है। गुरु से थोड़ी ही बात में तार टूट जाता है पर संसार कितना भी ठुकराए लगाव नहीं छूटता।

16.8.87

न कोई छोटा है न बड़ा। न कोई औरत है न कोई मर्द है। भगवान का नशा सबको चढ़ सकता है। सब परमात्मा रूप हैं। तुम प्रभू नाम का नशा पियो। कहते हैं:

जिस दीदे से हो हमें दीदे खुदा।
उस दीद के हम है दीवाने।

इसलिये हरिनाम का नशा पियो। हरिनाम के नशे के लिये कुर्बानी की जरूरत होती है। दीदे खुदा के लिये प्रैक्टिकल करना पड़ता है। दर्शन साधू के करे, साहब आवें याद। साधू के दर्शन से मन डूब जाता है तुम्हारे दर्शन से हमारी डूबी वृत्ति भी जाग जाती है क्योंकि तुम्हारी वृत्ति का मुख बाहर है। मन की रगड़ाई वैसे ही करनी पड़ती है जैसे चंदन घिसा जाता है। मुजैक का दाना डालना आसान है। पर घिसाई करने पर ही वह चमकता है। उसी प्रकार मन की भी रगड़ाई जब गुरु के पास रहकर की जाती है तब मन चमकता है।

तुम्हारी वृत्ति परमात्मा में है या नहीं हमको पता चलता है। प्रेम में जब अदब होता है, साथ में कुर्बानी होती है तभी प्रेम सफलीभूत होता है। प्रेम का मार्ग बहुत कठिन है। बोला भी है: **प्रेम नगर मत जाना मुसाफिर, प्रेम का पंथ कठिन है**। भगवान के नाम पर जो भी कुछ करो उसकी counting मत करो–चुप रहो। फिर देखो! भगवान कितना भरता है। अरे! धन धान्य से भरपूर कर देता है। देखने में आयेगा कि दिया तो हाथ से कुछ नहीं पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में ही देता है किसी न किसी रूप में। सुदामा जब कृष्ण के पास से घर वापस लौटने लगे तो मन में सोचा–इतनी सोने की द्वारिका है, इतना भरा भंडार है पर हमको कुछ नहीं दिया लेकिन जब घर वापस पहुंचा तो देख कर दंग रह गए कि कितना भर दिया।

ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या है। जो जान लेता है वही आनन्द में रहता है। तुम तो पूजा करके सलामती चाहते हो। अरे! निश्चिंत रहो। क्या टूटने फूटने की चीज़ को मांगते हो। उनको तो जब तक रहना है रहेंगे–जब छूटना होगा लाख उपाय करने पर भी छूट जायेंगे। अतः भगवान से भगवान को ही मांगो।

17.8.87

हर एक चाहता है हम आगे आएं आगे बैठें पर उतनी कुर्बानी कोई नहीं करता। तुम में भी आगे की सीट उसी को मिलेगी जो भगवान के लिये इतनी तन मन धन की कुर्बानी करेगा।

शब्द भरे ता फल पावे। जो गुरु के शब्द, गुरु की आज्ञा पर मर मिटने को तैयार होता है, घर वर परिवार से भी ज्यादा भगवान को मानता है उसी को सामने की सीट मिलेगी।

तुम तो अभी भजन करोगे–थोड़ी देर बाद घर जाओगे। भगवान भी थोड़ा याद रहेगा–थोड़ा भूलेगा। पर इन्होंने अपना सब सुख आराम गुरु के लिये त्यागा है तो इनको आगे की सीट अवश्य मिलेगी। भगवान का भजन इतना आसान नहीं है जितना तुम समझते हो।

मर्द होकर भजन बोलते हो–ये अच्छी बात है। भगवान की प्रार्थना में न मर्द है न औरत है–Nothing but God है। मैं "ना" होकर ही भजन होता है। जब तक औरत मर्द का भाव रहता है तब तक भजन सही नहीं होता। लाज शर्म होती है तभी तक जब तक देह का भाव होता है।

प्रकृति मनुष्य को अच्छे बुरे कर्म का फल अवश्य देती है। बुरा कर्म करते समय मनुष्य सोचता है कि कोई देख नहीं रहा है पर प्रकृति देखती है। प्रकृति दंड अवश्य देती है। तुम किसी को सताने की कोशिश करोगे तो तुमको कभी खुशी नहीं मिलेगी।

जब मनुष्य के नस नस में परमात्मा आ जाता है, उस समय मनुष्य कुछ बोल नहीं सकता, कुछ कर नहीं सकता। समाधि अवस्था होती है। जब भक्त होता है तभी भक्ति होती है रौनक होती है। गुरु का रिश्ता शक्ति वाला होता है। नानी दादी का रिश्ता छोटा होता है। सुख कहीं नहीं है। जो हालत है उस पर शुकराना करना ही सुख है।

वास्तविक सुख अपने आप में है–अपनी हालत में है। मनुष्य अच्छी हालत की तमन्ना करता है पर जिंदगी बीत जाती है हालत की इन्तजारी में। हम हालत पर खुश रहते हैं अतः हम तो भैया हमेशा सुखी रहते हें। ऐसा नहीं कि परिस्थिति हमारे पास उल्टी नहीं आती पर हम हर हाल में भगवान का शुकराना मनाते हैं तभी मस्त रहते हैं। विकारी शरीर में निर्विकारी को देखना बड़ा कठिन है। लोग कहते हैं अंध विश्वास है। पर ऐसा नहीं है। जब Mind balance में होता है तभी काम सही होता है। बच्चों की छोटी छोटी मासूम जिंदगी तुम्हारे हाथ में होती है। जब तुम्हारा मस्तिष्क बैलेंस में होगा, तभी उनका जीवन बनेगा। अतः पहले अपने मन को balance में लाओ। यह बैलेंस ज्ञान के द्वारा ही आएगा।

साधना कई तरह की होती है। एक साधना होती है यह सोचकर कि लोग क्या कहेंगे? यानी भय के लिये। एक साधना होती है ईश्वर के रस के लियें। भगवान मीठा लगे इसके लिये साधना करना श्रेष्ठ है। शादी में सुख नहीं है पर जिनकी नहीं हुई, वे सोचते हैं शादी हो जाती तो अच्छा होता। इतने लोग बैठे हैं। इनसे पूछो तो सभी कहेंगे हम दुखी हैं। निरीच्छा हो जाओ, सबका कल्याण करो तुम्हारा कल्याण अपने आप हो जायेगा। पर इच्छा नहीं छूटती।

अभी मैं पूर्ण ब्रह्मस्वरूप हूं पर एक इच्छा आ जाए, फिर हमारा रूप बदल जायेगा। इच्छा ही सब पापों का मूल है। कहते हैं:

चाह चमारी चूहरी, अति नीचन ते नीच,
तू तो पारब्रह्म थी, चाह न होती बीच।

आज की हालत अच्छी है पर मन नहीं मानने देगा और अच्छी की इच्छा करेगा।

त्याग में ही आराम है। जो भगवान के लिये अपना जीवन त्यागमय बना लेता है वह आराम में रहता है। एक को गुरु कहता है, शादी करो। एक को कहता है–न करो! इसका क्या कारण है? कारण है–एक रह सकता, एक नहीं रह सकता शादी के बिना। पर गुरु जानता है शादी में सुख नहीं है। योग्य आदमी को ही योग्यता देनी चाहिये क्योंकि योग्य व्यक्ति सबका कल्याण करेगा। त्यागी व्यक्ति ही दूसरों का कल्याण कर सकता है।

जो भगवान के ध्यान में रहता है उसका सब काम भगवान ऐसा कर देते हैं कि वह अचम्भे में पड़ जाता है। हमारे यहां भी ऐसा चमत्कार होता है कि दंग हो जायें क्योंकि तुम भगवान के ध्यान में आते हो।

आदमी भगवान से जैसा रिश्ता लगाता है भगवान वैसा करता है। चाची को देखो! हमसे बेटे का रिश्ता लगाती हैं तो हम उस रिश्ते का ध्यान रखते हैं। ये हमको मक्खन खिलाती हैं।

गीता में लिखा है कि जब मनुष्य बहुत तपस्या करता है और कुछ योग शेष रह जाता है और मर जाता है तो वह श्रीमान के घर में पुनः जन्म लेता है और भजन करता है। उसे राज्य में योग मिलता है। सब भगवान की कृपा से होता है। जब भगवान की कृपा होती है तो देखो ऊसर में भी खेती हो जाती है।

कर्म का योग श्रेष्ठ है। जो कर्म में ही योग करता है गुरु के सामने–उसका ज्ञान श्रेष्ठ होता है। बिना कर्म के भक्ति पूर्ण नहीं होती।

23.8.1987

नामरूप नाश है, ब्रह्म का प्रकाश है। हमसे भगवान की बात करो। क्या नामरूप व्यक्ति की बात करते हो? भगवान के लिये आओ, भगवान के बारे में जानकारी करो तो अच्छा है। भगवान के लिये स्पेशल आना चाहिये। देखो! हमारी मां भगवान की पूजा स्वच्छ साफ कपड़े पहन कर सजधज कर करती थीं, भगवान के लिये ही स्पेशल तैयार होती थीं तो देखो उसकी औलाद (यानी हम) रोज सजाए जाते हैं। हम चाहते भी नहीं हैं पर भगवान हमको सजाता है।

जो करता है वह अपने लिये करता है। तुम तो सोचते हो हम भगवान के लिये कर रहे हें पर वह उलट कर तुम्हीं को मिलता है। देखो! द्रौपदी ने भगवान की उंगली में साड़ी फाड़कर पट्टी बांधी तो भगवान ने भी बदले में साड़ी पर साड़ी पहनाकर उसकी लाज बचाई।

तीन लोक में भी हरि का दास छिपा नहीं रहता। वह प्रकट अवश्य होता है। कहा भी है : **भजन करे पाताल में, प्रकट होये आकाश**। भगवान के भक्त पर कोई बंधन नहीं डाल सकता पर तुम तो भगवान को ही भूल जाते हो, जहां उल्टी सीधी परिस्थिति आई। भगवान के भूलने से ही परिस्थिति उल्टी आती है।

जब भूली तू आपको, तब व्यापे संसार। भगवान को याद रखने से सब कुछ अपने आप मिलता है। कुसूर अपना ही होता है–किसी दूसरे का नहीं होता। भजन के लिये बड़ा त्याग करना पड़ता है। जिसके हृदय में भगवान की प्यास होगी, तड़प होगी उसका रास्ता कोई नहीं रोक सकता।

जब शुरू शुरू में हम भजन करते थे, उस समय हमारा भी कलेजा तला गया था। जब दुख से, हानि से, लाभ से, मान–अपमान से हम तपे हैं तभी आज पूजे जाते हैं। स्वयं भजन करते हैं और औरों को कराते हैं।

आत्मा को catch करना बड़ा कठिन है। अपना नामरूप पक्का हो गया है। आत्मा भूल गया है। अतः उसको याद करने के लिये, जानने के लिये, एक बार अकेले भजन करना पड़ेगा। एक आत्मा जब याद होता है तभी जगत भूलता है। कहा है:

एको हम बहुअस्मि।

एक ही ब्रह्म अनेक रूपों में प्रकट हुआ है। यह ज्ञान संतों के साथ रह कर ही होता है। संतों के पास रहकर ही मन मुड़ता है, इंद्रियां मुड़ती हैं। सबसे बड़ा बंधन तो इंद्रियों का ही होता है। पांच कर्मेन्द्रियों और पांच ज्ञानेन्द्रियों ने ही हमको जीव भाव में डाल रखा है। इसी में हम फंसे रहते हैं। जब गुरु आता है तो इनसे छुड़ाता है। वह परमात्मा में डुबा देता है। तभी जगत के नामरूप भूलते हैं। जगत के नामरूप में मन को क्यों फंसाते हैं? जगत में भयानक और सुहावने दृश्य आते रहते हैं पर एक परमात्मा ही आनन्दस्वरूप है।

ज्ञान न हो तो इंसान जी नहीं सकता। एक ने बोला, गुरुजी! हम बार बार भागना चाहते हैं पर भाग नहीं पाते। इसका कारण है हमारी सच्चाई। हमारा aim तुमको बनाना है, कोई लालच नहीं। परमात्मा की पूजा से इन्द्रासन तक मिल जाता हैं परमात्मा और मन की शांति और ऊपर की बात है। सब कुछ मिल भी गया तो क्या लाभ यदि मन की शांति न हो। अतः परमात्मा में ध्यान रखो, किसी चीज की कामना मत करो। तुम भगवान को हृदय से प्यार करो तो भगवान अपने आप आ जायेगा। देखो! बिल्ली दूध के लिये कैसे आती है? लाख दूध छिपा कर रखो पर वह पहचान जाती है। इसी तरह तुम लाख गुप्त भजन करो पर यदि तुम्हारे हृदय में भगवान की प्यास होगी तो भगवान तुम्हारे हृदय में घुस जायेगा।

तुम भगवान को हृदय में बिठाओ। तुम ज्ञान बांटो। तुम परमात्मा को इतना प्यार करो, हृदय को इतना जलाओ, हृदय को साफ कर लो तो परमात्मा आ जायेगा। शमा जलती है तो परवाना अपने आप आता है। शमा बुलाने नहीं जाती परवाने को। इसी तरह तुम भजन दिल से करोगे तो तुमको सत्संग के लिये किसी को बुलाना नहीं पड़ेगा, सब स्वयं आ जायेंगे। तुम ज्ञान बांटो–सबको आराम दो। सारी दुनियां सांसारिक तापों से जल रही है, उनको ठंडक पहुंचाओ ज्ञान सुनाकर।

मन ही शुक्राचार्य है जो कहीं न कहीं अटका देता है। मनुष्य राजा बलि जैसा है पर मन शुक्राचार्य जैसा है जो अच्छा काम करने नहीं देता। ये तो गुरु ही है जो मन को बदलता है।

एक मिनट में क्या से क्या हो जाता है–पता नहीं चलता। अतः शूभ कर्म करो, शुभ कर्म ही साथ जाता हैं आखिर भी तो सब छोड़कर जाना है तो आज क्यों नहीं किसी का भला कर देते। एक एक का धन्यवाद करो, शुकराना मनाओ।

संसार में एक से एक त्यागी पड़े हैं। तुमने देखा कहां है? ऐसे भी त्यागी हैं जो सब कुछ करके भी किसी से किसी वस्तु की चाहना नहीं रखते। तुम तो अपने को बहुत त्यागी समझते हो और हक की बात करते हो। उसको मेरे साथ ऐसा करना चाहिये, ये देना चाहिये।

मांगने की क्या जरूरत? क्यों इच्छा रखते हो? भगवान को देना होगा तो छप्पर फाड़कर दे देगा। जिस हृदय में कोई न हो उस हृदय में भगवान आता है। जिस हृदय में खाली एक भगवान बैठा हो तभी भगवान खुश होता है।

24.8.87

इंसान क्या से क्या सोचता है और होता क्या है? धन की उपयोगिता तीन रूप में होती है: भोग करे, दान करे या बर्बाद करे। भक्ति बड़ी कठिन चीज है। या तो भक्ति होती नहीं और होती भी है तो अनेक बाधाएं आती हैं ताकि मनुष्य की भक्ति नाश हो जाए। फिर भी जो भक्त भक्ति कर ले जाता है तो वह भक्त महान है।

भजन शुद्धता पवित्रता में ही टिकता है। सांसारिक विचारों में भजन टिक नहीं पाता। राम राम जपने वाले को Nature भी मदद करती है पर

मनुष्य राम को भूलकर काम को ही याद करता है। बिना तत्व ज्ञान के कभी शांति नहीं और वह तत्व ज्ञान गुरु से ही मिलता है।

हरिनाम से ज्यादा यदि कुछ भी अन्दर आता है तो गुरु से दूरी हो जाती है।

नामरूप नाश है, ब्रह्म का प्रकाश है। गुरु ही ब्रह्म है, ब्रह्म ही गुरु है। जब खुदी (अहंकार) मिटती है तभी यह अनुभूति होती है। गुरु की आज्ञा के सांचे में जो अपने को ढाल लेता है उसी का कल्याण होता है। (अपने) मन की करने से कल्याण नहीं होता।

गुरु वाक्य सत्यम जो मानता है, वही असली भक्त होता है। मनमुखता से चलने वालों का कल्याण नहीं होता। जब भक्त अपने को गुरु भगवान का चाकर मानता है तो गुरु (मालिक) जैसा कहे वैसा करना ही अच्छा होता है। मन कड़े बांस की तरह होता है। मुलायम (मन) तभी बनता है जब गुरु वाक्य पर चलता है।

गुरु वाक्य रूपी सांचे में अपने को ढाल लो। टालने से ही वस्तु सुंदर सुडौल बनती है। निःस्वार्थ प्यार ही सच्चा प्यार होता है। स्वार्थ का प्यार मजदूरी का प्यार होता है।

जगत में कोई अपना नहीं है पर मनुष्य मोह के मारे जगत की तरफ भागता है। कभी गुरु की तरफ जाता है, कभी जगत की तरफ। एकतरफा होने पर ही भला है। या तो जगत के ही होके रहो या गुरु के होके रहो। दो तरफा मनुष्य कहीं का नहीं रहता।

गुरु की आज्ञा मानने के लिये हमेशा मिलिट्रीमैन की तरह तैयार रहना चाहिये। तभी माहासक्ति से दूर हो सकते हो। गुरु तो अपने शरीर में भी नहीं टिकने देता—ऊपर ही चढ़ाता है। जब गुरु अपनी देह में ही नहीं टिकने देता तो दूसरों (की देह) में कैसे टिकने देगा?

Intelligent mind को ज्ञान में लगाना चाहिये। बाहरी भौतिक विद्या में केवल जानकारी होती है पर आध्यात्मिक विद्या आन्तरिक ज्ञान की होती है जिससे मनुष्य का कल्याण होता है।

अंदर की सच्चाई काम करती है। जब हम विषय की वजह से प्यार करेंगे तो कोई हमसे नहीं डरेगा पर जब हम भगवान के ध्यान में, ब्रह्मचर्य

में रहेंगे तो ये मर्द भी हमको देखकर डर जायेंगे। अतः पहले पहले हमको स्वयं ब्रह्मचर्य में होना चाहिये। हम ऐसा करते हैं तभी लोग हमको गुरु मानते हैं।

विकारी (शरीर) में निर्विकारी को मानना बड़ी कठिन बात है। क्योंकि मन में आता है कि ये (गुरु) भी तो सब कर्म करता है हमारी तरह फिर भगवान कैसे हुआ? लेकिन सच्चाई होगी तो विकार देखते हुए भी मन उसमें नहीं जायेगा। क्रिया तो निरासक्त होकर भी की जाती है। इन्होंने (उपस्थित लोगों ने) विकार भी देखे हैं, कर्म भी देखे हैं फिर भी क्यों नहीं भागते हमको छोड़कर? इसका कारण है अंदर की सच्चाई। जगत में रहकर कर्म तो करना ही पड़ता है पर सवाल वृत्ति का होता है। भगवान में जिसकी वृत्ति है, वही भगवान है।

तुम हमारी खोल (शरीर) देखकर भ्रम में पड़ते हो कि ये कैसे भगवान हैं? पर खोल के अंदर पोल (कुछ नहीं) है। तुम हमारी क्रिया देखते हो तो सोचते हो ये तो शादी में भी जाते हैं दावत में भी जाते हैं पर कोई हमारे बिना तड़प रहा हो तो हम क्या करें? कैसे न जाएं? किसी के भाव से ही हम खिंचकर जाते हैं। ये करुणा हमारे बिना तड़पती थी तो इसकी लड़की की शादी हमको न चाहते हुए भी जाना पड़ा। क्या करें? हम भक्त के वश में होकर मजबूर हो जाते हैं।

सन्यास बाहर से नहीं होता। वह खुद ही हो जाता है। हम ये करें हम यह न करें—यह भी कर्त्तापन का अहंकार है। आज हम गृहस्थ में हैं—हज़ारों का कल्याण भी कर रहे हें। सन्यास लेकर कहीं जाने पर इतनों का कल्याण केसे होगा? अभी ये भक्त संसार से झल्लाकर हमारे पास आते हैं, इनको आराम मिलता है तो ये अच्छा है या सन्यास लेकर हरिद्वार चले जाना अच्छा है। फिर टाइम पर सब अपने आप होता है। न हमने किसी के कहने से ज्ञान लिया, न किसी के कहने से सत्संग किया और न किसी के कहने से सन्यास लेंगे।

हमारा गृहस्थ में रहना न चाहते हुए भी ज़रूरी है। करना नं करना हमारे हाथ में नहीं है। जो हो रहा है अपने आप हो रहा है। हम ये करें, ये न करें, ऐसा न सोचकर हर हालत में खुश रहें यही कल्याण है।

ये जो अच्छा अच्छा देख रहे हो वह झूठ है, जो बुरा देखते हो वह

भी झूठ है। टिकने वाला कुछ भी नहीं है फिर शब्द के ऊपर हम क्यों मरें?

25.8.87

किसी मनुष्य के अंदर शुकराना पैदा हो जाए तो समझ लो उसकी जिंदगी बन गई।

अन्दर ही आनन्द है पर मन के चंगुल में पड़कर मनुष्य पहचान नहीं पाता। आनन्द के लिये इधर उधर भटकता है।

काशी जाओ मथुरा जाओ तीरथ करो तमाम,
सत्गुरु की संगत नहि किन्हीं मिले न आतमराम।

पहले से वैराग्य का अभ्यास करो तो जीवन बचा रहेगा।

संसार में मनुष्य का टाइम आशा निराशा में बीतता है तभी दुख मिलता है। हम दूसरे से आशा रखते हैं और वह न मिली तो हम दुखी होते हैं। इस तरह तो हम जिंदगी भर जलते रहेंगे क्योंकि सब अपनी चाल चलेंगे–हमारे मन की हमेशा तो नहीं चलेगी तो हम दुखी सुखी होते रहेंगे तो जीवन ऐसे ही बीत जायेगा आशा निराशा के झूले में झूलते झूलते। अतः आशा निराशा दोनों को छोड़कर यही सोचो कि हर बात में भलाई होती है।

मनुष्य को कभी खाली नहीं बैठना चाहिये। खाली मन हमेशा खुराफात करता है। हम तो हमेशा कुछ न कुछ करते रहते थे और अभी भी करते हैं।

गुरु ने ज्ञान देकर सब बातों के बंधन से छुड़ा दिया। तुम कैपड़े जो चाहो पहन सकते हो, खाना जो चाहे खा सकते हो पर भजन कर सकते हो। पहले भजन में बंधन थे–शुद्ध कपड़ा पहनो, नियम से रहो, परहेज से रहो लेकिन उनकी चित्त में खटखट ही रहता था पर आज कपड़ा कैसा भी हो, चित्त परमात्मा में हो तो भजन असली है। देखो! पूजा बच्चा है–भजन करती है।

तुम्हारा मन भजन में लगा हो, गुरु से प्रीत लगी हो तो प्रकृति भी साथ देती है। एक भक्त का मन भगवान में था। भगवान की आज्ञा में गाय पालता था तो गुरु की आज्ञा थी एक हजार गाएं हो जाऐ तो आ जाना।

तो उसको भगवान में इतनी बेहोशी थी। जब गायों ने ही कहा कि अरे! हम हजार से ज्यादा हो गए हैं गुरु के पास जाओ। एक बार गुरु की आज्ञा में ऐसे लीन हो जाओ फिर देखो प्रकृति भी तुम्हारे आगे आगे नाचेगी।

मनुष्य को गुरु से कोई नहीं छुड़ा सकता। जब तक उसका मन गुरु में लगा होता है। पर मन गुरु को इतना महत्व देता नहीं है। गुरु के प्रेमी को कोई छुड़ा नहीं सकता। एक पागल मुझे गुरु मानता था। वह मेरे दर्शन के बिना नहीं रह सकता था तो लोग उसे जंजीर में बांध देते थे तो वह जंजीर तुड़ा कर भी दर्शन को भाग आता था।

जब तू राम राम करता है तो तेरे को कोई बंधन डालने वाला नहीं होता पर तू इतना राम राम करता नहीं है। गुरु के यहां हस्ती को एक बार मिटाना पड़ता है फिर देखो कैसा राज मिलता है। गुरु के यहां तो राजा भी झाड़ू लगाते हैं।

ब्रह्मज्ञानी की मनसा वाचा कर्मणा से सेवा करनी पड़ती है। गीता में साफ लिखा है कि तुम ब्रह्म ज्ञानी के पास जाकर उसकी सेवा तन, मन धन से करो। तभी तुमको ज्ञान मिल सकता है। गुरु के यहां हस्ती को मिटाना पड़ता है।

"न पाई किसी ने मुहब्बत की मंजिल।" यहां रगड़ाई करनी पड़ती है। देखो! लैला के सिवा मजनूं के लिये भगवान भी कुछ नहीं था तो आज उसका नाम लिया जाता है जबकि वह सांसारिक प्रेम था तो भगवान का प्रेम क्या कीमत नहीं मांगता। भगवान के लिये भी मजनूं जैसा प्यार करना पड़ेगा। तुम्हारे तो मन की नहीं होती तो तुम भागने लगते हो तो कैसे तुम्हारा प्रेम पूर्ण होगा। तुम आग पकड़ने जाते हो (गुरु को छोड़कर माया में भागते हो) तो तुमको रोना पड़ता है।

इस आंख में प्रभू के सिवा किसी को भी बिठाओगे तो बंधन अपने आप आएगा। आंखों से ही भगवान मिलता है और आंखों से ही भगवान चला जाता है। अतः आंखें बचाकर रखो। **"दिल ने जिसे पाया था, आंखों ने गंवाया है।"** अतः आंखें खाली प्रभू के दर्शन के लिये बचाकर रखो।

गुरु पैसे से, किसी की सुंदरता से किसी के पीछे नहीं जाता–दर्द पीड़ा से जाता है। लोग कहते हैं गुरु तो हमारे यहां नहीं आता, हमारे यहां नहीं खाता। क्यों आए गुरु? नज़र तो तुम्हारी संसार में है, माया में, धन

में है और गुरु आ जाए–ऐसा नहीं हो सकता। जिसके हृदय में, रोम रोम में राम है। हम उसी के गुरु हैं, उसी के यहां जाते हैं। हम सब बात सह सकते हें पर तुम ये कहो कि हम पैसे के साथी हैं तो हम ये नहीं सह सकते। हम तुम्हारे प्रेम से आते हैं–गरीबी अमीरी को नहीं देखते।

गुरु तुम्हारी चाल अच्छी नहीं देखेगा तो अवश्य बोलेगा क्योंकि वह तुमको बनाना चाहता है। आज तुम भगवान के सिवा कहीं भी मन लगाओगे तो गुरु को पसंद नहीं आएगा। प्रकृति भी दंड देगी। अतः सावधान हो जाओ। भगवान से ज्यादा किसी को भी प्यार करोगे वहीं छुटा छुटी होगी। अतः तुम्हारा कैसा भी भगवान हो, प्यार करो। जगन्नाथजी की मूर्ति काली काली है पर लोग उसी को पूजते हैं क्योंकि उनको उसी से प्रेम है।

भगवान का भक्त कभी free नहीं है। हनुमान भी ऐसा ही भक्त था तो आज भी उसकी पूजा होती है। हनुमान ने कब तुमको पूजा करने के लिये बुलाया? तुम्हारी गरज है तो तुम्हीं फूल माला लेकर पूजने जाते हो। हमने भी तुमको पूजा करने के लिये नहीं बुलाया लेकिन तुम कहते हो पूजा कराते हैं। हमको कोई गरज नहीं तुम खुद ही पूजा करते हो।

एक राजा बुढ़ा होता है, दूसरा पैदा होता है। पूजा के लक्षण देखकर ऐसा लगता हैं। हम भी छोटे थे तो सोचते थे सब बेकार है, सब झूठा है। हमको एकान्त पसंद था। स्कूल में खाने की छुट्टी होती थी तो हम नदी किनारे घंटों बैठते थे, पता नहीं क्यों बैठते थे? लोग हमको कहते थे, तुमको मसानी खा जायेगा पर हमको डर नहीं लगता था।

हमको गुरु से बहुत प्रेम था। उनके घर हम मसाला पीसते थे, उनके बाल बच्चों की सेवा करते थे। गुरु माता गाय दुहने जातीं तो हम भी जाते। उनके चलने में पैरों की आवाज नहीं होती थी। ये गुण हमने उनसे ही सीखा। आज भी हमें याद आता है उनका चलना। हमारे श्रीगुरु रामदत्त अवस्थी थे। दिनेश चन्द्र अवस्थी और प्रकाश चन्द्र अवस्थी उनके दो लड़के थे। बहन एक थी उसका दिमाग कमज़ोर था। हम उनके घरभर की सेवा करते थे। मेरी मां भी उनको बहुत मानती थी। हम उनके घर को गोबर से लीपते थे–बर्तन भी मांज देते थे। जो सेवा तुम लोग आज हमारी करते हो वही सेवा हमने अपने उस गुरु की की है। बिना सेवा कोई भी ज्ञानी नहीं हो सकता। तुम सोचते हो इन्होंने तो सेवा नहीं की पर बिना सेवा किये कोई ज्ञान नहीं पा सकता।

पूजा शुरू से राजकुमारी जैसी पल रही है। इसका कारण है इसक पूर्व कर्म। अपना कर्म अपने को ही मिलता है। इसने पूर्व जन्म में इतनी तपस्या की है तभी हमारे घर में जन्म लेकर आई है। गीता में भी लिखा है जो मनुष्य योग करते करते शरीर छोड़ देता है और योग शेष रह जाता है वह योग को पूर्ण करने के लिये पुनः श्रीमान के घर में जनम लेता है। फिर योगी के घर में जन्म लेने के कारण हर समय योग में रहता है और अंत में मुक्त हो जाता है। यही पूजा का हाल है।

प्रेम अमूल्य हीरा है। उसको सलामत रखना पड़ता है। गुरु से एक बार प्रेम हो जाये तो उसको सलामत रखना चाहिये। बेअदबी से प्रेम नाश हो जाता है। अतः गुरु से कभी बेअदबी से बात नहीं करना चाहिये। गुरु का मिलन तभी होता है जब हमारे पूर्व संस्कार अच्छे होते हैं। हम किसी भी भक्त को बुलाने नहीं जाते चाहे वह कार वाला हो या झोपड़ी वाला हो। मुझे कोई लालच नहीं है। मुझे मालूम है सच्चाई है तो सच्चाई हमेशा जीतेगी। जिसने एक बार अमृत पिया हो, वह दुबारा अवश्य आएगा क्योंकि उसके बिना वह रह नहीं पाएगा। जायेगा चार दिन भटकेगा इधर उधर फिर अमृत पीने आएगा अवश्य। जो देसी घी एक बार खाएगा वह बार बार घी खाने आएगा।

प्रश्न श्रद्धा और विश्वास के बिना क्या प्रेम संभव है?

उत्तर प्रेम क्या है? कैसे बताया जाय। जिस प्रकार चुम्बक के पास लोहे को ले जाओ तो न चाहते हुए भी लोहा चुम्बक से चिपक जाता है, उसी प्रकार गुरु के सामने जाने पर कुछ भी श्रद्धा प्रेम न हो फिर भी मनुष्य खिंच जाता है और प्रेम, श्रद्धा स्वतः हो जाती है।

प्रश्न गुरु जो गुस्सा करता है वह क्यों करता है?

उत्तर जब हम कोई काम अनुचित करेंगे तो गुरु अवश्य गुस्सा होगा।

राम नाम की रगड़ाई करने पर सब छूट जाता है। जिसका pure heart होगा, उसको परमात्मा का आनन्द अवश्य आएगा। तुम्हारे अंदर जैसे जैसे सच्चाई आएगी, तुम्हारा भजन कोई रोक नहीं पाएगा। दुनिया बोलती है–शब्द तुम्हारे कहां चिपक गए? शब्द को छोड़ो–भगवान की भक्ति सच्ची करो तो भगवान एक दिन रख भी लेगा।

शंकर जी भांग खाकर चेष्टा से रहित हो जाते हैं–हमने क्यों कहा?

अपनी हालत देखकर ही कहा। हम भी राम नाम की बूटी इतनी पी लेते हैं कि चेष्टा से रहित हो जाते हैं इसीलिये उनकी (शंकरजी) दशा को हम जान सकते हैं। वे भांग मे नशे में नहीं रहते—वे राम नाम रूपी भांग के नशे में लीन रहते हैं। राम नाम का नशा ही भांग खाए जैसा होता है।

26.8.87

जो भजन करता है उसकी पूजा हो गई। जो सत्संग में आया उसकी पूजा हो गई। घर से चले काहे के लिये? सत्संग के लिये। भगवान के लिये आना याद रखना सब पूजा ही तो है। मानसिक पूजा यही है। एक होती है स्थूल पूजा पर मानसिक पूजा श्रेष्ठ है। तुम ज्ञान लेने आते हो—यही पूजा है। गीता में साफ लिखा है—ज्ञान यज्ञ से मैं पूजित होता हूं। अतः बाहरी पूजा से आन्तरिक पूजा, मानसिक पूजा का ज्यादा महत्व है।

सब भगवान की ही इच्छा से होता है अतः भगवान को नमस्कार करो।

नौकरी कर तू एक ओंकार की, चाकरी कर तू एक ओंकार की। और सलाम भर या न भर। अतः परमात्मा परमात्मा करो परमात्मा से ही प्रेम बढ़ाओ। प्रेम ही महत्वपूर्ण है। पर प्रेम करो तो फंसो नहीं। फंसना बुरा है—प्रेम करना बुरा नहीं है। गाड़ी में ब्रेक सही होगा तो मौके पर ब्रेक लग जायेगा नहीं तो accident हो जायेगा। उसी प्रकार प्रेम तो करो पर प्रेम में ब्रेक लगाना भी सीखो। किसी में फंसना नहीं चाहिये—आगे बढ़ना चाहिये।

जहां राम भूलता है, संसार का दुख कष्ट व्यापता है:

जब भूली तू आपको तब व्यापे संसार।

बाहर की क्रिया करना बहुत सरल है—अन्तरात्मा में डूबना बहुत कठिन है। तुम आत्मनिश्चय करो। आत्मनिश्चय बिना आराम नहीं है। तुम गुरु की सेवा पूजा करो। जब वह खुश होंगे तुम्हारी सेवा से, तब वह तुमको तत्वज्ञान देंगे। अतः ज्ञानी की सेवा करो।

मन जड़ है, बुद्धि भी जड़ है, एक परमात्मा ही चेतन है पर देखने में मन चेतन लगता है। ज्ञानी मन की जड़ता को स्पष्ट कर देते हैं। मन विषय वासना में भूल जाता है फिर ज्ञान ले लेकर उठाना पड़ता है। व्यक्ति जीव भाव की उपाधि में है। गुरु उसी को तोड़ता है। ज्ञानी मनुष्य को जगत के नामरूप में फंसने नहीं देता। हम तुम सबको इसीलिये गाली देते हैं

कि तुम जगत के झूठे नामरूप में न फंसो। सब जगत सपना है। जो कल था, वह आज नहीं है। ज्ञान रूपी जल घट में इतना भर लो तो कभी कमी नहीं होगी।

योगी की मन इंद्रियां योगी के वश में होती हैं। वह कहीं नहीं फंसता। हम तुमको भी ऐसा ही बनाना चाहते हैं। जगत में रहकर भी जगत से अलग रखना चाहते हैं। जनक राज करते हुए भी राज से विरक्त था ऐसा ही तुमको बनाना चाहते हैं।

जगत तो एक दिन छूटना ही है फिर पहले ही जगत से अलविदा लेकर बैठो। योगी उठता, बैठता, खाता पीता भी सबसे अलग योग में होता है। तुम औरत मर्द के भेद में रहते हो पर सब जड़ है। परमात्मा न मर्द है न औरत है। औरत मर्द के भेद की उपाधि में तुम मत फंसो।

आज तीज का व्रत है तो सब सुहाग का व्रत करते हैं और शंकर की पूजा होती है। तो गुरु को तुम शंकर मानकर आज पूज रहे हो। तभी कहा है:

ब्रह्मा विष्णु महेश गुरु हैं, गुरु को सर्वे सर्वा बोल

और शास्त्रो में भी कहा है:

गुर्रुब्रह्मा गुर्रुविष्णु, गुर्रु देवो महेश्वरः

तुम पहले बालू के शंकर बनाकर पूजा करते थे, आज गुरु को शंकर मानकर पूजा करते हो तो मानसिक पूजा ही हुई। तुम जब पत्थर में, बालू में शंकर मानते हो तो इंसान में, गुरु में भी शंकर का रूप है। पहले तो तुम खास दिन पूजा करते थे, आज तुम नित्य पूजा करते हो।

पहले तो गुरु में संशय होता है फिर धीरे धीरे वह भी खतम हो जाता है। व्रत भी भूल जाता है क्योंकि गुरु से पता चलता है कि सब सलामती भगवान ही रखता है। तुम जब दिन रात भजन में ही थक जाते हो तो और क्या करने का समय तुम्हारे पास कहां रह जायेगा। वह तो क्रिया कर्म जो कुछ नहीं करता उसके लिये व्रत तीरथ रखे गए हैं कि कुछ न करने से तो कुछ भी करो।

बस एक परमात्मा को जानकर उसी में निश्चय करो–मैं ब्रह्म स्वरूप हूं इस का निश्चय करो। नामरूप के कारण परमात्मा से जुदाई है। नामरूप का नाश होते ही मनुष्य परमात्मा से जुड़ जाता है। देह कपड़े के समान है। जैसे कपड़ा आज कुछ पहना, कल कुछ पहना पर (पहनने वाला) मैं वही हूं, मैं नहीं बदला अर्थात मैं आत्म स्वरूप हूं।

ब्रह्म की बात करने से ब्रह्म स्वरूप नहीं बनता। निश्चय करने से ब्रह्मस्वरूप होता है। ब्रह्म की बात करना और बात है। गुरु को नमस्कार करने पर ही अहंकार का नाश होता है। तभी ब्रह्मस्वरूप का भास होता है। गुरु के बिना अहंका का नाश कोई नहीं कर सकता।

तुम पहले से भजन का अभयास करो। तुम तो मरने के समय बोलते हो ॐ सुनाओ। पर पहले तो आग बुझाने के लिये पानी नहीं रखा अब आग लग गई तो हम क्या करें। परमात्मा का ज्ञान बुद्धि से तर्क से नहीं प्राप्त होता। जब बुद्धि लीन हो जाती है तब परमात्मा का ज्ञान होता है।

28.8.1987

जब मां–बाप गुरु गुरु करते हैं तो बच्चे भी गुरु गुरु करते हैं। लोग डरते हैं कि हम सत्संग जायेंगे तो बच्चे खराब हो जायेंगे लेकिन वे नहीं जानते कि उनके जाने से उनके बच्चे चेतन भगवान को पूजेंगे। चेतन से प्रत्यक्ष फल मिलता है। चेतन गुरु से जो फायदा मिलता है वह निराकार से नहीं मिलता।

30.8.1987

जेसे भौतिक विद्या में रिसर्च होती है, उसी प्रकार हम भी रिसर्च करते हैं। हमको रिसर्च की तनख्वाह (जो खाते पीते हैं) मिलती है। मन किस धातु का बना है, कैसा बना है–हम यही रिसर्च करते हैं। सही रिसर्च करके हम उसी प्रकार बोलते हैं। जो बात हम बोलते हैं वह तुम्हारे में होती है तभी हम बोलते हैं।

दृश्य का असर मन पर अवश्य पड़ता है। बुरे दृश्य का असर बहुत जल्दी पड़ता है। अच्छे दृश्य का असर जल्दी नहीं पड़ता है। मन कुत्ते की पूंछ की तरह है– उसको बार बार सीधा करने पर भी टेढ़ी ही रहती है। इसी प्रकार मन भी बार बार बुरे दृश्य पर जाता है और उसी का असर

जल्दी पड़ता है। दृश्य की ही वजह से परमात्मा खोया हुआ है। शब्द का भी असर मन पर पड़ता है। इसी से उपराम कराकर गुरु अशब्दी बनाता है।

"अशब्दी ब्रह्म पद पाय के, ज्ञानी हुआ निर्वान।"

जो भजन में आने के बाद पुनः संसार में जाता है तो दारुण कष्ट पाता है। मन हमेशा जलाता रहता है। चिता तो एक बार जलाती है पर मन हमेशा जलाता रहता है। आराम नहीं आता–आराम तभी मिलेगा जब मन की जलन शांत होगी।

हर आदमी चाहता है पहले नम्बर की कुर्सी मिले पर कुर्सी उसी को मिलती है जो उतना त्याग करता है। भजन करने वाला कुर्सी और इज्जत चाहे यह कैसी बात है?

"चखना चाहे प्रेम रस, रखना चाहे मान" तो ऐसा नहीं हो सकता। जो राग द्वेष करता रहता है, जलता रहता है, उसको कुर्सी कभी नहीं मिल सकती है। जो परमात्मा के नाम पर इतना त्याग करता है, अपने जीवन को होम करता है भगवान के नाम पर उसको कुर्सी मांगनी नहीं पड़ती बिना मांगे मिलती है। जैसी जैसी अंदर से निर्वासना होगी वैसी वैसी कुर्सी मिलेगी। प्रेम इज्जत मिलेगी। जैसे जैसे सोचोगे हमको कुर्सी मिले, वैसे वैसे कुर्सी दूर हो जायेगी। मांगने से अच्छा है, राम राम करो। आज तुमको कुर्सी मिली है तो समझो गुरु की तुमने इतनी गुलामी की है। जब तक सरकार की गुलामी की सरकार ने कुर्सी दी। आज कुर्सी कैसे मिलेगी जबकि तुमने सरकार की गुलामी छोड़ दी? ये भी सरकार भगवान की कुर्सी है। हम सरकार हैं। उसमें भगवान में हमारा रग रग डूबा होगा तो हमको कुर्सी अवश्य मिलेगी पर चित्त जगत के नामरूपों में डूबा रहे तो कैसी कुर्सी, काहे की कुर्सी? ये कुर्सी सच्चाई की है। जो परमात्मा देता है कोई व्यक्ति नहीं देता।

परमात्मा के लिये तुम्हारी भक्ति में सच्चाई, भोलापन जरूरी है–बुद्धि की चतुराई नहीं चलेगी। चाहना ही दरिद्रता है। ईश्वर का भजन कहीं भी हो सकता है। कुर्सी पर ही भजन हो ऐसा नहीं है। ये तो किसी की शारीरिक परेशानी है तो उसको कुर्सी दी जाती है पर भजन जमीन पर भी बैठकर हो सकता है। भगवान खाली यही देखता है कि उसका चित्त प्रभू में डूबा है–वह आगे पीछे या कुर्सी नहीं देखता। मन कैसे कैरम खेलता

है–बहुत छछंदर फैलाता है। कुछ न कुछ हूँ– बताता रहता है। पर कुछ नहीं हूं ऐसा सोचे तो सब कुछ हो जाए। मन बड़ा दुष्ट पापी है–तुमको दुखी करता रहता है। किसी तरह चैन नहीं लेने देता। कैकेई के मन की तरह उलझा उलझा रहता है। मन ही कमीना दुष्ट पापी है। मन के कारण ही, सब दुखी हैं। जो बहुत मन चलाता है–उसका Half mind हो जाता है। इसीलिये कहा है:

राजा दुखिया परजा दुखिया,
सकल सृष्टि का राजा दुखिया,
सो सुखिया जो नाम अधार।

उलझे हुए मन से आराम नहीं मिलता। स्थिर बुद्धि बनाओ। कैसी भी अवस्था आए स्थिर रहो।

मन मति त्यागे प्राणी, गुरुमति ग्रहण कर।

सीधे सीधे राम राम करो। जब राम राम करोगे तभी दुख सुख हानि लाभ में एक से रह पाओगे। मन जगत को सत्य मानकर रोता हता है। असत्य होते हुए भी सत्य सा मानकर दुखी होता है इसीलिये कहते हैं कि देवता भी दुखी हैं क्योंकि उनके पास भी मन है जो सारे ऐश्वर्य और भोग होते हुए भी उनको रुलाता रहता है।

जहां ईश्वर भूला, समझो मरा। जलनेवाला खुद परेशान होता है। मोह के कारण ही दुख है। मेरी गाली गलत तो होती ही नहीं अगर गलत होती तो तुम इतनी गाली खाकर दुबारा तो आते ही नहीं। जिसके मन की नहीं होती है वह छोड़कर बैठ जाता है। जल जलकर गुरु को छोड़का जाती है सुखी होने, पर जगत में सुख हो तो मिले–फिर परेशान होकर लौटती हैं।

गुरु को नीचा करे और पदवी चाहे–ऐसा हो नहीं कता। पदवी गुरु के द्वारा ही मिलती है। जो भी पदवी आज मिली है वह गुरु के द्वारा मिली है। यदि सच्चा भगवान होगा तो तुम प्रभू प्रभू करो तो तुमको कोई हटा नहीं सकता। कोई भी ख्याल होगा–राग, द्वेष, भय–तो भजन नहीं हो सकता। तुम क्यों चिंता करते हो? तुम मन के साथ दोस्ती करके बैठे हो तभी भजन नहीं होता।

चिंता मत करिये। चिंता करने से हमारे शरीर पर effect होता है। फिर जो होना होता है वही होता है। हमारा शरीर कमज़ोर पड़ जाता है। कोशिश तो करे पर परेशान न हो। लेकिन मनुष्य का हाल है कि कोशिश कम करता है परेशान ज्यादा होता है। जो होना होता है, जो भाग्य में होता है सब अच्छा ही होता है।

जो सवाली सवाल लेकर सत्संग में आता है उसका सवाल हल हो जाता है। किसी एक के होकर रहो तो जगह मिलगी। गुरु के पास। एक कुत्ता सड़क का होता है, एक मालिक का होता है। मालिक के कुत्ते के गले में पट्टा होता है तो मालिक उसका रख रखाव करता है पर बिना पट्टे (सड़क का) कुत्ता भटकता ही रहता है। अतः एक के होकर रहो।

दुनिया में तो अनेक परेशानी आती है पर हिम्मत से काम लेना चाहिये। अपना दुश्मन मनुष्य आप है। सोचता है–मैं मां हूं, बाप हूं तभी चिंता करता है। सब भगवान पर छोड़ो। त्वमेव माता च पिता त्वमेव ऐसा सोचो तो तुम्हारा सब काम भगवान करेगा।

जिसका मन आया हो, उसको छुओ नहीं। देखो! नदी में बाढ़ आती है तो लोग उसके पास डूब जाने के डर से नहीं जाते। उसीतरह मन भी एक तूफान है जो खराब होगा तो दूसरे को भी उड़ा ले जायेगा। अतः मन वाले से मत मिलो, उसको मत छुओ।

जिस समय कोई ख्याल नहीं होता उस समय मनुष्य योग में होता है। क्या ख्याल करना इस नश्वर जगत के लिये? जो मन मति में रहता है वह कभी शांत सुखी नहीं रहता। चाहे मथुरा जाए चाहे काशी। वहां भी शांति नहीं मिलेगी। योगी बनकर रहो तुम अकेले तो हो ही नहीं, तुम्हारे पास तो गुरु है, भगवान है। फिर तुम कहां अकेले हो? जिसके साथ भगवान होता है वह कभी अकेला नहीं होता। तुम औरत भाव में रहती हो तो सोचती हो, मैं कमजोर हूं, अकेली हूं। अभी तो सरकार ने भी तुमको आजादी दे रखी है। नौकरी कर सकती हो, घूम सकती हो, फिर किस बात से कमजोर हो? जब तुम त्याग वैराग्य में नहीं होते हो तभी कमजोरी आती हैं।

कल का भी भरोसा नहीं आज का भी भरोसा नहीं, फिर क्यों दुखी रहता है? यह सोचकर कि जो भाग्य में होगा वह अवश्य मिलेगा, जो नहीं होगा वह सर रगड़ने पर भी नहीं मिलेगा–शरीफ आदमी संतोष में हता है। संतोषं परम सुखम्। चिंता क्या करना?

एक दिन भगवान ने वाल्मीकि से पूछा–मेरे रहने का स्थान कहां है? वाल्मीकि ने बोला–जिस हृदय में रागद्वेष नहीं होता उस हृदय में आपका वास है। हृदय को साफ करने के लिये द्वैत से हटना पड़ता है। जब तक द्वैत है तब तक हृदय साफ नहीं होता। अद्वैत में आराम है। जहां तहां परमात्मा जानकर छोड़ दो। जहां तहां मैं ही हूं यही अद्वैत भाव है। तुम सबमें परमात्मा देखोगे तो काम बन जायेगा। ज्यादा खुशी में भगवान भूल जाता है, तभी खटखट होती है, परेशानी होती है।

भजन पहले है। बाद में काम होना चाहिये। शरीर में कष्ट है, मानसिक बीमारी है तो पहले डाक्टर के पास जाना पड़ेगा। डाक्टर की दूकान बंद हो जायेगी तो दवा नहीं मिलेगी। अतः पहले दवा लेना पड़ता है। इसी तरह भजन पहले करो काम बाद में जाकर भी हो सकता है।

हमको क्या चिंता करना है जब भगवान हमारी चिंता करता है:

सो साहब चिंता करे जिस उपजाया जग।

जो परमार्थ कमाता है वह सब घर की रक्षा करता है। संसार के रास्ते में जो कमाई करने जाता है, उसको तुम लोग अच्छा समझते हो पर परमार्थ में जाने वाला ज्यादा कमाई करता है–वही अच्छा होता है

31.8.1997

माला नहीं छूटती हम क्या करें? अभी तो हम सत्संग भी नहीं करते, खेती करते हैं फिर भी माला पड़ती है। बताओ क्या करें? हम तो चाहते भी नहीं कि माला पड़े, फिर भी पड़ती है।

गुरु महिमा इतनी क्यों बोली जाती है? क्योंकि वह हालत से परेशान आता है और बदल जाता है? आत्मनिश्चय में आकर बेख्याली में आ जाता है। बेख्याली का नशा आता है तो दुख नहीं व्यापता। जो बेख्याली में होता है, वह अकेला नहीं होता। जब वह खुद होता ही नहीं तो किसकी याद करे? "मैं मुआ तो खुद खुदा" हो जाता है।

पहले तीरथ व्रत करके भी खुद बने रहते थे तो खुदा जुदा ही रहता था पर अब गुरु के पास आने के बाद खुदी मिट जाती है तो खुदा बन जाता है। झूम बराबर झूम शराबी की सी हालत हो जाती है। आनन्दस्वरूप बन जाता है। एक बार आनन्द आ जाता है तो फिर जाता नहीं। ये पूजा

भगवान के नाम पर रहती है–इसीलिये हम इसको प्यार करते हैं पोती करके नहीं। जब तक भगवान से प्यार है तभी तक हम प्यार करते हैं। **"आत्मा सबमें है। इधर भी मैं, उधर भी मैं हूं। मैं हूं सबमें और न कोई" सर्व मम रूप है।"** जो गुरु के चरणों में अपना ego (अहंकार) डाल देता है वह समरूपी हो जाता है।

मेरे मुंह से जो एक बार ज्ञान सुन लेता है वह फिर कहीं जा नहीं सकता। हमने अपने खून को बहाया है–तुम सबके लिये कि तुम सब बन जाओ। जेसे मशीन में सरसों पेरकर तेल निकाला जाता है, उसी तरह हमने भी अपने शरीर को भक्तों के लिये पेरा है।

2.9.1987

एक नाव में बैठो–बुराई नहीं है। ये भी (भगवान हैं, वो भी भगवान हैं)। class by class अवस्था बदलती है, ज्ञान बढ़ता है। तो एक को मानो तभी अच्छा है।

एक जाने सदा पाक,
एक न जाने सदा नापाक।

प्रभुजी! (गुरुजी का पोता) पहले II में था, पढ़ा, ज्ञान बढ़ा तो बड़े class में गया। यह नहीं कि अब वह गुरु न बदले। बस बुद्धि बढ़ी तो बड़े क्लास में गया। इसी तरह अभी तक तुमने जो विद्या पढ़ी उससे बड़ी आध्यात्मिक विद्या है। इसके बाद आगे मुक्ति ही है। एक ही जगह कुंआ खोदने से पानी मिलता है।

सदगुरु तुम्हारे ख्यालों को रोक देता है। तुम परेशान नहीं रह सकते। तुम परमात्मा को जानो यह जगत नाटक है। हम लोग जगत को असत्य नहीं मानते जबकि यह असत्य ही है। हम भी कर्म करते हैं पर नाटक समझ कर करते हैं। शरीर का कोई भरोसा नहीं अतः योग प्राप्त करो।

तुम सबका योग यहीं होता है। लोग कहते हैं–योग करो। पर तुम्हारा योग खुद ही होता है क्योंकि तुम भगवान के लिये तप तप कर के आते हो तो योग भी तो हो ही जाता है। पहले जो काम दिन भर होता था वह अब मिनटों में हा जाता है।

ज्ञान के द्वारा ही मनुष्य स्थिरता में रहता है। जैसे मनुष्य भविष्य में

मुसीबत के वक्त जरूरत के लिये धन इकट्ठा करता है उसी प्रकार भजन भी हृदय में जल्दी जल्दी भर लो। उल्टी सीधी परिस्थिति में भजन ही काम आता है।

भजन कोई दूसरे के लिये नहीं करता, अपने लिये ही करता है। जो ज्ञान सुनाता है, सुनता है वह अपने लिये ही सुनता है। देखने में आता है हम तुमको ज्ञान सुनाते हैं पर हम खुद ही सुनते हैं।

जब हमारे प्रवृत्त होने से दस आदमी का फायदा होता है तो हम निवृत्त क्यों हों? हमसे दस लोगों को शांति मिलती है तो वह ज्यादा अच्छा है या सन्यास लेकर अकेले बैठना। अभी हमको विलायत जाने को मिल रहा था पर हम नहीं गए। हमको मालूम है यहां लोगों को हमसे शांति मिलती है। विलायत क्या देखना? वही धरती, वही आकाश। महल तो जंगल है, जहां एकान्त है वहीं महल है।

कपड़ा सफेद, रंगीन पहनने से कुछ नहीं होता। मन प्रभू के रंग में रंग जाए, आत्मनिश्चय हो जाए तो कपड़ा क्या भी पहनो तो क्या? सन्यास लेने से कुछ नहीं होगा। शरीर भाव से जो (व्यक्ति) ऊपर हो गया उसने सन्यास ले ही लिया। तुम लोग स्थूल त्याग सन्यास को सब कुछ समझते हो पर (असली) सन्यास इच्छाओं के त्याग को ही कहते हैं।

यदि हम कपड़े के त्याग को ही त्याग समझते हैं तो जानवर तो कपड़ा नहीं पहनते तो उनको त्याग है। Ego (अहंकार) के त्याग को ही त्याग या सन्यास कहते हैं।

3.9.1987

गुरु की कोई बुराई करता है और तुम उसकी बात को काट नहीं सकते तो समझ लो तुम गुरुमुख नहीं हो सुअर मुख हो। क्यों नहीं काट सकते? तुमको मालूम है–प्रभू के लिये भरत ने मां को, प्रळलाद ने बाप को, मीरा ने राणा को त्याग दिया क्योंकि वे प्रभू विमुख थे। जब गुरु में भगवद्भक्ति होती है तो गुरु प्रसन्न होकर भक्त वत्सलता में आकर ज्ञान देता है पर तुम गुरु को व्यक्ति मानते हो तो वह कैसे ज्ञान दे?

गुरु का संबंध रखने से सभी क्षेत्रं में कल्याण होता है। हमारे घर के बच्चे दादी नानी नहीं कहते। गुरु का सम्बोधन करते हैं तो ही राजाई ठाठ में रहते हैं। नानी दादी का रिश्ता तो संसारी है। गुरु के नाते से ही ये

राजाई ठाठ में रहते हैं–और किसी व्यक्ति भाव से नहीं।

भय बिनु होहि न प्रीति। बिना भय के भक्ति भी सही नहीं होती। सूरज, चांद, सागर सब भय से चलते हैं। अग्नि, वरुण सब भय से चलते हैं। भगवान का भय न हो तो सागर दुनियां बहा ले जाए, सूरज पृथ्वी को जला दे। इन सबको भगवान का भय है इसीकारण मर्यादा से सीमा में चलते हैं। इसी प्रकार भक्त भी जब गुरु के भय से चलता है तभी सही रूप से चलता है।

"दुःख दारू, सुख राग भया" जब मनुष्य पर दुख पड़ता है तभी भगवान को याद करता है नहीं तो भगवान को कोई याद कर ही नहीं सकता। इसीलिये दुःख ही अच्छा है जो मनुष्य को भगवान की ओर खींचकर तो लाता है।

जब कोई ख्याल नहीं होता तब आंखें बंद करो तो खाली खाली लगता है। ये खाली मन भजन से ही होता है। जब मन स्थिर होता है, तभी भगवान अंदर आता है। कहते हैं **"थिर मन ब्रह्म, अस्थिर मन संसार।"**

जो मन से खाली होता है, वही अच्छा होता है, आनन्द में होता है। दुनियां के धंधे तो होते ही रहते हैं। क्या भी हो, दुख आए, सुख आए, तुम ऊपर रहो। नीचे झाड़ू लगती है, भंगी रहते हैं। तुम ऊपर रहो। हवाई ज़हाज़ ऊपर चला जाता है तो नीचे का कुछ नहीं दीखता। भगवान भगवान करो। ये कूड़ा खजाना, जगत का तो अपने आप मिलता रहता है। पर मनुष्य मूर्ख है–जगत की तरफ ही भागता रहता है। पाने की इच्छा से देवी देवताओं को पूजता रहता है पर पाता कुछ नहीं। एक को ही पूजने से काम बनता है।

संतोषी माता जो आज से १५ साल पहले थीं भी नहीं, आज पूजा करते हैं संतोष मांगने के लिये पर संतोष एक को भी नहीं। जगह जगह सर झुकाते हैं पर शांति एक से भी नहीं मिलती। शांति केवल गुरु की शरण में ही मिलती है। एक जगह खोपड़ी बेचो, अहंकार भूत को खतम कराओ। देवी देवताओं की पल्टन खड़ी करने से क्या लाभ?

जो रोज व्रत नहीं करता वह एक दिन (व्रत) करे तो करने दो पर तुम तो रोज भगवान करते हो। भगवान पर दीवाने हो तो तुम्हारा तो रोज ही व्रत होता है। ज्ञान लेकर निष्ठा में, आत्मा में आकर, अज़र अमर अविनाशी हो जाना अच्छा है या कोल्हू में पिसना? अतः सच्चा व्रत है नित्य

भगवान का भजन करके निष्ठा में आ जाना।

तुम आत्मा हो। अमर हो। क्या जन्म दिन मनाते हो? जब तक मनुष्य आत्मा नहीं समझता तब तक जीवन में कभी आराम नहीं पा पाता। जहां माया मिलती है, मन भगवान पहले भूल जाता है। एक भी मनुष्य ऐसा नहीं जो भगवान के लिये त्यागी वैरागी बन सके। सब शादी के लिये, बच्चे के लिये रोते रहते हैं। जिन जिन की शादी नहीं हुई उनका मुंह लटका रहता है।

एक कैदी को तो जेल में ऐसे ही डाल देते हैं पर शादी वाले (कैदी) को गहना आदि पहना कर जीवन की जेल में डाल देते हैं और लोग खुशी खुशी उस जेल में चले जाते हैं। और बाद में जब कष्टों की मार पड़ती है तब दुखी होते हैं।

भगवान का भक्त कहीं आसक्त नहीं हो सकता। अभी हम लोग भी कहीं धन परिवार में आसक्त हो जाएं तो वहीं से आफत आती है। अभी हम पूजा (पोती) को प्यार करते हैं। अभी एक मिनट में छोड़कर जाना पड़े तो चले जायेंगे। फिर हमको याद भी नहीं आएगी। यही है निरासक्तता।

भगवान को मनुष्य जान जान कर भूल जाता है। भगवान से भी मनुष्य अपना धन चुराता छिपाता है कि कहीं चला न जाए पर भगवान जो सबको देने वाला है वह तुम जेसे कंगाल से क्या लेगा? सत्य नारायण की कथा में वह भक्त दण्डी भगवान के पूछने पर कि नाव में क्या है, कहता है कि लता पत्र है। तभी सब धन लता पत्र हो जाता है। फिर पछताकर दण्डी भगवान से माफी मांगने पर धन वापस आता है। अतः भगवान से कुछ नहीं छिपाना चाहिये।

तुम व्यावहारिक बुद्धि वाले के पास जाते हो तो तुम भी व्यावहारिक बुद्धि वाले बन जाते हो तभी भगवान से श्रद्धा हट जाती है। तुम श्रद्धालु प्रेमी का साथ करोगे तो तुम प्रेमी बन जाओगे। श्रद्धा तो टूटती बनती है पर प्रेम हो जाने पर कभी नहीं टूटता है। अतः प्रभू से केवल प्रेम करो।

मनुष्य समझता है कर्म नहीं करूंगा भगवान का भजन करूंगा तो कैसे होगा? लेकिन केवल भगवान के लिये मनुष्य अकर्मण्य होकर देखे तो पता चलेगा कि भगवान कैसे सहायता करता है। हम जब भजन करते थे अकर्मण्य से हो जाते थे पर आज देखो! कितना कर्म करते हैं। एक बार

अकर्मण्य होकर बाद में जब मनुष्य कर्म में आता है तो इसी को सन्यास कहते हैं।

मन अकर्मण्य होने कहां देता है? ख्याल विचार चलते रहते हैं तो अकमण्य कहां हुआ? एक बार जगत से घोर वैराग्य हो जाए, जगत की कोई वस्तु अच्छी न लगे तो बाद में वह घोर कर्म में भी रहेगा तो वैरागी होकर ही रहेगा। इसीलिये हम अपने भक्तों को कभी खाली नहीं बैठने देते। **पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं**।

तुम भी कर्म करो। कर्म के साथ ज्ञान लोगे तो कर्मयोगी कहलाओगे। हमको ज्ञानयोग से ज्यादा श्रेष्ठ कर्मयोग लगता है। तुम आज कर्म नहीं करोगे दूसरे के आधीन रहोगे तो कब तक पराधीन रहोगे। भजन करो और अपना कर्म करके अपने ही धन से अपना जीवन निर्वाह करो।

गुरु नाम को अमृत जैसा मानना चाहिये। गुरु नाम दाता मेरी संपदा है।" जो मनुष्य भगवान की सच्ची भक्ति करता है, उसको भगवान धन वैभव से भरपूर कर देते हैं। तुम शाही सड़क पर हृदय से चलो, उतनी चितवन प्रभू के अलावा कहीं न लगाओ तो भगवान भरपूर कर देगा। पर तुम्हारा हृदय, तुम्हारी चितवन दूसरी ओर होती है। तुम दूसरे को अपना आधार बनाते हो जो टूटने–छूटने वाला है तो भगवान कैसे सुख दे? तुमको तो जो जरा सा प्यार दे दे तो तुम उसी के हो जाते हो। लेकिन

तात मातु बंधु सखा आपनो न कोई,
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।

ऐसी भावना रखने पर ही भगवान मदद करते हैं। हनुमान की आंख राम में रहती थी तो उसकी पूजा होती है। सुग्रीव तो राजा था पर उसकी पूजा क्यों नहीं होती? कारण उसकी आंख तारा में लगी थी।

अतः परमात्मा परमात्मा करो। जो भगवान में होता है, वही सुखी होता है। तुम्हारी आंख टेम्परेरी होती है आज उसमें लगी है कल किसी और में।

हम किसी से नहीं डरते। चाहे वह गरीब हो या सेठ। हम तो उन सबको गाली देते हैं जिनकी नजर माया में होती है, भगवान में नहीं होती। भगवान की कृपा ही श्रेष्ठ कृपा है। अतः भगवान की ही ओर आंख लगाओ। भगवान चाहे तो सब सुख फटाफट मिलता है नहीं तो "**बहि बहि मरे बैल**

की नाई" होता है। अतः भगवान की कृपा पाने के लिये भगवान पर ही नजर रखो।

धन्ना भगत भगवान पर ही नजर रखता था–सो सेठ हो गया। तुम शांत रहो। तुम सबसे अपने मर्द औरत की, बच्चों की बुराई करते हो। कोई क्या दे देगा? कोई बुरा नहीं है। जो औरत अपने मर्द की बुराई करती है वह कुंजड़िन होती है। चाहे लाख मर्द सताता है फिर वही मर्द तुम्हारे काम आता है, तुमको खिलाता–पिलाता है। तुम हमेशा दूसरे की बुराई करती है– अपने को कभी बुरा नहीं समझती हो। पर तुम सबसे ज्यादा बुरी हो। तुम दूसरे के गुण देखो तो वह गुण तुम्हारे में आ जायेंगे। लेकिन तुम तो बुराई ही बुराई देखते हो। दूसरे की बुराई करने से पहले अपने को देखो तो पता चलेगा कि तुम सबसे बुरी हो। औरत को धीरज वाला होना चाहिये। मर्द कैसा भी अहंकारी हो, अगर औरत धीरज वाली होगी तो जीवन की गाड़ी घसीट ले जायेगी। अतः औरत को धीरज वाली होना जरूरी है।

लज्जा, नम्रता, दया, धीरज ये सब औरत के भूषण हैं पर आजकल की औरतों में ये गुण नहीं मिलते तभी आज घर घर में कलह है। औरत का मां बनना खाली झुलनी हिलाना नहीं है। औरत को उतना त्याग करना पड़ता है। जिंदगी लगा देनी पड़ती है। तब कहीं औलाद अच्छी बनती है।

जब औरत अपने मर्द की और मर्द अपनी औरत की बुराई करते हैं तब दुनियां कुछ देती नहीं बल्कि हंसी उड़ाती है। एक औरत जब झुकती मुड़ती है तब कहीं औलाद को खुशी दे सकती है। एक ही को मानो। दस से लाभ नहीं होता। एक भक्त देवी का भक्त था। परेशान था। बहुत देर देवी को मनाता रहा। देवी नहीं आई तो शंकर को मनाने लगा। देवी चली थीं कि शंकर भी चलने लगे। देवी ने पूछा शंकर से "कहा जा रहे हो?" शंकर ने कहा एक भक्त बुला रहा है। देवी वापस चली गई। कारण वह शंकर को पूज रहा था। शंकर को पहुंचने में देर लगी तो वह विष्णु को याद करने लगा। जब वह विष्णु को मनाने लगा तो शंकर आधे रास्ते से वापस चले गए। इसी तरह पांचों आ आकर वापस चले गए। कारण वह एक को नहीं मानता था। अतः एक के बनो तो एक के अटल होकर रहो तो वह काम करेगा।

सतगुरु मिला तब जानिये जब मिटे मन की ताप
हर्ष शोक व्यापे नहीं तब गुरु आपै आप।

जब तक हमको कष्ट व्याप रहे हैं, सुख दुख लग रहे हैं तब तक समझो हमारा काम नहीं बना। सतगुरु तुमको बनाता है। तुम्हारे मन की मार ताड़ करता है। गुरु जब निडर होता है तभी तुमको बनाता है।

मन मारन की औषधि सतगुरु देत बताए। जब तुम्हारा मन बन जाता है, गुरु तभी चैन लेता है। जो ब्रह्म में आरूढ़ होता है वही गुरु ब्रह्मज्ञानी होता है। ये दुख कष्ट परेशानी तभी तक आती है जब तक तुम भगवान में नहीं होते एक को नहीं मानते। जब एक को मान लेते हो तभी आराम आता है।

भगवान पारसमणि है उसी को मानो तो सब कुछ हो जाता है।

4.9.1987

गुरु को न छोड़कर सेवा में लगा रहे उसी का जन्म दिन मनाया जाता है। जो गुरु की सेवा में लगे वही जन्म सच्चा है। ये शिवरानी का बड़ा भाग्य है। ये गुरु की सेवा में लगी रहती है।

जिसके हृदय में हरि सुमिरन होगा,
उसका सफल क्यों न जीवन होगा।
गिरधारी म्हाणे चाकर राखो जी"

कोई चाकरी स्वीकार कर ले भगवान की प्रेम से और लगा रहे सो उसका बेड़ा अपने आप पार हो जायेगा। कोई काम ऐसा नहीं है जो न हो जाए। जो हृदय से प्रेम से भगवान की सेवा करता है उसका ध्यान स्वयं भगवान करता है और उसका काम एक नहीं हज़ार हाथों से करता है।

ये शिवरानी ऐसी ही है। अपना सारा काम छोड़कर गुरु सेवा में लगी रहती है।

7.9.1987

"जुगुत छूटे, संसार जोर न छूटे" गुरु अपनी प्रसिद्धि को झंझट मानते हैं। महफिल में जाना, शान मान में जाना, पहुंचे हुए गुरु पसंद नहीं करते। एक बार चैतन्य महाप्रभु गुरु की पहुंची हुई दशा देखकर सोचने लगे कि ये एक दिन बहुत प्रसिद्ध हो जायेगा तो मेरा भी नाम जग में प्रसिद्ध हो जायेगा। यह सोचते ही वे (गुरु) गायब हो गए। फिर कभी वापस नहीं आए। जब चैतन्य महाप्रभु ने ढूंढ़ा तो वे नहीं मिलें वे जमीन की मिट्टी

भी माथे पर लगाते कि यहां से मेरे गुरु गए होंगे।

दूसरे का सुख ही अपना सुख होना चाहिये।

8.9.1987

आना जाना कोई बड़ी बात नहीं है। गुरु के वचन पर चलो—ये बात है। चाल चलो उल्टी और सत्संग में आओ गुरु के पास तो ये गुरु को लजाना है। जो बात गुरु को नहीं पसंद है वह न करो। ज्ञान में सही सही चलना ही बड़ी बात है। तुम उल्टी सीधी चाल चलकर गुरु को बदनाम करते हो। अपने को बदलो। जो बात गुरु को नहीं पसंद है वह न करने में ही हित है। किसी से तो डरो किसी की तो मानो। पहले अपनी जिंदगी बनाओ फिर काम करो।

भजन में उमर का बंधन नहीं होता है। कि हम बड़े हैं तो हम ही महान हैं। वह छोटा है तो कुछ नहीं है। भजन करने वाला चाहे छोटा हो या बड़ा महान है। पूजां (गुरुजी की पोती) अभी दो साल की भी बच्ची नहीं है और भजन में विभोर हो जाती है तो वह बहुत बड़ा है।

9.9.1987

औरत को धीमी आवाज में बोलना चाहिये। जो औरत जोर से बोले वह कबाड़िन है। आज से जो औरत जोर से बोले उसको कबाड़िन बोलो। जब वह धीमे बोले तो उसका नाम कबाड़िन हटा देना। सत्संग में आकर मनुष्य सुधरता है। तुम झगड़ा करते हो, राग द्वेष करते हो, गुरु को अच्छा नहीं लगता। इस आदत को तुम छोड़ दो।

अदब में सीखना जरूरी है। प्रेम में अदब होना चाहिये। शोखी अच्छी नहीं है। प्रेम की राह बड़ी कठिन है। ज्ञान की सबको जरूरत है। कहा है:

राजा दुखिया परजा दुखिया,
सकल सकल सृष्टि का राजा दुखिया।
सो सुखिया जो नाम आधार।

ऊपर से चाहे कोई कितना भी अच्छा कपड़ा पहने, राज में रहे पर अंदर से सब जल रहे हैं। उनसे ज्ञान की बात करो तो उनको भी बड़ आराम आता है।

13.9.1987

जब संचित कर्म उदय होते हैं तब गुरु का संग मिलता है।

एक घड़ी आधी घड़ी ताहू में पूनि आध,
दर्शन साधु के, साहब आवै याद।

गुरु अन्तर के भाव और प्रेम से ही रीझता है। तू खुद निराकार निरंजन है पर तू बाहर ढूढ़ने जाता है। कृष्ण में खास बात ज्ञान है। कोई अपने प्रेमी को जब कुछ देना चाहता है तो अच्छा ही gift देना चाहता है। इसी तरह भगवान भी अपने भक्त को ज्ञान रूपी सुंदर gift देना चाहते हैं। कृष्ण ने अर्जुन को ज्ञान का ही gift दिया।

15.9.1987

एक रंग अच्छा होता है। **"एकोहम बहुस्मि"** जो भगवान के लिये तन मन धन कुर्बान करता है उसको सरकार कुछ दे या न दे, भगवान भर देता है। हमने भी बनी (गांव) का सारा धन वैभव छोड़ दिया भगवान के लिये तो आज उससे भी कई गुना ज्यादा भर गया है। भगवान जो करता है वह हमारे भले के लिये ही करता है।

भगवान ने विदुर के घर में जब केले के छिलके खाए तो वह भी मीठे क्यों लगे? कारण उनका भाव मीठा था। विदुरानी भगवान के आने की खबर सुनते ही भाव विभोर हो गई। नहाते से नग्न दौड़ी और भाव से केले के बजाय छिलके खिलाने लगीं। जब विदुर बाहर से आए तो विदुरानी को नग्न देखकर चकित रह गए। उसको कपड़े पहनने के लिये भेजा और स्वयं केला खिलाने लगे पर केले में अब वह मिठास भगवान को नहीं लगी। कारण था—केले खिलाने में विदुर में वह भाव न था जो विदुरानी के छिलको में था।

संत लोग बड़े दयालु होते हैं। वे तुमको बनाना चाहते हैं। गुरु तुमको बना देता है। खाली मंत्र देने से अच्छा नहीं होता—बनाने से अच्छा होता है। तुम्हारा गुरु से प्यार हो जाए कोई बड़ी बात नहीं गुरु तुमको प्यार करे तब बड़ी बात है।

21.9.1987

रोने से क्या लाभ। रोने और हंसने से ऊपर रहो। जो हो रहा है सब

झूठ है। दिखाई देता है, सत्य सा भासता है पर है सब झूठ। लेकिन मनुष्य सत्य मानकर सुखी दुखी होता रहता है। जगत के दृश्य टिकने वाले नहीं हैं–तुम दृष्टा होकर देखो। तुम साखी (साक्षी) बनकर जियो।

गीता में लिखा है आत्मा का हनन करने वाला भी मनुष्य खुद है और उत्थान करने वाला भी खुद ही है। ज्ञानी के जीवन में भी विक्षेपता आती है पर वह ज्ञान के द्वारा काट देता है। ज्ञानी की लहर बालू पर खिंची लकीर थोड़ी देर में मिट जाती है उसी प्रकार ज्ञानी के सामने जो लहर आती है वह भी ज्ञान के द्वारा तुरन्त मिट जाती है।

मन मनुष्य को स्वर्ग में भी सुखी नहीं रहने देता। इसीलिये सत्गुरु की आवश्यकता होती है। कहा भी है :

मन मारन की औषधि, सत्गुरु देत बताए।

गुरु सख्ती करके भी भगवान की भक्ति करा देता है। मन माया में भुला देता है–गुरु माया से खींचकर हटा देता है। जीवन में इतनी कठिनाई आती है फिर भी मुंह से राम राम नहीं निकलता तो कैसे शांति हो?

बड़ों के गुण बच्चों को ले लेना चाहिये। जो भी गुण किसी में देखो, उसका अपने में लाने का प्रयत्न करो। आज जो गुण तुम्हारे पिता में हैं वह तुम सीख लो तो वह गुण सलामत रहेगा। आगे काम आएगा। जो भी खाना तुम्हारे सामने आए, उसको प्रशाद समझकर खा लो घिनाओ नहीं।

मन रूपी बैल गुरु के खूंटे में बंधा है पर वह (मन) तुड़ाकर रस्सी वहीं भागता है जहां उसकी आसक्ति होती है। **"तू तू करता तू भया, मुझमें बची न मोह"** हमारे मनसा, वाचा कर्मणा से पता नहीं किसको परेशानी आ जाय अतः चुप रहो। किसी को अपना दुख न बताओ "तुलसी पर घर जाय के दुख न कहिये रोय।" इसलिये तुम शांत रहो। गुरु मान अपमान करता है। तुमको जब नीचे ऊपर करता है तब तुम्हारी चढ़ाई होती है। जब तू मेरा है तो तेरा कष्ट मुझसे सहा नहीं जायेगा। जिन विचारों से तुझको कष्ट होगा वह गुरु अवश्य दूर करेगा।

भगवान ने माया फैला दी है और शांत है। गुरु अपने शिष्य को उस माया से मार ताड़कर भी बचा लेता है।

आप जैसी मनोवृत्ति करेंगे वैसी ही आप हो जायेंगे। हम ब्रह्म की

भावना रखते हैं तो हम ब्रह्म हो गए। नीच बस्ती वाले भूत चुड़ैल की मनोवृत्ति करते हैं तो उन पर भूत चुड़ैल आ जाते हैं। जगत में पग पग पर ठोकरें हैं। अतः एक ठोकर लगते ही संभल जाओ।

तुम पैर छूते हो, मांस छूते हो। अरे पैर मत छूओ। तुम हमारे वचन को छुओ। तुम आत्मा हो–ये निश्चय करो। मेरे पैर छूने वाले को बड़ा कठिन व्रत करना पड़ता है। मन इंद्रियां इतनी शुद्ध पवित्र रखनी पड़ती हैं तब पैर छूना ठीक है।

24.9.1987

नवरात्रि प्रारम्भ

एक एक बात में भलाई होती है। देखने में आता है। ये बुरा हुआ मन ऐसा दिखाता है पर हर बात में राज़ होता है। मन पहले ही धीरज में न रहकर हल्ला मचा देता है। देखने में नुकसान लगता है लेकिन उसमें भी लाभ छिपा होता है। परमात्मा की रज़ा में राजी रहने वाले को सुख दुख नहीं व्यापता। प्रभू की मर्जी में अपनी मर्जी मिला दो। बोलो जैसी प्रभू की मर्जी वैसी मेरी मर्जी। जो होता है वही अच्छा होता है।

एक राजा और मंत्री साथ साथ जा रहे थे। मंत्री बोलता था "हर बात में भलाई होती है।" एक दिन राजा की एक उंगली कट गई। राजा ने कहा इसमें क्या भलाई हुई? मंत्री बोला भलाई ही हुई है। राजा ने मंत्री को कुंए में लटका दिया। राजा आगे बढ़ा तो कहीं पर मानुष बलि चढ़ाई जा रही थी लोगों ने राजा को बलि के लिये पकड़ लिया। राजा के सब अंग देखे जा रहे थे कि कहीं खंडित तो नहीं है। तो देखा राजा की उंगली कटी है तब राजा को छोड़ दिया और बोले यह (राजा) बलि के लायक नहीं है। राजा तुरंत वापस आया और मंत्री को कुएं से निकाल कर बोला कि हम तो बलि चढ़ाए जाने से बच गए यह भलाई हुई पर तुम्हारे साथ क्या भलाई हुई? तब मंत्री बोला यदि आप मुझे कुएं में न टांगकर अपने साथ ले जाते तो मैं तो पूरे अंग का था मुझे बलि चढ़ा दिया जाता। अतः मेरे साथ भी भलाई हुई। तब राजा समझा कि हर बात में भलाई होती है।

तुम्हारी आदत पांव छूने की पड़ी है। तुम पांव मत छुओ। तुम तो ६ काधक पांव छूते हो लेकिन मुंह लटका रहता है। माता जी जैसा मुस्कुराता चेहरा रखो। देखो! वह हमको देखते ही खुश हो गई। इतने बुढ़ापे में चेहरा

कितना खिला है।

भगवान इंसाफ है। एक का नहीं सबका है। भगवान घट घट वासी है। चींटी में भी है, हाथी में भी है। रहता है सब में एक सा पर–

"भोगी हृदय उदास, योगी हृदय निवास"।

द्वेष बुद्धि के कारण ही तुम सोचते हो, भगवान इसका है, मेरा नहीं पर भगवान सबका है। मा मा के कारण भगवान दूर है। हर एक को अहंकार है। किसी को जाति का, किसी को रंग रूप का, किसी न किसी बात का सभी को अहंकार होता है।

प्रश्न बड़ेपन का अहंकार केसे जाय?

गुरु जी–बड़ेपन का अहंकार समाप्त करने वाली संतान होती है। किसी के सामने न झुकने वाला अहंकार औलाद के सामने झुक जाता है। हर प्राणी अपने स्वभाव के वश में है।

हमेशा शुद्ध संकल्प करो। अपने लिये भी और दूसरे के लिये भी। कभी कभी अपना ही संकल्प अपने को महान कष्ट में डाल देता है। अपने संकल्प का फल चाहे अच्छा हो या बुरा अपने को ही भोगना पड़ता है। मौन में ही आराम है। किसी को कोई बात गलत करते देखो तो थोड़ा समझाओ पर जब समझाने पर भी न समझे, बात न माने तो मौन हो जाओ।

प्रश्न गुरुजी! ऊपर से किसी तरह मौन हो जाए फिर भी मन तो अन्दर जलता ही है। क्या करें?

गुरुजी पहले ऊपर से शांत रहे तो झगड़ा तो नहीं हुआ। फिर अंदर ही अंदर मनन करो। धीरे धीरे अंदर भी शांत हो जायेगा।

मां का मोह बच्चे को बिगाड़ देता है। मां कभी संकल्प नहीं करती कि उसका बच्चा भगवान में लगे। सत्संग कल्पवृक्ष है। यहां हमेशा शुद्ध संकल्प करो। देखो! कभी जब पानी नहीं बरसता है तो तुम यहां हल्ला मचाते हो, संकल्प करते हो तो पानी बरस जाता है। इसका कारण है तुम कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर संकल्प करते हो–वही पूरा हो जाता है।

हमारी कीमत घायल आदमी ही करता है। जिसको कष्ट पड़ता है वही यहां आता है और जब ज्ञान की दवा पीता है तो आराम पाता है।

तभी वह हमारी कीमत करता है। ज्ञान के बिना कहीं आराम नहीं है। देखो! एक परिवार का एक ही सदस्य मरता है तो गम भुलाए नहीं भूलता फिर बंडल का बंडल ही चला जाय तो कैसे भूले?

जो बच्चे प्यार ही प्यार देते हैं, उनको भुलाना बड़ा कठिन है पर जो बच्चे दुत्कारते हैं वही अच्छे हैं जो जाने के बाद नहीं जलाते। देखो! चाची अपने बच्चों को कभी नहीं भुला पाती। ये तो हम थे जो उसका गम भुला दिया ज्ञान से। जो मर जाते हैं वे ही अच्छे लगते हैं क्योंकि वे आज सताने को नहीं हैं।

तुमको इतना दृढ़ संकल्प करना चाहिये कि क्या भी हालत आए हम हंसते रहेंगे। हाथ उठाओ, वही उठाए जो इतना विश्वास रखता हो कि कैसी भी हालत आए हंसता रहूंगा। भगवान के लिये यहां आने में भी बंधन तभी लगता है जब तुम्हारा मन सो जाता है क्योंकि "दर्द जगावे पीव को, पीव जगावे जीव" यदि तुम्हारे हृदय में भगवान के दर्शन के लिये इतनी पड़ी होगी तो कोई शक्ति नहीं जो तुम्हारा रास्ता रोक सके।

जीवन में बहुत भूलें होती हैं। उनको सुधारना पड़ता है। जब तक भूलों को भगवान से माफ नहीं करायेंगे तब तक आगे नहीं बढ़ पायेंगे। गुरु को भी प्रसन्न करने के लिये बस अपनी गलती का सुधार करना जरूरी है।

संसार की हर चीज़ तन मन धन परिवार छूटने वाली है। तुम इनके आधार पर ही जीते हो। जब छूटती है तो दुखी सुखी होते हो। इसलिये इनका आधार छोड़कर प्रभू का आधार पकड़ो। भगवान को अपना आधार बनाओ। जो भगवान तुम्हारे हृदय में बैठा है उसको दूर समझते हो। सीता के पास भगवान बैठे थे पर सीता का मन हिरन में चला गया तो भगवान से दूरी हो गई। सीता को तभी आफत आई जब उसने भगवान से ज्यादा दूसरी वस्तु को महत्व दिया।

दुखों से अगर चोट खाई न होती,
तुम्हारी प्रभु याद आई न होती।

ये मन ऐसा है कि संसार की चोट खाए बिना भगवान के पास आता ही नहीं। अतः दुख ही अच्छा है। ताड़ना से भी भगवान के पास मनुष्य आ जाता है। जब तक संसार वाले प्रताड़ित नहीं करते, मनुष्य भगवान के पास आ नहीं पाता।

नाले को तभी तक गंदा कहते हैं जब तक वह नदी में, गंगा में नहीं मिलता। जैसे ही वह गंगा में मिलता है, नाले का अस्तित्व खतम हो जाता है। गंगा में मिलने पर वह भी गंगा का रूप बन जाता है।

आप जपे औरां नाम जपावें,
कहत, सुनत रहति गति पावै।

अतः स्वयं भी भजन करो और दूसरों से भी कराओ।

25.9.87

गुरु न हो तो मनुष्य मेरा तेरा करते करते ही मर जाय। गुरु के यहां जाने में दिखाई देता है कि खर्च हो रहा है पर चौगुना भर जाता है जिसको भरोसा होता है कि गुरु मेरा है उसको शक्ति मिलती रहती है।

भगवान के नाम को सुनते ही आंसू चलने लगें तो समझ लो अब तुम्हारा भजन सही हो गया है। गुरु का नाम सुनते ही मेरी आंखों से आंसू चलने लगते हैं, पता नहीं कहां से आते हैं–हम भी नहीं समझ पाते अंदर से ही भगवद्भक्त के आंसू निकलते हैं। आंसू भी कई प्रकार के होते हैं। मोह के, दुख के, खुशी के। पर सबसे अच्छे आंसू भगवान के प्रेम के लिये होते हैं। तुम गुरु की जय जय करोगे तो तुमको भी ऐसा ही होगा।

हरिनाम के रंग से ईश्वरी नूर आता है। देखा नहीं! मीरा हरिनाम के रंग में कैसी रंगी। वह तो रानी थी पर रैदास चमार से ज्ञान लेने गई तो हरिनाम में रंग गई।

संत के पास जाकर कैसे बैठना चाहिये–इसका ध्यान रखना चाहिये। तुम गुरु को Disturb मत करो। अपने संकल्प से भी डिस्टर्ब मत करो। भगवान भाव का भूखा है। **भाव का भूखा हूं, भाव ही एक सार है।** गुरु अकर्ता है। अकर्ता को कर्त्ता बनाना तुम्हारे भाव पर निर्भर है। असली भक्त होगा तो भगवान को उस भक्त को देखे बिना चैन नहीं आता। तुम्हारा मन जब तुमको परेशान करता है तो जगत की बातों में आकर भगवान को पहले छोड़ देता है।

जब संत धक्का (घूमते) खाते हैं तब कई लोगों का कल्याण होता है। भगवान के लिये जो तन मन धन कुर्बान करता है, उसी को भगवान मिलता है।

गुरु नानक ने इसीलिये कहा है :

दुख दारू सुख रोग भया।

सबका मन ही दानव है। अभी सब सम्पन्नता मिल जाए तो भगवान को भूल जायेगा। अतः दानव मन को भगवान को चढ़ाना चाहिये। भगवान को वस्तु चढ़ाने से कुछ नहीं होता। भगवान ने ही सबको वस्तुएं दी हैं–उसके पास वस्तुओं की कमी नहीं है।

विवेक से काम लेना चाहिये। देखो! कैकेई रानी बहुत अच्छी थी लेकिन मंथरा के कहने में उसने (कैकेयी) राम को बनवास दिला दिया। कैकेयी अच्छी होते हुए भी उसने विवेक से काम न लेने के कारण, मंथरा के भड़काने में आ गई तो देखो! सारा राज चौपट हो गया। इसलिये विवेक से काम लेना चाहिये।

जो भगवान दुख देता है वही उससे छूटने की तरकीब बताता है। पहले ऋषि–मुनि शाप देते थे तो शाप से मुक्त होने का उपाय भी वे बताते थे। रानी शकुन्तला दुष्यन्त के प्यार में बैठी थी। उसने ऋषि को प्रणाम नहीं किया यद्यपि वह उनको देख नहीं पाई थी पर उन्होंने श्राप दे दिया। फिर शकुन्तला के प्रार्थना करने पर श्राप से मुक्त होने का उपाय भी उन्होंने ही बताया।

भक्ति का नशा सबसे श्रेष्ठ नशा है। अपने आप अपनी भक्ति क्या बखानते हो? दूसरे ने कभी बखाना कि तुमने भक्ति की? शबरी ने भक्ति की तो उसकी भक्ति आज सब बखानते हैं। शबरी ने इतने दिन भक्ति की, राम की प्रतीक्षा की, राम के मिलने पर उसने कोई शिकवा नहीं किया कि हम इतने दिन तुम्हारा इन्तज़ार करते रहे, या तुमने दर्शन देने में इतनी देर क्यों की? इतनी भक्ति का ही वरदान मांगती है।

हम छोड़ते किसी को नहीं हैं चाहे वह मेरा बेटा हो चाहे कोई भक्त हो। हम बनाना चाहते हैं तुमको अतः कोई भी कमी देखेंगे तो गाली अवश्य देंगे।

एक को भी कष्ट होता है तो हमको आराम नहीं आता। राग द्वेष मुझको बिल्कुल पसंद नहीं। इतनी इतनी भक्ति करने वाले भी यदि राग द्वेष करते हैं, एक दूसरे से जलते हैं तो हम सहन नहीं कर पाते।

लती बताए तो उससे लड़ो मत बल्कि यह सोचो कि गुरु इस रूप में हमारी बनावट कर रहा है– ऐसे सोचोगे तो बन जाओगे।

27.9.1987

गुरु की महिमा इतनी क्यों है? जैसे जगत की तापों–निर्धनता, परेशानी की मार है–इन सब तापों से गुरु छुड़ाता है। इसीलिये गुरु महान है। इस जगत की तपन से और देवी देवता–चाहे लाख पूजा करो नहीं छुड़ा सकते। केवल गुरु ही जग के तापों से छुड़ाता है। इसीलिये गुरु को सबसे महान कहा गया है। जो गुरु की नजर में होगा उसका बुरा कौन कर सकता है।

28.9.1987

गुरु को अपना बनाना चाहिये। एक राजा को तुम अपना बना लो तो कितनी सम्पन्नता आती है तो फिर गुरु को अपना बना लिया जाए तो कितना लाभ होगा? भगवान की ही कृपा से सब कुछ होता है। कुछ बिगड़ जाए तो भी उसमें बाद में भलाई दिखाई पड़ती है।

तुम शुकराने की आदत डाल लो तो तुमको कोई दुखी नहीं कर सकता। लेकिन मन की हमेशा शिकायत करने की ही आदत रहती है तभी खुश नहीं होता। हमारे घर में खड़बड़ खड़बड़ है पर फिर भी हम शांत रहते हैं। तुम्हारे घर में तो सब आराम है लेकिन तुम खुश नहीं रहते हो। कारण है अशुकराने की आदत।

गुरु हमारी वृत्ति को संभालता है। तुम वृत्ति को संभाल कर रखने का प्रयत्न करो। **"भूत बराबर चंचल मन को, हरि मूरत ठहराया"**। गुरु ही ऐसा करता है। संसार में रहकर वृत्ति को संभालो। लोग राजा जनक जो विदेह कहते थे तो हम नहीं मान पाते थे पर हमको भी लगने लगा है।

एक दिन सब सत्संग करके चले गए तो मुझे ऐसा लगा कि सब जंगल है–आखिर है क्या?

29.9.1987

मन को बैल की तरह जोतना पड़ता है भगवान की तरफ तब जाके कहीं परमात्मा में लगे तो बड़ी बात है। जभी दुख पड़ता है तो अच्छा है।

गुरु नानक ने इसीलिये कहा है :

दुख दारू सुख रोग भया।

सबका मन ही दानव है। अभी सब सम्पन्नता मिल जाए तो भगवान को भूल जायेगा। अतः दानव मन को भगवान को चढ़ाना चाहिये। भगवान को वस्तु चढ़ाने से कुछ नहीं होता। भगवान ने ही सबको वस्तुएं दी हैं–उसके पास वस्तुओं की कमी नहीं है।

विवेक से काम लेना चाहिये। देखो! कैकेई रानी बहुत अच्छी थी लेकिन मंथरा के कहने में उसने (कैकेयी) राम को बनवास दिला दिया। कैकेयी अच्छी होते हुए भी उसने विवेक से काम न लेने के कारण, मंथरा के भड़काने में आ गई तो देखो! सारा राज चौपट हो गया। इसलिये विवेक से काम लेना चाहिये।

जो भगवान दुख देता है वही उससे छूटने की तरकीब बताता है। पहले ऋषि–मुनि शाप देते थे तो शाप से मुक्त होने का उपाय भी वे बताते थे। रानी शकुन्तला दुष्यन्त के प्यार में बैठी थी। उसने ऋषि को प्रणाम नहीं किया यद्यवि वह उनको देख नहीं पाई थी पर उन्होंने श्राप दे दिया। फिर शकुन्तला के प्रार्थना करने पर श्राप से मुक्त होने का उपाय भी उन्होंने ही बताया।

भक्ति का नशा सबसे श्रेष्ठ नशा है। अपने आप अपनी भक्ति क्या बखानते हो? दूसरे ने कभी बखाना कि तुमने भक्ति की? शबरी ने भक्ति की तो उसकी भक्ति आज सब बखानते हैं। शबरी ने इतने दिन भक्ति की, राम की प्रतीक्षा की, राम के मिलने पर उसने कोई शिकवा नहीं किया कि हम इतने दिन तुम्हारा इन्तज़ार करते रहे, या तुमने दर्शन देने में इतनी देर क्यों की? इतनी भक्ति का ही वरदान मांगती है।

हम छोड़ते किसी को नहीं हैं चाहे वह मेरा बेटा हो चाहे कोई भक्त हो। हम बनाना चाहते हैं तुमको अतः कोई भी कमी देखेंगे तो गाली अवश्य देंगे।

एक को भी कष्ट होता है तो हमको आराम नहीं आता। राग द्वेष मुझको बिल्कुल पसंद नहीं। इतनी इतनी भक्ति करने वाले भी यदि राग द्वेष करते हैं, एक दूसरे से जलते हैं तो हम सहन नहीं कर पाते।

ये रूह के भाई ही सच्चे भाई हैं। मांस के भाई कोई भाई नहीं होते। ये सत्संगी ही हमारे अपने हैं। जो सत्संगी को प्यार करते हैं वे ही हमको अच्छे लगते हैं। ये तुम्हारे बड़े रिश्तेदार हैं। हम अपनी औलाद को छोड़ सकते हैं पर अपने सत्संगी को नहीं छोड़ सकते।

आज तक जिसने न्याय किया है वह हमेशा न्याय करेगा। जज अगर कुर्सी पर बैठा है तो वह बेटा बेटी सम्बंधी नहीं देखेगा–वह बस न्याय करेगा। अतः जज के सामने सच बोलो।

दुनियां में जीना है तो हर बात में शुकराना करो और विवेक से चलो। देखो! भगवान ने सब कुछ तुम्हारे लिये बनाया है। पर ढंग से बरतो।

सुनो रे संतो राजपूत जात हमारी,
पारब्रह्म से लगन लगी है मोर्चा कठिन करारी।

हम सोच समझकर न्याय करते हैं। हम किसी को गाली दे दें और वह सह जाय यह बहुत बड़ी बात है। अभी हमने प्रकाश (गुरुजी का बेटा) को भरी सभा गाली दी है पर ये बहुत बड़ी बात है कि वह फिर भी हंसते रहे। तुम्हारे मां बाप इतनी गाली तुमको अकेले में भी देंगे तो बर्दाश्त नहीं कर पाओगे–झगड़ लोगे। ये (प्रकाश) इसी गाली पर हंस रहा है–इसी का फल है कि यश वैभव से पूर्ण है।

30.9.1987

अष्टमी

दुनियां में कितनी भी आफत हो पर भजन में आते ही आराम आ जाता है। भजन करते समय तुम्हारे माथे पर जो ये बल पड़ जाते हैं–समझो तुम दिल से भजन नहीं कर रहे हो। माथे पर बल क्यों पड़ते हैं?

दुनिया में जो भी कष्ट है वह हमारी ही कमी है। हमारा ही पाप है–तुम्हारे की कर्म हैं। ये न समझो कि कष्ट से भाग कर छुट्टी मिल जायेगी। ऐसा नहीं होगा। उससे भी ज्यादा भोगना पड़ेगा। इसलिये अपने कर्मो के फल को हंस हंस कर भोगो। लेन देन से भागना नहीं चाहिये। ज्ञानी लेन देन समझकर हंसकर धीरज का काट लेता है–वह सोचता है यह हमारा ही कर्म है पर अज्ञानी रोता है।

मनुष्य में हज़ारों गुण होंगे पर अगर उसमें एक बुराई होगी तो हम वही देखेंगे–उसके हज़ार गुण हमें नहीं दिखाई पड़ेंगे।

1.10.1987

दुर्गानवमी

गुरु की सेवा करना तो बड़ी बात है, पर गुरु की एक एक आज्ञा को मानना और पालन करना उससे भी बड़ी बात है।

गुरु को अहंकार चढ़ाना चाहिये हम लोग फूल माला चढ़ाते हैं। सबर–संतोष सबसे बड़ा खजाना है। मान अपमान दुख दर्द याद रहता है पर भगवान नहीं याद रहता है। एक सद्गुरु ही ऐसा धुरन्धर है जो जबरदस्ती भजन करा लेता है। जो उसी की पैरवी करता है वह भजन कर लेता है–वह आत्मा में टिका देता है।

बिन आतम ज्ञान के ममत्व न कटे मन का।

गुरु ही ऐसा करा सकता है। आत्मा के ज्ञान से ही ममता कटती है। गुरु संसार के मोह माया से तथा देह से उपराम कराने के लिये ही उठा बैठी कराता है। जब उस समय मन मुड़ जाए तो संसारी परिस्थिति में भी मुड़ने की शक्ति आ जायेगी।

जिसको ब्रह्मज्ञान लेना होगा वह लाख छिपने पर भी लेने आ जायेगा। यह अमृत है। अमृत उसी के लिये है जो उसका स्वाद लेना चाहता है।

3.10.1987

हर बात में खुश रहो–सब चिंता छोड़कर कर्म कर लो फिर कुंभकरण की तरह सो जाओ। लंका में लड़ाई हो रही थी, सर के ऊपर लोग नगाड़े बजा रहे थे पर कुंभकरण जागता नहीं था। इसी तरह तुम भी कुंभकरण बन जाओ। घर में कितनी भी आफत हो पर अपने परमात्मा में सो जाओ। ॐ शब्द बहुत अच्छा है। ॐ में ही सब है। ॐ में ब्रह्मा विष्णु महेश हैं। सारा विश्व ॐ में ही समया है। ॐ का मतलब समझो। ॐ को दिल के अंदर रखो। तुम पूछते हो मूर्ति को कहां रखें तो मूर्ति तो अंदर है।

गुरु अजर अमर है। गुरु ही स्वयं ब्रह्म है। गुरु के ही शरीर में आकर भगवान तुमसे बात करता है। जो गुरु को सर्वेसर्वा, माता, पिता, मानता

है, उसको अपने आप ज्ञान हो जाता है–बेड़ा पार हो जाता है। बेड़ा पार करेगा तेरा, भजमन शाम सवेरा।

तुम कहते हो जिंदा गुरु भगवान नहीं होता लेकिन जिंदा गुरु के बिना ज्ञान हो नहीं सकता। गुरु तुको समता योग में लाता है। गुरु को जो अच्छा लगता हो, वो जैसा कहे वैसा करो। बस! तुमको कुछ करना नहीं पड़ेगा–ज्ञान हो जायेगा।

हमारे इतिहास में गुरु का ऐसा महत्व चला आ रहा है। जो तुम्हारे मन के खिलाफ चलता है, तुम्हें सताता है, वही तुम्हारा गुरु है। जो छोटा बनता है, वही महान बनता है। जो किसी से रागद्वेष नहीं करता, समता में, प्रेम में चलता है वही नूर है। ऐसे नूर को ही गुरु प्यार करता है।

जो गुरु किसी बात का लालच न करके तुम्हारे मन को गाली देगा वही असली गुरु होगा। जिसको लालच होगी वह यह सोच कर डरेगा कि अगर हम इसको गाली देंगे तो कल से हमारी सेवा नहीं करेगा–हमको कुछ नहीं देगा।

हम लोग देखो! दिन दिन भर काम करते हैं, कोल्हू के बैल ही तरह जुते रहते हैं पर रात खतम होते ही जब दूसरा सबेरा होता है तो फिर ताजे के ताजे रहते हैं। राम राम करने से ही शक्ति आती है।

8.10.1987

जब नृसिंह भगवान बहुत क्रोध में आ गए, शांत नहीं हो रहे थे तब प्रहलाद ने प्रार्थना की और भगवान तुरंत शांत हो गए–इसी तरह पूजा (गुरुजी की पोती) है। ये बच्चा है। बच्चे का दिल साफ शुद्ध होता है। अभी हम किसी भक्त से नाराज थे इसने प्रार्थना की। तुम्हें जो चीज़ नहीं पसंद है मत खाओ लेकिन घृणा मत करो। दूसरे को मत घिनाओ। क्या घृणा करना।

छूत छात भी जी का जंजाल है। आज बड़ी छूत करते हो। बाहर कहीं जाओगे तो क्या घर जैसी शुद्धता मिलेगी? मिठाई खाते हो। उसको बनाने की विधि की गंदगी देखो तो पता चलेगा कि कितनी अशुद्धता है। व्रत में मिठाई को शुद्ध समझ कर तुम खाते हो। छूत छात से कोई लाभ नहीं।

जो सद्गुरु की शरण लेता है उसका दिल मुलायम हो जाता है। तुम गुरु को छाटा मानते हो पर गुरु के बिना भजन कहां होता है? संत के बिना भजन नहीं हो सकता। संत न होते जगत में, डूब मरे संसार।

संत बड़े परमार्थी जाके शीतन अंग,
तपत कुझावत और की, दे दें अपना रंग।

अतः संत के बिना भजन हो ही नहीं सकता।

अरे लोगो तुम्हें क्या है, या वो जाने या मैं जानू।

ये प्रेम की बात है। प्रेम करने वाला या तो खुद समझता है या उसका प्रेमी जानता है उसके दिल का दर्द। सिपारा पढ़ने से, वेद शास्त्र पढ़ने से भगवान नहीं मिलता। प्रेम से ही भगवान मिलता है–और कोई जगह परमात्मा के मिलने की नहीं है। प्रेमी का हृदय ही परमात्मा का घर है। हृदय में परमात्मा का प्रेम होगा तो प्रेमी का शरीर से सामना हो या न हो–मायने नहीं रखता। पर प्रेम न हो तो शरीर पास भी हो तो कोई लाभ नहीं। प्रेम ही सार है।

राम राम करो।

राम कहने का मजा जिसकी जुबां पर आ गया, मुक्त जीवन हो गया, चारो पदारथ पा गया। जिसके हृदय में प्रेम होता है, राम होता है, उसको मांगने नहीं जाना पड़ता–अपने आप पाता है।

मेरी लीला देखकर सह नहीं पाते–शंका करते हो–तुमको अच्छी नहीं लगती। पोते, पोती, बहू बेटे की लीला देखकर आज खुश होते हो तो कल दिल चलेगा लेकिन मेरी लीला देखोगे तो सदा खुश रहोगे। तुम मुझको मनुष्य करके देखते हो इसीलिये नहीं सक पाते। आज राम है तभी तो लीला करता है। तुम इतना ज्ञान बोलो तो हम तुम्हें जाने। इतने घंटों घंटों कौन ज्ञान बोल सकता है? तुम तो एक मिनट भी ज्ञान नहीं बोल सकते। मेरे में राम है तभी इतना बोलता है। राम ही अंदर बैठकर राम की लीला सुनाता है।

जिस दिन तुम विषय वासना से रहित हो जाओगे तब तुमको ऐसा प्रतीत होगा कि मेरे रोम रोम में राम है। तुय योग में रहोगे तभी ऐसा होगा। ब्रह्मचर्य में रहना पड़ेगा। योग का जीवन साधना पड़ेगा।

"योगी हृदय निवास, भोगी हृदय उदास।"

भक्त के लिये भगवान को सब कुछ करना पड़ता है। न बोलने की इच्छा होने पर भी बोलना पड़ता है। न खाने की इच्छा होने पर भी खाना पड़ता है। हमारा यही हाल है। भगवान साकार होकर ही गुरु के रूप में आता है। तुम्हारी ऐसी मति है कि तुम सोचते हो कि ये कैसा भगवान है? तुम्हारे संबंधी जिंदा हैं, बेटे बेटी जिंदा हैं बस तुम्हारा गुरु निराकार होना चाहिये–यह कैसे हो सकता है?

जिस प्रकार लोहे को लोहा ही काटता है उसी प्रकार चेतन को चेतन ही काट पाता है। साकार गुरु ही चेतन मनुष्य को ज्ञान दे सकता है। गुरु भी ज्ञान देनें के लिये तलवार लेकर खड़ा हो और चेला भी ज्ञान लेने के लिये तैयार हो तभी ज्ञान हो सकता है।

दुनिया को छोड़ो–तुमने ही गुरु को पकड़ा है। अगर पकडञ्कर तुम्हारा ज्ञान नाश न हो, सलामत रहे तो पकड़ो। तुम राम राम छोड़ो। वही राम राम हम करते हैं वही राम राम तुम करते हो पर देखो तुम्हारे राम राम करने में और हमारे राम राम करने में अंतर है।

एक गुरु और चेला नदी पार कर रहे थे। गुरु दूसरा मंत्र जप रहे थे, चेले को दूसरा मंत्र जपने को कहा। थोड़ी देर चेले ने वह मंत्र जपा पर गुरु को दूसरा मंत्र जपते देखकर उसने भी गुरु का मंत्र जपना शुरु कर दिया तो डूबने लगा। गुरु समझ गए। फिर गुरु ने कहा "मैंने तुमको जो आज्ञा दी है, वही करो। चेला पुनः वही मंत्र जपने लगा जिससे पार हो गए। कथा का अभिप्राय यही है कि गुरु की आज्ञा में चलना चाहिये। बार बार अभयास करने पर ही भगवान का अभ्यास दृढ़ होना है। भगवान सर्वत्र है पर मनुष्य उल्लू है। उसको भगवान दिखाई नहीं देता। रात दिन दुनियां की चाकरी में लगे हैं तो वह कहां से दिखाई दे।

जो जगत में रहकर योग कर सकता है वह जंगल में क्यों भागे? जंगल में वही भागे जिसको योग करना नहीं आता। हम तो रोज योग में हैं। हम जगत में रहकर चार का कल्याण कर सकते हैं तो जंगल में जाने से क्या लाभ? जगत नाटक है पर नाटक भी सही करो।

दुनियां तो जलाती है पर तुम जलो नहीं। जलाते जलाते जब वह

देखेगी कि तुम जलते नहीं तो वह (दुनिया) थक जायेगी। फिर जलाना छोड़ देगी। हमारा ज्ञान है तुम मन से हंसो। दांत तो हंसते हैं पर अन्दर मन से नहीं हंसता। हमारे यहां बड़े बड़े रोगी हंसने से ठीक हो जाते हैं। और गुरु अपने चेलों से वस्तु मांगते हैं पर सच्चा गुरु अपने भक्त के पाप पुण्य खरीदता है। ऐसा कौन होगा जो पाप पुण्य लेगा?

दलाली ऐसी कीजिये, सत्गुरु सच्चिदानंद

सत्गुरु अपने भक्त के कल्याण के लिये सब कुछ करता है। बस! तुम उसके कुछ बन जाओ। देखो इंदिरा गांधी के बेटे को कुछ करना नहीं पड़ा–राज मिल गया। तो यदि तुम परमात्मा के बेटे बन जाओ तो क्या कुछ नहीं मिलेगा?

तुम मरने का संकल्प मत करो। जिंदा रहने पर तुम औरों का कल्याण करोगे। तुम मरना चाहते हो पर अभी हम कहेंगे कि जियो और पैसा हमको दे दो तो नहीं दे पाओगे। क्योंकि तुमको मालूम है कि तुम्हारे घर का खर्चा उसी से चलता है। तब फिर जीने का संकल्प क्यों नहीं करते?

तुम सत्संग करो। सत्संग से मुर्दे को जान मिलती है। अविवेकी को विवेक और ज्ञान मिलता है। तुम्हारे हृदय में जब प्रभू रहेगा तो संसार के दुख प्रारब्धवश आयेंगे तो पर तुमको लगेंगे नहीं। **प्रभु के सुमिरन दुख न सताए।** दुख नहीं आएगा–ऐसा नही है। तुमको लगेगा नहीं। हम तुमको जीने की कला सिखाते हैं। मरना जीना तुम्हारे हाथ में नहीं है फिर क्यों सोचते हो? हरि आम करो। ओम् वो हस्ती है, वह शक्ति है जो सर्वत्र व्याप्त है पर नाम रूप के कारण पहचानने में नहीं आती। गुरु तुमको ओम् का जप कराता है।

परमात्मा में लिंक लगाओ। तुम्हारा दिल तो दुनियां में लगता है। इसीलिए रोता हंसता रहता है। परमात्मा में दिल लगाने वाला–दुनियां में कितनी भी परेशानी आती है। फूल की तरह खिला रहता है।

मेरे पास भी तुम्हारे से ज्यादा ताप होंगे पर मुझ पर उनका असर नहीं होता क्योंकि मैंने परमात्मा में दिल लगाया है पर तू सूख रहा है कारण तूने दुनियां के सामानों में दिल फंसा रखा है।

18.10.1987

जिसके अंदर भक्ति आती है भगवान उसको प्यार करते हैं। भक्ति से ही शक्ति आती है। भक्ति की शक्ति श्रेष्ठ शक्ति है। संसार की शक्ति हैवानी शक्ति होती है।

आज भारत में इसीलिये हाहाकार मचा है क्योंकि संसार से भक्ति उठ गई है। देखो! एक हमने भक्ति की तो तुम सब इतनी भक्ति कर रहे हो। अतः भक्ति करो।

23.10.1987

हम लोगों का मन बार बार गलती करता है पर भगवान माफ करता रहता है इसीलिये उसको बन्दा परवर कहा गया है। एक व्यक्ति को फूल माला पड़ती है, एक को जूते पड़ते हैं। इसका कारण किसी का दोष या गुण नहीं है बल्कि कर्मो का फल कहते हैं। जैसी करनी वैसी भरनी। देखो! हनुमान की पूजा होती है तो उसका कारण है उसने राम को हृदय में बसा लिया। कभी दूसरे को दोष नहीं देना चाहिये। तुम गुरु को आगे रखकर चलो तो तुम्हारा रास्ता कोई नहीं रोक सकता। यहां तक कि अगर दीवार भी आएगी तो हट जायेगी। खाली राम राम का चिंतन करो। राम जपत रामहि भया, आप विसर्जन होय।

दिल में भगवान की जगह है–हमारा वास दिल में है। जिसके दिल में हमारा घर होगा उसको हमारा भजन सुनना पड़ेगा। नहीं सुनेगा तो छाती पर चढ़कर सुनायेंगे। जैसे मां बच्चे को कड़वी दवाई पिलाती है नहीं पीता है तो चढ़ चढ़कर पिलाती है उसी तरह हम भी भजन सुनायेंगे।

अपनी भूलों को बार बार भगवान से बख्शाना पड़ता है। भगवान की नजर पाने के लिये अपनी भूल को बार बार मानना पड़ता है। भूल को मानते मानते अभूल हो जाता है। राग द्वेष खतम हो जाता है। राग द्वेष भगवान से कभी मिलने नहीं देता। जीव भाव के कारण ही मनुष्य गुरु को नहीं पहचान पाता। फिर एक बार नहीं पहचान पाता तो कई जनम लग जाते हैं। गुरु हर एक को मौका देता है। अपने तन को भी सीढ़ी बनाकर भगवान तक पहुंचाना चाहता है। लेकिन मनुष्य शंका के कारण नहीं चढ़ पाता इसीलिये कहा गया है :

जनम जनम मुनि जतन कराहीं,
अंत राम मुख निकसत नाहीं।

मुर्खतावश मनुष्य जीव भाव को पाले रहता है। भीष्म पितामह जब लड़ाई के मैदान में गिर गए तो मरने का समय आ गया लेकिन मरा नहीं। कारण दक्षिणायन था अर्थात वह देह में था। कृष्ण ने जब उसको ज्ञान सुनाया तब उत्तरायण में मरा। देह भाव में होने के कारण ही दक्षिणायन उत्तरायण होता है। देह भाव दक्षिणायन है और उत्तरायण आत्मभाव है।

प्रश्न गुरु की कृपा कैसे होगी?

गुरुजी अपने ईगो को मिटाने का प्रयत्न करो, गुरु की कृपा मिल जायेगी।

27.10.1987

दर्शन साधू के करे, साहब आवै याद।

कुछ लोग बोलकर भगवान की याद दिलाते हैं और कुछ लोगों का ऐसा प्रभाव होता है कि उनके दर्शन से ही भगवान याद आने लगते हैं–उन्हें ही संत कहते हैं।

सारा जगत झूठा है पर हम सच मानकर रोते हैं– हंसते हैं। सारा जगत नाटक है। पर्दा भगवान है, हमारी परछाई संसार है। शरीर अलग है, मैं अलग हूं। शरीर मरता है, जन्मता है पर मैं (आत्मा) नहीं मरता। मैं शरीर नहीं हूं–ऐसा निश्चय करो। मैं निराकार निरंजन ब्रह्मस्वरूप हूं–मैं नहीं मरता, मैं अमर हूं, ऐसा निश्चय करना चाहिये।

संत की सेवा से बड़े कष्ट कट जाते हैं। संत तुमसे सेवा करा ले, ये बड़ी बात है। संत जल्दी सेवा कराते नहीं पर संत की महिमा से बड़े काम हो जाते हैं।

27.10.87

समय बहुत जल्दी जाता है। देखो! पहले हम घंटों घंटों ज्ञान बोलते थे। आज वह शक्ति कम हो गई है और आज काम भी पहले से ज्यादा हैं तुमने तब फायदा नहीं लिया। अतः समय मत खोओ। संतों का संग जल्दी जल्दी करो। कहा भी है :

संत का एक बार का किया हुआ दर्शन भुलाया नहीं जा सकता। सच्चे संत का दर्शन फिर घर में रुकने नहीं देगा। तुम आओ या न आओ, परिस्थिति आने दे या न आने दे, तुम खिंचकर चले आते हो। तुम जो सत्संग करते हो संत की कृपा से ही करते हो। न तुम आते हो, न हम आते हैं, सत्संग ही बुला लेता है। जीवन में काम ही काम करते रहोगे तो काम बाद में काम नहीं आयेगा। काम के साथ जब तुम भगवान का भजन भी कर लोगे तो कष्ट का ताप नहीं लगेगा तुमको। "प्रभु के सुमिरन से दुख नहीं व्यापेगा।

अपनेपन से ही मन चलायमान होता है। देखो! दुनियां में कितनी हाय हाय मची है। अखबार में पढ़ते हो पर थोड़ी देर दुख का अनुभव करके भूल जाते हो–कारण वहां अपनापन नहीं है। ममता के कारण ही दुख अनुभव होता है।

तुममें जो भी अच्छाई होगी वह भी नहीं छिपेगी और जो बुराई होगी वह भी नहीं छिपेगी। जगत में जितने भी हार्ट फेल हार्ट अटैक सुने जाते हैं उसका कारण है घबराहट। पर ज्ञानी को ये शिकायत नहीं होती क्योंकि वह सुख दुख में सम रहने की कला भगवान से गुरु से सीख चुके होते हैं।

निष्काम कर्म करने पर भी कभी कभी उल्टा ही फल मिलता है पर तुम तो बदनामी से डरते हो। हम तो डरते नहीं कि हमको बदनामी मिलेगी या यश मिलेगा। तुम बोलते हो, उसका किया तो हमारा भी करे। उसके मरने में गए तो हमारे मरने में भी आएं तो ऐसा नहीं हो सकता। जो जितना भगवान के शरणागत होता है भगवान उतना ही उसके साथ करता है। अनुभव का ज्ञान ही पक्का होता है। संतों की कहानी पढ़ी कि उसने भगवान में मन लगाया तो भगवान ने उस पर ऐसी कृपा की। हमने जब अपने पर भी वही कृपा का अनुभव किया तो हमने भगवान को माना। कबीर की कहानी कि उसने भगवान में इतना मन लगाया कि उसकी लड़की की शादी में ऊँट पर सामान लादकर भगवान ने भिजवाया जबकि उसके घर में फूटी कौड़ी भी नहीं थी। यह कहानी सच्ची है–हमको इसका अनुभव तब हुआ जब हम भी भगवान में लीन हो गए तो मुन्नी (गुरुजी की बेटी) की शादी में भी वैसा ही हुआ। हम तो भगवान में, सत्संग में लीन रहते थे कि घर

का काम भी सही नहीं हो पाता था तो भगवान ने हज़ार हाथ से (मुन्नी की शादी) काम किया तब हमको अनुभव हुआ कि भगवान पर पूर्णरूपेण छोड़ने पर ही ऐसा होता है।

भगवान जो स्वयं देता है वही अच्छा होता है–चुन के देता है। जो हम खुद मांगते हैं वह अच्छा नहीं होता।

28.10.1987

जो अपनी बीबी को बहुत सताता है उसकी बीबी को हम रख लेंगे पर बीवियों को भी हम अपने यहां रखकर रगड़ाई करते हैं ताकि घर में ठीक ठीक व्यवहार करे। तुम औरतें भी तभी ठीक चलती हो जब हम तुम्हारी रगड़ाई करते हैं। यदि गुरु तुम्हारे धन के लालच में तुमको बुलाता हो तो तुम उस गुरु को छोड़ दो पर यदि वह किसी बात की चिंता न करके भगवान में मन लगाने के लिये गाली देता हो तो उसी को गुरु मानते रहो।

गुरु तो पहली कक्षा से ही माननीय है। धीरे धीरे 2, 3, 4, इसी तरह इंटर, बी.ए. में गुरु बदलते रहते हैं–सब माननीय हैं, सभी पूजनीय हैं क्योंकि उन्नति दिलायी है। लेकिन अंत में ब्रह्मज्ञानी गुरु की आवश्यकता होती है जो मुमको भगवान तक ले जाता है। ब्रह्मज्ञानी गुरु पूर्ण भगवान होता है।

तुम्हारे मन में बैठे राग द्वेष विकार जाएं तो समझो वह गुरु सच्चा गुरु है। हम देवी देवता नहीं हैं जो तुम हमको पूजा करके खुश कर लोगे। लोग मंदिर में घंटा बांधकर देवी देवताओं को खुश कर लेते हैं–हमारे यहां तो घंटा तो क्या तुम खुद टंग जाओ तो हम खुश नहीं होंगे।

मेरे मिलने से तुम्हारे अंदर change आए तब तुम हमको गुरु मानना। इन सबके कहने से मुझे गुरु न मानना। मेरे कर्म में आओगे (देखोगे) तो कभी भी आराम नहीं मिलेगा क्योंकि मेरा ठिकाना नहीं है। अभी हम बीमार हैं, कराह रहे हैं–लेकिन अभी थोड़ी देर में हम किसी के घर दौड़े दौड़े चले जाते हैं–इसका कारण उसका भाव है।

तुम ठाकुर जी को जब तक ठाकुरजी नहीं मानोगे तब तक वह तुमको ठाकुर प्रतीत नहीं होगा। जवानी भगवान के लिये रखो। आज शक्ति है तो भगवान का भजन कर सकते हो–बुढ़ापे में वह शक्ति नहीं रहेगी कि भजन कर सको।

जहां भगवान है, वहां भगवान की लीला भी होगी ही। आपको जो भी कष्ट होता है, उसके लिये डाक्टर के पास जाना पड़ता है। उसी तरह मन का भी सिविल सर्जन गुरु है। मन खराब होता है तो गुरु से ही ठीक कराना पड़ता है।

तुम्हारा कोई भी सत्संगी भाई यदि किसी कारणवश सत्संग में नहीं आ पा रहा है तो तुम उसके घर जाओ। सम्संग में न आने का कारण पूछो, यदि उसे कोई कष्ट हो तो उसकी सेवा करो। दुनिया में समस्याएं तो कभी खतम नहीं होतीं एक न एक बनी ही रहती हैं, बस ज्ञान से कंट्रोल करना पड़ता है।

31.10.1987

तुम हर जगह जाओ पत्ते पत्ते से ज्ञान लो। गुरु हमेशा ज्ञान ही देता है। बाहर से कोई वस्तु त्यागना या छोड़ना सन्यास नहीं है। अंदर से राग द्वेष विकार छोड़ना ही सच्चा सन्यास है। गेरुआ या सफेद कपड़ा पहनना बेकार है। ईगो (अहंकार) का त्याग ही सन्यास है।

2.11.1987

घर में गंगा बहती है, आदमी डुबकी मारे तभी तो नहायेगा, पवित्र होगा। यदि वह न नहाए तो किसका दोष?

मनुष्य को अकल से सेवा करना चाहिये। जो मनुष्य होशियार होता है, सेवा करके चारों पदारथ ले लेता है। कभी कभी सेवा न भी कर पाए तो भी यदि बोल ही दे तो लाभ हो जाता है। गुरु की सेवा के लिये हमेशा तत्पर रहना चाहिये। सेवा के लिये निगाह रखनी चाहिये कि कब सेवा मिले और मैं ले लूं। जैसे चोर की निगाह धन में रहती है, वह मौका पाते ही चोरी कर लेता है उसी तरह तुम भी गुरु की सेवा में निगाह रखो, कल्याण हो जायेगा। भगवान को एक बार में पहचाना जा सकता है पर मनुष्य के स्वभाव को नहीं पहचाना जा सकता।

पहले इंसान बनो। मुक्ति भक्ति तो बाद की चीज है। पहले संसार में जो अभी तक हैवान का व्यवहार किया है, उसको बदलो। देखो! हम भी संसार में रहते हैं हमारा भी घर परिवार है पर कभी छिप कर देखो मेरा व्यवहार तो पता चलेगा कि मैं किस तरह सहता हूं। तुम तो जरा सा कोई उल्टा बोलेगा तो लड़ पड़ोगे। पहले अपना व्यवहार मृदु बनाओ।

भजन अकेले में ही होता है। अकेले होके भी क्या करते हैं, बाल बच्चे खिलायेंगे। जैसे जैसे आप ज्ञान सुनेंगे वैसे वैसे शक्ति आएगी। आप कहते हैं भगवान ने विराट का दर्शन तो दिखाया नहीं पर आज भी दर्शन देते हैं। कृष्ण ने जैसे अर्जुन को विराट रूप दिखाया वैसे ही आज भी भगवान दिखाता है।

तुम इतने दिनों से आए पर तुम्हारे चेहरे में हंसी नहीं। कारण तुम देह में हो। तू आत्मा में आ। आत्मा में न शिकवा है न शिकायत इतना सत्संग तुमने पहले भी किया, प्रवचन पहले भी किया और सुना पर क्या तुमको शांति आई? शांति न आने का कारण है तुम जगह जगह भटकते हो। अगर तुम्हारे मन में जगह जगह जाने पर शांति आती है तो भटको पर जब तक तुमको शांति न मिले एक ही जगह बैठो।

एक जगह चित्त लगाकर कुआं खोदो पानी निकलेगा। पर जगह जगह थोड़ा थोड़ा खोदोगे तो कहीं भी पानी नहीं निकलेगा। अतः एक जगह ही कुंआ खोदो। इसी प्रकार एक ही गुरु के होके रहो, वो तुमको बनायेगा।

भजन

आंखें बंद करूँ या खोलूं
मुझको दर्शन दे देना। आंखें बंद....

मैं नाचीज़ हूं बंदा तेरा
तू सबका दाता है,
तेरे हाथ में सारी दुनियां
मेरे हाथ में क्या है?
तुझको देखूं सबमें
ऐसी आंखें दे देना। आंखें बंद....

मेरे अंदर तेरी लहरें,
रिश्ता है सदियों का,
जैसे एक नाता होता है,
सागर से नदियों का।
करूँ साधना ऐसी,

मुझको साधन दे देना। आंखें बंद....

हम सब हैं बालक प्रभु तेरे
तुम हो राम हमारे,
तेरी कथा सुनाते जाएं
सत्गुरु तेरे सहारे,
चलते चलते इस जंगल में
राह दिखा देना। आंखें बंद....

मेरी मांग एक ही भगवान,
मन में आते रहियो,
हर एक सांस के पीछे
अपनी झलक दिखाते रहियो,
नाम तेरा लूं आखिर तक,
वो धड़कन दे देना। आंखें बंद....

4.11.1987

तू निराकार है। न ये है न वो है। जो तुम्हारे गम को भुला सके वह तुम्हारा गुरु है, वही ज्ञान है। आंखें ज्योति है, हृदय थाली है, मन जो प्रभू का सुमिरन है वही फूल है। अतः भगवान (गुरु) को आंखों से देख लो तुम्हारी आरती हो गई। पहले ज्ञान से मन नहीं जोड़ा। अब संसार में दुख पड़ा तो कैसे सहा जाय? गुरु से प्रीति होनी चाहिये। गुरु तुम्हारी दक्षिणा नहीं चाहता, तुम्हारा हृदय चाहता है। गुरु को पकड़ो। सारी दुनियां छोड़कर गुरु से लिंक जोड़ो फिर देखो कुछ मिलता है या नहीं। भगवद दृष्टि के कारण ही हमारा तुम्हारा संबंध है। मैं हूं तू है बीच में भगवान है तभी संबंध ा है।

ज्ञान तो जड़ और चेतन दोनों से भी लेना पड़ता है। पृथ्वी कैसा सहती है, धीरज रखती है। उससे धीरज सीखना चाहिये। जल सबका पालन करता है, उससे भी ज्ञान लेना पड़ता हैं। ज्ञान हर एक से लेना चाहिये। जब तक हम सबसे ज्ञान नहीं लेंगे तब तक हमारा ज्ञान पूर्ण नहीं होगा। ज्ञान तो कभी कभी नौकर से भी लेना पड़ता है। सबसे ज्ञान लेने में तुम्हारे में नम्रता आएगी।

तुम बोलते हो भगवान ने अर्जुन को विराट रूप दिखाया। वह विराट रूप आज यही है कि कोई गाली दे रहा है, कोई फूल माला डाल रहा है। इसी विराट रूप को सहना ही ज्ञान है।

जितनी Will Power जगत में लगाई उतनी ज्ञान में लगाओ तो कल्याण हो जाय। गुरु शहंशाह होता है। जिसने शहंशाह का दीदार कर लिया उसको कोई और दर्शन करना शेष नहीं रहता। तुम अगर मेरे पास आए हो तो हम तुमको बनाकर छोड़ेंगे। मैं डाक्टर हूं। यदि दवा लेने तुम आओगे तो हम दवा अवश्य देंगे। तुम्हारा इलाज अवश्य करेंगे।

ज्ञान की राह में जो एक बार पैर रखता है, उसके सारे पाप पुण्य भस्म हो जाते हैं। गीता में साफ साफ लिखा है ज्ञान अग्नि कर्म दग्ध। जब ज्ञान की निगाह से आप देखेंगे तो आपके पाप नाश हो जायेंगे। चतुष्ट अंतःकरण अग्निकुड है, वहां जाकर सब पाप नाश हो जाते हैं।

तुमको क्या कष्ट है बेटे के जाने से? तुमको तो बोधरूपी बेटा हो गया है। शरीर का बेटा कुछ नहीं करता, खाली कष्ट ही देता है पर बोध रूपी बेटा हमेशा आराम देता है।

6.11.1987

गुरु बनना और नेता बनना महा कठिन है। जो इतनी कुर्बानी करता है वही नेता या गुरु बनता है। जो सुख आराम सब त्यागने को तत्पर होता है वही नेता बनता है। त्याग हो ही नहीं तो नेता कैसे बन सकता है?

तपतम् राजम्, संसार का कर्म, पुरुषार्थ तो मनुष्य स्वतः करता है पर भजन का पुरुषार्थ जानकर करना पड़ता है। शरीर चले या न चले, भजन में आजा—यही पुरुषार्थ है।

जब तुम्हारे मन में कोई इच्छा नहीं होगी तो अपने आप सब कुछ मिल जायेगा। जब अपनी जात पहचान लिया तो उसी जात पर चलते हैं। इसी प्रकार जब आत्मा हूं मालूम हो जाता है तो उसी पर चलने लगते हो। जैसे नाम का निश्चय किया कि मैं सावित्री हूं तो तुम सोते जागते में भी कभी कोई तुम्हारा नाम लेकर पुकारेगा तो तुम उठ जाओगे। इसी तरह जब तुम देह नामरूप छोड़कर आत्मा का निश्चय करोगे तो तुमको अनुभव होने लगेगा कि तुम आत्मा हो।

ज्ञान के बोल लेने से ही द्वेष नहीं जायेगा बल्कि उस ज्ञान पर चलने से ही द्वेष जायेगा। द्वेष जाना आसान नहीं है। गुरु की कृपा दृष्टि तुम पर पड़ेगी तो द्वेष स्वतः चला जायेगा। इसलिये तुम गुरु की नजर सें चलो, उसकी आज्ञा से चलो।

हम हर एक को माफ करते जाए, जो भी हमारे साथ बुरा करे हम उससे लड़ने के बजाय उसको माफ कर दें तो द्वेष अपने आप खतम हो जायेगा।

हम प्यार कर सकें यही ज्ञान है। अरे! हम खुद ही दूसरों से प्यार नहीं करते–सब अपनी ही कमी हैं। ज्ञान बोलना और सुनना सरल है–उस पर चलना कठिन है। जो अपने को सही बोलता है वहीं महा अहंकारी है–वह बिल्कुल गलत है।

कर्म का जप करना नहीं पड़ता कर्म सामने आते ही कर्म स्वतः होने लगता है। अहंकार का नाश सेवा से ही होता है। चंदन कैसा अच्छा होता है–जब रगड़ा जाता है तभी भगवान के लगता है। सेवा गुरु की करो। सेवा जब स्वीकार होती है तभी सेवा लगती है।

जहां सत्य का संग होता है वहीं सत्संग है। आगेवाला यदि तुमसे खिटखिट करता है तो तुम उसमें भगवान डाल दो तो वह खिटखिट खतम कर देगा।

7.11.1987

खाली अपने को परमात्मा में लगाओ। पूजा से कुछ नहीं होता। हम तुम्हारे घर जाते हैं, तुम पूजा करते हो। पर हम पूजा से नहीं खुश होते। तुम आत्मा में कितना टिके हो–ये देखो। तुम आत्मा में टिको यही पूजा है। हम क्रिया से खुश नहीं होते। कैसी भी हालत आए, आत्मा में रहो, ध्यान में रहो तो हम खुश हो जायेंगे। तुम पूजा करके समय बर्बाद करते हो। ये ढोंग है, पूजा बाहर की नहीं होती। तुम निराकार हो, उस निश्चय में रहो।

प्रेम में, बेखुदी में भेद भूल जाता है–यही पूजा है। हमारे वचन सुनो, वचनों में खड़े हाओ। साधु को अपना चीज वस्तु चढ़ाना सरल है, पर अपना तन मन सौपना बहुत कठिन है।

गुरु नाम दाता मेरी सम्पदा है

गुरु नाम में इतनी शक्ति होती है पर एक गुरु का होकर रहे मनुष्य तब यह हालत होती है।

गुरु को मानुष जानते, जन्म जन्म होय श्वान।

गुरु को पूर्ण भगवान मानकर जो निश्चय बुद्धि में रहता है उसी का कल्याण होता है पर मनुष्य को भटकने की आदत है– वह कभी देवी मनाता है कभी दुर्गा। गुरु के दरबार में जो भी आता है उसका कल्याण अवश्य होता है।

क्या जरूरत है किसी देवी देवता को मनाने की? जब जिंदा देवी ही सब कुछ दे रही है तो क्या लाभ है ३३ करोड़ देवियों देवताओं को मनाने से? आज भी तो जिंदा देवी है जो तुम्हारे मन रूपी शेर पर चढ़कर तुम्हारा मन काबू में करती है।

प्रेम ऐसी चीज़ है जिसमें बाहर से कोई साधन नहीं होता–अंदर ही होता रहता है हम तो कई बार गीता उठाकर पढ़ते पर कभी पूरा नहीं पढ़ पाए। कारण इतना रस पहले से ही भरा है।

भगवत्कृपा गुरु कृपा के बिना कुछ नहीं हो सकता। देखने में आता हे, हम आते हैं पर हम नहीं आते–गुरु याद करता है तब हम आते हैं। उत्तम जिज्ञासु गुरु के कहने से सब कुछ करता है पर निकृष्ट जिज्ञासु अपने मन से तो गुरु के लिये पहाड़ भी ढो देगा पर गुरु के कहने से खिटखिट करता है। अतः उत्तम जिज्ञासु बनो। गुरु थोड़ा भी कहे तो करो।

8.11.1987

कर्म करके भूल जाओ तो आसक्ति कम हो जायेगी। कर्म का चिंतन मत करो। कर्म का चिंतन कर्म की थकान से ज्यादा थकान अनुभव कराता है। इतने गुरु किये इतने दिन पूजा की और मुंह पर खुशी नहीं दिखाई दी तो क्या तुमने गुरु किया। गुरु करने का मतलब है हर हाल में खुश रहना। तुम्हारा मुंह तो सड़े बैगन जेसा रहता है और कहते हो हमने बहुत गुरु किये, बहुत पूजा तपस्या की। राम में ध्यान होगा तो क्या भी कर्म कर डालो थकान नहीं महसूस होगी। न बुरा ख्याल होगा न आसक्ति होगी। आत्म भाव पैदा करो। आत्मभाव में रहकर कर्म करने से थकान नहीं होती।

मनुष्य परेशान होता है अपने ही संकल्पों और विकल्पों से। संकल्पों का आना और जाना स्वाभाविक है पर उसका रूप बन जाना ठीक नहीं। हम संकल्पों और विकल्पों में बह जाते हैं और उसी का रूप बन जाते हैं तभी गलत होता है। आत्मभाव में रहने पर अभ्यास करते करते संकल्प भी धीरे धीरे बंद हो जाते हैं।

ये मन ही दुष्ट है जो संकल्प विकल्प पैदा करता है। अतः इसी मन को गुरु को अर्पण कर दो तो वह तुम्हारा मन बना देगा। ज्ञान गुरु का होता है, विज्ञान घर में मिलता है। ज्ञान का मतलब तुमने गुरु से ज्ञान लिया पर जब घर में या बाहर कोई विपरीत परिस्थिति आ गई और उसमें अपने आप को "एडजस्ट" कर लिया–यही विज्ञान है अर्थात ज्ञान को कर्म में लाना, ज्ञान के अनुसार कर्म करना विज्ञान है।

जो भगवान को सर्वेसर्वा मान लेता है, वह वैसा ही बन जाता है। पानी में जैसा रंग डालो वैसा ही हो जाता है। जैसा संकल्प होता है वैसी ही सृष्टि होती है। तुम ब्रह्मचर्य में रहो तभी शांति मिलेगी। तुम भगवान को सास का, बेटे का, बेटी का कहते हो पर भगवान सबका होता है। जो भक्ति कर ले जाता है, उसी का भगवान होता है।

जो भी सुख है, वह प्रभू की कृपा से है। भगवान भगवान करो तो बेड़ा पार हो जाता है। **"जब भूली तू आपको, तब व्यापे संसार"** जहां देह भाव आता है वहीं राम भूल जाता है। राम में ही आराम होता है।

सोहम् अर्थात मैं ब्रह्म हूं। जिस प्रकार तुमको जात का पता होता है उसी तरह अब आत्मा का पता करो। तुम्हारी जात ब्राह्मण, ठाकुर नहीं, आत्मा है। जात मेरी आत्मा परमेश्वर परिवार। मैं स्वयं परमात्मा हूं। मैं निरंजन निराकार हूं। आज ही निश्चय करो। ये चोला अलग है जब ऐसा निश्चय करोगे तो तुमको स्वयं अनुभव होने लगेगा कि तुम आत्मा हो। जैसे सागर में हिलोरे आती हैं वैसे ही मन में भी लहरें आती हैं पर ज्ञान से शांत होती हैं।

तुम इच्छा के कारण ही दुखी हो। तुम चाहते हो सब अच्छा अच्छा ही हो पर कर्म का प्रारब्ध जैसा होगा, वैसा ही होगा।" **करम गति टारे नाहिं टरे।"**

तुम बोलोगे आप भी तो धूल मिट्टी में काम करते हैं, आपका भी तो

प्रारब्ध है पर हम किसी की जिंदगी बनाने के लिये ऐसा करते हैं। तुम को इसका गुमान होना चाहिये कि ऐसा गुरु न मिला है न मिलेगा क्योंकि हम कर्म को साथ लेकर चलते हैं। आज हम इसी मुहल्ले में पहले से रहकर आए हैं। मेरी हर स्थिति इन लोगों ने देखी है, गरीबी देखी, अमीरी देखी, हर कर्म देखा। यह भी देखा कि हम क्या खाते हैं, पूजा करते हैं–यहां से जीवन मिला है सबको। जिसको जीवन मिला है वह क्या मुझे नहीं समझेगा?

डाक्टर सालोमन से जब सबको फायदा होता है तो कैसा मशहूर डाक्टर कहलाता है–उसी तरह हमारे यहां से जिसको जीवन मिला है वह अवश्य हमसे दवा लेने आयेगा।

जो तू है वही मैं हूं। सब एक है आत्मा सब में एक हैं। इसका तत्व बोध गुरु कराता है। **जल में कुंभ, कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी"**। अतः जब भेद भाव मिट जाता है तब बाहर भीतर एक ही आत्मा व्याप्त है–यह ज्ञान हो जाता है।

हर हालत में जो खुश रहता है, उसको कोई दुखी नहीं कर सकता। तुम तो रोते रहते हो। अरे! क्या करना है शरीर बचाकर एक दिन तो खाक होना ही है। तन मन धन सब प्रभू में लगा दो तो चौगुना होकर मिलता है। देखो! हमने तन की परवाह नहीं की तो इतने तन साथ हो गए। मन लुटाया तो इतने मन आ गए। धन लुटाया तो धन की कोई कमी नहीं है आज हमको।

अनुभवी गुरु की हर बात का पता बता सकता है। जो हर क्षेत्र से अमीरी से, गरीबी से पार होकर निकला है वही अनुभवी कहलाता है। ऐसे गुरु से हर तरह की राय मिलती है।

घर में भी हर एक से कुछ न कुछ सीखना पड़ता है। किसी में उदारता होती है, किसी में दया की प्रधानता होती है। सबसे सीखना पड़ता है। हम भी तुम सबसे सीखते हैं। सीखने से ही आगे उन्नति होती है। कोई कपड़ा धोता है तो ऐसा कि धोबी क्या धोएगा? कोई बर्तन मांजता है तो धोती में मांजन की छींट भी नहीं पड़ती। तो सीखना पड़ता है।

अभी करुणा (एक भक्त) जैसा मंजीरा बजाती है वैसा कोई नहीं बजा

सकता। अभी विमला (एक भक्त) मंजीरा बजा रही थी हमको अच्छा नहीं लगा हमने बंद करा दिया। कारण जो उसमें गुण है वह उसमें नहीं। किसी में कोई गुण है तो किसी में कोई। ज्ञान खाली राम राम करना ही नहीं है। गुण सीखना, अच्छा व्यवहार करना यह भी ज्ञान है।

हरिनाम बड़ा सुखदाई, ना लागे पैसा पाई रोम रोम में राम बसा लो। प्रभू जी बसे साधू की रसना। जो खाली राम राम करता है हृदय से, उसका सब कुछ हो जाता है। तुम निश्चय बुद्धि में रहो कि दुनियां में चाहे अच्छा होगा या बुरा मैं निराकार निरंजन आत्मा हूं। आत्मा में न कोई आता है न कोई जाता है। खेल होता है। मैं खेल देखने वाला साखी दृष्टा हूं। पति का शरीर छूटता है तो तुम रोती हो, क्या तुम्हारा शरीर रहने वाला है? अभी से प्रभू प्रभू का अभ्यास जल्दी जल्दी करो नहीं तो अंत गति में जैसी मति होगी वही जन्म मिलेगा। अभी तुम्हारा ध्यान जन धन परिवार सामान में होगा तो फिर जन्म लेना पड़ेगा। मरते समय तुम्हारा ध्यान लोटे थाली में होगा तो दुबारा जन्म लेना पड़ेगा।

जल्दी करो, समय थोड़ा है। तुम तो सलामती मांगते हो भगवान से घर परिवार की। अरे! भगवान से खाली भक्ति मांगो।

ज्ञान बहुत जरूरी है। कोई कोई अपनी बीबी को आने नहीं देते ज्ञान (सत्संग) में। ज्ञान कितना जरूरी है यह नहीं समझते। पल का भी भरोसा नहीं है। जल्दी जल्दी सब कुछ छोड़ कर भगवान में मन लगाओ।

एक भक्त गुरुजी! आप पहले मिलते तो हम शादी न करते–ब्रह्मकुमारी बन जाते।

गुरुजी अभी भी ब्रह्मकुमारी बन सकती हो।

भक्त अब कैसे? अब तो हम ब्रह्मकुमारी नहीं कहे जा सकते। हमको कोई ब्रह्मकुमारी नहीं कह सकता।

गुरुजी कोई कहे या न कहे अगर आप ब्रह्म में रहेगी तो ब्रह्म कुमारी ही कहलायेगी। ब्रह्म में जब आप टिकेंगी तो आप को भान ही नहीं रहेगा कि आपकी शादी हुई है या नहीं? आत्मभाव में रहोगे तभी आराम मिलेगा। कूड़ा खजाना (धन सम्पदा, परिवार) मत मांगो।

11.11.1987

व्यक्ति धन्यवाद दे या न दे तुम सेवा करो और निष्काम भाव से सेवा करो। हम indirect गाली देते हैं तो यह समझो कि हमारी कमी है, इसको ठीक करें। गुरु औलिया होते हैं किसी से डरते नहीं। जो कमी तुम्हारे में होगी वो बोलेंगे अवश्य मानों या न मानों यह तुम्हारी मर्जी।

मेरे यहां तुम्हारी पोथी का ज्ञान नहीं चलेगा। व्यवहार में ज्ञान लाना पड़ेगा। गुरु के सामने अपनी विद्वता का प्रदर्शन मत करो। एक बार एक मनुष्य अपने गुरु के पास पोथी लेकर गया–वह उसने स्वयं लिखी थी। गुरु उसके साथ नाव में बैठे थे। उसने जैसे ही वह पोथी गुरु को दिखाई गुरु ने पानी में डाल दी। वह बड़ा दुखी हुआ। उसको दुखी देख गुरु ने हाथ नदी में डाला और पोथी निकाल ली। वह देखकर चकित हो गया कि पोथी बिल्कुल सूखी थी। कहने का मतलब है–पोथी का ज्ञान गुरु के सामने नहीं चलता। गुरु के सामनें बालक के समान भोले बनकर जाना चाहिये।

स्वभाव को बनाना पड़ता है। हर एक का स्वभाव खराब होता है पर उसको ज्ञान के द्वारा change करना पड़ता है। पहले तुम्हारा गुस्सा कितना बड़ा होता था अब कम हो गया है। हम जो आज भजन करते हैं, यह हमारे पूर्वजों की कमाई है।

12.11.1987

तुम इधर उधर क्यों चित्त फंसाए हो? राम में क्यों नहीं चित्त लगाते हो–ये मैंने किया, ये उसने किया पर राम न चाहे तो कुछ नहीं मिल सकता। तुम राम राम खाली गाते हो। राम रोम रोम में बसाओ। लाउडस्पीकर से राम गाने वाला दिल से नहीं गाता–दुनिया को सुनाने के लिये गाता है। हनुमान ने शोर नहीं मचाया कि वह राम को जपता है, वह अपने आप प्रकट हुआ।

तुम्हारे अंदर जिस गुरु से जब आनन्द आ जाए वही तुम्हारा सत्गुरु है। जायेहि मिलिये होय आनंद वही मेरा सत्गुरु। बीमारी के चिंतन से बीमारी बढ़ जाती है। तुम चिंता मत करो। तुम खाना पीना चाय कुछ मत करो। ये झंझट हमको पसंद नहीं है। ज्ञान भंग हो जाता है। तुम दो घंटे भी कायदे से भजन नहीं करते। ज्ञान तो हमारे पास बहुत है तुम लेना नहीं जानते।

तुम्हारी बुद्धि में जो फुरना उठती है उसके उठने के पहले ही हम जान जाते हैं–आत्मा की निश्चिंतता के कारण। तुम बीमार आए हो। हमारे ज्ञान से जब तुमको आराम आ जायेगा तभी तो हमारा नाम होगा। अर्जुन यदि रणक्षेत्र में रोता रहता, धनुष न उठाता, कृष्ण की आज्ञानुसार काम (युद्ध) न करता तो गीता भी कैसे बनती?

अहंकार भगवान का भोजन होता है। तुम समझते हो, भगवान मेवा मिठाई खाता है पर ऐसा नहीं है। भगवान तुम्हारा अहंकार खाता है। तुम प्रेम करो। प्रेम ही भगवान को प्रिय है।

चित्त यदि चंतन से जुड़ जाय तो आनंद का भंडार होता है। यदि यही चित्त देह से जुड़ जाए तो जीव है। देह में टिका चित्त चिंतन का रूप हो जाता है।

13.11.1987

दुख में सुख पैदा करो। तुम तो सुख में भी दुख पैदा कर लेते हो। अभी तुम बीमार पड़ जाओ या चोट चपेट लग जाए तो शंत होकर सो जाओ। लेकिन तुम तो सोचते हो हमको कोई देखने नहीं आया, पूछने नहीं आया। अरे! ये इच्छा छोड़ो। आएगा तो तुमको भी तो उसे पूछना पाछना पड़ेगा। फिर हर रूप में भगवान आता है। आता भी है तो तुम पहचानते कहां हो? खाली ये सोचते हो "फलाना नहीं आया।" राम कहने का मजा जिसकी जुबां पर आ गया मुक्त जीवन हो गया, चारों पदारथ पा गया।

जो ऐसा भजन बचपन से ही (गुरु जी की पोती पूजा की तरह) करता है उसका जीवन हमेशा सुखी रहेगा। मन का कोई ठिकाना नहीं है। मन तो बार बार भगवान की कृपा को भुलाकर कमी बताता रहता है पर मन के भुलावे में कभी नहीं आना चाहिये। गुरु की कृपा से सम्पन्नता आती है यह कभी नहीं भुलाना चाहिये।

एक मछुआरिन रानी बन गई तो वह अपना मछुआरे का कपड़ा सदा अपने पास रखती थी। जब कभी वह अहंकार में आती थी तो वह पुराने वस्त्र देख कर यह याद कर लेती थी कि कभी हम ऐसे थे–आज भगवान की कृपा से हम रानी बने हैं।

गुरु की सेवा से मनुष्य बहुत कुछ सीख जाता है। देखने में तो आता है वह गुरु की सेवा कर रहा है पर वह खुद बनता है। ज्ञान में आकर बहुत कुछ सीख जाते हैं। पहले देखो बैठना भी नहीं आता था, पीछे मुड़कर देखते थे। अब शांत बैठते हो। फिर इतने कष्ट में आते हो, तपस्या करते हो, तितिक्षा है।

यह गुरु की कृपा से स्वतः हो जाता है। सारे साधन, सारी तपस्या सहज में हो जाती है।

चतुष्ट साधन पलंगा बिछाया,
ब्रह्मज्ञान का तकिया लगाया,
शांति का बिस्तर बिछा लिया,
ज्ञानी ने गुप्त खजाना पा लिया।

ज्ञानी गुरु की कृपा से सहज में शिष्य यह सब कर लेता है। देखो! आवाज आ रही है पर तुम्हारा ध्यान सत्संग में लगा है तो आवाज आते हुए भी महसूस नहीं हो रही है। पांच विकार पांच विषय हैं। स्थूल शरीर, पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु, आकाश। इन पंच ततवों से बना है शरीर। इसमें पांच विषय, पांच विकार हैं। इनसे शरीर परिपूर्ण है। विषय विकारों का प्रधान मन है। ये मन ही जब परमात्मा में लीन हो जाता है तो शांत चित्त बन जाता है। मैं "ना" होने पर जीव भाव समाप्त हो जाता है।

अभी तक "मैं ना" का निश्चय करो तो एक पल में ज्ञान हो जायेगा। परमात्मा जीव भाव के कारण भूला है। गुरु आकर इसी जीवभाव का नाश करा कर ब्रह्म में टिका देता है। परमात्मा का रस सबसे मीठा है। जब परमात्मा का रस हृदय में उतरने लगता है तो और कोई विषय रस अच्छे नहीं लगते। तुम इतना सुख वैभव इसी लिये छोड़कर आते हो क्योंकि तुमको अब परमात्मा के रस का स्वाद मिल गया है। परमात्मा में रहने वाले को हार्ट की बीमारी नहीं हो सकती। सत्संग में नियम पूर्वक आने पर तुमको कोई बीमारी छू नहीं सकती।

प्रेम में कोई बंधन नहीं होता। भगवान का भजन सुबह ही होता है। मंदिर जाया जाता है तो सुबह ही तो जाया जाता है। सुबह का ही भजन अच्छा होता है।

दुखो से अगर चोट खाई न होती
तो प्रभू तेरी याद आई न होती।

इसलिये परमात्मा को सदा याद रखने के लिये दुख ही अच्छा है। ज्यादा भीड़ इकट्ठा करने से क्या लाभ? भजन थोड़े में अच्छा होता है। संतों के अंदर भीड़ इकट्ठा करने की बड़ी हवस रहती है पर हमको पसंद नहीं। जितने लोग हैं, हमको यही काफी लगते हैं।

धीरज रख लो रहमत की बरसा बरखा भी देगा,
जिस प्रभु ने दर्द दिया है, वही दवा भी देगा।
तोड़ कभी न आस की डोरी, खुशियां देगा भर भर झोली।
मगर वो गम की परछाई से तुझे डरा भी देगा। धीरज रख....

जिसके हाथ में सबकी रेखा उसकी ओर जिसने भी देखा,
वही समय, मध्यम तारा को चमका भी देगा। जिस प्रभु ने....

मांग में भर बिंदिया से पहले, नाम वहीं बिंदिया से पहले
एक दिन वो तेरी आशा को एक चेहरा भी देगा।

बढ़ जायेगी हिम्मत तेरी, घटेगी जब घनघोर अंधेरा,
बूंद बूंद तरसाने वाला, जाम पिला भी देगा।

30.5.86

भगवान को रिझाना पड़ता है तब भगवान दिल दिमाग में उतर आता है। गुरु को रिझाने के लिये गुरु की सेवा करनी पड़ती है।

बार बार अपने को ही चेंज करना पड़ता है। तुम खुद चेंज हो जाओगे तो सब ठीक हो जायेगा। हमेशा अपने को ही बदलना है। गुरु का शुकराना करो कि तुम पर हाथ रखे हैं नहीं तो दुनियां वाले दुख में याथ नहीं देते हैं।

तोड़ना आसान है, जोड़ना मुश्किल है–अतः जोड़ो! बड़ों को ही ज्यादा सहना पड़ता है। मनुष्य भगवान का शुकराना भूल जाता है नहीं तो हर परिस्थिति में खुश रह सकता है। संसार अपूर्ण है–इसमें पूर्ण खुशी किसी को नहीं मिलती इसलिये कहां तक रोया जाय। हर हाल में खुश रहो।

जब मनुष्य खुद चेंज होता है तभी घर वालों को सत्सग का और गुरु का महत्व दिखाई देता है। तुम्हारे में चेंज आएगा तो तुमको उनसे कहना नहीं पड़ेगा कि गुरु की पूजा करो। तुम बदल जाओगे तो घरवाले सब आ जाएंगे रास्ते पर। वे देखेंगे तुम आनन्द और शांति में हो, तुम्हारी अलचल बंद हो गई है तो वे भी देखने आएंगे कि कहां जाती है, किसके पास जाती है देखें तो–तब वे खुद ही आ जायेंगे।

कभी हमारा मन तुमको direct गाली देने का होता है। जब मत की उल्टी बात होती है तभी अच्छा होता है। भगवान की जैसी मर्जी होती है वैसा ही होता है। अपने मन की कभी नहीं होती है। भगवान के लिये व्रत रखना पड़ता है। भगवान के लिये जो ऐसा व्रत रखता है उसको वैसे वैसे ही भगवान मिलता है।

जिस टाइम में गुरु से मन लगता है तभी सहज योग होता है। तुम्हारा चेहरा देखकर गुरु पहचान जाता है। कितना सहज है सहज योग–खाते पीते। तेलधार की तरह वृत्ति टूटे नहीं यही अच्छी बात है।

साधू बेपरवाह बादशाह होता है। उससे कभी टकराना या वाद विवाद नहीं करना चाहिये। वह किसी भी बात से अस्त्र शस्त्र से भी नहीं डरता। उसे किसी के धन दौलत की भी परवाह नहीं होती। चाहे अमीर हो चाहे गरीब, वह किसी को कहने से नहीं डरता।

मनुष्य कभी भी किसी भी कष्ट का कारण अपने को नहीं मानता पर वह होता खुद ही है। जिस बात से हमको कष्ट हुआ उसको जानना पड़ेगा। हमने तन मन गुरु में लगाया, हममें शक्ति, ज्ञान और रौनक आई। उसके बाद हम बेपरवाही में आकर अपना तन मन प्राण जगत में लगाते हैं तो ज्ञान चला जाता है। मनुष्य को कमज़ोरी आ जाती है। सबको छोड़कर अकेला चलोगे तो नित्य नई ताकत आएगी।

मन इंद्रियों का व्रत मनुष्य को बहुत ताकत देता है। भीष्म पितामह ब्रह्मचारी थे–ब्रह्मचर्य में रहते थे तभी उनमें ब्रह्मशक्ति आई। तुम भी ब्रह्मचर्य का व्रत पालन करो तभी शक्ति आएगी। इसके लिये तुमको अच्छा संग करना पड़ेगा। शरीर का संग नरक का संग होता है। सद्गुरु का संग करने से बुद्धि, शक्ति, ज्ञान मिलता है। हमारा लक्ष्य ही गलत है और शक्ति भी नहीं–तो कहावत है दोनों डूबे बावरे, बैठे पाथर ही नाव।

क्रोध भी एक ज्वाला है। जिसके ऊपर करते हैं वह भी जलता है और क्रोध करनेवाला भी जलता है। एक बार सब भूतों को जलाना पड़ेगा तब जो भी काम करोगे वह निमित्त मात्र होकर करोगे। तुम फंस जाते हो तभी नतीजा भी खराब होता है। तुम इस पर भी विचार नहीं करते। विवेक में रहोगे तो गुरु की बात समझ में आएगी। गुरु इसीलिये गाली देता है क्योंकि तुम्हारा मन नहीं मानता है।

गुरु जब भी गाली देता है तो उसमें कारण पहले होता है तभी कार्य होता है। संसार का कारण परमात्मा है। परमात्मा कारण न होता तो कार्य (जगत रचना) कैसे होता? सीता का मन हिरन में गया (कारण हुआ) तभी कार्य हुआ कि राम लेने गए, युद्ध हुआ अतः यह कार्य है। कारण है सीता के मन का हिरन में जाना।

तुम जरुर कुछ चंचलता करते हो तभी नेचर से आवाज आयेगी। चंचलता जब आयेगी तभी दस आदमी तुमको गाली देंगे। तुम्हारे मन की तो यहां एक भी नहीं चलेगी। ये मन कुछ न कुछ कराता ही रहता है। तुम आकर खाली हमारा दर्शन करो। तुम खाली भगवान के लिये आओगे तभी भगवान शरण देगा, दर्शन देगा। तुम अपनी चाल चलोगे तो भगवान कैसे मिलेगा? भगवान को पाले के लिये पहले के लोग कैसी तपस्या करते थे फिर भी भगवान के दर्शन नहीं हो पाते थे–कितनी पवित्रता से रहते थे फिर भी।

परमात्मा को पाने के लिये बड़ी पवित्रता की जरूरत है। भगवान को पाने के लिये कठिन परिश्रम, तपस्या करनी पड़ती है। फिर भी भगवान को पा पाना कठिन है। आमने सामने रहकर भी मनुष्य को भगवान का दीदार नहीं हो पाता। उसका कारण है–चित्त वृत्ति का कहीं और जाना।

गुरु का भय बहुत जरूरी है। गुरु से कनेक्शन करने पर ही प्राणी मुक्त हो पाता है। इतने भूत (विकार) हैं जो उतारते चढ़ाते रहते हैं लेकिन जब गुरु का भय होगा तो मनुष्य चढ़ जाता है।

गुरु की गद्दी विक्रमादित्य की गद्दी है–सबको नहीं मिल सकती। ऐसी कठिनता से व्रत में रहो तभी गुरु की गद्दी मिल पाती है। सत्य को कोई काट नहीं सकता है। मन तो बोलता है कि मैं सत्य में हूं पर होता नहीं है। गुरु कहता है तब भी मन मानता नहीं। ज्ञान की चढ़ाई यही है कि हम मन को गलत चलते देखकर रह नहीं पाते। ज्ञान अपने ही लिये है, दूसरे के लिये नहीं।

सत्य में टिकना मुश्किल नहीं है, खाली दृढ़ निश्चय करना है। मरूंगा या करूंगा। मेरा संकल्प ऐसा था तो आज हम चल रहे हैं। तुम्हारे पास तो सब सुविधा है। हमारे पास तो बहुत कठिनाइयां थीं जब हम ज्ञान के मार्ग में आए परन्तु हिम्मत करे मर्द तो मदद देता खुदा। हमने दृढ़ संकल्प किया था कि गुरु एक आवाज में जहां भी कहेगा चले जायेंगे। उसी निश्चय की वजह से आज हम चल रहे हैं और चलते रहेंगे। संकल्प दृढ़ होना चाहिये।

परमार्थ के रास्ते में बहुत लुटेरे हैं पर अपना aim मालूम होना चाहिये कि जगत में क्या है, हम क्यों आये है? यह सोचकर दृढ़ हो जायें तो काम तो भगवान अपनें आप कर देता है। मनुष्य को खाली संकल्प दृढ़ करना है।

जिस टाइम मन विषयों में जाता है तो वह किसी के रोकने से भी नहीं रुकता। विषय मनुष्य को ऐसा अंधा कर देता है कि भक्ति का नाश कर देता है। वही मनुष्य विषयों के जाल से बच सकता है जो गुरु को लक्ष्य बनाकर चलता है। मनुष्य कितना मूर्ख है कि भजन छोड़ने का तो संकल्प कर लेता है परन्तु विषय, जो दुखों का मूल है, को छोड़ने का संकल्प नहीं करता।

जो मनुष्य सोचता है कि चाहे कुछ भी हो जाए–चाहे मन जाऊँगा पर ज्ञान नहीं छोडूंगा। भगवान पाने का संकल्प हो और उसे भगवान न मिले–ऐसा हो नहीं सकता। तुम्हारे मन में भी दीवार है। जिसको संसार में कोई आधार नहीं मिलता वहीं भगवान के पास आता है। तुम अभी सारी दुनियां को छोड़कर आते हो तो हमको ले जाते हो लेकिन जो गुरु की इतनी कीमत नहीं समझता वह हमको नहीं ले जा सकता।

तुम्हारी चंचलता ही तुम्हारी बरबादी का कारण है। गुरु आत्म शक्ति देता है तो मनुष्य चंचलता के कारण जगत में लुटा देता है। संसार का कोई भी प्राणी जो तुमको ज्यादा प्यार करेगा वही तुमको पतन के गर्त में ले जाता है। जगत वाले तुम्हारे वैराग्य और प्रेम को चूहे की तरह कुतर देते हैं। गुरु इसीलिये तुमको जगत में जाने से रोकता है। तुमने गुरु से सौ बार ब्रह्मज्ञान द्वारा निष्ठा में आने को मांगा तब गुरु तुम पर रोक लगाता है, इधर न जाओ, उधर न जाओ लेकिन

तुम मानते नहीं तो तुमको निष्ठा कैसे होगी?

गुरु जैसा कहे तुम वैसा करो। अपनी गलती मानो तो भगवान तुमको माफ कर देगा लेकिन अगर गलती नहीं मानोगे तो वह आखिर तक गाली देता रहेगा। जैसे जैसे सुख सुविधा मिलेगी, मनुष्य सांसारिक व्यवहार में जायेगा–वैसे वैसे भगवान से वृत्ति हटती जायेगी। इसीलिये हम तुमको (संसार के) व्यवहार में जाने से रोकते हैं।

जगत का चिंतन करने से मनुष्य कमजोर हो जाता है इसलिये जगत का चिंतन क्या करना? जब मनुष्य ज्ञान में नहीं होता है तो कोई भी दुख आने पर मनुष्य को (हार्दिक) धक्का लग जाता है और किसी किसी का तो हार्ट फेल हो जाता है। इसलिये ज्ञान लो और जल्दी लो। जगत के नामरूप में मनुष्य जहां से मन लगाता है वहीं से धोखा खता है। भगवान से चित्त लगाने वाले को आराम–शांति आती है। जगत के जो भी नामरूप हैं वे जहन्नुम में डालने वाले हैं।

पड़ गए प्रेमियों की अजब चाल में,
उम्र खोई वृथा के बुरे खयाल में।

अतः नामरूप से मन को हटाओ। प्रभू की भक्ति करो–हनुमान की जैसी भक्ति करो।

हनुमान ने राम से केवल भक्ति मांगी तो उसको अभी भी ढेरों लड्डू चढ़ते हैं उसकी पूजा होती है। अगर मनुष्य भगवान की राह में जान तक लुटाने का संकल्प करता है तो उसको सब कुछ मिल जाता है। चाहना खतम करो। जब चाहना खतम होगी तो सभी कुछ मिलेगा। भगवान बड़ा शक्तिशाली है–डाले माटी के पुतले में जान।

सत्संग नियम से करो। ऐसा नहीं कि गुरु है तो आए, गुरु नहीं है तो नहीं आए। इससे तुम्हारा ही सत्संग कट हो जायेगा। मन से बंधन काटो फिर परिवार से बंधन काटो। जब सारे बंधन कट गए तो अब फिर मत रुको, नहीं तो नियम खतम हो जायेगा।

31.5.86

अभी हम गद्दी पर बैठे हैं–न बेटे के हैं न बेटी के। हम जज की कुर्सी पर बैठे हैं। जो मनुष्य गुरु से दूर कर दे वह दुश्मन है जो गुरु से जोड़ दे वही तुम्हारा मित्र है।

जिस जीव को चाह नहीं सो शाहों का शाह,
चाह गई चिंता गई, मनवा बेपरवाह।

गुरु को तुम्हारी किसी चीज–धन की चाह नहीं। वह बेपरवाह बादशाह है। भगवान भक्ति के आगे झुकता है–पैसे से नहीं झुकता। तुम कहोगे भगवान भी पैसे से नहीं झुकता। तुम कहोगे भगवान भी पैसे पर झुकता है लेकिन ऐसी बात नहीं है। पैसा थूक है–हम तीन चार बार थूक दें तो पैसा ही पैसा हो जायेगा। गुरु को अगर पैसे ही परवाह होगी तो वह तुमको बनाने के लिये गाली नहीं देगा। लेकिन हम तो तुमको गाली देते हैं–हमें डर नहीं रहता कि आज तुमको गाली देंगे तो तुम भाग जाओगे और हमको कुछ नहीं दोगे। हमको भगवान देता है–हमें तुम्हारे धन की लालच नहीं है।

पैसा पीछे भगवान आगे। सीता पीछे राम आगे। उसी तरह माया पीछे होती है भगवान आगे होता है।

जितना जितना मनुष्य pure (शुद्ध अन्तःकरण) होता जाता है उतना उतना ज्ञान अंदर आता है। हर बात को छोड़ो, आगे बढ़ो। हवाई जहाज जब ऊपर उठता है तभी उड़ता है। उसी तरह जगत से उपराम होकर जियो। गुरु तुमको जिस रास्ते पर चलाता है वह तुम्हें भगवान बनाने के लिये चलाता है। कितना भी किसी का आधार हो–चाहे बेटा चाहे पति का सब बेकार हैं, सब छूटने वाले हैं। एक भगवान का आधार ही सच्चा है भगवान ही तुम्हारे पति पुत्र को सलामत रखता है तभी कुछ मिलता है। भगवान ही सबका आधार है और उसी के आधार पर सब आधारित है।

जहां ब्रह्मज्ञान की कथा होती है, कथा कहनेवाला ब्रह्मनेष्ठी है, ब्रह्म में खड़ा है, वह बहुत बड़ा ज्ञानी है, वही गुरु है। जो मनुष्य गुरु के पीछे जिंदगी लगा देता है उसको वह (गुरु) लुटने नहीं देता। उसका बेड़ा पार कर देता है नहीं तो हम सब अपनी अपनी चिंता में ही रहते। जब तुम और की चिंता में रहो, ऐसा त्याग तुममें हो तो तुम्हारा रास्ता अपने आप खुल जाता है।

गुरु से सच्चा इश्क होना चाहिये। मेरा फोटो रखने के बाद तुम दूसरे का फोटो रखते हो तो क्या लाभ मेरी फोओ लेने से? गुरु से इश्क हो तो गुरु की ही फोटो रखो। गुरु की फोटो सचेत करके देखो। गुरु से कोई नाता न हो–माता, पिता, सखा या किसी भी तरह का–तो खाली फोटो रखने से क्या लाभ? एक फोटो में तो तुम्हारी वृत्ति टिकी नहीं है दस फोटो रखने से क्या लाभ? फोटो मेरी वृत्ति दूसरे में–हम ऐसा पसंद नहीं करते। तुमको मुझसे इतना प्यार हो तो मेरी फोटो रखो।

बिना एक खूंटे से बंधे उद्धार नहीं होता। राजा जनक अष्टावक्र के पास गए–ज्ञान हो गया। धक्का खाने से क्या होगा? गुरु करे जान के, पानी पिए छान के। गुरु को जानकर, छानका मानो। लेकिन एक बार गुरु मान लेने पर मत भटको। जब तक ऐसा विश्वास न आए कि पूर्ण गुरु मिल गया है तब तक

भले ही भटको।

8.7.86

परमात्मा के भजन में जो तत्पर रहता है उसका Nature (प्रकृति) भी साथ देती है। ये हमको God gift (भगवत्वर) है, हम कहीं भी जाते हैं तो भगवान बदली कर देता है।

मर्यादा में घिसते घिसते भगवान कहां तक पहुंचा देता है। तुमको पता भी नहीं चलेगा। भगवान राम ने मर्यादा में रहकर जीवन का आदर्श दिखाया तो बाद में श्रीकृष्ण का अवतार लिया। जो तुम मर्यादा करोगे तो भगवान अवश्य देगा। भर देगा। तुम घबरा जाते हो।

अतिथि के रूप में भी भगवान आता है। ब्रह्मज्ञानी को तुम याद करो या न करो, याद आयेगा। भक्त और भगवान दोनों को नमस्कार करो तभी बेड़ा पार होगा। पैर छुए और वचन नहीं छुए तो कोई लाभ नहीं। तुमने आत्मा को पहचाना हमारा वचन छुआ तो पैर छूना हो गया।

जो भूल मान लेता है उसको ज्ञान हो जाता है। भगवान क्या नहीं कर सकता वह मुर्दे में भी जान डालता है। प्रीती (शिरडी के साई बाबा की भक्त) बहन का बेटा खो गया। साई बाबा के यहां जाती थी पर बेटा नहीं भूलता था।

देह अध्यास को छुड़ा पाना बहुत बहुत कठिन है। फिर भी गुरु जैसा कहे वैसा मानकर चलो तो तुम अपने जीवन में चमत्कार देखकर हैरान हो जाओगे।

ज्ञान में लगे रहो। गुरु दूरदर्शी होता है। भगवान की कृपा से ही सब कुछ है जो आज मिला है। जो अच्छा है वह भगवान का ही है जो बुरा होता है वह अपने कर्मो का है। जो कुछ भी कीर्ति, गति मति है वह सब भगवान की देन है। मन अच्छा अच्छा तो अपना किया मानता है और बुरा भगवान पर डालता है।

प्रत्यक्ष भगवान से प्रत्यक्ष शक्ति मिलती है। सामान्य शक्ति से कुछ नहीं मिलता। तुम प्रत्यक्ष भगवान की महिमा गाओ–महिमा करने वाला चाहे मूर्ख ही क्यों न हो–ज्ञानी बन जाता है। हमको कुछ ज्ञान ध्यान नहीं आता था पर गुरु महिमा और भक्ति की किताबें पढ़ते थे तो हमको ज्ञान हो गया और ज्ञान बोलने भी लगे। उसी के बाद पूना गए। जब भी हम जाते थे–लोग कहते थे गुरुजी तुमको याद करते रहते हैं। हमको यह जानकर बहुत खुशी होती कि गुरु हमको याद करता है। पहले भक्त भगवान को जपता है, जब भक्ति पूर्ण हो जाती है तो भगवान हमको–भक्तों को जपता है। हम भगवान की भक्ति वैसे ही करें जैसी कहावत है–**हाथ हज में दिल यार में।**

बिन गुरु संग ज्ञान नकह उपजे कर ले जतन हजार। गीता, पोथयां, पुस्तकें बहुत हैं पर बिना गुरु के संग के ज्ञान नहीं होता। पुराने संत, भगवान जो चले गए हैं उनके जपने से क्या होगा? वह तुम्हारा मन नहीं बनाता। आज बीमार पड़ो तो आज का जिंदा डाक्टर दवाई देता है–फोटो टंगा डाक्टर जो मर गया है वह दवा नहीं दे पाएगा। इसी तरह आज के गुरु से ज्ञान लोगे तभी ज्ञान होगा। तुम कहते हो पहले के संत बहुत करते थे पर आज भी संत हैं।

तुमको जो गुरु मिला है वह भगवान है। भगवान नाम जपाए बिना नहीं रहता जा प्रभू से नहीं चारा, ताको कीजे सदा नमस्कारा। तुम कहते हो जप करते तो हैं–लेकिन सच्चा जप स्थूलता में नहीं होता। सच्चा भजन मानसिकता से होता है। मनुवा तो दस दिसि रि ये तो सुमिरन नाहिं। इसलिये भगवान का भजन मानसिक रूप से करो।

भगवान शहन्शाह है। नानक फकीर थे पर उनके नेत्रों को देखकर लोग उनको सेठ समझते थे। कहते हैं तुम फरिश्ते का बस हाथ पकड़ लो, ज्ञान हो जायेगा। मन को परमात्मा बना ले जाओ। सच्चे दिल से फरिश्ते ही शरण ग्रहण करो तो तुम्हारे भूत मन को परमात्मा बना देगा। और जगहों पर भगवान का बस भजन होता है–हमारे यहां अन्तर्मन बनाया जाता है। यहां खुदी मिटाई जाती है। जगत में जाकर मनुष्य सूा जाता है क्योंकि वहां खुदी जागृत रहती है। यहां खुदी को मार मार कर भूसा बनाया जाता है।

जीवन संघर्षमय तो है परन्तु मनुष्य की लगन उसको सफलता दे जाती है। जो प्राण पण से इस राह में लगा रहता है तो वह सफल हो जाता है। सत्य तो केवल भगवान है। कुर्बानी के बिना कोई भी भगवान को नहीं पा सकता साधुओं को तो मप करने में इतना कष्ट नहीं है पर हम गृहस्थों को ज्यादा कष्ट सहना पड़ता है। गृहस्थी भी चलानी पड़ती है और उसी में भगवान का भजन भी करना पड़ता है। लेकिन सद्गुरु से मिलाप हो जाने पर रास्ता सरल हो जाता है।

जैसा aim होता है वैसा काम होता है क्योंकि हमारे हृदय के भाव को गुरु जानता है। जो ज्ञान के लिये पिपासा रखता है तो गुरु उसको ज्ञान दे देता है। जो सारा जगत छोड़कर गुरु की शरण में आता है गुरु उसको भी ज्ञान दे देता है। दुनियां के पदार्थ तो उसकी कृपा से मिल ही जाते हैं।

भगवान के लिये वैसी ही पड़प होनी चाहिये जैसे मछली पानी के लिये तड़पती है। दर्द ही भगवान से प्रेम पैदा करता है। दर्द जगावे जीव को, जीव जगावे पीव। भगवान का मयखाना सबके लिये खुला है। भक्त कहता है :

तेरा मयखाना साकी सलामत रहे,
पीने वालों का कोई ठिकाना नहीं।

गुरु का मयखाना हकी की मयखाना है। गुरु कहता है तू खुद प्रेम स्वरूप है लेकिन तुम दुनियां से प्रेम की आशा लगाए रहते हो। तुम सुख बाहर ढूंढते हो बाल बच्चों में सुख ढूंढ़ते हो पर उनमें वास्तविक सुख नहीं है। पूर्ण सुख केवल भगवान में ही है। भगवान के लिये मन से सब कुछ छोड़ना पड़ता है। बाहर से कुछ नहीं छोड़ना है। वे बड़े विवेकी पुरुष होते हैं जो सब कुछ होते हुए भी परमात्मा में दिल लगाते हैं। मां बाप का भी भाग्य बड़ा धन्य होता है जो अपनी संतान को भगवान में लगाते हैं। भगवान अमृत है। हम जब से भगवान का नाम लेने लगे हैं मिठाई कम खाते हैं क्योंकि उससे भी मीठा रस भगवान का है। अब तो हमको बहुत आनन्द आने लगा है।

हम तो जीते भी अब अपने भक्तों के लिये ही हैं। ये मम्मी बीमार थी–इसकी खबर हमको मिली तो हमको चैन नहीं पड़ा बेचैनी बढ़ गई। हमको मम्मी की ही याद आने लगी। मेरी मां मरी तब हम नहीं रोए पर मम्मी की हालत सुनकर आंसू आ गए।

तुमको गुरु से प्यार हो जाय फिर प्यार कभी भी नहीं जायेगा। श्रद्धा भक्ति चली जाय पर प्यार कभी नहीं खतम होता। जैसे रामचन्द्र गीध के लिये रो रहे थे वैसे ही आंसू हमको मम्मी की हालत पर आ रहे थे।

गुरु का aim तुमको बनाना है। तुम्हारी वस्तु से मुझे कोई लालच नहीं है। मेरा प्यार तुम्हारी भवना से होता है। हम तुम्हारे पैसे से प्यार नहीं करते। हम भजन से प्यार करते हैं। जब तुम्हारा मन भजन में होता है तभी हम तुमसे प्यार करते हैं नहीं तो हम खुश नहीं होते। तुमको भक्ति मुक्ति पाना जरूरी है।

जैसे हम व्रत रखते हैं तो कुछ नहीं खाते वैसे ही भगवान का ज्ञान पाने के लिये मन इंद्रियों का व्रत रखना पड़ता है। ब्रह्म सत्य, जगत मिथ्या का निरन्तर अभ्यास करने से ज्ञान हो जाता है।

गुरु को जिस बात से कष्ट होता है वह काम तुम न करो। गुरु के आगे अदब से रहो। एक दिन हम गुरुद्वारे में गए वहां गुरु साक्षात नहीं थे–ग्रंथ साहब रखे थे तो भक्त अदब के लिये सिर पर रुमाल रखे थे। हमको बहुत अच्छा लगा। तुमको भी गुरु के सामने अदब से रहना चाहिये।

जब जब भूल हो तब तब उसको जानना चाहिये। सच्चा पश्चात्ताप होने पर ही उस भूल की माफी होती है। भूलें तो बार बार होती हैं पर उनको न मानना मूर्खता है। जब उस भूल को महसूस नहीं करता तो जीवन भर भूल करता जाता है। भूल का रूप बन जाता है। जब कोई भूल या गलती गुरु बताता तो मन मानता नहीं है, जब गुरु से दूरी हो जाती है।

मनुष्य के कई कई रूप होते हैं। कोई रूप देखने में आता है कोई देखने

में नहीं आता है। संत दूरदर्शी होते हैं इसीलिये उनको पारदर्शी, दीनबन्धु आदि कहते हैं। भगवान के जिस जिस भक्त की जो जो इच्छा होती है वह पूर्ण हो जाती है तो भक्त भगवान का वही नाम रख देता है।

तुम कहते हो व्यक्ति भगवान नहीं हो सकता परन्तु व्यक्ति के द्वारा ही हम भगवान को जान सकते हैं। निराकार भगवान को तभी जान सकते हैं जब भगवान व्यक्ति के रूप में साकार बनकर आता है।

हम तुमको बनाने के लिये गाली देते हैं। तुम झूठे जगत के नामरूप में अटके रहते हो जिससे तुम्हारा नुकसान हो रहा है। हमको दिखाई देता है तो हम सह नहीं पाते। हम तुमको गाली देकर बचाना चाहते हैं। तुम बच्चे को क्यों मारते हो जबकि वह तो तुम्हारा प्यारा है उसकी भलाई लिये ही तो तुम उसको मारते हो। कभी कभी तो मारते मारते उसका गाल लाल हो जाता है–तो उसकी भलाई के लिये ही तो मारते हो। तुमको उससे कोई दुश्मनी तो है नहीं। उसी तरह तुम भी हमारे बच्चे हो–हम भी तुम्हारी भलाई चाहते हैं।

भगवान भक्त के अहसान का भी बदला देता है। कृष्ण को चोट लगी तो द्रौपदी ने बनारसी साड़ी फाड़ कर पट्टी बांध दी। समय आने पर जब वह भरी सभा में नंगी हो रही थी तो कृष्ण ने "साड़ी विच नारी है कि नारी विच साड़ी है" ऐसा कर दिया। भगवान ही निर्बल के बल राम हैं।

जब तक मनुष्य अपना बल समझता है तब तक भगवान सहारा नहीं देता। जब अपना सारा बल लगाकर हार जाता है और भगवान की याद करता है तभी भगवान सहारा देने आता है। द्रौपदी जब तक अपने पतियों का बल देखकर सहायता मांग रही थी तो भगवान ने मदद नहीं की। जब सबके सहारे टूटे दिखाई दिये और भगवान की पुकार की तभी भगवान ने उसकी रक्षा की और लाज बचाई।

जो होना होता है वही होता है।
बनी बनाई बन रही अब कुछ बननों नहिं।

10.7.86

प्रश्न ज्ञान के लिये प्रखर बुद्धि की आवश्यकता है या मंद बुद्धि को भी ज्ञान हो सकता है?

गुरुजी श्रद्धावान लभते ज्ञानं। गीता में साफ लिखा है कि जिसको भगवान से प्रेम हो जाय वही ज्ञान पा सकता है। प्रखर बुद्धिवाला तो अपने को होशियार समझ कर अहंकार में रहेगा तो उसको ज्ञान नहीं हो पाएगा। प्रखर बुद्धिवाले

भगवान के चमत्कार को इत्तफाक समझते हैं पर साधारण निरहंकारी बुद्धि वाला भगवान के चमत्कार को तुरन्त नमस्कार करेगा और महिमा भी करेगा। अतः ज्ञान के लिये बुद्धि की आवश्यकता नहीं है बल्कि समर्पण की आवश्यकता है।

प्रखर बुद्धि वाले भगवान से ज्यादा साइंस के चमत्कारों को मानते हैं परन्तु बाद में जब सब बल लगाकर हार जाते हैं तब भगवान को ही याद करते हैं। जो सब बातों से छूट कर भगवान में लगन लगाता है वही प्रखर बुद्धिवाला होता है।

भगवान से ज्यादा किसी भी वस्तु को तुम मानोगे, भगवान वह चीज़ तुमसे जरूर छुड़ा देंगे। माया बड़ी लुभावनी होती है। अभी तुम्हारा बच गले में हाथ डालकर कहेगा "आज सत्संग न जाओ" तो तुम बैठ जाओगे और कल जब वह तुमको छोड़कर चला जायेगा या उसे छोड़कर तुमको जाना पड़ेगा तो फिर क्या होगा? तुमको ही रोना पड़ेगा। अतः सारी माया को कुचलकर भजन करो।

तुमने हमको जितना प्यार किया है–उस प्यार को तुम बनाए रखो। अभी हमसे ज्यादा तुम जगत के सम्बंधों को प्यार करोगे तो रोना पड़ेगा। जिसने भगवान को आगे रखा है माया को पीछे किया है उसकी माया भी उसके पीछे पीछे आती है। इसलिये भगवान को इंजन बनाओ। माया तो फिर तुम्हारे पास आएगी ही–बस भगवान को सबसे ऊपर रखो।

ज्ञान अग्नि कर्म दग्ध। तुम्हारे जनम के कर्म गुरु जला देता है। ज्ञान की वजह से ही सारे कर्म जल जाते हैं। ऐसा ज्ञान पाकर मनुष्य धन्य धन्य हो जाता है। तुम लक्ष्मी की पूजा क्या करते हो? लक्ष्मी न किसी की हुई है और न किसी की होगी पर अगर भगवान को मना लो तो लक्ष्मी तो भगवान की दासी है–खुद ही आ जायेगी। तुम भगवान को दिल में बिठाओ और उसकी एक एक बात मानो तो कल्याण हो जायेगा।

जब भूली तू आपको तब प्यापे संसार।

अतः भगवान को सदा याद रखो। जहां संत होते हैं वहां से बीमारी भाग जाती है। यदि तुम मुक्ति चाहते हो तो **विष सम विषय तज तात रे**। जो विकार हैं उनको परमात्मा की ओर मोड़ दो। जब तुमको विषय ही चाह होती है तीी तुम्हारा आत्म चिंतन नहीं होता। विषयों के कारण ही परमात्मा के दर्शन नहीं होते। आत्मा जो सत्य है वह तुमको नहीं याद रहता और जो असत्य (जगत) है वह सत्य भासता रहता है। संसार व्यक्त है दिखाई देता है–वह तो सत्य भासता है लेकिन परमात्मा जो चेतन है, दिखाई नहीं देता उसका ही अनुभव नहीं होता। कारण विषय ही आत्मा का अनुभव नहीं होने देता।

नामरूप नाश है, ब्रह्म का प्रकाश है। जब हमारी अन्तर की आंख खुलती

है तभी ब्रह्म दिखाई देता है। अतः **मन की आंखें खोल बाबा मन की आंखें खोल**।

आत्मा होते हुए भी न भासने का कारण है हमारी वृत्ति बाहर ही बाहर है। जिस दिन हमारी वृत्ति संसार से हटकर परमात्मा में लगेगी–तभी हमें आत्मा का भास होगा। अन्तर्मुखी वृत्ति हुए बिना आत्मा का भास नहीं होता। सूरज चांद भी कभी कभी छिप जाते हैं पर आत्मा कभी नहीं छिपता।

आत्मा कोई वस्तु तो है नहीं जो दिखाई दे। आत्मा अनुभवगम्य है। आत्मा के आनन्द का जो अनुभव है वह बताया कैसे जाए? मनुष्य जब बाहर मुखी वृत्ति करता है तब आत्मा नहीं दिखाई देता लेकिन जैसे जैसे वृत्ति अन्तर्मुखी होती जाती है–वैसे वैसे आत्मा का अनुभव होने लगता है। वह दिखाई भी देने लगता है।

ज्ञानी को एक एक कदम फूंक फूंक कर रखना पड़ता है। ज्ञानी कहाना तो सरल है पर ज्ञानी हो जाना सरल नहीं है। गुरु हमारी वृत्ति को अन्तर्मुखी कराता है। ज्ञान सुनने में तो बहुत अच्छा लगता है लेकिन उस ज्ञान का मनन करना भी बहुत जरूरी है।

सत्संग में आकर नजर का कंट्रोल अवश्य होना चाहिये। यहां आकर भी तुम्हारा ध्यान नामरूप को देखने में होगा तो भजन कब होगा? यहां आकर तुम्हारी दृष्टि केवल गुरु पर होनी चाहिये। भक्ति बहुत श्रेष्ठ है–ज्ञान के बाद की भक्ति ही श्रेष्ठ है–ज्ञान के पहले की नहीं। पहले तुम घंटा केवल भगवान के मंदिर में बांध देते थे पर मन ठीक नहीं था। आज गुरु के मंदिर में मन की घंटी बांधो और मन को साधो।

गुरु नाम दाता मेरी सम्पदा है। गुरु व्यक्ति नहीं है– गुरु हीरा है हम कोहिनूर हीरा हैं। कहते हैं "गुरु मिला हीरा अनमोल।" तुम जानती हो? नहीं तुम नहीं जानतीं हम जानते हैं। हमको तो भजन से प्यार है। भजन के आगे स्वर्ग भी बेकार है। पहले के लोग स्वर्ग पाने के लिये तपस्या करते थे लेकिन स्वर्ग मिला भी तो क्या पुण्य खत्म हुए तो फिर वही नरक मिलता है।

बिना तारीख का

भगवान को पाने के लिये कुर्बानी करनी पड़ती है। जिसको संसार में किसी से रस नहीं आता उसको भगवान मिलता है। भगवान के लिये मन इंद्रियों का व्रत करना पड़ता है। चित्त से मन इंद्रियों पर कंट्रोल करो तुम महफिल में मत जाओ। गुरु से दूर करने वाली, जगत की ही महफिल है।

गुरु अपने प्रेम से शिष्य के अहं का नाश करता है। अहंकार हर पल आता

रहता है। जहां बादल आया कि आसमान छिप जाआ है। उसी तरह अहंकार से आत्मा छिप जाता है। जब आत्मा का अनुभव होने लगता है तब सर्वत्र ऐ ही आत्मा दिखाई देता है। परमात्मा ही कई रूप धारण करके आया है–जब ऐसा अनुभव होने लगता है–तभी ज्ञान होता है।

भगवान दूर नहीं है, तुम्हारे अंदर है। भगवान दिल के मंदिर में बैठा है पर हम जान नहीं पाते। आनंद कन्द भगवान तुम्हारे घर में बैठा है। तुम्हारा स्वरूप ही भगवान है। हम भगवान को खाली मंदिरों में समझते हैं पर वह तुम्हारे सबसे पास है। कहते हैं **"मोको कहां ढूंढ़े रे बन्दे मैं तो मेरे पास में हर सांसों के सांस में।**

शरीर आत्मा की सत्ता से ही चलता है। शरीर जड़ है आत्मा चेतन है। जब जड़ और चेतन का संयोग होता है तभी शरीर चलता है काम करता है। इसी से परमात्मा को घट घटवासी कहते हैं। जब जब अधर्म होता है, धर्म की हानि होती है तब तब भगवान साकार रूप में आता है।

ज्ञान गुरु से ही मिलता है।

गुरु चेले का सम्बन्ध आज का नहीं जनम जनम का होता है। मुझे मालूम हो जाता है कि कौन ज्ञान ले पाएगा, कौन नहीं। एक आदमी होता है जो आज पुरुषार्थ शुरू कर रहा है। एक होता है जो जन्मों जन्म से पुरुषार्थ किया होता है उसको उतना ही जल्दी ज्ञान हो जाता है।

गुरु पूर्णिमा इसीलिये मनाते हैं क्योंकि गुरु ने हमको बदला है। हमारे पांच विकार जो हमको खाते रहते थे, उनको दूर किया, उनका नाश किया इसीलिये हम आज भी गुरु की पूजा करते हैं और आगे भी करते रहेंगे। जो हमारे मन को बदल दे तो हम उस गुरु की पूजा क्यों नहीं करेंगे? जो हमारा जीवन बदल दे वही गुरु है।

जो हमको change कर सकता है वही हमारा गुरु है। यदि तुम्हारे में बदलाव आया हो तभी हमारी पूजा करना नहीं तो बिल्कुल मत करना। पहले गुरु का महत्व समझो। हम तो गुरु का महत्व जाने बिना ही गुरु की पूजा करने लगे। धीरे धीरे गुरु से प्रेम होने लगा तो हम गुरु की और पूजा करने लगे। हमको किसी ने माला डाली तो हमने पूछा माला क्यों पहना हे हो? तो कहा कि आज गुरु पूर्णिमा है। तब हमें पता चला कि गुरु पूर्णिमा का इतना महत्व है। हम तो अपने गुरुजी की पूजा हृदय से करते थे चाहे वह गुरु पूर्णिमा की पूजा न करने के लिये चाहे कितना भी डांटे।

गुरु मिलने से हम दूसरे हुए। पहले हम पूजा करते थे पर हममें change नहीं था लेकिन गुरु मिलने से हममें change आया। विकारों का नाश हुआ। इसलिये हम गुरु की पूजा करते हैं।

अगर तुम्हारे हृदय में गुरु का महत्व न हो तो तुम हर्गिज मत आना। जो मेरे लिये सिर्फ भगवान के लिये आता हो–वही आए। आओ गुरु पूजा करने और ध्यान महफिल को ताकने में हो–यह नहीं हो सकता। इसलिये बड़ी सावधानी से आना। भगवान को दिल में बिठाना हो तो आना नहीं तो मत आना। चाहे जितनी भी दूर से आया हो चला जाए। पूजा करने के लिये पुजारी बनकर आना। गुरु के यहां शिविर होता है, उस शिविर में केवल गुरु में ध्यान रहे, भगवान में डूबा रहे।

बहिर्मुखी वृत्ति मत रखना। अपनी वृत्ति से दूसरे को कष्ट हो ऐसा मत करना। मेरे घर आना हो तो खाली भगवान ध्यान में आओ। जो नामरूप में नजर डालता है, उसके हम दुश्मन होते हैं। घर से ही गुरु गुरु करके आना।

तुम भक्ति में रहोगे तो हम तुम्हारी सेवा करेंगे। भगवान कहता है "रथ हांकू पग धोऊँ।" वक्त के गुरु का कढ़ाव प्रसाद होगा तो हम आएंगे। जब गुरु मिल जाए तो गुरु का कढ़ाव प्रसाद करना चाहिये। रोम रोम से ज्ञान कहने वाले गुरु का ही कढ़ाव प्रसाद होना चाहिये। जो राम में डूबा होगा जिसकी मन इंद्रियां राम में डूबी होगी वही अच्छा होगा।

ऐसी जगह नजर न डालो जहां से योग नष्ट हो जाए। तुम्हारी चंचलता ही तुम्हारा योग समाप्त कर देती है। राम राम ही करो। राम में रहने वाला ही हमको अच्छा लगता है। आत्मा ऐसा है जो सुनते सुनते बोलते बोलते भी भूल जाता है। केवल "आत्मा पश्यन्ति आत्मा" हम सब देख रहे हैं फिर भी हमारे अंदर कुछ नहीं है। सारे जगत के सम्बन्धों को देखते हुए भी हम नहीं देखते।

उनका धन्यवाद करो जो तुमको उल्टा बोलते हैं। अगर वो ठोकर न मारें तो तुम भगवान का भजन नहीं कर सकते। कालीदास की औरत ने फटकारा तो वह महान संत कवि बन गए। तुलसी दास भी अपनी स्त्री के उल्टा बोलने से संत कवि बन गए।

गुरु के बरबार में कहीं पर भी बैठने को मिल जाए, वहीं खुश होकर बैठ जाओ। इतना ही अच्छा समझो कि गुरु ने बैठने तो दिया। कभी कभी तो गुरु बाहर निकाल देता है। इसलिये गुरु जो भी करे वह सहना पड़ता है। बैठने दिया यही बहुत है–हम तो दरबार में बैठने के काबिल नहीं हैं मुंह दिखाने के भी काबिल नहीं हैं।

तुम गुरु से तेज़ी से बात न करो। Yes man बनना चाहिये। अंगद साहब गुरु की हां हां करते थे तो गद्दी मिली। गुरु जो भी बोले तुम हां करो। उसीमें राज देखने में आता है। ऐसी तपस्या बहुत कठिन है। अंगद तन मन प्राण से गुरु की आज्ञा मानते थे तभी उनको गद्दी मिली। गुरु की बात को काटना नहीं चाहिये।

तुम भगवान का चिंतन क्यों नहीं करते? बेटे बेटी का ही चिंतन दिन रात क्यों करते हो? हम इन बातों को महत्व नहीं देते। हमारे भी बेटे बेटी हैं–हम उनकी चिंता नहीं करते तो तुम्हारी क्या सुनेंगे?

बेला अपनी करनी भरता है। जब गुरु चेला अपनी अपनी करनी भरते हैं तो संसार की क्या बात है? एक डाल पर गुरु बसत हैं, एक डाल पर चेला गुरु की करनी गुरु भरेगा, चेले की करनी चेला। भगवान अन्याय नहीं करता। हमारे ही कर्मों का लेन देन है। जैसा हमने लड़के के साथ व्यवहार किया वैसा ही व्यवहार वह आज हमारे साथ करता है–इसमें रोना क्यों?

हम कहते हैं–हमको भगवान ने कष्ट दिया। यह बात नहीं है। अरे! हमने वैसे ही कर्म किये थे। अरे! बोलो कि हमने तो बहुत बुरे कर्म किये थे लेकिन भगवान ने बहुत थोड़ी सज़ा दी है।

हाथ पैर नौकर हैं–तुम अपने को कर्त्ता क्यों मानते हो? भगवान ने तुम्हें नौकर हाथ पैर दिये हैं उन्हीं से काम कराओ। अपने को करने वाला मानो ही नहीं। अपने को कर्त्ता मानने से ही थकान होती है।

भगवान को नम्रता बहुत प्रिय है। मारा मारी करने से कोई फायदा नहीं है। परमात्मा दीनता से खुश होता है। तुम लोग गुरु पुर्णिमा पर मोटी मोटी माला लाते हो–हमें पहनाते हो। क्या फायदा? वही पैसा तुम किसी गरीब को दो या कुछ खिला दो तो अच्छा है।

दुःख दारू (दवा) सुख रोग भया। दुख में ही भगवान याद आता है। दुख न हो तो ये नीच मन कभी भी राम राम न कहे। नफ़ा नुकसान तो अपने कर्मों का है पर उसका कष्ट कम लगे–यह भगवान की ही कृपा से होता है जब गुरु ज्ञान देता है।

योग से कर्म कट जाता है। तुम झट कह देते हो (जब हम तुम्हारी गलती बताते हैं) "हमारी गलती नहीं है" लेकिन घरों में जो भी कलह है वह तुम्हारी वजह से ही है। हमसे भूलें तो होती ही रहती हैं लेकिन भगवान माफ करता रहता है।

हम तो हनुमान को बहुत प्यार करते हैं–रोज उसका नाम लेते हैं लेकिन जिससे हनुमान बना है उसको छोटा मत करो। हनुमान का नाम लो पर पहले भगवान का। हम यह मानते हैं कि हनुमान महान है–उनसे विनती करनी चाहिये कि जेसी वृत्ति राम में तुम्हारी है वैसी ही हमारी भी हो।

जब भगवान से प्रेम करोगे तो बहुत प्यार होगा। फिर परिस्थितियां भयानक आयेंगीं उनमें भी टिक जाये तो।

बंधन तभी होता है जब तुम नाम रूप करके आदमी को देखते हो। तुम्हारी वृत्ति अगर भगवान में होगी तो कोई बंधन नहीं डालेगा। वृत्ति को स्थिर करो। हम तुम्हारी वृत्ति को ही गाली देते हैं। तुम अपनी वृत्ति को बनाओ। जब तक तुम्हारी वृत्ति मुझमें होगी–हम गाली नहीं देंगे। हम जो बात कहें उसे मानों, लड़ाई मत करो।

अपनी वृत्ति को तुम जैसे भी बने बनाओ। गुरु की समीपता लो तो तुम्हारी वृत्ति भी बनेगी, मन भी बनेगा। गुरु के पास आओ तो मन को घर पर छोड़ आओ। जो गुरु के घर में धरना देकर बैठेगा तो गुरु उसको नहीं निकाल पाएगा। उसकी सच्चाई ही कारण है। यह गुरु का दरबार है। जिस बात से गुरु चिढ़ता है वह बात मत करो। उससे उसे तो बन जाओगे। हम तो अपने गुरु की नज़र को देखते रहते थे। एक बार गुरु ने (गुरु के कहने पर ऐसा नहीं वैसा कह दिया) बस नजर छेढ़ी करके जो दिखाई तो वह बात हमने कभी दुबारा नहीं की। गुरुजी जैसा कहते थे, हम वैसा ही करते थे। इसी लिये आज हम बन गए। हम तुम्हारी तरह ढीठ नहीं थे कि बार बार मना करने पर भी गुरु के यहां गलती करें।

मिलिट्री वाले को दुनियां का ख्याल नहीं रखना पड़ता है। बस यही ध्यान रखना पड़ता है कि देश ही रक्षा कैसे हो? उसी तरह हमारा भी aim है तुमको बनाना, तुम्हारा उद्धार करना। गणिका, अजामिल को भी भगवान ने एक पल में तार दिया था।

अजामिल पापी का पाप था बेशुमार,
याद किया तो आ गया तारनहार।

इसलिए तुम अपनी वृत्ति भगवान में टिकाओ। भक्त किसको कहते हैं? तुम्हारी गैरहाजिरी में तुम्हारी किसी वस्तु का फैसला गुरु कर दे–वही असली भक्त होता है। गुरु का इतना अधिकार अपने भक्त पर होना चाहिये कि भक्त से पूछे बिना उसका फैसला कर दे।

18.7.86

प्रभू ही माता, पिता, बन्धु, सखा, द्रव्य हैं। भगवान ही तुमको सब कुछ देता है। जो भगवान को ऐसा माता पिता, बन्धु, सखा, द्रव्य समझता है उसको भगवान भर देता है।

विवेकानन्द बोलता है– आदमी, पत्थर, फोटो, झाड़ पत्ती, तुलसी, शालिग्राम में तो भगवान मानता है पर मनुष्य रूप में ही भगवान को नहीं मानता। किसी को कोई कष्ट हो तो क्या तुलसी या पीपल का पेड़ बीमारी दूर कर सकता

है? शालिग्राम को पानी डालो तो क्या वह तुम्हारा कल्याण कर सकता है। एक लोटा जल गुरु को प्रेम से दो तब देखो वह क्या करता है। तुम्हारी यह पुरानी परम्परा है तुलसी आदि की पूजा करना।

विवेकानन्द ने यह भी कहा है–गुरु से मन को खोलो। मन का पर्दा हटाओ तब तुम्हारा मन खाली हो जायेगा और अच्छा बन जायेगा। गुरु का प्रेम तपस्या करा ले जाता है लेकिन जो गुरु के लिये बस direct (सीधे) आता है वह बड़ी बात है। कोई आता है, यह काम भी कर लें वह काम भी कर लें, गुरु का दर्शन भी कर लेंगे। केवल गुरु के ही लिये इतनी दूर से आना बहुत बड़ी बात है। देखो! ये कलकत्ता से आई हैं केवल गुरु दर्शन के लिये। आने में भी कोई बाधा नहीं डालेगा। यदि तुम्हारा मन पूरी तौर से गुरु दर्शन का लालायित होगा। इतनी दूर से आना तभी सफल होगा जब सिर्फ मेरे में ही आंख होगी।

जानते हुए भी कि गुरु आरा लेकर बैठा है, गाली भी देगा लेकिन फिर भी मन इधर उधर भटक जाता है। इसीलिये कहते हैं हरि हरि बोल, ऐसे हरि को माने।

जब मन भगवान में होता है तो दिव्यता आ जाती है। इसको तो हजार रोग लगे थे पर अब देखो इसके चेहरे में कितनी रौनक है। तुम कहोगे–गोरेपन की है–ये बात नहीं है। भगवान (राम और कृष्ण) तो काला है, उसके चेहरे में कितनी रौनक है। इसका कारण है–वह भगवान है। चेहरे में रौनक तभी आएगी जब उसकी वृत्ति भगवान में होगी चाहे वह गोरा हो या काला।

तुम लोग माता पिता जो भजन करते हो तो बच्चों में भी वही संस्कार आने लगते हैं। जेसे बीमारी का असर खून में आता है वैसे ही भजन की वृत्ति का असर और संस्कार भी खून के रिश्ते में आ जाते हैं।

भगवान भगवान करे तो बड़ी कृपा होती है। तुम गुरु से ज्ञान मांगते हो तो गुरु तुम पर कृपा करके ज्ञान देता है। शब्द भरे ता फल पावे। गुरु जो शब्द बोले उसको जमीन में यानी व्यर्थ में न जाने दो–उनको ह्रदय में उतारो–यही देवी दुर्गा देवता है। यही गुरु की पूजा है।

गुरु का नाम करनेवाला कौन है? गुरु को बदनाम करनेवाला कौन है? तुम्हीं लोग हो। ऐसा काम मत करो जो तुम्हारी भी बदनामी हो और मेरी भी। गुरु पूर्णिमा आई है कोई तुमको टैक्स नहीं है। हमको तो तुम्हारी माला भी पसंद नहीं है। माला लाओ, सामान लाओ और वृत्ति कहीं और है–ऐसी माला, ऐसा सामन हमको पसंद नहीं है। हमको तुम्हारी वृत्ति अच्छी नहीं लगती।

तुम खाली भगवान की पूजा करो। मन में tension (मानसिक तनाव) रखकर आना कि ये देना है, वह देना है–बेकार है। तुमको बस अपनी वृत्ति देनी है। हमारे पास कोई कमी नहीं है।

भगवान अपने भक्त की सेवा को कभी भूलता नहीं। द्रौपदी ने साड़ी फाड़कर भगवान कृष्ण की उंगली में बांधी तो भगवान नहीं भूला। उसने (भगवान ने) उस छोटी सेवा के बदले में उसकी (द्रौपदी की) साड़ी असीमित कर दी। इसलिये यह न कहो कि भगवान भक्त की सेवा को भूल जाता है।

अपनी अपनी तपस्या का फल हर आदमी भगवान से पाता है। गीध ने सीता का पता बताया तो उस उपकार का बदला भगवान राम ने अपने हाथों से उसका (गीध का) दाह संस्कार कर के चुकाया। गीध को अपना धाम दिया। तुमने भगवान को समझा हो तो तुम्हारा दिल खिल जाए।

तुम चाहे जितने ज्ञानी, महान बन जाओ पर गुरु को न भूलो। गुरु का नाम ऊपर रखो। गुरु नाम दाता मेरी सम्पदा है।

सत्संग का मतलब है अभ्यास करो नहीं तो अचानक उल्टी परिस्थिति आती है तो मनुष्य धड़ाम से गिर पड़ता है। मतलब कि आसक्ति मत रखो। किसी का आधार मत लो। अपने दम पर भजन करो। ये दरिद्रो। का ज्ञान नहीं राजाओं का ज्ञान है।

अगर तुमको मुक्ति चाहिये तो **"विष सम विषय तज तात रे।" आरज, क्षमा, संतोष, शम दम पी सुधा दिन रात रे।"**

गुरु जिस टाइम तुम्हारा मन रूपी मकान बना रहा है, उसके ऊपर सौंप दो–अच्छा बना देगा।

19.7.1986

जैसे हमारे शरीर की खुराक हमको मिलती है तब हम ठीक और स्वस्थ रहते हैं उसी तरह रूह यानी आत्मा की खुराक होती है जिससे हमको शांति मिलती है। वह खुराक है ज्ञान।

एक संत जब स्वर्ग जाने को हुआ तो पहले अपने साथियों के पास गया। उसके दर्शनों से उनको शांति मिली तो संत ने पूछा क्या बात है कि तुम इतने आनन्द में हो तो उन्होंने (साथियों ने) कहा आपके दर्शनों से। जब स्वर्ग के दूत उस संत को लेने आए तो संत ने मना कर दिया और कहा कि मेरे इन साथियों को जब मुझसे आराम मिलता है तो मैं स्वर्ग क्यों जाऊँ? दूतों ने कहा कि आपको अकेले ही चलना है तो संत ने कहा–ये मेरे साथी भी मेरे साथ चलेंगे तभी मैं स्वर्ग जाऊँगा तो दूतों को उन सबको ले जाना पड़ा। इसी से कहते हैं–दर्शन साधू के करे, साहब आवें याद।

तुम अपने स्वभाव को बदलो। तुम कहोगे कि कठिनाइयां आएं ही

नहीं–ऐसा हो नहीं सकता। तुमको अपने स्वभाव को बदलना है। हालत बदले या न बदले–खुद change हो जाना है तो सब अच्छा अच्छा हो जाता है। हालत तो अपने आप ठीक होती है। तुम खुद ठीक हुए नहीं और हालत ठीक हो गई, तो क्या फायदा? तुम खुद को चेंज करके दुख वाली हालत को भी सुख में बदल सकते हो।

सभी प्रेम स्वरूप हैं। हम ही खराब हैं। हम अच्छे हो जायें तो सब अच्छे हो जायेंगे। हम कहते हैं तो तुम समझते नहीं लेकिन जिस दिन ये बात समझ जाओगे खुद को बदल लोगे, अपने पर पश्चात्ताप करोगे तो सब अच्छा हो जायेगा।

मनुष्य हमेशा दूसरे की भूल बताता है लेकिन भूल खुद ही होती है। भगवान हमेशा समझाता है। तुम अपनी गलतियों के लिये सिर्फ पश्चात्ताप करो तभी ज्ञान होगा।

भगवान व्यक्ति रूप में ही होता है। तुम कहोगे भगवान पत्थर (की मूर्ति) वाला होता है। पत्थर वाला भगवान तुमको ज्ञान नहीं देगा। भगवान तो निराकार है लेकिन व्यक्ति के रूप में ही साकार आकर साकार शरीर से निराकार में ले जाता है। अतः साकार रूप में ही निराकार भगवान आकर ज्ञान देता है।

इतने टीचर हैं, इंजीनियर हैं कितने विद्वान हैं लेकिन ब्रह्मविद्या लेने के लिये कष्ट में भी आते हैं। हमको तो कुछ भी नहीं आता फिर भी हमारे पास ब्रह्म विद्या है इसलिये तुम आते हो। ब्रह्म विद्या के बिना आराम नहीं है–लाख विद्या आए। अतः ब्रह्म विद्या सब विद्याओं में श्रेष्ठ है।

जो भगवान हमारे सुख दुख हानि लाभ में साथ दे वही भगवान है। तुम तो जो दिखाई देता है उसको ही भगवान कहते हो। वह तुमको क्या आराम देगा? भगवान के बिना जीवन में अंधेरा है। Light का जीवन अच्छा होता है। बिना लाइट का जीवन अच्छा नहीं होता। इसलिये साकार भगवान से आकर ज्ञान लो।

दुख दारू (दवा) सुख रोग भया। जब अकेला होता है, घबड़ाता है तभी भगवान याद आता है। जब कोई कम्पनी नहीं होती तभी तुम हमको याद करना है। जब तुम्हारा हृदय का तार हमसे फिट होता है, हमको याद करता है तो हम भी तुम्हारी याद करते हैं।

हृदय और नजर को संसार से बचा कर रखो तभी गुरु से प्रेम होगा। नजर और दिल मन एक जगह टिकाओ तुम अपनी नजर को महफिल में न लुटाओ। जब प्रभू के अलावा कहीं और नजर टिकने लगेगी तो गुरु से खाली शो बिजनेस हो जायेगी। गुरु का सौदा हृदय का सौदा होता है। भगवान को खाली तुम्हारा हृदय चाहिये। भगवान सिर्फ तुम्हारे भाव का भूखा है।

जो भी आज गुरु से दूर हुए हैं महफिल में फंसे हैं–वो आज टुकड़े टुकड़े हो गए हैं। हम महफिल में नहीं जाते! हमारे पास क्या कमी है? हमारे पास तो सारे साधन हैं–घूमने, फिरने, पिक्चर जाने के लिये लेकिन हमको तो महफिल में जाना ही अच्छा नहीं लगता। ईश्वर से प्रेम करने के लिये सारे जगत की महफिल को छोड़ना पड़ता है। मीरा ने सारे जगत को छोड़ा–भगवान के प्रेम में डूबी तो आज उसका नाम है। उसके भजन गाए जाते हैं।

तुम जगत के प्रेम को प्रेम समझते हो लेकिन यह वास्तविक प्रेम नहीं होता। यह प्रेम–स्वास्थ्य लागि करहिं सब प्रीति का प्रेम है। द्रौपदी ने कृष्ण से प्रेम किया था। जब कृष्ण की उंगली में चोट लगी तो द्रौपदी यह नहीं देखा कि उसकी साड़ी खराब हो जायेगी–फाड़कर फौरन भगवान की उंगली में बांध दी। भगवान प्रसन्न हो गए। उसी प्रेम को भगवान ने जब वह भरी सभा में नंगी हो रही थी और जगत के सारे सम्बन्धों से हार मान कर भगवान को याद करने लगी तब साड़ी के रूप में चुकाया।

जब चेतन भगवान मिलता है तब हमारी सारी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं। लेकिन इच्छाओं का उठना अच्छी बात नहीं है। इच्छा करके भी क्या होता है? मनुष्य को परिस्थितियों से घबराना नहीं चाहिये। न चाहते हुए भी परीक्षा तो आती ही है–इसलिये यह सोचो ना कि परीक्षा को पास करेंगे। परीक्षा कितने दिल चलेगी? परीक्षा तो देनी ही पड़ेगी। भगवान भी अपने भक्त को परखने कि लिये परीक्षा लेता है कि देखें ये मुझसे प्यार करता है या नहीं। तुम बोलते हो हम भगवान को ज्यादा प्यार करते हैं लेकिन भगवान तुमको ज्यादा प्यार करता है।

प्रश्न भगवान किसी को ज्यादा प्यार करता है और किसी को कम।

उत्तर भगवान भावानुसार प्यार करता है।

20.7.86

भगवान हमारे सब कर्म देखता रहता है। भक्त का दिया वह चुकाता अवश्य है।

23.7.1986

गुरु की Sound (साउन्ड) को Catch (कैच–पकड़ने) के लिये दिल दिमाग एकाग्र करना पड़ता है। गुरु का ज्ञान बहुत ऊँचा है। परमात्मा सबसे परे ऊपर का है। उसके लिये वैसी ही बैटरी भी चाहिये। पूर्ण श्रद्धा भी होनी चाहिये। बोलते हैं–मन्मना भव। जब तेरा इतना ध्यान मुझमें होगा तभी ज्ञान होगा। ज्ञान मेरे मुख से निकलेगा। यह गुरु की गद्दी उसी के लिये है जो परमात्मा के डूब मरा

होगा। गुरु निराकार ब्रह्म हैं वह सब जानता है। अगर तुममें सच्चाई होगी–तुम्हारा रोम रोम परमात्मा में डूबा होगा तो गुरु पहचान जाएगा। वह स्वयं गद्दी दे देगा–तुमको बोलना नहीं पड़ेगा।

गुरु का ज्ञान प्रश्न और उत्तर का है। इतनी दूर से आए हो ज्ञान की जिज्ञासा लेकर आओ। मेवा मिठाई लेकर मत आओ–ज्ञान की जिज्ञासा लेकर आओ। मेरे सामने वही बैठे जो आत्मा के ज्ञान की जिज्ञासा लेकर आए। मेरे सामने बैठने की कोशिश मत करो–क्या अच्छा किया है जो गुरु के बिलकुल सामने बैठ जाते हो। तुम्हारी खट खट का vibration (वाइब्रेशन तरंग) हमारा ध्यान भंग करता है। तुममें से कोई मुझे पसंद नहीं है। तुम तो सबसे प्यार से बात भी नहीं करते–सबसे प्यार से रहो।

तुम शुकराना भी नहीं करते। भगवान जो देता है उसमें भी कमी निकालते हो। अच्छा देने से भी क्या लाभ? जितना सामन दिया है उसका भी अहंकार होता है। हमारा ज्ञान catch (पकड़ने) करने वाला है। विषय विकारों के कारण मनुष्य गुरु के ज्ञान को ग्रहण नहीं कर पाता। तुम्हारे अंदर भूसा भरा है–इस कूड़े खजाने को निकालो। गुरु का दर सच्चाई का है, यहां किसी भी छल कपट वाले की नहीं चलेगी।

बाहर के त्याग से कोई लाभी नहीं। त्याग अंदर का होता है। जिसके अंदर आत्म ज्ञान होगा उसका चेहरा रौनक वाला होगा–चाहे देखने में कैसा भी हो।

हम जो भी कमी तुममें बताते हैं तो खाली हां करो तो कल्याण हो जायेगा। मनमुखी व्यक्ति से कभी मेल न करो। यह हम इसीलिये कहते हैं कि अगर तुम मनमुखी व्यक्ति से संग करोगे तो गुरु से तुम्हारा विछोह हो जायेगा। मनमुख खुद तो गुरु से विमुख है, तुमको भी गुरु से दूर कर देगा। मेरी नजर यह सब खूब देखती रहती है। जब तुम्हारा ध्यान गुरु में है। तब तुम्हारी नजर जाने जाने वालों के ऊपर क्यों जाती है? गुरु के दरबार में बैठकर ध्यान एकाग्र करो नहीं तो तुम्हारा मन इधर उधर जायेगा तो हमारा ध्यान भंग हो जायेगा। वह पाप तुमको लगेगा।

गुरु की तुमको बहुत इज्जत करनी चाहिये। गुरु अगर तुमको गाली देता है तो तुम चुप रहो घर जाकर भी कुछ न कहो तो फिर तुम ठीक हो जाओगे परन्तु तुम्हारे सम्बंधी तुमसे दूर हो जायेंगे।

श्रद्धा वाला दूसरे के दिल में भी श्रद्धा पैदा करता है। तुम भी श्रद्धालु का संग करो। अश्रद्धालु का संग करने से डूब जाओगे गुरु के सामने और बाहर सदा ही गुरु मुख रहो। मनमुखी का संग न करो।

हम जब गर्भ में थे तो कितना वादा किया था भजन करने का पर मां माया वाली मिली। उसने हमको भगवान भुला दिया। अगर भगवान के प्रेम वाली

मां होती तो बालक में श्रद्धा पैदा करती है। तुम बाहर मुख वाले न बनो। अन्तरमुख होते रहो। जब अन्दर जाकर आत्मा से जुड़ोगे तो लाभ होगा। बाहर आज मेला भरा है कल नहीं रहेगा। लेकिन असली आनन्द अन्दर है। गुरु को अंदर ले जाकर आत्मा का चिंतन करो। तुम यहां आकर भी अगर व्यक्ति से जुड़ जाओगे तो तुम्हारा सारा ज्ञान ध्यान चला जाएगा। गुरु की जिम्मेदारी जो उठा सके वही गुरु का प्यारा होता है अपना घर समझे।

यहां भाव की जरूरत है। भाव होगा तो भगवान अपने दर से तुमको कभी नहीं निकालेगा। तुम सोचते हो पैसे से भगवान को खुश कर लेंगे पर तुम्हारा यह सोचना गलत है। भगवान भाव का भूख है। हम भी तुम्हारे भाव के भूखे हैं। तुम्हारे पास सोना है तो क्या? हमारे पास पीतल की माला है। हमारे पीतल की कीमत तुम्हारे सोने के हार से ज्यादा है। क्यों? क्योंकि हमारे पास हरिनाम का सोना है। पैसे से कुछ नहीं होता। तुम पैसे को भगवान से ज्यादा मानते हो लेकिन भगवान पैसे से बहुत बड़ा है।

कर्म में निपुणता होनी चाहिये। यह तो बहुत जरूरी है परन्तु उसके साथ कर्म करना भी जरूरी है। भगवान भगवान करते करते कर्म की पूजा हो जाती है। कर्म में निपुणता होना ज्ञान का ही एक अंश है। कर्म भी एक तपस्या है। कर्म में प्रेम भी होना चाहिये। जो भी काम करो–भगवान के लिये कर रहा हूं, ऐसा सोचो। अपनी तपस्या को इधर उधर जाकर मत गंवाओ। तपस्या से ही गुरु की नजर मिलती है। कर्म करते वक्त गुरु देखता रहता है कि कर्म किस तरह करता है। प्रेम से या बोझ समझकर। गुरु देखकर खुश हो जाता है जब उसका शिष्य कोई भी कर्म हो प्रेम से करता है।

संसार में सुख मिल सकता है। आनंद नहीं मिल सकता। चाहे लाख भटको। भटक भटक भव के भोगों से कबहूं न शांत भयो। सच्चा सुख, सच्चा आनंद, सच्ची शांति भगवान में है। संसार के सभी सम्बन्ध मतलब के हैं इसीलिये उनमें शांति नहीं है। भगवान में ही सच आनंद, सच्ची शांति है, जगत में कुछ नहीं है।

बाला और मर्दाना गुरु नानक के शिष्य थे। गुरु नानक ने कहा कि संसार में सुख नहीं है। एक बार नानक जी कहीं जा रहे थे। एक सेठ सोने का हुक्का पी रहा था। एक शिष्य ने गुरु नानक से कहा आप कहते हैं संसार में सुख नहीं है लेकिन देखिये ये सेठ कितना सुखी है, सोने का हुक्का पी रहा है। गुरुजी ने कहा उससे पूछो। जब सेठ से पूछा गया तो उसने कहा–मैं बहुत दुखी हूं। मेरी बीबी एक बार बहुत बीमार पड़ी। वह बोली मैं मर जाऊँगी तो तुम दूसरी शादी कर लोगे। मैंने बीबी के लिये ऐसा काम किया कि वह ठीक हो गई पर वह बाहर ही बाहर लोलुप होकर भटकने लगी। अब उसे देख कर मेरा जी जलता है, इसीलिये मैं हुक्का पीता बैठा रहता हूं।

अतः तुम अपने को ठीक और सुखी समझो और भगवान का शुकराना करो। संसार में दुख ही दुख है। ज्ञानी की वृत्ति अर्न्तमुखी होती है। अज्ञानी चाहे कुछ भी करे लेकिन तुमको अर्न्तमुखी होना चाहिये। जिसे परमात्मा का रसपान करना हो वह व्यक्ति मुझको अच्छा लगता है।

तुम किसी को कष्ट मत दो। जो यहां मुझको जलाता है वह घर में कैसे शांत रहता होगा? मेरे दरबार में आकर मन बनाओ, तुम्हारा मन ठीक नहीं है। तुम मुझसे छिपाते हो कहते हो मन अच्छा है। लेकिन गुरु जानी जाननहार है। तुम्हारी आत्मा तुमसे इसीलिये दूर है क्योंकि तुम बाहर बाहर वृत्ति रखते हो। तुम्हारा नाम भगवान क्यों नहीं पड़ा? अभी कोई तुमको हीरो कहे तो खुश हो जाओगे। ऐसा काम क्यों नहीं करते कि भगवान कहलाओ?

तुम पांव छूते हो, यह अच्छा नहीं। वचनों को छुओ। तुम तो भूत खाते रहते हैं, विकार तो भरे पड़े हैं, उनको दूर करने का प्रयत्न नहीं करते आकर हमारे पैर छूते हो। वचन छुओ। उनका पालन जीवन में करो पैर छूना हो गया।

वचन साधु के धो धो पीवे। तुम साधु के चरण धो धो कर पीते हो। वचन नहीं छुए चाल वैसी ही खराब की खराब है और पैर छूने चले आते हो। हमको अच्छा नहीं लगता हमारा ज्ञान का flow कट जाता है। हम कहां से बोलते हैं, ये नहीं देखते हो। तुम पैर छूकर हमको ऊपर से नीचे ले आते हो। भगवान की बात शरीर से ऊपर उठकर ही होती है। अतः पहले हमारे वचनों पर चलो। जब कभी हम पैर छूने को कहेंगे तो पैर छू लेना।

ऐसा करूंगा, ऐसा नहीं करूंगा ये सोचना मूर्खता है। जो भी करता है सब कुछ भगवान करता है। तुम खाली कर्त्तापन में रहते हो। मैं ये करूंगा मैं ये नहीं करूंगा ऐसा सोचना मूर्खता है। गुरु जो बोले वहीं आज्ञा में रहो।

जहां गुरु से दिल हटता है वहां Nature (प्रकृति) भी उल्टी हो जाती है। इसलिये गुरु से कभी दिल को न हटाओ। तुम दुनियां के लिये गुरु को छोड़ते हो। लेकिन कोई किसी का नहीं है। कोई किसी को निःस्वार्थ प्यार नहीं करता। लगता जरूर है कि ये मनुष्य हमको प्यार करता है परन्तु प्यार वास्तविक नहीं होता। स्वार्थ का, विषय का होता है।

प्रेम का "प" भी अभी नहीं आता है नहीं तो प्रेम वाला गुरु से कभी अलग नहीं होता। दुनियां एकदम धोखा है। बड़ी मुश्किल से पिंड छूटता है–छुड़ाते छुड़ाते भी नहीं छूटता।

दुख न हो तो मनुष्य भगवान को याद ही नहीं करता। जब दुख पड़ता है तो दुख का चिंतन करने लगता है। जब दुख से हार जाता है तब भगवान को याद करता है।

तुम्हारे मन का जहर (विषय रस) जब निकल जायेगा तभी भगवान में मन लगेगा। जो भगवान के भक्त को अभक्त बना देता है, उसको बड़ा पाप लगता है। जो भी भक्ति करता है और उसको छल, बल, कल द्वारा कोई अभक्त खींच ले तो उसको देश निकाला दे देना चाहिये। जो दूसरों के हृदय में भक्ति पैदा कर दे उसकी पूजा होनी चाहिये।

जो मां भजन करने की लगन अपने बच्चों में पैदा कर दे वह धन्य है। चाची ने दिल से भजन किया तो बेटे बेटी आ गए। भजन करने लगे। नगारा बजा, नहीं तो विमला कभी भजन करने वाली थी? वीनू कभी भजन करने वाले थे?

भगवान से बढ़कर कोई चीज नहीं है। Nature (प्रकृति) को बनाने वाला भी भगवान ही है। लेकिन उसमें भटकना नहीं चाहिये। हमारे पास तो आराम की सभी वस्तुएं हैं पर हम उनमें नहीं अटकते। भगवान भगवान करना चाहिये तभी Nature में मन नहीं अटकता।

जगत में जो भी है कोई सच्चा नहीं हैं देखने में सुंदर होने पर भी मन को पहचान पाना बहुत कठिन है। पूतना कितनी सुंदर थी पर उसका असली रूप भगवान ने दिखा दिया।

25.7.1986

अपनी हालत खुद ही समझूं
लेकिन तुमको समझा न सकूं।

जब तुमको भगवान से प्रेम हो जायेगा तब तुमको खुदी भूल जायेगी। तब तुम्हारी जो हालत होगी वह तुम खुद ही जान सकोगे। बता नहीं पाओगे।

गुरु तुमको मार सके ऐसा हक गुरु को देना चाहिये। वह तुमको इतना अपना समझे तभी तुमको बनाने के लिये गाली दे सकता है। गुरु के सामने सावधान रहना पड़ता है। गुरु की नजर से चलने वाले का कल्याण हो जाता है। बेड़ा पार करेगा तेरा, भज मन शाम सबेरा। सत्गुरु ही यह काम कर सकता है।

ज्ञान का लेन देन करो। व्यापारी बनो। व्यापारी सामान तभी दिखाता है जब ग्राहक लेने को इच्छुक होता है। इसी तरह गुरु भी तुमको ज्ञान तभी देगा जब लेने की इच्छा रखोगे।

Balance (समता) में होना चाहिये। ज्ञान पीकर तो हमेशा Balance में रहना चाहिये। मेरी बात को गौर से सुनो, उस पर अमल करो तभी फायदा होगा।

एक बार प्रभु हाथ पकड़ लो,
मन का दीप जलाऊँ।

मन को बार बार बटोरना पड़ता है। सत्गुरु अपने शरीर को सीढ़ी बनाता है। जिस समय भक्त ज्ञान में चढ़ना चाहता है। गुरु भी तुम्हारे लिये त्याग करता है। गुरु को जो बात या काम पसंद न हो वह काम मत करो। तभी ज्ञान की सीढ़ी पर चढ़ सकोगे। कंट्रोल में रह सकोगे। यहां इस तरह से रहोगे तो बाहर भी रह सकोगे।

गुरु उसी को गाली देता है जो परमात्मा में नहीं चलता है। उसको भी गाली देता है जो ज्ञान पाकर मदहोशी में चलता है। ज्ञान में समता होनी चाहिये। राजा जनक विदेह थे–उन्होंने राज केसे चलाया? वह तुम्हारी तरह लड़ लड़ करता तो राज कैसे चलता?

गृहस्थ तो दुनिया का झंझट वाला है। मन बहुत खराब है। मेरी बात सत्य है। हम कहते हैं तो मन जल मर जाता है। हमको कोई प्यार ही नहीं करता। हम तो मन को बनाने के लिये गाली देते हैं तो तुम जल मर जाते हो। तुम तो हमको फूल डालते हो, खिलाते हो, फिर भी हम तो तुमको गाली जरूर देंगे। जब तुम मन के कहने में चलोगे, तुम्हारे भूत (विकार) तुमको परेशान करेंगे तो हमसे सहा नहीं जाता– इसीलिये हम तुमको गाली देते हैं।

मन को तो पटक पटक कर हम सीधा करते हैं। हम तुम्हारे मन रूपी सांप को मारते हैं। तुम सपेरा बुलाओ, तुम्हारे सांप हम निकालें। गुरु कसाई की तरह भूत को निकाल सकता है। वह बिल्कुल निडर होता है। वह तुमको मार ताड़कर भी तुम्हारे विकारों को निकालता है।

राम के सिवा कुछ अच्छा नहीं है। राम रस पीने वाले को ही सच्चा आनन्द आता है। दुनियां के और रसों के कारण तुम राम रस को नहीं पी पाते हो। तुम साधन करते हो तो सिमट कर रहो। नहीं तो ये दुनियां वाले तुमको लुट लेंगे। तुमको तन मन इंद्रियां सब स्वच्छ रखना है। पूर्ण योग करने के लिये तुम्हारे मन में परमात्मा होना चाहिये। तुम संसार में जा जाकर अपने को बरबाद न करो। योग बड़ी कठिनाई से मिलता है जिसे संसार वाले लूट लेते हैं।

मजनू को देखो। केसा प्यार करता था लैला को। एक सांसारिक प्यार से तो भगवान का प्यार बहुत बड़ा है। तुम भी भगवान को वैसे ही प्यार करो जैसे मजनू लैला को करता था। तुम तो दुनियां में दिल मिलाकर बैठ जाते हो। पड़ गए प्रेमियों की अंजब चाल में। ये मेरा मेरा ही तुमको योग नहीं पाने देता। भगवान जो तुम्हारी पालना करता है। उसको मेरा नहीं कहता। संसार वाले जो जहन्नुम में डालने वाले हैं उनको खूब प्यार करता है। दुनियां वाला कोई भी सच्चा प्यार नहीं करता लेकिन तुम उनके ही बंधन में पड़ जाते हो।

कोई अच्छा है या बुरा तुमसे क्या मतलब? जो अच्छा है वह भी भगवान का, जो बुरा है वह भी भगवान का है। तुम ये सोचकर चुप बैठ जाओ। तुम तो उसी अच्छे बुरे में फंस जाते हो।

तुमको तो मन करता है कि कोड़े मारे। योग में जो दखल देता है वह मुझे पसंद नहीं आता। तुम सच्चा भजन करो। हम तुमको सोने के हार की तरह गले में पहलेंगे। सही भजन करना चाहिये। तब फिर गुरु तुमको गाली नहीं देगा।

जिस योग के कारण गुरु से प्यार हुआ, तुममे रौनक आई, उस योग को भ्रष्ट न करो। तुम्हारे योग को खतम करने के लिये माया तुम्हारे आगे पीछे घूमती है। परन्तु जब तुम उसको भी ठुकरा दोगे तो तुम्हारा योग भंग नहीं होगा।

गुरु अपने भक्त की रक्षा करता है कि कहीं तुम्हारा योग भ्रष्ट न हो जाय। भजन वही सत्य है जिससे गुरु में चित्त वृत्ति जुड़ी रहे। दिल का तार गुरु से जोड़ो।

अपने को दुनिया वालों से बचाओ, छिपाओ। पौडर लगा कर मत आओ। बुरके में आओ माया के जितने विषय हैं आंख के द्वारा ही अंदर जाते हैं। अतः अपनी नजर इधर उधर मत दौड़ाओ। सारी दुनियां को नजरों और इंद्रियों से छोड़ दोगे तभी हम समझेंगे तुमने सच्चा भजन किया।

जो मन भजन न करने दे वो दुश्मन है। तुम्हारे मन से मेरी ऐसी दुश्मनी है जैसी सांप नेवले की होती है। तुम भजन करोगे तो हम कुछ नहीं बोलेंगे। तुम या तो मेरी बात मान कर भजन करो या भाग जाओ। हम समझेंगे जहां इतने गए वहां यह एक और चला गया। चलो अच्छा हुआ। लेकिन अगर भजन करोगे तो हम कभी नहीं भगाएंगे। हम तुमको नहीं, तुम्हारे दुश्मन मन को गाली देते हैं।

धन दौलत जो कुछ भी है सब भगवान से है। सब जगह भगवान है तेरे में, मेरे में, पत्ते में, सब जगह भगवान है। एक भक्त था प्रहलाद। वह बहुत छोटा था जब उसका बाप उसको परेशान करने लगा। प्रहलाद ने जब बोला सबमें भगवान है तो बाप ने कहा–अच्छा इस खम्भे में बता तेरा भगवान कहां है? तो भगवान ने खम्भे में से प्रकट होकर दर्शन दिया। अपने भक्त के कष्ट को भगवान कभी नहीं देख सकते हैं।

प्रहलाद ने भगवान को ही मांगा। बाप के लाख सताने पर भी उसने भगवान को नहीं छोड़ा तभी भगवान ने उसकी रक्षा की और उसको तीन त्रिलोक का राज्य दे दिया। सुहाना दिन तब होता है जब मन परमात्मा में डूबता है। सब कुछ छोड़कर मेरी शरण में आता है।

दुनिया में दुख देखो तो आंख खुल जाय। कितने सुख में हैं फिर भी लड़ते

झगड़ते रहते हैं। अगर दुनियां के दुख देखो तो दंग रह जाओगे। ये रोजी रोटी मिल रही है ये बड़े सौभाग्य ही बात है। यह सब भगवान की कृपा से ही मिलता है।

संसार में सब कुछ अच्छा बुरा होता ही रहता है परन्तु साखी दृष्टा बनकर देखो तो जगत का दुख व्यापेगा नहीं। जगत एक ड्रामा भर है। कितना देखा दुख सुख का नाटक चलता ही रहता है।

तुम दिल से संकल्प करो कि मैं कुछ करूंगा तो संकल्प पूरा होगा। हम जीने का संकल्प करते हैं तो खाने पीने के लिये नहीं वरन लोगों की सेवा करने के लिये।

तपस्या करो। जो सबके कहत का ध्यान रखता है। निष्काम सेवा करता है तो कहते हैं हितैषी सर्वभूतों के गले का हार होते हैं। अतः संकल्प करो कि हम जियेंगे और दूसरों की सेवा करेंगे। जब पहले से गुरु भक्ति होती है और गुरु रीझा रहता है तो संसार के दुख सुख व्यापते नहीं।

भगवान के भंडारे में कुछ न कुछ अवश्य डालना चाहिये। इससे तुम्हारा ही भला होता है। चार भक्त गरीब गुरबे खाकर जाते हैं वह आशीर्वाद तुमको मिलता है। कहां कहां दूर दूर से लोग आए, तृप्त होकर गए। कितना सुंदर भंडारा हुआ।

जो भी संसार है, वह ख्याल है। हम न भी हों और कोई कष्ट में हो तो तुम उसकी सेवा करो, मदद करो। सिर्फ बात करना नहीं अच्छा। प्रेक्टिकल सेवा करो। किसी को कोई जरूरत है, कोई कष्ट है तो सेवा अवश्य करो। लिया हुआ ज्ञान तभी सार्थक होगा। मदद करने से वह दुख भूल जाता है। सत्संग करना तभी सार्थक है जब प्रैक्टिकल (वास्तव में) किया जाये।

भक्ति में प्रत्यक्ष शक्ति है। सत्संग में शक्ति मिलती है। हाथ पैर में जैसे जैसे शरीर बूढ़ा होता है थकान और दर्द रहता है लेकिन भजन से शक्ति मिलती है तो दर्द भी महसूस नहीं होता। मन खाली नहीं है। भगवान में है, अतः सोचने की फुर्सत नहीं मिलती।

मन ख्यालों से दुखी होता रहता है। जितना खोया है, वह ख्याल से ही खोया है। मैं आत्मा हूं, निराकार निरंजन ब्रह्म हूं–मन भूल जाता है। बस मैं शरीर हूं, बीमार हूं, यही ख्याल करता रहता है। तुम ब्रह्म याद करो तो भूत भाग जायेंगे। आत्मा का चिंतन करो।

प्रश्न मरने के बाद आत्मा कहां जाती है? तब भी आत्मा रहती है?

उत्तर देखो! मुर्दे में भी वही आत्मा है, जहां मुर्दा रखा गया वहां भी आत्मा है, पानी में डाला गया तो पानी में भी आत्मा है। अतः आत्मा आत्मा में ही सर्वत्र

रहती है। आत्मा कभी विलीन नहीं होती।

मरता हुआ आदमी भी भगवान के भजन से जी जाता है। अरे! अगर भगवान इतनी कृपा न करे तो मनुष्य भगवान को कभी न याद करे। भगवान जो चाहता है करता है। अतः भगवान को परेशान न करो। उसकी याद में रहो।

सच्ची पूजा तब होती है जब आदमी खुदी भूल जाये। जब खुद को भूल जाता है तब सच्ची पूजा होती है। राम ने हनुमान से पूछा कौन सा महीना है? बोला राम। राम ने फिर पूछा कौन सा दिन है? हनुमान को सिवा राम के कुछ याद नहीं रहता था। उसकी (हनुमान की) राम में इतनी प्रीति थी कि वह दिन रात का समय सब भूल गया था अतः आज उसकी पूजा होती है।

जब तक तुम हमको अंदर की आंख से नहीं देखोगे तब तक हम तुमसे खुश नहीं होंगे। आज हनुमान की पूजा इसीलिये होती है क्योंकि वह भगवान को अंदर की आंख से देखता था। उसकी निगाह राम के सिवा कहीं नहीं गई। इसीलिये राम के भक्त हनुमान की पूजा होती है। तुम भी हनुमान की तरह भक्ति सीखो। हां! हनुमान से बड़ा राम को समझो। राम पुरुषों में पुरुषोत्तम हैं।

आदमी को क्या देखते हो? भगवान में इतनी वृत्ति रखो कि आदमी दिखाई न दे।

आत्मा कण कण में व्यापक है। व्यापक परमात्मा कहां नहीं है? ये आकाश है, महाकाश है, घटाकाश और अंदर भी आकाश है। अंदर जाता है पिण्ड कोश। दीवार में छेद करो तो भी आकाश है। आतमा को तत्व से नहीं बता सकते क्योंकि ये सब स्थूल है–फिर भी कहा जा सकता है कि आकाश से भी व्यापक आत्म तत्व है।

आत्मा कहीं आता जाता नहीं है। हम कर्म की चाभी लेकर आते हैं। कर्मानुसार आत्मा उस शरीर में प्रवेश करती है। आत्मा हमारे कर्मानुसार जन्म मरण में जाती है। जो जीते जी मन को मार कर परमात्मा में डूब जाता है तो फिर आत्मा भटकता नहीं। मरते समय वासना जहां चली जाती है। आत्मा वहीं चली जाती है। इसीलिये हम तुमको वासना में जाने से बचाते हैं ताकि वासना में फिर आकर भटकना न पड़े।

अंत घड़ी में औरत का सुमिरन करे तो वेश्या का जन्म मिलता है। अंत घड़ी में घर सुमिरे सर्प योनि बलि बलि उतरे। इसलिये अपने मन को कहीं न फंसाओ। तुम अपने बाल बच्चों में फंसते हो। जब वे बड़े हो जाते हैं तो उनके बच्चे बच्ची में फंसते हो। अरे! फंसाना छोड़ो। इसी तरह तुम जीवन भर फंसे रहोगे तो भगवान कब याद आएगा। रात दिन बेटे बेटी का चिंतन करते रहते हो। वही मरते वक्त याद आते हैं तब फिर जहननुम में जाना पड़ता है।

जो औरत अपने पति, बाल–बच्चों को भगवान में लगाती है वह बड़ी भाग्यवान और महान होती है। मेरी दादी, मेरी मां सब मुझे भजन में ले जाती थीं–इसलिये देखो आज हम तुमको ज्ञान देते हैं। मां बाप वही अच्छे होते हैं जो अपने बच्चों को भगवान में लगाते हैं।

आत्मा व्यापक है। आत्मा आती जाती नहीं है। वासना में फंसकर, हमारी चित्त वृत्ति के भटकने से आत्मा शरीर में प्रवेश करती रहती है। तुम्हारे चित्त में बाल बच्चे कूड़े खजाने भरे हैं।

चित्त वृत्ति को इनमें न भटकाओ परमात्मा में लगाओ। संसार में चित्त वृत्ति न लगाने से ही परमात्मा मिलता है। संसार में भटकना नहीं पड़ता है।

जिसने भगवान को पहले से अपने हृदय में बिठा लिया वह विधवा होते हुए भी विधवा नहीं है। भगवान अनन्य रूप में आता है। व्यक्ति नहीं आता है। भगवान ही विभिन्न रूपों में सेवा करने आता है।

भगवान से लिंक जोड़ो तो कल्याण होगा। जिसकी लिंक भगवान से जुड़ी हो–उसी का साथ करो तो तुम भी भगवान से जुड़ जाओगे। बहुत सावधानी से आना भजन तो करते हो। पर मुझे सताना मत चित्त वृत्ति को कहीं बिखराना नहीं। Nothing बनकर आओ। तुम औरत मर्द बनकर आते हो यह अच्छा नहीं। तुम आत्मा बनकर आओ। देखो! काली कोठरी में जाओ तो कितना भी बचो कालिख लग जाती है अतः कपड़े को बचाकर आओ यानी नजर को समेट का आओ।

दिल को बिल्कुल खाली रखो। हम तुमको इसीलिये गाली देते हैं कि दिल में सिर्फ भगवान को रखो। तुम कूड़े खजाने को दिल से बाहर करो तभी भगवान दिल में आएगा। तुम भगवान को बिठाने के लिये देखो कैसा सिंहासन सजाते हो। अरे! मन का सिंहासन साफ करो। जिस पर भगवान बैठता है। बाहरी सिंहासन बेकार है। संतोषी माता की पूजा करते हो और संतोष है नहीं।

तुम हर एक का शुकराना मानो। आत्मा वस्तु नहीं है उसका कोई रंग रूप नहीं है। आत्मा तभी तक शरीर धारण करती है जब तक वासना रहती है। जब वासना समाप्त हो जाती है तब आत्मा फिर जन्म नहीं लेती। राजा जनक जीते जी विदेह हो गए थे। राजा जनक ने कहा है अगर तू मोक्ष चाहता है तो **विष समय विषय तज तात रे**।

भजन करना बड़ा कठिन है। भगवान की याद आजा ही कठिन है। गुरु की नूरानी नजर में रहो। गुरु से दूर करने वाली ये औरत की आंख होती है जितने लोग भी चढ़ चढ़ कर गिरे हैं वे नारी की आंख के कारण गिरे हैं।

26.7.1987

सदा बसत तुम साथ । भगवान तुम्हारे साथ हर समय रहता है। जहां आग लगी हो वहां पानी डालो तो कितनी ठंडक होगी। जो दुखी है, परेशान है, उसके पास जाकर सेवा करो तो उसको आराम मिलेगा।

28.7.1986

भगवान लीलाधारी होता है। भगवान की बड़ी महिमा है। मनुष्य जब भजन में मन नहीं लगाता तो भगवान चिल्लाता है। गुरु चिल्लाकर मनुष्य को बनाता है। तुम लोगों में will power (आत्म शक्ति) नहीं है। भजन के लिये आत्म शक्ति की जरूरत होती है। शुभ काम करने की भी आत्म शक्ति नहीं है। आज किसी को जरूरत है। किसी की रोजी नहीं है। उसका साधन बनाना ही सेवा पूजा है। पूजा करने से क्या लाभ अगर तुमने दीन दुखियों की जरूरतमंद की जरूरत नहीं पूरी की?

तुम किसी को जो पैसे के कारण पढ़ाई नहीं कर सकता, उसको विद्या के लिये पैसा दो तो बहुत बड़ा पुण्य है। समय का कोई भरोसा नहीं है। जो भी शुभ काम करना हो जल्दी कर लो।

यहां का यहीं मिलता हैं। तुम देसरे में सुख ढूंढते हो–नामरूप में सुख नहीं है। भगवान में मन लगाओ। भगवान तुम्हारे सुख दुख का हमेशा ख्याल रखता है। तुम भगवान को नाराज मत करो। तुम कहते हो। हम तो सीधे सादे बैठे हैं–नाराज कहां करते हैं? अरे! तुम हमको अपने चित्त से नाराज करते हो। तुम अपनी लिंक भगवान से जोड़ो।

आज जो कुछ भी तुम्हारे पास है–वह तुम्हारी तपस्या का फल है। यहां का यहां ही मिलता है। पहले तुमको भगवान का ध्यान करना पड़ता है। जब गुरु मिलता है तो वह तुम्हारे मन को ही बनाता है। इतनी विवेक बुद्धि आने पर ही मन भी भूलता है। आज अद्वैत के ही कारण हम तुमको और तुम हमको, सबको प्यार करते हैं। सारा विश्व हमारा अपना आप है। सबमें हम ही हैं। अद्वैत बुद्धि में ही ऐसा प्यार होता है। द्वैत बुद्धि में मोह, राग, द्वेष होता है। प्यार होना चाहिये। प्यार से ही संसार को जीता जा सकता है। मोह में आपस में कभी कभी द्वेष होने लगता है। उस द्वेष को हटा कर भी प्रेम करो। इसके लिये उसमें भी भगवान देखो। द्वेष में भी उसे भगवान का रूप समझकर बात करो तो क्षेष मिट जाता है।

हर रूप में भगवान है तो किससे राग करें और किससे द्वेष करें। प्रेम से ही भगवान खुश होता है। प्यार में सब कुछ अच्छा होता है। बच्चे से अभी चाहे जितना गुस्सा हो—वह अगर प्यार से आकर तुम्हारी गोद में बैठ जाए तो तुम्हारा सारा गुस्सा ठंडा हो जाता है।

तुम इसी तरह प्यार से रहो। सब तरफ गुरु गुरु करने से ही प्यार होता है। "मन मारन की औषधि सद्गुरु देत बताय।" तुम गुरु को वस्तु देते हो। अरे! मन दो तो गुरु उसे अच्छा बना कर दे देगा।

प्रेम और नम्रता से ही भगवान को जीता जा सकता है और प्यार में किया जा सकता है। प्रेम में भगवान तुम्हारी जैसी इच्छा होती है पूरी करता है।

तुमको कोई प्यार करे या न करे, तुम सबको प्यार करो। मन बार बार विरोध करेगा तो उसको मोड़ना पड़ेगा। अज्ञानी मन को लेकर बैठा रहता है। ज्ञानी को अगर किसी ने कुछ कहा तो उसको बुरा तो लगेगा पर वह मन को तुरंत मोड़ लेगा।

देखो! तुम कितने भाग्यशाली हो—तुम्हारे घर में गुरु गुरु का भजन करते हैं। तुमको तो पारब्रह्म मिल गया। अब क्या चाहिये! तुम्हारी भक्ति की रक्षा हम कर रहे हैं। तुम्हारी भक्ति बढ़ेगी घटेगी नहीं। तुमने हमको सर्वे सर्वा माना है इसीलिये हम बार बार भाग भाग कर तुम्हारे यहां आते हैं। गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु साक्षात पारब्रह्म है। गुरु को छाटा न समझो।

कैसी भी हालत हो हंसना मत छोड़ो हालत तो आती जाती रहती है। जो तुम्हारे मन को पलट दे वहीं तुम्हारा गुरु है। उसी आरती अवश्य होनी चाहिये। ऐसे तो तुम हमेशा पूजा करते रहे पर मन वैसे का वैसा ही रहा तो क्या फायदा हुआ पूजा करने का? जिसने तुम्हारे मन को निर्मल किया, तुम्हारे जीवन को पलटा उसकी आरती तो अवश्य ही होनी चाहिये। जैसे कहते हैं कि भगवान चक्र सुदर्शन लिये रहते हैं जिससे दुष्टों को मारते हैं वैसे ही ज्ञान चक्र है जिससे गुरु तुम्हारे भूत मन को मार कर तुमको अच्छा बनाता है।

पता नहीं क्या होनेवाला होता है। भगवान के चमत्कार से थोड़े में होकर रह जाता है। कहते हैं लगी आग लंका में हलचल मचा था तो घर फिर विभीषण का क्यों कर बचा था। लिखा था यही शब्द कुटिया पे उसकी हरि ओम् तत्सत हरि ओम् तत्सत। देखो! मीटर में आज आग लग सकती थी लेकिन भगवान की ही कृपा ने आज बचाया। भगवान के चमत्कार आज भी प्रत्यक्ष होते हैं हम पहले की बातें सुनते हैं। मीरा औरकबीर के साथ ऐसा अनहोना चमत्कार हुआ था वह तो बीत गया लेकिन आज भी चमत्कार प्रत्यक्ष होते हैं। देखो! भगवान ने आज तुमको बचाया इसलिये शुकराने में रहोगे, परमानंद में मन लगाओगे और जब मन ही परमानंद स्वरूप हो जायेगा तो जो भी काम का संकल्प करोगे वह

हो जायेगा। इसलिये संकल्प भी शुद्ध और पवित्र करो। मैं आनंद स्वरूप हूं ऐसा निश्चय करो।

एक एक आनंद स्वरूप है। तू ही अपने को समझ। सबने तुमको नामरूप्य से बुलाया तो तुम अपने को नामरूप समझने लगे लेकिन गुरु बार बार कहता है कि तू आत्मा है, आनंद स्वरूप है उसी का चिंतन करो तो मन और बुद्धि में यह नहीं बैठता।

दो तार मिल जाने से बिजली में आग लगी। इसी तरह हम दो चित्तों को मिलने नहीं देते। जहां दो चित्त मिले वहां परमात्मा अलग् हो गया। परमात्मा से जुड़ नहीं पाता इसीलिये दो चित्तों को न मिलने दो। भजन न करने देने वाला यही चित्त का कहीं दूसरे से जुड़ जाना है। अतः दो के बीच में मुझको गुरु को, भगवान को डालो तो अच्छा रहेगा। किसी भी मनमुख से जुड़ो तो परमात्मा दूर हो जाता है।

जहां भगवान में तुम्हारा दिल लगेगा—तुम्हारा कोई बाल बांका नहीं कर सकेगा। तुम अगर भगवान से दिल लगाओगे तो भगवान तुमको कभी दूर नहीं होने देगा। भगवान की नजर तुम पर पड़ने से तुमको अलौकिक आनंद मिलेगा। तुम हमेशा परमात्मा में जुड़े रहो। तुम भजन न करने वाले लोग भी गुरु की कृपा से ही भजन करते हो। भजन करने आते हो और दुख लेकर आते हो। चित्त का कनेक्शन ही दुख का कारण है। इसीलिये भगवान नाराज होता है कि चित्त को कहीं फिट न करो।

चित्त से नामरूप को हटाओ ईश्वर से ही चित्त का जब कनेक्शन होता है तभी भजन होता है। भगवान के भजन के अलावा और कुछ सच्चा नहीं है।

औरत के अंदर आत्मशक्ति होनी चाहिये क्योंकि आदमी कहीं कहीं बाहर जाता है। अगर औरत में आत्मबल नहीं होगा तो बच्चों की पालना कैसे करेगी? ये आत्म बल गुरु के ही कारण होता है। बिना ज्ञान के आत्मबल नहीं आएगा। आदमी के बाहर जाने पर अगर औरत रोयेगी तो बच्चों की पालना कैसे करेगी। जब ज्ञान लेकर काम करेगी तो घर भी अच्छा रखेगी। औरत का स्वभाव भी ज्ञान से ही अच्छा होता है। नहीं तो घर घर में कलह होती है।

29.7.1986

चित्त को खाली परमात्मा में लगाओ। चेतन परमात्मा से ही शरीर भी चलता है। देखो! बिजली है पर चेतन (कनेक्शन) नहीं है तो बिजली भी नहीं चल रही है।

आनंद तभी आएगा जब दिल से भजन गाओगे। जब दिल परमात्मा में फिट होता है तभी भजन होता है। ये परमात्मा का भजन है—व्यक्ति का नहीं। प्रभू

की वाणी अंदर से आती है। तुम बड़े गवैयों को ले आओ—अगर दिल में परमात्मा नहीं होगा तो गा नहीं पाएगा। भजन में आवाज तभी निकलेगी। जब मन परमात्मा में फिट होगा। कभी कभी देखो। न नाचने वाला भी नाच करने लगता है क्योंकि भाव में उसे होश नहीं रहता वरना भरी महफिल में कौन नाचेगा?

तुम भाव से बुलाओगे तो हम हमेशा आयेंगे। जो भगवान में चित्त लगाता है उसके योगक्षेम का भार भगवान उठाता है। तुम बस भगवान में ही चित्त लगाओ। भीलनी विदुरानी जटायु सब भगवान के प्रेम में आतुर थे तो देखो भगवान ने उनके बेर खाए। भगवान सिर्फ भाव का भूखा है।

तुम भगवान को दिल में रखो तुम तो उसे दीवार में टांगते हो सिंहासन पर रखते हो तो क्या फायदा? भगवान को दिल में बिठाओ तो फायदा हो भला हो। रामकृष्ण (परमहंस) भगवान को दिल में बिठाए रखता था तो विवेकानन्द को गुरु मिल गए।

जो कुछ भी होता है भगवान से ही होता है। हर रूप में भगवान होता है पर मन भुला देता है। बोलेगा मैं मर जाऊँ। ज्यादा से ज्यादा समय सत्संग में देकर गुरु के रहते सत्य स्वरूप हो जाना अच्छा है। गुरु के रहते समय बरबाद करके चिंता में रहते हो।

प्रश्न उत्तर करो तो ज्ञान आगे बढ़े तुम सिर्फ भगवान की बात पर प्रश्न करो कूड़े खजाने, भूत, प्रेत, दुनियां की बात को लेकर मेरे पास मत आओ। ऊपर छत से नीचे कौन आना चाहता है? हमको नीचे मत लाओ। तुम तो प्याज की बदबू (सांसारिक) की बात लेकर आते हो।

परमात्मा का रस सब रसों से मीठा होता है। ऐसा परमात्मा तुमको प्रत्यक्ष मिल जाए तो कितना अच्छा है। तुम बदमाश हो, आज महिमा में रहते हो तो कल मनुष्य रूप में समझने लगता है। अरे जब जब भी भगवान आया, शरीर रूप ही धारण करके आया। तुमको अच्छा बनाने के लिये ही तुम्हारे सामने चेतन रूप में आता है।

तुम कहते हो इंसान भगवान कैसे हो सकता है? अरे! राम और कृष्ण को भगवान मानते हो वे भी तो मनुष्य का ही रूप धरकर आए और जनता का कल्याण किया।

आया है, आता है और आएगा—पतित पावन भगवान। कहते हैं—भक्तों ही याद पर आता जरूर हूं। सतयुग, त्रेता, द्वापर की मैं साख दिलाता हूं। भगवान हमेशा आता है। तुम्हारा हर काम पूरा करता है। गाय बछड़े के पास कैसे दौड़कर आती है वैसे ही भगवान भी सदगुरु के रूप में आता है। तुम्हारी हर बात की वह चिंता करता है। तुम बस यह निश्चय करो कि जहां भी रहूंगा तुमको याद करूंगा। गीता पुस्तक लिखी है पर क्या हुआ? तुम्हारा हृदय ही गीता बन

जाय तो जहां भी जाओगे ज्ञान में रहोगे। हमारी मां कहती थी गीता पढ़ो। हम कहते थे—तुम तो बाहर की गीता पढ़ती हो। हमारे तो हृदय में ही गीता है। इसी तरह तुम भी अपने अंदर गीता रामायण भर लो—जब तक नहीं भरता तब तक गुरु के समीप रहो जब राम पूरा भर जाए तब कहीं भी जाओ।

भगवान की जगह हृदय है। वहां भगवान को बिठा दो तो बेड़ा पार हो जाएगा। दिलबर ही जगह दिल है—भगवान को हृदय में, रोम रोम में भर लो। आत्मा के बारे में बार बार पूछना चाहिए गीता भी इसी आत्मा के ऊपर प्रश्न करने पर कहा।

30.7.1986

दस जगह भटकने से कुछ नहीं होता। एक के शरणागत होना आवश्यक है। जहां आनन्द आ जाए वहीं शरणागत होना चाहिये। गुरु तो बहुत हैं पर एक को मानना आवश्यक है। अस्पताल में बहुत मरीज होते हैं एक ही कमरे में वे होते हुए भी कोई किसी डाक्टर का मरीज होता है तो कोई किसी का। डाक्टर उसी मरीज को देखता है जो उसके इलाज में होता है। अतः एक ही डाक्टर को दिखाने से फायदा नहीं होगा।

सर एक जगह झुकाना पड़ता है। मंदिर, मस्जिद गए पर खुदी (मैं का भाव) नहीं गई। गुरु कहता है खुदी को दूर करो। "मैं हूं" यही खतम करना है—मां मा करने से कोई लाभ नहीं।

भक्त रैदास शालिग्राम को जूते में रखता था। एक सेठ से रहा नहीं गया। वह अपने घर ले जाकर अच्छी तरह रखने लगा। रात में भगवान ने उसे स्वप्न दिया और कहा "तू मुझे उसी रैदास के पास ले चल!" तो देखो! भगवान तो प्रेम का भूखा है। वहां रैदास के घर में जूते का पानी उस पर पड़ता था फिर भी भगवान रैदास की भक्ति को जानता था।

चेतन की पूजा करना ही सही है। एक चेतन मनुष्य की पूजा दिन भर का लीजिए तो वह खुश हो जायेगा। मूर्ति पूजने से क्या लाभ? आप जन जन में भगवान देखिये पूजा करिये। यही सच्ची पूजा है। जिधर देखूं उधर मेरा राम प्यारा है।

तू ही निर्लेप नारायण कहां चंदन लगाऊँ मैं। जब सच्चा जिंदा भगवान पा जाएगा तो उसको मूर्ति की पूजा नहीं करनी पड़ेगी। जैसे पति की फोटो रखी है और पति सामने है तो कोई औरत फोटो की पूजा नहीं करेगी। उसी तरह जब ठाकुर (भगवान) जिंदा चेतन में आ जाए तो मूर्ति की पूजा कौन करेगा?

अभी तो आप मूर्ति को नहला रही हैं, पूजा कर रही हैं पर जब शरीर

अस्वस्थ होंगा यर शक्ति क्षीण हो जायेगी। तब यही पूजा की खटखट रहेगी कि पूजा नहीं की। लेकिन जब चित्त में भगवान बैठ जायेगा तो अंदर हर समय पूजा होती रहेगी।

प्रेम की चितवन से ही भगवान खुश होगा। भगवान भाव का ही भूख है। हमारे पास आने वाला कहीं नहीं जाता। भगवान सारे बंधनों से मुक्त कराता है। भगवान को नहलाना भी तो एक बंधन है। भगवान हमेशा नहाए धोए शुद्ध पवित्र रहते हैं। इन्सान क्या नहला सकता है भगवान को? लक्ष्मी (एक भक्त) के घर में देवी देवताओं की लाइन लगी थी सीढ़ियों पर। देवी, देवता और ऊपर से साईं बाबा भी आ गए। हमने कहा–इतनी पलटन तुमने लगा रखी है। दुबारा जब हम उसके यहां गए तो उसी सीढ़ी पर हम बिना जाने ही बैठ गए। बाद में किसी ने कहा–यहां सीढ़ी पर जो पलटन रखी थी वह कहां गई? तो किसी ने कहा–पता नहीं इसने (लक्ष्मी ने) कहां रख दिया। फिर लक्ष्मी ने ही कहा जब भगवान साक्षात मिल गए तो अब उनका क्या करना है? देखो! उसकी (लक्ष्मी) आंख में भगवान का नशा भी कितना है?

हम तो प्रेम स्वरूप हैं। हमारा ego (अहंकार) ही हमको कष्ट देता है। ego (अहंकार) का नाश करने वाला सदगुरु ही है।

मोहिनी मोहन ने जिस पर डाल दी,
कर दिया दीवाना उलझन डाल दी।

अंदर की साधना ही सच्ची है। जिसको भगवान से प्रेम होता है वही जान पाता है। जब बाहर की पुस्तक (संसार) बंद होती है तब अंदर की पुस्तक (ज्ञान, विवेक) खुलती है। जब प्रेम हो जायेगा तो आपका भगवान को नहलाना भी बेद हो जायेगा। अभी आप पानी से नहलाती है। फिर प्रेम के आंसुओं से नहलायेंगी। हम धूप जलाते हैं–देखो! सबका मन ऐसा नहीं सुलगता। इसी मन को धूप बनाकर जलाओ। जब अंदर की ज्योति जल गई तो बाहर की ज्योति जलाने से क्या फायदा?

जब हम भजन करते रहेंगे तो हमारे बाल बच्चे–भले ही देर से जब जग के थपेड़े खाएंगे तो भगवान को अवश्य मानने लगेंगे। हमारा यह सोचना व्यर्थ है कि अगर हमें पूजा नहीं करेंगे तो पूजा ही घर से उठ जायेगी तो घर की मर्यादा कौन करेगा? जब अपने घट में ही काबा है तो बाहर कौन पूजा करेगा? उसी तरह परमात्मा को उठते बैठते सोते जागते याद करो।

एक शारीरिक (क्रियाओं द्वारा) पूजा होती है एक मानसिक पूजा होती हैं मानसिक पूजा हर समय हर जगह हो सकती है। शारीरिक पूजा में स्थान, क्रियाओं का बंधन है। सर्वत्र परमात्मा देखो तो पूजा ही है। धक्का खाने से क्या लाभ?

अच्छा माता जी! आप तो बहुत जगह पूजा, सत्संग में जाती थीं क्या फायदा हुआ? (माता जी का उत्तर) जब साक्षात भगवान मिल गए तो अब पूजा क्या करें।

गुरुजी का प्रश्न अच्छा! क्या आपके भगवान भूखं रहते हैं। माता जी–नहीं! अब तो भगवान आंखों के सामने बैठकर साक्षात रूप में खाते हैं। पहले हम जगह जगह जाते थे पर अब तो जब से आप मिल गए हैं हमें कहीं अच्छा नहीं लगता।

मनुष्य तभी मुक्त होता है जब संकल्प त्याग कर एक जगह परमात्मा में टिक जाता है। संकल्प विकल्प ही हमको खट खट में डालते हैं। जीव भाव के संकल्प से ही खट खट होती है। जब जीव भाव नहीं रहेगा तो संकल्प भी नहीं उठेंगे।

जड़ मूर्ति आप को अपनी ओर नहीं खींचती– आपको उसके पास जाना पड़ता है लेकिन चेतन भगवान जब आप को याद करता है तो आप दौड़े दौड़े आ जाते हैं। भगवान की एक जबह मानना तमोगुणी भक्ति कुछ में भगवान मानना रजोगुणी भक्ति और सर्वत्र भगवान देखना सतोगुणी भक्ति है।

पूजा छुड़ाना हमारा काम नहीं है। ज्ञान के द्वारा उसी पूजा को ही बड़ा मानना बताते हैं।

31.7.1986

जो भी समय मिले, हरिनाम में लगाओ। तभी तुम भगवान को देख पाओगे। सब जबह परमात्मा देखो, प्रेम का व्यवहार करो, प्रेम ही परमात्मा है। जहां भी जाओ, सब जगह नम्रता होनी चाहिये। तभी प्रेम होगा, तभी परमात्मा भी खुश होगा और लोग भी तुम्हारे व्यवहार से खुश होंगे।

संसार में जाओ और अपनी बात कहो पर अगर दूसरा तुम्हारी बात नहीं मानता तो चुप हो जाओ। साधो! चुप का है संसारा, चुप में कर दीदारा। घर घर में कलह है, अशांति है, तुम ही चुप हो जाओ, शांति हो जायेगी।

जो भी बात है प्यार से, कंट्रोल से होना चाहिये। रोनी भी भगवान ही देता है। भगवान न चाहे तो रोजी भी नहीं मिलती। अतः भगवान को सबमें डालोगे तो प्यार होगा और अगर उसमें व्यक्ति भाव डालोगे तो द्वेष होगा। प्यार से, नम्रता से ही सब काम होता है। देखो! मरीज भी डाक्टर से इलाज कराता है। अगर डाक्टर गुस्से वाला होगा तो मरीज जल्दी ठीक नहीं हो पायेगा। यदि डाक्टर प्यार वाला होगा तो आधी बीमारी तो बिना इलाज के ठीक हो जायेगी।

नम्रता के साथ Will Power (आत्मशक्ति) भी होनी चाहिये। एक दूसरे से शिक्षा लेनी चाहिये। गुण और अवगुण सबमें होते हैं। औरत में Will Power

(आत्मशक्ति) कम होती है। कहीं कहीं औरत में भी बहुत आत्मशक्ति होती है।

विवेकानन्द, रामतीर्थ फोटो में कैसे तन कर खड़े दिखाई देते हैं–देखने में लगता है कि वे ego (अहंकार) में नहीं बलिक भगवान की खुमारी में खड़े है।

मर्द में Will Power (आत्मशक्ति) तो होनी ही चाहिए पर साथ में नम्रता और प्रेम भी होना चाहिये। जो आज का टाइम है वही तुम्हारा है। कल का क्या भरोसा? आज ही भजन करो–निश्चय करो मैं आत्मा हूं। भगवान तुम्हारे सबके अंदर हैं–शरीर तो तुम्हारा बाहरी स्वरूप है। तुम रचना में न फंसो। रचयिता को देखो। रचयिता भगवान है। वह हमेशा तुम्हारे साथ है। वह कहीं नहीं जाता।

पढ़ाई करो पर भगवान भगवान करो तो भगवान तुम्हारी सहायता करता है। जितना जितना तुम भगवान को दिल में रखोगे वैसे वैसे तुम भगवान को प्रत्यक्ष देखोगे। ये तो विकारों के कारण तुमको दिखाई नहीं देता। जैसे सूरज चांद दिखाई देते हैं वैसे ही भगवान भी दिखाई देता है। भगवान घट घट वासी हैं।

अनुभव का ज्ञान–संत की बानी ये है अकथ कहानी। गूंगे ही सेना, जिन मानी तिन जानी। इसी तरह भगवान का ज्ञान भी अनुभव से ही होता है। वह किसी को बताया नहीं जा सकता। भीतर है सखा, तेरा सखा मन लगा के देख।

इंद्रियों की शक्तियां बाहर की ओर हैं। इस शक्ति को मोड़कर अंदर से जोड़ दो। जब मन अंदर से जुड़ जाता है तो अन्दर ही अन्दर दिखाई देता है। स्थिर मन ब्रह्म स्वरूप है–यह दौड़ता रहता है इसीलिये समझ नहीं पाता।

चित्त अचित्त हो जाने के बाद सब परमात्मा ही करता है। तुम जब किसी को भांग खिलाओगे तो नशा चढ़ जाने पर तुम ही उसको घर छोड़कर आते हो। इसी तरह जब भगवान का नशा तुमको होता है तो तुमको वही पास लगाता है।

संकल्प मय सृष्टि है। हमेशा शुभ संकल्प करो। भगवान का ही संकल्प करो। भगवान ही माता, पिता, बंधु, सखा, द्रव्य है। द्रव्य कैसे हैं? जैसे परमात्मा की लक्ष्मी परमात्मा के साथ ही रहती है–उनकी पत्नी है–तो जब तुम परमात्मा को याद करोगे तो परमात्मा की पत्नी लक्ष्मी (द्रव्य) तो तुम्हारे पास खुद ही आ जाएगी। सब प्रभू पर छोड़ो। कहो जीवन का मैंने सौंप दिया सब भार तुम्हारे हाथों में। अतः यह सोचकर हर हालत में शुकराना करो और शांत रहो। तुम शांत रहो कुछ और नहीं, दुई दूर करो कोई और नहीं। तुम चुप रहकर काम करो। साधो! चुप का है संसारा। चुप में कर दीदारा। चुप से ही काम होता है। देखो! धरती, गगन, जल, नदियां सब काम कर रहे हैं लेकिन चुप हैं। इसी तरह तुम परमात्मा में रहकर काम करो और चुप रहो। तुम क्या चिंता करते हो–रोजी

रोटी भगवान देता है।

तुम सबसे गुण लो सीखो। जीवन भर सीखना ही सीखना है। लोग कहते हैं–औरत पतिव्रता होती है पर पहले नहीं होती है जब वह मेरे पास आती है तभी ऐसा होता है नहीं तो संसार में औरत का मन और ध्यान कहीं और होता है।

हम तो यहां रुला रुलाकर भी चित्त वृत्ति को भगवान में लगाते हैं। हंस हंस कंत न पाइया, जिन पाया तिन रोय। अतः यहीं आकर स्त्री पतिव्रता बनती है। आपको अपनी पत्नी पर यह विश्वास होना चाहिये कि मेरे यहां आकर वह फिर संसार के विषय भोगों में नहीं भटकती। यहां आकर ही स्त्री अच्छी बनती है।

मन हाथी जैसा मस्त है और बंदर जैसा नाचता है पर गुरु की बात मानकर ही वश में होर शांत होता है गुरु निश्चय कराता है कि तू ही आत्म स्वरूप है, तू ही ब्रह्म है तभी मन शांत होता है।

गुरु ही जीवन को संवारता है। कैसी भी जीवन होगा, गुरु अच्छा बना देगा। जो भी हालत है उसमें ही आनन्द मनाना हमारा ज्ञान है। मन सोचता है–शादी होगी तभी खुश होंगे। शादी हो जाती है तो बोलता है–बच्चे हो जायें तो सुख तो सुख मिलेगा और इसी तरह सोचते सोचते ही जीवन खतम हो जाता है और सच्चा सुख नहीं मिलता। मन का स्वभाव, मन की इच्छा कभी शांत नहीं होती है–इसलिये मन को शांत करो–इच्छाओं को कम करो।

जो जगत के आघातों से घायल होता है–वही हमको याद करता है क्योंकि हमारे ज्ञान से उसको शांति और आराम मिलता है।

शरीर का कोई भरोसा नहीं जो करना हो वह आज ही कर लो। कभी कभी रात में आदमी अच्छा भला सोता है–सबेरे अचानक बीमार पड़ जाता है। जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं इसलिये जो भी काम है जल्दी करना चाहिये। काया, माया, बादल छाया, मूरख मन काहे भरमाया। हम इसीलिये कहते हैं कि जल्दी जल्दी भजन करो।

भगवान लीलाधारी है। अनेक रूप धारण करता है। जैसे जैसे श्रद्धा बढ़ती है वैसे वैसे ज्ञान होता है–भगवान की विलक्षण बातें देखने में आती हैं। ऐसे तो वह निराकार निरंजन है पर वह मनुष्य के वेश में आकर भक्त को उठाता है।

दिल खोल कर तेजी से भजन करो। बंगाल में रोटी दबाकर भजन गाता है। लड़ने के लिये कैसी तेज आवाज निकलती है। देखो! दिल से भजन करो। तुम देह से भजन करते हो। देह से ऊपर उठकर भजन करो। सत्गुरु हद से परे करता है। सत्गुरु की मूरत दिल में आ जाय तो तुमको भगवान मिल जाता है। सत्गुरु तभी मिलता है। जब तुम्हारा भाग्य जगता है।

तुम सबको भगवान बनाना चाहिये। तुम सभी भगवान हो लेकिन संसार और माया का संग होने से अपने को भूल गए हो। गुरु तुमको बार बार याद दिलाता है कि तू खुद ही परमात्मा है। भूला मारगे जिसने बतलाया, ऐसा गुरु बड़भागी पाया। गुरु से ज्ञान लेकर हम जाग जाते हैं–ऊपर उठ जाते हैं और नीचे की चीजें छोटी दिखाई देने लगती हैं। इसी तरह जब तुम आत्मज्ञान लेकर ऊपर उठ जाओगे तो जगत की वस्तुएं तुमको बेकार लगेंगी।

ग्राह कौन है? काम, क्रोध, लोभ, मोह ये ग्राह हैं। लेकिन आखिर में कहा कामिनी कंचन दोऊ घेर परत हैं–सब जग डूब मरै। जब मनुष्य के दिल में कामिनी आती है तो निकलती नहीं। कामिनी की आंख में जहर होता है इसलिये उसके जहर से बचना चाहिये। भगवान का भक्त आंख बंद किये रहता है। जो हमारे पास सदा रहता है उसको जानेंगे तो सदा भगवान में ही रहेंगे। फिर तुम जग की महफिल से दूर हट जाओगे। भगवान की महफिल के लिये कहते हैं–तेरी महफिल के दीवाने नशे में चूर होते हैं।

सदगुरु तुम्हारे हृदय में भगवान को सदा के लिये बिठा देता है। फिक्रों से जो खाली होता है वही फकीर होता है लेकिन तुम कहते हो जो कपड़ा नहीं पहनता वही फकीर होता है–उसी को भगवान मिलता है। तो गाएं भी तो कपड़ा नहीं पहनतीं। क्या उनको ज्ञान है? ऐसा नहीं है। कपड़े से कुछ नहीं होता।

तुम मोह ममता में मत अंधे होओ। भगवान भगवान करो तो मोह ममता भाग जायेगी।

भगवान के नाम पर जो धर्म व त्याग करता है उसको कभी नाश नहीं होता और न वैभव ही खतम होता है। भरत ने अयोध्या का राज त्यागा राम के लिये तो उसका राज नहीं गया। द्रौपदली ने अपनी साड़ी फाड़कर कृष्ण के पट्टी बांधी तो उसका कुछ नहीं गया। बदले में भगवान ने साड़ी ही साड़ी दे दी।

भगवान को आगे करो तो लक्ष्मी खुद दौड़ी आएगी। लक्ष्मी भगवान की पत्नी है। जहां मर्द जायेगा वहां औरत तो खुद ही जायेगी। लेकिन लक्ष्मी भगवान का भजन नहीं करने देती। जब भजन में तन लगता है तो माया ऐसी आयेगी कि तुम भजन छोड़ दो पर तुम छोड़ना नहीं।

तुमसे आरती भी तभी करायेंगे जब तुम्हारे हृदय में भगवान बैठ जायेगा। हम तो सच्ची बात कहते हैं। भगवान की आरती क्यों न हो? आरती तो होगी ही तुम चाहे जो भी करो। गुरु की आरती इसीलिये होती है क्योंकि वह तुम्हारे मन को पटकता है।

इतनी गाली खाकर भी तुम दूसरे दिन फिर चले आते हो। उसका कारण

यही है कि हम भगवान हैं। इसीलिये तुम दौडक्कर आते हो। अपने मन को बच्चा समझो और भगवान (गुरु) के आगे लाकर रखो–भगवान जैसे चलाए वैसे चलो। जब हम तुम्हारा मन लेते हैं तो उसको गला दबा कर ऐसा बना देते हैं कि तुम देखते रह जाओगे।

सदगुरु सुनार, रंगरेज, झाड़ू लगाने वाला सब कुछ है। हमारा काम झाड़ू लगाने का है तो तुम्हारे मन के अंदर झाड़ू लगाते हैं और कूड़ा करकट (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) बाहर निकालते हैं। तुम कितने भाग्यवान हो कि तुमको बिना पैसे का झाड़ू लगाने वाला मिला है जो तुम्हारे मन की सफाई रोज करता है। इसलिये अपने मन की सफाई रोज कराओ।

भगवान दुख को भुला देता है। देखो! मौसी के पति को गुजरे अभी कुछ ही दिन हुए हैं पर वह भगवान भगवान करके भूली रहती हैं। कपड़ा सफेद या रंगीन पहनने से कुछ नहीं होता–मन ठीक होना चाहिये।

लहसुन अगर तुम्हारे घर में खया जाता हो, तुमको suit (माफिक पड़ता) करता हो तो खाओ पर हां! जिस चीज़ को तुम हजम नहीं कर सकते वह न खाओ। हमारी तरफ से कोई बंधन नहीं है–बस वृत्ति की बात है। वृत्ति भगवान में होनी चाहिये। खाने से कुछ नहीं होता। हमारे पास जो है, हम वही पहनेंगे। हम यह नहीं सोचते कि हम गंरुआ कपड़े पहने जिससे कि लोग हमको भगवान माने। अरे! कपड़ा पहनने से कुछ नहीं होता। समाज ने जो बंधन बनाए हैं वे अच्छे हैं। मनुष्य दस जगह जाकर भ्रष्टाचार करता है तो समाज शादी के बंधन में डाल देता है।

पूर्ण आनन्द प्राप्त करने के लिये पूर्ण त्याग करना चाहिये। तुम लोग सिर्फ सुनते रहते हो। सुई के छेद से हाथी निकल गया पर फिर भी चुप रहते हो। प्रश्न उत्तर करना चाहिये। ऊपर से हिप्पोक्रेट (दिखाउपन) बनकर आंख बंद करके बैठते हो। कोई बात समझ में न आए तो पूछना चाहिये। जो ख्याल मन में चले उसका समाधान तुमको कराना चाहिये। जब भगवान के नाम पर ध्यान में इतने लीन हो जाओगे, अपने बाल बच्चों का भी ध्यान नहीं रखेगे तो भगवान तुम्हारे बाल बच्चों को खाने पीने की व्यवस्था स्वयं करेगा।

भगवान के नाम पर जो दीवाना बनता है उसकी रक्षा स्वयं भगवान ही करता है। जब हमारे नौजवान और लड़कियां एक एक करके ज्ञान में लगेंगे तो हमारा देश बन जायेगा। आजकल जगह जगह धर्म की लड़ाई हो रही है वह खतम हो जायेगी।

आप जपे औरां नाम जपावे। कहत सुनत रहत मीत पावे।

पहले खुद को change (बदला) किया है। कर्म करना तो जरूरी है लेकिन अकर्ता होकर करना बहुत आवश्यक है। चाहे जितना भी करो फिर भी जो होना

है वही होता है। हम तो निमित्त मात्र हैं। कर्ता तो भगवान है। ज्ञान के लिये पुरुषार्थ करना जरूरी है। पुरुषार्थ (परमात्मा के लिये काम करना) करना ही हमारा धर्म है।

तुम शांति से जीवन बिताओ। यह तभी होगा जब तुम भगवान को अपने हृदय में बिठाओगे। कर्म तो जो सामने आएगा वह करना पड़ेगा पर भगवान भगवान करने से वही कर्म स्वतः अच्छा होने लगेगा।

जब जगत फीका लगने लगेगा और भगवान मीठा लगने लगेगा तब भगवान मिलता है। जब जगत मीठा लगेगा तब भगवान की लगन नहीं लगेगी।

2.8.1986

शरीर भोग रहा है—चाहे सुख या दुख मैं भोगनेवाला नहीं हूं। मेरा घोड़ा बीमार है मैं बीमार नहीं हूं। उससे बीमारी का ताप नहीं लगेगा, नहीं तो बीमारी का ख्याल ही बीमारी से ज्यादा परेशान करता है। ऐसा मत सोचो कि मैं बीमार हूं, मैं खराब हो गया हूं बलिक सोचो मैं आत्मा हूं मैं भोगनेवाला नहीं हूं।

मन सदा अवगुण ही याद करता रहता है। उससे दिमाग में खट खट होती रहती है। हर एक में गुण होते हैं। मनुष्य सबमें गुण न देखकर अवगुण ही देखता रहता है। जो गुण दूसरे में है और हममें नहीं हैं तो वह गुण हम ग्रहण करें। हर एक फूल में खुशबू है पर बनावट अलग अलग है। इसलिये खुशबू लो।

जब अपनी लगन होती है तो गुरु की समीपता अपने आप मिलती है। ये संसार लेन देन का बाजार है। जिसका जितना लेन देन है वह लेकर या देकर चला जाता है। यह लेन देन सब कर्मो के अनुसार है।

जब एकांत होता है, भजन तभी हो सकता है। तुम मोह में मत रोओ। जो जहां गया है, जाने दो, उसको मोह से मत खींचो। समझो जानेवाला गया उससे फुर्सत हुई। जो जहां रहे शांति में रहे—ऐसा मनाओ। ओम शांति ओम शांति करो।

जो अच्छा होता है वह चला जाता है। जो खराब होता है वह पास रहता है। खराब वाला ही तुमको सता सता कर वैराग्य दिला कर भजन की ओर भेजता है। भगवान जो करता है। अच्छा होता है। जो जा रहा है उसके लिये भी सोचो कि जाकर कुछ अच्छा बन कर ही आएगा। तुम तो स्वार्थवश रोते तुम सिर्फ भगवान भगवान करो।

कोई काम रुकता नहीं है। तुम खाली भगवान में लगोगे तो भगवान तुम्हारा काम फौरन कर देगा। मनुष्य की नीयत अच्छी रहे तो भगवान बरक्कत देता है लेकिन मनुष्य घबराता है। जो भगवान में मन लगाता है उसको भगवान

"खजाने उसके वा भरपूर बारम्बार भरते हैं।" यह लाइन बिल्कुल सच्ची है। एक भक्त की हुंडी भगवान ने भरी थी। तुम सिर्फ भगवान को ही अच्छा मानो। वही पालने वाला है ऐसे भगवान को सदा नमस्कार करो। अपनी अक्ल मत भिड़ाओ। बोलो नमस्तस्तै नमस्तस्तै, नमस्तस्तै नमो नमः।

हमने तो बहुत अच्छा रास्ता चुना। पहले तो बहुत कष्ट होता था। भजन करने में पर अब देखो कितना आराम है। भजन करना आसान नहीं है। त्रिगुणमयी माया सताती रहती है। पर फिर भी भजन न छोड़े तो भगवान मिल जाता है। भगवान अजर अमर है। तुम सिर्फ भगवान से जुड़ जाओगे तो इसी जीवन में बहार आ जायेगी। तुम विशालता में आओ। तुम तो पैसे वालों को बड़ा मानते हो गरीब को नहीं। पर मजा जो है फकीरी में अमीरी क्या समझ पाए? फकीर के मतलब हैं फिक्रों से खाली होना। भगवान में मन लगने पर ही फिक्रों के भूत नाश होते हैं और तभी खिलखिलाहट आती है।

भगवान भंडारवाला है। नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रैन। ऐसी खुमारी में जो रहता है उसका कभी खराब नहीं होता। घाटा नफा तो होता ही रहता है। तुम भौतिकता में न आओ। भगवान ऊपर का तत्व है। तुम भी उसके साथ ऊपर ऊपर चलो—देखना! कितना आनंद मिलेगा।

भगवान की भक्ति जब पूर्ण होती है तभी खिलखिलाहट आ जायेगी। एक त्रिलोकीनाथ ही जब तुम्हारे हृदय में आ जायेगें तो तुम्हारा हृदय कैसे खाली रहेगा?

जो लोग यह कहते हैं कि भगवान में लगने पर नुकसान होता है—वे मूर्ख हैं। अरे! भगवान की ही तो लक्ष्मी है। जब भगवान को खुश कर लोगे तो लक्ष्मी तो खुद ही आ जायेगी। अपनी इच्छा वासना ही भगवान में नहीं लगने देती है।

भक्त और भगवान के मेल में बाधा नहीं करना चाहिये नहीं तो वही भगवान से दूर हो जाता है।

4.8.1986

अपने दुख से बड़ा दूसरे का दुख मानोगे तभी जी पाओगे। औलाद बड़ी से बड़ी दुश्मन भी है और प्यारे से प्यारी भी औलाद होती है।

मन का कोई भरोसा नहीं, ऐन मिनट में क्या करेगा कोई नहीं जान सकता। हम लोगों का ही मन जब बदलता रहता है तो अज्ञानी के मन का तो कहना ही क्या? अज्ञानी का मन लोहे की तरह है जो कभी मुड़ नहीं सकता। ज्ञानी तो फिर भी किसी तरह मन मोड़ लेगा।

देखो! ऐसा सब स्वार्थ का संसार है। व्यवहार करते हुए भी आत्मा में रहो।

परमात्मा पूर है। पूर का हो लेकर काम करोगे तो अच्छा होगा। जो जगत में आसरा ढूंढ़ता है वह मूर्ख है। चींटी के पर तभी निकलते हैं जब वह मरने वाली होती है। जिसका भी आसरा ढूंढ़ने जाते हैं क्या वह टिकने वाला है? भगवान का ही आसरा करना चाहिये। जब भी हमने नामरूप में आसरा ढूंढ़ा है धक्का खाया है। मनुष्य किसी भी हालत में खुश नहीं रहता है। लोग कहते हैं–गुरु साथ ले जाता है तो बंधे बंधे रहते हैं। महफिल में लीला होती है लेकिन भगवान की लीला अकेले में ही होती है। मनुष्य तो मूर्ख है जो देख और समझ नहीं पाता।

जब जगत की मार पड़ती है तभी मनुष्य भगवान की ओर जाता है। जो जगत में अच्छा अच्छा होते हुए भी परमात्मा में जाता है उसका काम भगवान करता है। भगवान तो अकर्ता है–जो जैसा भाव डालता है हम (भगवान) वैसा ही काम करते हैं। जो अपना आसरा भगवान पर डालता है तो भगवान मजबूर होकर उसका काम करेगा।

जब भगवान से ज्यादा कहीं दूसरी जगह आसरा होता है तो भगवान साथ नहीं देता। तब तुम कहते हो कि भगवान हमारा ये काम नहीं करता वह काम नहीं करता। जब हम सब ओर से आसरा छोड़कर ये कहेंगे–हे भगवान तुम्हारा ही आसरा है तो भगवानकाम अवश्य करेगा। जब हम कहेंगे, हम करते हैं तो भगवान हमारा काम क्यों करेंगे?

भगवान एक को कार बंगले में बिठाता है और एक को भीख मंगवाता है। इसका क्या कारण है? जो जैसा कर्म करता है वैसा ही फल भोगता है। देखो! नारद हर समय नारायण नारायण ही करते रहते हैं तो भगवान हर समय उनका ध्यान रखते हैं।

भगवान भगवान करो–जिस भगवान के कारण हैवान से इंसान बने उस भगवान को न भूलो। ये बनना बनाना छोड़ो। भक्त बनना भगवान की बीबी बनना ही ठीक है भगवान का तो समस्त विश्व है जो भगवान से रिश्ता बनाता है वह भगवानमय बन जाता है।

हमारी नजर अच्छी है जो परमात्मा से जोड़ती है। तुम्हारी नजर से भगवान में जाने वाला भी गिर जाता है। हमारी नजर राम में होती है। तुम्हारी नजर चढ़ी हुई भक्ति को उतार कर नीचे पटक देती है। इसीलिये हम कहते हैं–नजर इधर उधर मत भटकाओ। खरबूजा खरबूजे को देखकर रंग बदलता है।

भगवान में इतनी ताकत होती है कि वो अपने भक्त को अपने से दूर नहीं करता। बदली होने वाली भी होती है तो रुक जाती है। क्योंकि भगवान अपने भक्त के बिना रह नहीं सकता। भगवान उसी को प्यार करता है और खुशी देता है जिसको कहीं खुशी न मिली हो।

भगवान अपने भक्त का गुलाम है। उसका जैसा गुलाम कोई नहीं है। हमारे यहां जो भी आते हैं जब अपना मन होता है आते हैं। जब मन होता है चले जाते हैं। जब तक मन की होती है तब तक रहते हैं। हमारा तो संसार से जी खट्टा हो गया है।

5.8.1986

तुम कभी भी मत घबराओ। जैसे यहां से जब बम्बई तक गाड़ी जाती है तो बीच में गुफाएं, घुटने वाला अंधेरा आता है पर फिर भी गाड़ी बम्बई पहुंच जाती है। इसी तरह तुम्हारी जीवन की गाड़ी भी संसार की मुसीबतों के अंधेरे से पार हो जाती हैं।

सत्संग सिर्फ सुनने का नहीं है सीखने का है। तुम एक एक व्यक्ति से गुण सीखो। तुम पूछते हो पूजा क्या है? सत्य क्या है? बस जरूरत वाले की मदद कर दो तो वही पूजा है। चेतन मनुष्य को दुखी व्यक्ति को सुखी करना ही पूजा है। मन कभी भी अच्छा काम नहीं करने देता–मगर गुरु मन को अच्छा बनाता है।

जगाते न यदि तुम गुरु! ज्ञान द्वारा, कभी हमसे कोई भलाई न होती।

अभी तुम इतना प्रसाद यहां लाए तो देखो भूखे लोगों ने खाया। आशीर्वाद मिला क्योंकि जरूरतमंद थे। यही सामान तुम मंदिर में ले जाते तो पंडित पुजारी ऐ ओर से निकाल कर दूसरी तरफ से बेच देते। इसीलिये हम जरूरतमंद को देते हैं। संतों को खिलाना ही पुण्य है। जो भजन करते हैं वे संत हैं। हर जगह भगवान हैं। मैं हूं सब में और न कोई। सारा विश्व सारे बाल बच्चे मेरे हैं। तुम खाते हो, सुखी होते हो तो हमको भी सुख मिलता हैं।

विश्व में हमारे भारत की शान अध्यात्म विद्या से है। आज तुम जो जवानी में अध्यात्म विद्या लेते हो तो तुम्हारी आने वाली पीढ़ी भी अध्यात्म विद्या में प्रेम रखेगी। आज देख को ऐसे टीचरों की जरूरत है जो अध्यात्म विद्या लेंगे और अपने विद्यार्थियों को वही विद्या देंगे तो देश का एक एक बच्चा उन्नति करेगा। टीचर जब औरत होती है तो उसमें अपने छात्रों के प्रति ममता भी होती है। औरत की ममना से ही बच्चा पलता है।

भगवान के रास्ते में जब मनुष्य आता है तो कभी भयानकता आएगी तो कभी मोहकता आएगी। त्रिगुणी माया आती रहती है लेकिन तुम उसके भ्रम में न पड़ो। चलते जाओ। चल चल रे जौजवान, रुकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान। इसलिये अपने को जल्दी जल्दी बदलते जाओ। हममें जब change (बदलाव) आएगा तो सब तरफ अच्छा ही अच्छा होगा।

अपने पति का भी ध्यान रखो। देखो! आदमी कितने कष्ट उठाकर घर में पैसा लाता है। उसका ख्याल करो। जो अपने कर्म को सही सही करता है उसको भगवान आराम देता है। हर क्षेत्र में तपस्या है। जो मन लगाकर अपने कर्त्तव्य कर्म करता है उसको वैसा ही करने वाला भी मिल जाता है।

जो काम भगवद्भाव से होते हैं वे अच्छे होते हैं। जिसका मन चलता है। वह मेरी सेवा न करे। गुरु की permanent (सदैव) सेवा करने के लिये मन को भी अच्छा होना चाहिये। मन चलता रहता है और गुरु के यहां permannent (सदा) होना चाहता है। यह कभी नहीं हो सकता। मन कभी उल्टा भी चलता है तो कभी सीधा भी चलता है। मनुष्य का कोई भरोसा नहीं अपने मन से चलता है। समय, असमय का भी ध्यान नहीं रखता। अपने पास समय होगा तो गुरु के घर पहुंच जायेगा। गुरु की मर्जी हो या न हो–धमक पड़ेगा जाकर। अरे! गुरु की मर्जी से आने जाने से तुम्हारा ही मन ठीक होता है। इसलिए गुरु की ही आज्ञा में चलो। एक राजा और उसका गुरु था। गुरु के मना करने पर भी राजा अपने घोड़े को दक्षिण की ओर ले गया तो राजा को बाद में पछताना पड़ा।

आना भी अपने मन से और जाना भी अपने मन से होगा तो मन नहीं मुड़ेगा। मनुष्य स्वांग दिखाता है कि मैं गुरु के बिना नहीं रह सकता। गुरु कहता है जाओ तो भी जाना नहीं चाहता है। ये मनमुखता है। गुरु जो कहता है उसे मानकर दिखाओ। तभी अच्छा होगा, तभी ज्ञान होगा।

यह भक्ति का रास्ता है। भक्ति होगी तो भगवन्त रीझेगा नहीं तो भगवान कभी खुश नहीं होगा। गुरु जिसको अपनी सेवा देता है वह बड़ा भाग्य वाला होता है। दिल, जान, प्राण से तुम गुरु की सेवा करो। तो जहां जाओगे वहां सुखी रहोगे। तुम्हारा कर्म अच्छा होना चाहिये। तुम औरतों के हाथ में बहुत कुछ है। तुम अपने पति से, बच्चों से पुण्य करा सकती हो।

गुरु की हां में हां करो। सब काम पूरा होगा–निष्कामता में रहो। दूसरों की निष्काम सेवा करना ही ज्ञान है।

मनुष्य की नजर वैसे ही खराब है जैसे गिद्ध लाश को देखता है। गुरु को आदमी समझता है। तुम गुरु में कोई दोष और ऐब न देखो। गुरु भगवान रूप है। तुम भगवान को नाराज न करो। भगवान बहुत अच्छा है। एक आदमी ज्ञान में रहेगा तो दूसरे की भी बचत होगी। कोई तुमसे पूछे–सत्गुरु की पूजा क्यों करते हो तो बोलों हमको सत्गुरु ने बोला है। इसलिये हम उनकी पूजा भी करेंगे और फोटो भी टांगेगे। गुरु अनमोल हीरा है जो मनुष्य में श्रद्धा जगाता है। गुरु की ही कृपा होती है कि मनुष्य भगवान के प्रति श्रद्धा रखता है।

दुख सुख, हानि, लाभ, जीवन, मरण सब चलता रहता है। उसे क्या सोचना? हम रहेंगे तो दुनियां रहेगी। और हम ही न रहेंगे तो क्या होगा? जिंदा

रहें नर तो बसता रहे घर। खाओ, पियो और जियो। बहुत से लोग घबराकर गोमती में डूब कर मरने का सोचने लगते हैं। अरे! ऐसे मरने से क्या फायदा?

जो भजन करता है उसका भाग्य धन्य है नहीं तो भजन करना बड़ा कठिन है। गुरु की कृपा न हो तो मनुष्य भजन कर ही नहीं सकता।

आप जपे औरां नाम जपावे।

तुम ऐसा काम न करो जिससे दूसरे का भजन खण्डित हो जाये। गुरु के आकर्षण से ही मनुष्य दौड़ दौड़कर आता है भजन करता है। तुम्हारे मन में कोई बुरा ख्याल आ जाए तो गुरु सामने मनःपटल पर आकर खड़ा हो जाता है और मना करता है पर मनुष्य अपनी नीचता वश मानता नहीं। तुम समझते हो गुरु कुछ जानता नहीं। अरे! गुरु अन्तर्यामी है। तुम लाख छिपाओ वह जान जायेगा।

हर काम भगवान की कृपा से ही होता है। जो भगवान की कृपा नहीं मानता, हमें उससे मोहब्बत नहीं। हर बात में भगवान की कृपा मानो। एक आदमी की एक आंख फूट गई। डाक्टर ने चिंतित होकर दुख प्रकट किया तो वह आदमी बोला शुकराना है भगवान का कि एक आंख तो है। डाक्टर ने पूछा इतने पर भी तुम खुश क्यों हो? तो वह आदमी बोला–हमको गुरू से ज्ञान मिला है। इसलिये जा प्रभू से नाहीं चारा ताको कीजे सदा नमस्कारा। अतः घबराओ नहीं जो भी होता है, साखी दृष्टा बन कर देखो।

संसार का हर सुख दुख नाटक होता है। कल एक औरत अचानक आई। उसका मन पूजा में नहीं लग रहा था तो दौड़कर आई हमको ले गई। हम भी उसके प्रेम में भागकर उसके साथ चले गए। इसीलिये कहते हैं। भगवान प्रेम का, भाव का भूखा होता है। उसके बच्चे भी कह रहे थे–इनकी पूजा से हम लोग परेशान हो गए हैं। इनकी पूजा छुड़ाइये। हम इसीलिये उसके घर गए क्योंकि वह पूर्णरूपेण भगवान को भाव से, प्रेम से बुलाओ तो वह खुद आ जायेगा–ऐसे सिर्फ बुलाने से नहीं आता।

हम मंदिर तोड़ आदमी नहीं हैं। हम व्रत, धर्म पूजा नहीं छुड़ाते। हम उससे ऊँची पूजा कराते हैं। व्रत करने पर भी तो तुम अपने मन को नहीं बदल पाते–हम तो तुम्हारे मन को ही मंदिर बनाते हैं।

तुम्हारा मन इसीलिये चलता है। क्योंकि तुम्हारे मन को कोई इच्छा है। हमारे पास Egoless (अहंकार रहित) होने के लिये आए तो मै ना हो जाओ। जब तुम्हारा मन चलेगा हम तुमसे बात नहीं करेंगे।

भगवान भाव के भूखे हैं। भगवान सवयं कहते हैं।

भाव का भूख हूं, भाव ही एक सार है
भाव से भजे तो बेड़ा भव से ही पार है।

जितने भी संत आए उन्होंने दक्षिणा नहीं मांगी। वे केवल तुम्हारा भाव ही मांगते हैं।

बैठ के गंगाजी के किनारे,
क्यों नहिं पीता गंगा जल प्यरे।

यहां आकर भगवान भगवान करो। तुम्हारे बदनाम करने से या महिमा न करने से गुरु ऊँचा नीचा नहीं होगा। गुरु जो है सो है। हम कपड़ा खना जो भी खाते पहनते हैं। ज्ञान में रहते हैं। खाने से क्या होता है? शरीर को जो जरूरत हो सो खाओ। अंग्रेज़ी दवाई में अंडा और शराब तक मिली होती है पर बीमार होने पर पीते हैं। नल में चमड़ा लगा होता है उसका पानी व्रत तक में भी पीते हैं लेकिन छुआछूत मानते हैं।

छू छू करने से क्या फायदा? तुम लोग छू छू न किया करो। इससे घर में आपस में झंझट होता है। जो मिलता है, प्रसाद समझकर खाओ और शांति में रहो।

भगवान तो अच्छा करता है लेकिन मनुष्य राज़ी नहीं होता। हर बात में शुकराना करोगे तो दुनियां का कोई भी आदमी तुमको परेशान नहीं करेगा।

न कर तू शिकायत न कर तू पुकार।
शुकर कर शुकर कर शुकर में गुजार।

जिस तरह से भगीरथ ने गंगाजी को पृथ्वी पर लाने के लिये तपस्या की थी, उसी तरह परमात्मा रूपी गंगा को हृदय में लाने के लिये भी कठिन तपस्या करनी पड़ती है।

शीश मंदिर से अमृत टपके, पीकर प्यास बुझाऊं। तुम अंदर से अमृत निकालो। ज्ञान का अहंकार भी अंदर का अमृत का कुंआ खुलने नहीं देता। जब बच्चा पढ़ता है तभी डिग्री मिलती है–तब वह स्वयं बड़ा हो जाआ है। बड़ बड़ पहले से नहीं करता।

हम कुछ नहीं करते अगले की भावना और संकल्प जैसा होता है वैसा हमसे हो जाता है। भाव होता है तो हम खुद उसके लिये प्रबन्ध करते हैं। तुम राम राम में दीवाने होओगे तो हम कैसे भी हो तुम्हारे पास आ जायेंगे।

जब सतपुरुष का संग होता है तो तुम्हारे दुख ताप सब नाश हो जायेंगे। इसलिये चिंता मत करो। जो होना होता है, हो रहा है प्रभू का खेल समझो।

हम लोग नुकसान का ख्याल करते रहते हैं। उसका भी शुकराना मानो कि इससे ज्यादा होने वाला था सो बच गया।

बिना तारीख का

अंश जीव अविनाशी है। ऐसा अन्तर्यामी आत्मा तुझमें भी है। मुझमें भी है। तुम्हारे ego (अहंकार) के कारण तुमको दिखाई नहीं पड़ता। तुम जगत के धंधे में लगे रहते हो। परमात्मा में कभी धोखा नहीं होता। जगत में तो धोखा ही धोखा है।

जीवन भर सबर ही सबर करना पड़ता है। शादी हुई तो बच्चे हुए फिर सबर। बच्चों को पढ़ लिख कर अच्छे या बुरे निकले तो सबर करना पड़ता है। लड़के की शादी हुई बहू आई अच्छी या बुरी निकली तो सबर करना पड़ता है। औरत को ही हर हालत में सबर करना पड़ता है। बेचारा मर्द कितना थका मांदा घर में आता है, अगर औरत में सबर नहीं होता है तो वह हर बात मर्द को बताएगी और मर्द बेचारा परेशान हो जायेगा। अतः औरत को बहुत सबर वाली होना चाहिये।

दुनिया में कोई खराब नहीं है। हम ही खराब हैं। लेकिन अगर तुम आत्मा में स्थित हो जाओ तो खराब नहीं रह जाओगे। हर हालत में तुम खुश रहो। तुम अपना कर्म निष्काम होकर करो और चिंता मत करो। कर्म करना तुम्हारा धर्म है। चिंता करना धर्म नहीं है। हम लोग कर्म करते हैं और चिंता अधिक करते हैं मनुष्य का यह स्वभाव है। हम कहते हैं कर्म खूब करो पर चिंता मत करो। भगवान ने आगे आगे सब रच दिया है। राम वन को गए खेल पहले से बना था। काम बाद में हुआ। रावण आया, सीता को ले गया। यह सब पहले से रचा था।

बनी बनाई बन रही, अब कुछ बननी नाहिं।

अतः आज जो है, उसे खाओ। कल की चिंता मत करो। आज उसी के आधार पर जियो। सच्चाई की ही सदा जीत होती है। हममें सच्चाई है–वह हम जानते हैं। हमें न तुम्हारे मेवा मिठाई की जरूरत है, न तुम्हारे धन की, न सेवा ही जरूरत है। हमारी सच्चाई से ही तुम आते हो। इतनी गालियां देते हैं फिर भी तुम बार बार आते हो। इसका कारण है मेरी सच्चाई। हमारा काम है तुमको परमात्मा में उठाना। सच्चाई की हमेशा से जीत होती रही है और आगे भी होगी। तुम कहते हो हमारा यह काम नहीं होता, हमसे यह नहीं होता। परन्तु अगर तुम्हारा मन राम भजन में होगा तो काम अवश्य होगा जो भगवान के नशे डूब जाता है तो भगवान उसकी रक्षा करते हैं, उसको खुद संभाल लेते हैं।

भगवान जब हृदय में आरूढ़ हो जाता है तो मनुष्य मोटा तगड़ा होता हुआ भी बेजान सा लगता है क्योंकि वह भगवान के प्रेम में विभोर होकर शिथिल सा हो जाता है।

भगवान अन्तर्यामी है। तुम बोलोगे–जब साकार नहीं आएगा तो तुम कैसे पहचानोगे? जब परमात्मा तुम पर दया करता है तभी तुम पहचानोगे जब वह साकार रूप में आएगा। तुम्हारे साथ उठेगा, बैठेगा, तुम्हारे दुखों को भी तभी सुनेगा। दीनबन्धु, दीनबंधु कहते हो पर जब वह साकार रूप में आएगा और तुम पर दया करेगा तभी तो तुम पहचान पाओगे कि वह दीनबंधु है।

देह को याद करने से कमजोरी आएगी। आत्मा याद करोगे तो शक्ति आएगी। अतः देह को न याद करो। भगवान जहां भी रखे रहो। जहां भी रहता है वहीं अच्छा होता है। शुकराना करो। ये मन सोचता है कि यहां नहीं ठीक, वहां ठीक है। पर भगवान तुमको जिस हालत में रखे खुशी खुशी रहो। मन खुद ही गुरु से दूर होने का संकल्प करता है। जब तुम्हारे संकल्पानुसार तुमको दूर करता है तो फिर रोता है।

तुम संकल्प छोड़कर हर हालत में भलाई समझ कर रहो। मन इसीलिये चलता है क्योंकि वह हर हालत में भलाई नहीं मानता। जो होता है उसमें गम न करो। जो आए आने दो जो जाए जाने दो।

भगवान हम कैसे हैं? ये शरीर, ब्लाउज, साड़ी सबमें नहीं हूं। इन सबके अंदर जो "मैं" हूं वही "मैं" हूं। ये स्थूल शरीर पांच तत्व से बना है। इस स्थूल शरीर के बाद सूक्ष्म शरीर है। एक मन के चार विभाग हैं। इससे भी अन्दर सूक्ष्म है जिसे कारण शरीर कहते हैं। मैं मर्द हूं, बच्चा हूं, ये अंदर भरा पड़ा है। जब गुरु आत्मा बता देता है तो ज्ञान हो जाता है। ज्ञानी व्यक्ति कारण शरीर में परमात्मा को स्थित करके बात कहते हैं। तभी वे कहते हैं। I am God (मैं भगवान हूं) इसीलिये यीशु ने अपने को भगवान कहा। एक बार यीशु ने कहा–तुम लोग ही मुझे मरवाओगे तब सबने कहा ऐसी बात मत कहिये।

एक बार कुछ दुष्ट ईसा को मारने लगे और कहा ये अपने को भगवान कैसे कहता है? ग्यारह चेलों ने तो कह दिया कि ये अपने को नहीं निराकार को भगवान कहता है। जब सब उसको कोड़े मारने लगे तो क्राइस्ट को कुछ नहीं हुआ पर जब बारहवें ने रेशम की डोरी से मारा तो क्राइस्ट की आंखों से खून बहने लगा तो वह शिष्य बोला–सबने तो आपको कोड़ों से मारा तब तो आपको कुछ नहीं हुआ। मेरे रेशम की डोरी से मारने पर आपको इतना कष्ट क्यों हुआ? तब क्राइस्ट बोले–सब तो मेरे को जानते नहीं थे पर तूने तो मुझे जानकर भी मारा है। मैं सोच रहा हूं तेरा क्या होगा? तुझको कितना नरक भोगना पड़ेगा? संत का दोषी महादोषी होता है। शंकर ने विष पी लिया और नीलकंठ कहलाए।

ऐसी वाणी जो भगवान के मुख से कभी कभी निकलती है वह बड़ी अनमोल होती है। उसे टेप में भर लो। जब तुम्हारा मन मुझे पूरा पूरा भगवान मानने लगे तभी तुम्हारे घर आयेंगे। ऐसी जल्दी हम जाते नहीं और जाते हैं तो फिर आते नहीं हैं। मेरी एक शर्त है। जिस घर में हम जायें वहां दूसरा न आए। जब सबको भगायेंगे तभी हम बैठेंगे। हमको वही बुलाए जो औरों को भुला दे। एक घर में दो को नहीं रहने देंगे।

पत्थर में भगवान बोलता नहीं है। हम अपने मन से ही पूजा करते हैं। पर सच्चा भगवान तुम्हें खिलायेगा, पिलाएगा तुमसे बात करेगा और तुमको अच्छा बनाएगा। जब जब जिसका अज्ञान नाश हुआ है–साकार से ही हुआ है। लोग सारे नाते रिश्तों को तो चेतन मानते हैं। बस एक भगवान को ही जड़ मानते हैं। पर ऐसा नहीं है। सारे नाते रिश्ते चेतन भगवान से ही प्रतीत होते हैं। तुलसी, पत्थर, शालिग्राम को भगवान मानते हैं। जो तुमको कुछ नहीं बोलते लेकिन चेतन भगवान तो तुम्हारे मन को बनाता है। अतः साकार में ही भगवान को मानो। निराकार तो मौन है–वह कुछ बोलेगा नहीं।

मन में इतना विकार होता है इसीलिये मन उलझा हुआ और अशांत है। सब कुछ होते हुए भी ego (अहंकार) के स्थान पर भगवान को बिठा दो तो शांति हो जायेगी। ये विकारी मन भगवान के प्रेम में डूबकर ही शांति पाता है नहीं तो

राजा दुखिया परजा दुखिया,
सकल सृष्टि का राजा दुखिया।

राजा, प्रजा इसीलिये दुखी हैं क्योंकि उनके पास राम नहीं है। जिसको नाम की खुमारी होती है उसी को शांति मिलती है। व्यक्ति अथवा वस्तु में शांति नहीं है। तुम्हारा मस्तक अहंकार में डूबा रहता है। तुममें भाव होगा तो भगवान का ज्ञान भर लोगे। तुम तो बनिया बनकर बाजार में चलते हो। भाव होगा तो तुम भगवान का ज्ञान ड्रम (मन) में भर कर ले जाओगे। हमारा अहंकार ही हमें ज्ञान नहीं लेने देता।

भगवान ने शरीर बनाया। देवी आए, देवता आए। सारे रोम रोम में देवी देवता बैठ गए पर शरीर उठा नहीं। जब भगवान खुद आकर शरीर में बैठे तभी शरीर उठा और चला। घर घर (शरीर) खाली है। पर हृदय कोई खाली नहीं है। भगवान सब लोगों में हैं। हम द्वैत भाव के कारण समझ नहीं पाते। आधार भूत परमात्मा पहले है–शरीर बाद में है। इसीलिये मन में अशांति है। किसी को अपना न मानो केवल एक प्रभू को ही अपना मानो। जब मनुष्य खुद ज्ञान में रहता है तो उसके vibration (श्वास प्रश्वास) से घर में शांति रहती है। घर में तभी शांति रहती है। घर में तभी शांति होगी जब तुम ज्ञान को पूर्णरूपेण ग्रहण करके उस पर अमल करके स्वयं शांत रहोगे।

गुरु की बात मान ले तो बेड़ा पार हो जाता है। भगवान की बड़ी कृपा है। क्या देता है, क्या नहीं देता है कोई समझ नहीं सकता है। हम प्रकृति का भी आनंद नहीं ले पाते। अपने मन की खटखट के कारण। मन ठीक नहीं होगा तो हमको प्रकृति का भी आनंद नहीं मिल पाता।

भगवान की कृपा से ही कोई किसी को पूछता है अन्यथा आदमी किसी को पूछता भी नहीं है। लोग प्रश्न करते हैं वो (हम) अपने को भगवान केसे कहते हैं?

हम पूछते हैं वो अपने को जीव केसे कहते हैं? वे ये भी सिद्ध करें। जो सत्य है उसको वे बोलते हैं झूठ है और जो झूठ है उसको वे सत्य कहते हैं। परछाई को सत्य बोलते हैं और परमात्मा को झूठ बोलते हैं। जीव भाव का अहंकार ही मनुष्य को परमात्मा का दीदार नहीं होने देता। सत्य को सत्य कहने में क्या बुराई है? वो मुझे औरत भाव से सम्बोधित करके बात करते हैं पर मेरे अंदर की बात वे नहीं जानते। मेरे अंदर जो परमात्मा है वह unchangeable (भी न बदलने वाला) है। नामरूप से क्या होता है? नामरूप तो नीचे की बात है–ऊपर की बात करो। घट में ही भगवान है–मैंने पहचान लिया है इसलिये हम अपने को भगवान कहते हैं।

सद्गुरु शरीर में ही निराकार निरंजन में टिका देता है। जिसकी बुद्धि परमात्मा में टिक चुकी है वह अपने को कभी जीव नहीं कहेगा। जात मेरी आत्मा परमेश्वर परिवार। ऐसा जो जान लेता है वह किसी से डरता नहीं है। हम तो अपने को पहचानते हैं।

शंका आना तो स्वाभविक है। जो शंका का समाधान करता है वही गुरु है। जो अपनी शंका को गुरु के आगे रखेगा, उसी की शंका दूर होगी।

जब हम परमात्मा के नशे में आते हैं तभी परमात्मा के देश में आते हैं। वह परमात्मा अंदर ही है। भीतर है सखा तेरा सखा मन लगाके देख। अंतःकरण में ज्ञान की ज्योति जलाके देख।

जैसे जैसे श्रद्धा बढ़ती है भगवान अपने आप दिखाई देता है। ज्ञान अपने अनुभव का ही है। ढाई अक्षर आत्मा जो है–हम बता नहीं पा सकते–वह अनुभव की ही बात है। जो देह दृष्टि से देखेगा वह हमको नहीं पहचान पाएगा। जब आत्म बोध हो जाता है तब शंका नहीं होती।

अर्जुन पहले शंका करता था क्योंकि वह कृष्ण को देहभाव से देखता था परन्तु जब कृष्ण ने आत्मा का ज्ञान दिया तो उसे सर्वत्र परमात्मा दिखाई देने लगा। परमात्मा अंदर ही है। इसका ज्ञान हमको सत्संग में आकर सदगुरु से

ही मिलता है। मां इस काम को बचपन से ही कर सकती है। मदालसा ने अपने बच्चों को भगवान में लगाया क्योंकि वह जन्म से ही उनको आत्मा का ज्ञान देने लगी थी।

गुरु ही ज्ञान देता है। हमारे घर के छोटे छोटे बच्चे गुरु गुरु करते हैं दादी अम्मा नहीं कहते हैं इसीलिये उनको सुख ऐश्वर्य मिलता है। जो दिन रात गुरु का जप करेगा तो उसको सब कुछ अपने आप मिलता है। एक अकेला सब करे मन में लहर उठाय।

तुम्हारे साधु संत तो दूसरों सक भीख मांग कर खाते हैं पर हम तो मेहनत करके अपना खाना खाते हैं और मजे से भजन करते हैं। हमारा मन भी संसार से भागकर भजन करने का था पर एक बार हम पलिया के जंगल में गए तो एक साधु अपने चेले के सामान लाने पर चाय खाना बना रहा था। हमने कहा–ऐसा भजन क्या करना जो दूसरों पर आश्रित हो। हम तो खुद का किराया खर्च करते हैं। खुद मेहनत करके फिर भजन भी करते हैं।

तुम लोग तो गृहस्थी में भी कंजूसी करते हो। यहां आकर भी कंजूसी करते हो। अरे! दिल उदार रखोगे तो भगवान तुमको बराबर देता रहेगा जो दिल खोलकर खर्च करता है। भगवान उसको भरता रहता है। तुम इधर कंजूसी करोगे तो उधर डाक्टर ले जायेगा। जो उदारता में रहता है। उसको भगवान अवश्य देता है। तुम्हारे पास जब तक एक भी पैसा है–खर्च करो फिर भगवान और दे देगा परन्तु मनुष्य का मन कृपण होता है।

तुम शांति और प्रेम से क्यों नहीं रहते? एक दूसरे की जलन में मरोगे तो भूत बनोगे। तुम प्यार से रहो। राम से ज्यादा कोई भी तुमको याद आएगा तो वही भूत बनकर तुमको सताएगा। हर मनुष्य अपने स्वभाव के वश में है। ज्ञान से अपने स्वभाव को अच्छा करो, बदलो। तुम सबको सबके हाल पर छोड़ दो। ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर। खाली परमात्मा परमात्मा करो। सब झूठ है। वास्तविक केवल भगवान है। जब तुम प्रभू ढूंढ़ने आए हो तो हम तो प्रभू का पता तुमको अवश्य बताएंगे। जहां भी हो, प्रेम शांति से रहो। जो बात बीत गई वह स्वप्न है। उसे छोड़ो आज में जियों वर्तमान में जियो। तुम सब प्रेम में रहो।

ब्रह्म बड़ा और जीव छोआ है। सर्वज्ञ को कैसे बोलते हैं? दयालु हो, कृपालु हो, दयामय भी कहलाते हो। भगवान को ऐसा जो जानता और मानता है वह भगवान की शिकायत कैसे कर सकता है। जो भगवान की शिकायत करता है उसे कभी इज्जत मत दो। क्या भी हो जाए एक आंख फूटे एक आंख रहे तब भी जो शुकराना करता है तो भगवान कैसे नहीं खुश होगा?

न राग रखो न द्वेष रखो। क्योंकि राग द्वेष के कारण भजन खतम हो जाता

है। भगवान भगवान करो तो शांति, आनंद आता है। मुंह से रस बहने लगता है। आनन्द क्या है? सत्गुरु के ज्ञान से ही मनुष्य चिंता फिकर से खाली हो पाता है तभी जवान सा दिखाई पड़ता है। तुम रोज रोज आते हो फिर भी हमसे ऊबते नहीं क्योंकि भगवान की छवि ही ऐसी है जो एक बार देख लेने के बाद भूलती नहीं। भगवान की छवि एक अजीब अनोखी छवि है। भले ही वह भक्त हमें छोड़कर चला जाए पर फिर लौट लौट कर आ जाता है। भगवान देखने में भला ही काला है पर उसकी छवि अनोखी है।

मनुष्य अपनी तकदीर लेकर आता है– अपने भाग्य से ही खाता है। जो संसार में जन्म लेता है वह अपना भाग्य साथ लाता है। हम लोग सोच सोच कर घबराने लगते हैं कि कैसे होगा? क्या होगा? लेकिन घबराना नहीं चाहिये।

प्रश्न ब्रह्म सर्वज्ञ है और जीव अल्पज्ञ है। वह एक कैसे हुआ? जीव तो छोटा है, ब्रह्म व्यापक है फिर एक कैसे होंगे?

उत्तर जीव अपने जीवपने को छोड़ दे और ब्रह्म अपने ब्रह्मत्व के अहंकार को छोड़ दे तो दोनों एक ही हैं।

गुर्रुब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुर्रु देवोमहेश्वरः
गुरु साक्षात परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवै नमः।

गुरु, ब्रह्मा विष्णु, महेश से भी परे है। ये सब उपाधि में रहते हैं। एक रचना करता है, एक पालन करता है और एक संहार करता है लेकिन हैं ये उपाधि में ही। गुरु इनसे भी परे हैं।

9.18.1986

जो भगवान के नाम पर लुटाता है उसका भंडार कभी खाली नहीं होता। भगवान का काम करके यह न सोचो कि मेरे बगैर भगवान का काम नहीं होगा। क्योंकि भगवान का काम भगवान ही करता है। एक जायेगा तो दूसरा उससे मजबूत पैदा होगा।

जिसने भी गुरु को माना बड़ा सोच समझ कर माना है। ऐसा भगवान न हुआ है, और न होगा जो प्यार में रहता है वह आनन्द में रहता है पर प्यार के नाम पर जो जलता है उसको दोजख में अवश्य जलना पड़ता है। प्यार किया और आनन्द न आया तो वह प्यार मांस का प्यार है। जो प्यार में जलता है वह मन में कुछ इच्छा रखता है।

जो परमात्मा को आनन्द रूप मानकर आनन्द में रहता है वह धन्य है। रुक्मिणी राधा से जलती थी। उसने राधा को गरम दूध पिला दिया तो भगवान

कृष्ण का पैर जल गया। रुक्मिणी के पूछने पर भगवान ने कहा–राधा का चित्त मेरे चरणों में रहता है इसलिये मेरे पैर जल गए। राधा के हृदय में मेरे पैर हैं–गरम दूध वहीं पहुंचा तो मेरे पैर जल गए। ऐसा होता है सच्चा प्यार।

भगवान से प्यार करे, भगवान को कुछ समझे, उसके रूप को देखकर भी खुशी न आए तो वह प्यार खराब है। जलने वाला सही नहीं है। तू भी आनन्द में आए और मैं भी तुझको देखकर आनन्द में आ जाऊँ वही प्यार है। जलने वाला गिद्ध की तरह मांस में होता है।

गुरु नसीब वाले को ही सेवा देता है। गुरु से इतना अपनत्व होना चाहिये कि वह अपना आप लगे। सारी दुनियां दूसरी है–गुरु अपना आप है। ऐसा सोचना चाहिये। जो गुरु है वह मनुष्य सा दिखता है पर है निराला, जग से न्यारा है। मनुष्य कर्ता नहीं है। गुरु व्यक्ति जैसा भासता है पर वह व्यक्ति भाव से परे होता है। इसी से उसे निराला कहते हैं। निराला मायने कोई पहचान नहीं सकता। पूर्ण गुरु मायने पूरा पूरा ब्रह्म। निराकार में स्थित देह से परे–निराकार निरंजन से परे है। वह ब्रह्मस्वरूप गुरु है। ऐसा सोचो कि मैंने वही पाया है।

गीता में कहा है–गुरु निराला है। देह के अन्दर स्थित निराला सबसे प्यारा है। निराकार निरंजन परमात्मा बहुत योग के द्वारा दिखाई देता है। कर्म का निपुण गुरु ही होता है। इसलिये गुरु देह में होते हुए भी विदेह है। वह जीते जी मुक्त है।

तुम बोलते हो खाता पीता है। सो कर्म तो करना ही पड़ेगा। बैठकर क्या करना है? बैठकर सन्यास नहीं होता है। हमारा संन्यास कर्म करते करते होता है। राजा जनक राज्य चलाकर भी मुक्त था। कर्म करना बुरा नहीं है। उसमें आसक्त होना बुरा है।

निरासक्त मनुष्य कर्म से घबराता नहीं है। साखी, दृष्टा बन कर कर्म करता है। तनाव से कर्म भी अच्छा नहीं होता। तानपुरा भी जब बीच का करना होता है तभी अच्छा बजता है। परमात्मा की भी यही बात है। इसी तरह मनुष्य राग द्वेष में अपने को कैसे रहता है।

भक्ति practical (स्वाभाविक) की होती है। जो ज्ञान की, शुकराना की बात करे उसे बैठने दो। जो अशुकराने की बात करे उसे भगा दो। तुम्हारी नजर अगर देह में होगी तो अशुकराना होगा।

हम भीड़ नहीं चाहते सिर्फ भगवान का भजन करने वाला ही यहां रुके नहीं तो क्या लाभ भीड़ लगाने से। भगवान का बार बार ऐसे शुकराना करना चाहिये कि जो कुछ भी दिया है, हम उसके भी काबिल नहीं थे। जब बार बार शुकराना करोगे तो आपके मन में जो भी ख्याल आएगा, जिस वस्तु की भी इच्छा

होगी—पूरी होगी। अतः भगवान का बार बार शुकराना करना चाहिये। यही सोचना चाहिये कि प्रभू ने जो भी दिया है बहुत दिया है। हम तो इसके काबिल भी नहीं थे। तब अज्ञान में की हुई इच्छा भी पूरी हो जाती है।

ज्ञान में जैसे जैसे भगवान का नाम प्यारा लगेगा। ऐसी बातें होंगी कि आप हैरान होने लगेंगे। जब हमारा मन परमात्मा में टिक जाता है तो जैसे नाला, नदी में एक जगह मिल जाता है और नदी का ही रूप धारण कर लेता है और स्वच्छ बनकर नदी ही कहलाने लगता है उसी तरह मनुष्य जब भगवान के भजन में तल्लीन हो जाता है तो भगवान का ही रूप हो जाता है।

सद्गुरु जिसको प्यार करने लगता है उसको सारे विश्व की कृपा मिलने लगती है। यहां तक कि इसी सांसारिक जंजाल में रहते हुए भी मुक्ति मिल जाती है। सिर्फ भगवान भगवान करो। धरती पर ही तुम्हारा स्वर्ग उतर आता है। स्वर्ग भी एक झंझट, बवाल है। आज जो कुछ भी देख रहे हो—भगवान की कृपा से ही है।

एक अकेला सब करे मन में लहर उठाय। हमने सोचा तुम आए। यह देखो अन्तर्यामिता है। तुम याद करते हो तो हम भी आ जाते हैं। बिना तार के हमारा तार टेलीफोन होता रहता है। भगवान की कृपा से जब मन संकल्प विकल्प से खाली होता है तो दिल के तार से तार जुड़ जाता है।

अजामिल पापी का पाप था बेशुमार,
याद किया उसने तो आ गया तारनहार।

गणिका भी इसी तरह तरी।

भगवान नहीं हो सकता। **हरि दर्शन की आरसी है सत्गुरु की देह, लखना हो यदि अलख को उसमें ही लख ले।** सत्गुरु की कृपा से जब अन्तरात्मा की जागृति होती है तो तुम्हारा दिल अपने आप सत्गुरु की तरफ खिंचने लगता है।

सद्गुरु मिला तब जानिये,
जब मिटे मन की ताप,
हर्ष शोक व्यापे नहीं,
तब गुरु आपै आप।

भगवान खाली दिल लूटता है। तुम जहां भी जाओ। भगवान में रहो।

खयालों में तुम हो, निगाहों में तुम हो,
ये जन्नत नहीं तो फिर और क्या है।

भगवान को जब तुम हरदम याद करोगे तो भगवान फिर तुमको खुद जपने लगेगा। तुम जप, तप, ध्यान धारणा समाधि मत करो। बस भगवान-भगवान करो।

भगवान का दीदार, विश्वास खुद होने लगता है। कुछ करना नहीं पड़ता।

जब पूर्ण भक्ति में हो जाय तब संत के पास आना अच्छा होता है नहीं तो संत के कर्म में फंस जाता है। एक भगवान के सिवा कुछ नहीं है। संकल्पमय सृष्टि है। अभी से तुम शुभ और अच्छा संकल्प करो। मन तो हमेशा आगे पीछे की सुनाता रहता है। लेकिन फिर भी भगवान में रहो। भगवान की बहुत कृपा होती है।

मनुष्य अपने स्वार्थ से संकल्प करता है। एक औरत का घर बाढ़ से डूबने वाला था। उसने सोचा पानी न बरसे। लेकिन ऐसा स्वार्थी संकल्प क्या कि सारा संसार सूखे से मरे। तुम सिर्फ अपने स्वार्थ में डूबे हो। अरे! निःसंकल्प हो जाओ तो तुम्हारी रक्षा तो भगवान करेगा ही।

जो कुछ भी होता है भगवान की कृपा से ही होता है। भगवान चाहे तो प्रकृति को भी बदल दे।